अथ श्रीमद्देवचन्द्रकृत-

ध्यानदीपिकाचतुष्पदी.

श्रीगुरुभ्यो नमः ।

परमज्योति प्रणमु प्रगट, सहजानंद सरूप,
वसतो निज परिवारसू, प्रणमु चेतन भूप १
श्रीजिनवाणी मन धरि, पाय नमी गुरुराज,
सारबुद्धिदाता सकल, तारण भवीयण जहाज. २
परमातम समझाविवा, भविक जीव हित काज,
ज्ञानसमुद्र अगाध गुण, देषाड्यो जिनराज ३
संस्कृतवाणी वाचणी, केइक जाणे जाण,
ज्ञाता जननें हितभणी, भाषा करूं वषाण ४
गुणता भणता गावता, टाली मन विषवाद,
विकथा जांणी वारज्यो, मत को करो प्रमाद ५

ढाल चउपई

ज्ञान सोभ आलिंगन करी, आनंदित परमारथ वरी,
प्रणमु हूं अज सहज विचार, परमातम अव्यय गुणधार १
तीन भुवन कमलाकर सूर, धरम अमृत वर जलधर पूर,
जोग ध्यान कल्पतरुहेव, प्रणमु रिषभदेव नतदेव. २
भवभय वह्निथकी समान, जतु जातिने करवा सात,
सुधांसमान चंद्रप्रभुनामि, ज्ञानसमुद्र सोभानो ठामि ३

सुंदर संयम पाणी वरे, तीन जगत्त पवित्र ज करे;
शांतिनाथ स्वामि हूं नमुं, सरव विघन दूरे हूं गमुं. ४

श्रेय कुमुद विकसावण भणी, पूरण चंद्र समोवड गिणी;
वंदू महावीर भगवान, अक्षय लिषमि दायक दान. ५

पूरण श्रुत नभ चंद्र समान, संयम लिषमि तिलक प्रधान;
नमीये इंद्रभूति अणगार, ध्यानसिद्ध योगीस उदार. ६

सांतिरूप अति ही गंभीर, विद्या सकल धाम गुणधीर;
भव्यलोक सरणागत पाल, जय जिनसासन जगत कृपाल. ७

बोधि विवेक प्रसम हित भूप, सम्यक तत्त्व कथन ए रूप;
ज्ञान ध्यान श्रुत तप ते सार, जिण निज रूप लह्यौ सुषकार. ८

इण दुषको संसार असार, जासि मूंझे कुणसु विचार;
मिथ्या ज्ञान प्रभव ग्रह जेह, निग्रह दक्ष सुजन सुष गेह. ९

एहवो कहूं ज्ञाननिधि ग्रंथ, दुत्तर जेम उदधिनो पंथ;
मुझसूं ए किम कहीयो जाय, जिणमें कोविद पिण मूंझाय. १०

समंतभद्रादिक कविनी वाणि, दीपंती प्रभवे सुप्रमाण;
तिहां ज्ञानलवधर जन कहे, षज्जुआ परि हासो ते लहे. ११

त्रिविध कलंक जिनवाणि तणो, नासक देवनंदीथे थुणो;
जयवंतो जिनसेन वचन्न, जाणै जोगी जिण निज धन्न. १२

श्रीजिनवाणि पवित्रित मती, अनेकांत नभ ससि दीपती;
भवि कलेसपीडित आतमा, जोगीपथ धरुं चितमां. १३

दूहा.

कवित तणौ अभिमान नहि, कीरति इच्छा कोई नाहिं;
ग्रंथ उकत जे माहरी, केवल बोधन चाहि. १४

वृथा जाणी भ्रम तजी, जागै मोक्ष निमित्त,
ग्रहे राज्य समभावनौ, सभाळी निज तत्त १५
वली केण उपाय करि, जन्म जात दुष जाय,
निसना विषयतणी प्रबल, प्रसमे केण उपाय १६
पूज्य तेह गमाविवा, कारण कहीयौ ग्रंथ,
करि उद्यम अपनो कहु, बंध मोक्षको पंथ १७
ऊची ध्वनि करि भविकने, गुरु द्यै ए उपदेश,
जिण आवै निज शुद्धता, रहइ न दुरगति लेश १८

वीर वषाणी राणी चेलणाजी

त्रिभुवन पूज्य इम उपदिशे जी, इह परलोक विशुद्ध,
शुभमती ज्ञान गुण साभळी जी, कुण ग्रहै ग्रंथ अशुद्ध १
उत्तम ग्रंथ तुमे साभलो जी, छाडज्यो कुमतिनो पंथ,
गुरु उपदेस मनमे धरी जी, टाळि कुध्यान मनमंथ. २ उ०
लघुमती मदधर जगतमे जी, निज पर वंचक रूप,
कीर्त्ति वंचक थका जग ठगै जी, तत्त्व विमुष अघकूप ३ उ०
शास्त्र तिणे साभल्या स्यू हूवै जी, मन-पडै जेणै भवमाहि,
आदि मीठो फल शून्य छे जी, विषम समौ विक्रिया झाझि ४ उ०
अचरिज अज्ञ मनुष्यनो जी, जे ग्रहे कुग्रह एह,
सौ गमे तासु समझावता जी, नवि तजै निज हठ तेह ५ उ०
शुद्ध नर शास्त्र ए वाचज्यो जी, दोष गुण एहना देषि,
शुमतिधर द्वेष को मत करो जी, शास्त्र ए मोक्ष फल पेष ६ उ०
ग्राव जिम अवगुण गुण भणी जी, वहिचरये नियत मन लोक,
दूषवै दुर्मती अतिभळी जी, भारती चंद्र जिम कोक ७ उ०

चंद्रमा सहु भणी सुष करे जी, सूर्य पीडा करै सर्व;
ए गुण दोष सभावना जी, तेथ करवो किसो गर्व. ८ उ०

एह आतम महामोहसुं जी, कलंकित होइ जिण शुद्ध;
तेह मंदिर निज हित भणो जी, तेह पर ज्योति प्रतिबुद्ध. ९ उ०

भुवन जम सर्प डंकित गणी जी, कुमति तजि ध्यान ग्रह लद्ध;
जन्म मरणादि दुष जाणिने जी, सम गिणइ तेहि ज सिद्ध. १० उ०

इंद्रीय रक्ष स्मर सिंहथी जी, जन्म दुःष जाणिजे जाण;
घूमीया मोह निद्राथकी जी, जागे ए कोइ सुभ नाण. ११ उ०

कुमति कषाय विष मूंझिया जी, जीव सहु संत कोइ शांति;
मुक्ति लक्ष्मी मुख देषवा जी, उत्सुक तजि पर भ्रांति. १२ उ०

वह्नि दुष पीडित जग गिणीजी, संत पामै भव तीर;
कर्मकलंक अनादिना जी, तुरत धोवै मतिधीर. १३ उ०

कर्मकलंक बाधा विना जी, सानंद शुद्ध स्वभाव;
संत जिन मोक्ष इम वर्णवे जी, जिहां नही जनम दुषराव. १४ उ०

जीवित सर्वनो सार ए जी, नरभव दुरलभ जाण;
छोडि परमाद शुभमति धरीजी, आदरौ आतम नाण. १५ उ०

सठ जन काल अहिलो गमै जी, बुद्ध फल लेइ दुरस्स;
दुष ज्वाला भर्यौ गहन छै जी, एह सुष अंत विरस्स. १६ उ०

काम धन जीवित चल अछै जी, वीजली जेम ए फंद;
उत्तम जे तजै ते लहे जी, राजविमल सदानंद. १७ उ०

दूहा सोरठा.

संगी थकी विषाद, देहि छीजै रोगथी;
आपे मरण प्रमाद, आपद दिन प्रति दूहवै. १

नरक भयानक दुष, भोग सुपन सम टग अछे,
सेवै ज्ञानीं सुख, पर स्वभाव निस्पृह कौ २
नवि पामै कल्याण, आतम तत्त्व न ओलषे,
जनम विनश्वर जाण, करमविडम्बन नवि ल्पे ३
षोटो बुद्धि विनोद, करि मूरष आपो ठगै,
चचल ए आमोद, कार्याकार्य न जाणही ४
सर्व जीव सम भालि, निर्ममता मनमै धरे,
टाली मननो साल भाव शुद्ध मनमें धरै ५
भविजन चित्त विचार, भाव शुद्धि कारण भावना,
मुनिजन मन आवार, कह्यौ सवेग सुहामणो ६
भाषी श्रीभगवत, भावना बारह भावसु,
भावो टाली भ्राति, मुक्ति गेह सोपान सम ७

ढाल–आश्रव कारण ए जग जाणीयै ॥ एहनी

भाव अनित्यपणो चित्य भाविइ, ध्यावो आतम ध्यान,
इद्रिय अर्थ विनश्वर जाणीयै, सुष दुष असमान १ भा०
भवमें भमता रे सगपण जे कीया, नीरस आपद थान,
देह जोवन ते रोग जरा भर्यों, धन जीवित चल मान २ भा०
परभाते जे वस्तु निजर पडे, ते मध्यानें रे जाय,
ससारे सुष दुःख वे बोल्ता, दुष अनत गिणाय ३ भा०
भोग भुजग प्राणहरण कह्या, सेवता संसार,
वस्तु विनश्वर सवि तू जाणिनै, छोडि कदाग्रहद्वार ४ भा०
षिणकपणो इम आरिज ऊचरइ, घडीयाल दृष्टात,
घटिका जावे नावे ते फिरी, करि आतम हित षात ५ भा०
देह अपूरव साधन जो हूवे, तो करियै अवकर्म,

बाल वृद्ध धन निरधनी रे हां, जिम कायर तिम सूर; अ०
मन्त्रोषध सेना सहू रे हां, जूठी काल हजूर. ७ अ०
ए नर सबलौ जां लगै रे हां, न सुणै रविसुत गाज; अ०
मन आस्या मनमैं थकां रे हां, निरदे हणे ए काज. ८ अ०
जगत्त डैरे गिर षडहडे रे हां, जेहना करडा नैण; अ०
ते पिण कालै संहर्या रे हां, वांसे रहीया वैण. ९ अ०
हरिहर हलधर रवि शशी रे हां, देव पवन अहिनाथ; अ०
इत्यादिक राषे नही रे हां, साहे यम यदि हाथ. १० अ०
नासै मृगली चेतना रे हां, यमकंठीरव नाद; अ०
ते तू राषि सके नही रे हां, तौ भोगे किसो सवाद ११ अ०
सागर सुरपति गेहमें रे हां, पातले नग प्रांत, अ०
भूहरे पंजर व्रजमे रे हां, पुहचै आय कृतांत. १२ अ०
इण अंतकमुष षाडमे रे हां, तीने लोक समाय; अ०
काम भोग लालच पड्या रे हां, ते नर दुरगति जाय. १३ अ०
ते सरणो तकि बापडा रे हां, जिणथी भाजे चिंत; अ०
ओलष गुण तूं आपणो रे हां, शिवपुर मारग तंत. १४ अ०

दूहा.

चोगति भमर भमै तिहां, दुष वडवानल जाल;
भमै जीव तिहां बापडा, भवसागर भय झाल. १
उपजै विणसै कर्मवसि, त्रस वलि थावर जीव;
ए संसारी भावना, भावो भवीय सदीव. २

ढाल—तिणे अवसर बाजे तिहां रे, ढंढेरानो ढोल. एहनी.
देव आयुष वसि देवता रे, पामे वैक्रिय देह;
च्यार निकाय अ कल्पना, मानै सुष ते सुसनेह रे. १

आतम गुणधारी, सगला सुप एह ससारी,
चितमे दुपरूप विचारी, मद मारी रे होइज्यो हितकारी २ आ०
चवीय पवन परिभव भमी रे, पडे नर कगतिमाहि,
जगत विडवन ते लहै, तिहा ऊच नीच कुल साहि रे ३ आ०
देव चवी कुक्कर हुवे रे, कुक्कर देव ज होइ,
श्वान हुवै श्रोत्रीया मरि, मातगथी वडव जोइ रे ४ आ०
रूप ग्रहे वल छोड ने रे, नटुआ जेम सदीव,
अति दुप मिथ्यास्त्र तप्या, ए पच मकारि जीव रे ५ आ०
द्रव्य क्षेत्र भव भावथी रे, कालादिक बहु दुक्ख,
सरव सग प्राणी लह्या, त्रस थावर करी रूप रे ६ आ०
चौगति योनि न का रही रे, को न रह्यो कुल देश,
इण प्राणी सुप दुप पणे, लाव्या अनत प्रदेश रे ७ आ०
वधु न को न को रिपु अछे रे, इण ससार अगाह,
राजा मरि कीटक हुवे, तिम कीटकथी नरनाह रे ८ आ०
मात सुता स्त्री अगजा रे, भगिनी तेहि ज नार,
पिता पुन ते सुत पिता, ए पामे पद बहु वार रे ९ आ०
नरक दुपे पेत्रादिना रे, दीठा दुप अनेक,
भार मूप निप श्रम पमे, तिर्यचगति अविवेक रे. १० आ०
मानव उद्यम बहु करे रे, रागदिक दुप देप,
ममता इण ससारमे ते, दीठा दुप नितमेव रे. ११ आ०

दूहा

एण भुवन मरुदेसमे, पीडित नित दुप आग,
फिर्यो एकाकी जीवडो, पिण न धर्यो वैराग १
कर्म शुभाशुभ भोगवै, इण देहे ए जीव,
देवादिक पिण सुप सहू, आपदरूप सदीव २

गरभ जनम मरणादि वलि, सुष दुष जोग वियोग;
जीव इकेलो भोगवै, आधि व्याधि सहु सोग. ३

ढाल—नायक मोह नचावीयो. एहनी.

भावो एकल भावना, संग न कोइ संसारो रे;
इंद्र चंद्र नागेंद्र को, अंते नहि आधारो रे. १ भा०
पाप करे परजन भणी, नरक दुष तूं पामे रे;
षावणवेला सहु मिले, दुष मंडे तुझ नामे रे. २ भा०
जन्म मरण तूं भोगवे, एक थको अपणो रे;
आप सरूप जाण्या विना, जीव भमे विण नाणो रे. ३ भा०
मोहवसे ए एकलौ, चंचल धन वर भ्रांतो रे;
बंधे आपोआपने, कुळीया वड दृष्टांतो रे. ४ भा०
एकपणो जे आदरै, पामी आपस्वभावो रे;
जन्म मरण दुष तो टले, तजि रागादि विभावो रे. ५ भा०
कोइ दिव्य सुष भोगवै, केइ नरक दुष धावे रे;
को क्रम बांधे क्रोधथी, के सहु कर्म षपाइ रे. ६ भा०

दूहा.

ए चेतन ए देहथी, ज्ञानरूप भिन्नत्व;
बंधादिक निजगुण नही, भावो भाव अन्यत्व. १

पुनरपि ढाल.

पुद्गल जीव अनादिनो, बंध ज एक ज होई रे;
कनक उपल जिम एकता, निश्चय जूआ दोय रे. ८
भावो अन्यत्व भावना. आंकणी.

रूपी चचल देहमें, अमूरतीक ए मूझै रे,
अणु निष्पन्न शरीरने, ज्ञानी पर करि बूझे रे. ९ भा०
जन्म मरण दुष उपजे, अन्य सहू ए सगो रे,
चल पुदगलथी ऊपनो, तिणसु केहो रगो रे १० भा०
एह शरीर न ताहरो, तो किम परजन धन्नो रे,
पंच द्रव्यनो सगने, चेतनथी सहू भिन्नो रे ११ भा०
मित्र स्त्री सुन सपदा, मात पिता वलि देहो रे,
ज्ञान भाव चित्तमें धरी, भिन्न गिणे सहू एहो रे १२ भा०
मिथ्या बव्यो तू भम्यो, भवमें दुष बहु पायो रे,
निश्चल भ्रम विण शास्त्रनो, हिव चेतन घर आयो रे १३ भा०

दूहा.

नदनीक मइलो सदा, अशुचिभर्यो ए देह,
शुक्रादिकथी ऊपनो, जाणि दुगछा गेह १
वशा मास लोहीभर्यो, जूनो कीकस थान,
नशानव दुरगव ए, इणरो किसो वषाण २
नवे द्वार झरता रहै, दूरमिगव क्षण नीत,
रोग जरा कृमि गेह ए, इणसू केही प्रीत ३
जे देषै इण देहमे, तेह दुगछा गेह,
धोवे जे जलथी तिको, सहज बिगाडे एह ४

ढाल–वरम हीयै धरो एहनी

एह शरीर जे आपणो रे, वींट्याउ चर्म न होइ,
तो मापी कृमि कागथी रे, राषि न सके कोयो रे १
भावना भावीयै, भावन शिव सुप सायो रे,
गुणनिधि सम अछे, इम आपे जगनाथो रे. २ भा०

यतन थकी पोता थकी जी, दाख्यो फलनो पाक;
तिम ही जांणै कर्मनौ जी, तजि जाणी किंपाक. ७ भ०
कांचन सोझे अगनथी जी, तिम चेतन तप आगि;
धीर अध्यातम तप तपे जी, जाय जन्म दुष भागि. ८ भ०
षट विध ब्राहिज तप कह्यो जी, उपवासादि प्रधान;
प्रायश्चित्त विनयादिए जी, अंतरंग षटमान. ९ भ०
पामी पदवी ज्ञाननी जी, करेय तपस्या साव;
तिम तिम तिणथी वेगला जी, नासे कर्म अगाव. १० भ०
ध्यान अगनि कर बालीयै जी, पूरव करम समूह;
तद प्राणी उज्जल हुवै जी, जाणे सोवन व्यूह. ११ भ०
तां लगि तप प्राणी करै जी, ध्यान धरे तां सीम;
कर्म षपावी ते लहै जी, ज्ञान परम सुष नीम. १२ भ०

दूहा.

जेण थकी तनु सुचि हुवे, धरै ज्योति तिहां तेह;
धरमकल्पतरु ते नमो, दया भावनो गेह. १
चिह्न धरमरा दस भला, दाख्या श्रीजिनराय;
जासु अंस सेव्यां थकां, शिव पामे मुनिराय. २
मिथ्याती न कही सकै, तेहनो सुद्ध स्वभाव;
हिंसा पोषक जेहनो, सहू ग्रंथनो राव. ३
चिंतामणि निधि कल्पतरु, कामधेनुइं इत्यादि;
सेवक सगला तासु जिण, लाध्यो धर्म अनादि. ४
नर अहि असुर नराधिपति, पदवी आपे एह;
पूजनीक त्रय भुवन जे, ते लिषमीनो गेह. ५

ढाल—रमणि आठे अति भलि एहनी
जिनप्रतिमा जिनसरीषी वदनीक

जे पङ्या विसनै धर्मेइ, इण चराचर जगमाहि,
ते सुप अमृत पूरीयो, पोषे जगत उछाह १
भवियण भावसू धर्म धरो वरि हेत आकणी
घन वायु सूरज चद्रमा, क्षोणी समुद्र सुरेंद्र,
ए जगत उपगारी कह्या, रक्षक वर्म नरेंद्र २ भ०
ए सहू जनने पालिवा, दापीया अधिके तेज,
उपगारी निश्चय कह्यौ, जिनवर धरमसु हेज ३ भ०
जगमाहि भुक्ति अरु मुक्तिनो, कारण कह्या इक धर्म,
पाय नमे धर्मीतणा, देवादिक गति धर्म ४ भ०
गुरु मुक्ति स्वामी वधु धर्म, सरणो अनाथा नाथ,
ए नरक पडता जीवने, काढे घाली बाथ ५ भ०
पडता थका प्राणी भणी, नरकाधकूप मझार,
ए धर्म अवलबन अछे, शुद्ध स्वरूप उदार ६ भ०
ए धर्म अतिशय वहु भर्यौ, कल्याणमाला गेह,
सर्वज्ञ वैभव द्ये सही, ए नर विवन अछेह ७ भ०
साथे रहै ए एह हित, छै एह रक्षावत,
ऊधरे जन्म कर्दमथकी, थापै पथ महत. ८ भ०
जिनधर्म सरिषो को नहि, भवमाहि सुपनो ठाम,
आनदपकजरूप ए, प्रजनीक हितवाम ९ भ०
अहि अनल विष व्याघ्रादियी, गजराज राक्षस चोर,
ए धर्म टाले सहु भणी, राजादिक भय घोर १० भ०
ए धर्मशक्ति न कही सकै, सुरपति अहिपति कोइ,
मुहडे थकी धर्म सहु कहे, तत्त्व न जाणे न लोइ. ११ भ०

क्षांत्यादि दसविध धर्म ए, गत वच तन मन दोप;
मत बुरो वांछे परभणी, एहि ज धरमनौ पोप. १२ भ०
नागेंद्रनगरी सुषकरू, ए धर्म नरभव सार;
देवलोक सुषनो गेह ए, ए शिवसुष दातार. १३ भ०
जो नरकदुषथी ऊभगे, देवलोक सुषनी चाह;
जो मुगत सुष वांछा करै, तौ करि धर्म उच्छाह. १४ भ०

दूहा.

जिणमें सगला भाव छे, चेतन जड बे थोक;
तेह लोक षट द्रव्यनो, थानक शेष अलोक. १
वींट्यो पवन त्रिलोकमय, तालरूप आकार;
न कर्यौं न धर्यौं नाश नहि, शाश्वत सहु साधार. २
अनादिकालनौं सास्वतो, अंतर हित विण नाथ;
जीव पदारथथी भर्यौं, सर्व द्रव्य जसु आथ. ३
वित्रासन आकार तल, मध्ये झालरि जेम;
अंते मादल सारिषौ, लौक रह्यो छै एम. ४
तिहां कर्म वसि जीवडो, उपजे विणसे सर्व;
जिहां उतपत्ति विनाशयुत, छए रह्या छे दर्व. ५
सर्व वस्तु परिपूर्ण ए, सिद्ध अनादि पुराण;
तजि उपाधि समभाव ग्रहि, भावना लोक वषाण. ६

ढाल—भरतनृप भावस्युं ए एहनी.

दुष दोहग पीडित सदा ए, नरक तणी गति जोइ;
बोधि दुरलभ अछे ए, थावरमांहि भमे वली ए.
करमवसै त्रस होइ, १ दुरलभ समकित अछै ए.

सन्नी पर्यापति हूवो ए, पचेंद्री तिर्यंच, दु०
नव नव गति प्राणी लहे ए, पाप पुण्यने सच दु० २
नरभव कुल जात्यादिकें ए, पामे उत्तम योग, दु०
काकनाली न्याये लह्यो ए, आउ बुद्धि अ सोग ३ दु०
विषय तजे सम आदरे ए, पूरव पुण्य प्रमाण, दु०
निश्चय तत्त्व जो नवि ग्रहे ए, तो सुष सम सहु जाण ४ दु०
अति दुरलभ जिन धर्म लही ए, म करि प्रमादनी तात, दु०
रतन त्रय मारग लही ए, मूरष ग्रहि मिथ्यात ५ दु०
पाप भ्रष्ट परने करे ए, मत पाषड देषालि, दु०
तजि विवेक माणिक समो ए, आदरे अवनी चाली ६ दु०
अवर सासण मिथ्या अछे ए, अणजाण्या रमणीक, दु०
ज्ञान विना इद्रीदमे ए, विण लाघे धर्म ठीक ७ दु०
विरत न भवउदधिमें ए, नरनें सोहिलो नाहि, दु०
रयणउदधि पड्यो आवणो ए, दोहिलो जेम कहाय ८ दु०
सुगम सकल वस्तु जगतनी ए, अहि-सुर-नर-पति राज, दु०
कुल वल स्त्री सुष सोहिला ए, दुरलभ बोधि समाज ९ दु०
ज्ञानी भावना क्रीडतो ए, पामे अविचल राज, दु०
मोह रागादिक क्षय गया ए, ज्ञान भाव सुणि गाज १० दु०
एहवी द्वादश भावना ए, निश्चय शिव दातार, दु०
जे शिव सगम लालची ए, ते करे भावना प्यार ११ दु०
प्रसन्न हृदय जोगीतणो ए, भावना करे उदार, दु०
सुभचद्राचारिज कह्यो ए, भावनानो अधिकार १२ दु०
देवचद्र कहे रगस्यू ए, शास्त्रतणें सहि नाण, दु०
साहाय्य कुंभकरण तणे ए, खड चढ्यो परमाण १३ दु०

इति श्रीज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे पंडितदेवचद्रविरचिते ढाल-भाषाबद्ध-द्वादशभावनाप्ररूपक-प्रथमखड. सपूर्ण ॥ १ ॥

अथ द्वितीयखंड.

दूहा.

किरिया ज्ञान मिल्यां थकी, द्रव्य अनें परजाय;
सोनो सुरहै गंधसूं, मिलियां शोभा थाय. १
प्रथम खंड बीय खंडसूं, मिलियां लहसी शोभ;
भवियण सुणज्यो नेह धरि, तजी क्रोधमय लोभ. २
इण अनादि संसारमें, दुरलभ नरभव एह;
काकातालीन्यायें लह्यो, सफलो कीजे तेह. ३
पुरुषारथ नर जनमफल, तेह कह्या चउ भेद;
काम धरमारथ नवनवा, चउथो मोक्ष अषेद. ४
तीन वरग व्यवहार छै, जन्मादिकना टांम;
ज्ञानी आतम साधिवा, मोक्ष अपूरव थांन. ५
ध्वंसे कर्म मिथ्यातमल, जन्मादिक प्रतिकुल;
मोक्ष नाम तेहिज कह्यौ, शुद्धातम अनुकुल. ६
दृग्वीर्यादि अनंत गुण, सहित रहित सहु क्लेश;
चिदानंदमय सासतौ, दाष्यो मोक्ष अलेश. ७
विषयहीन उपमारहित, अविच्छिन्न सुषठाण;
स्वयंसिद्ध नित सास्वतो, एह मोक्ष वषाण. ८

ढाल—करमपरीक्षाकरण कुमर चल्यो रे एहनी.

आतमरूप विचारौ प्राणिया रे, ध्यानतणैं सहि नाण;
निरमल सांत कलंकविना अछै रे, सिद्ध कृतारथ भाण. १ आ०
जिण कारण बहु पंडित तप तपै रे, तजी बंध भ्रमभाव;
सम्यग्ज्ञानादिक जिनवर कह्या रे, शिवसाधनना दाव. २ आ०

ज्ञान सुधारस पान करी तुम्हे रे, भाजो भवदुखराजि,
भवसमुद्र तरिवाने प्राणीया रे, साहो ध्यान जिहाज ३ आ०
करम षप्याथी मोक्ष कहे मुनि रे, तेहनो साधन ध्यान,
छोडि कल्पना उपशमरस भजी रे, ग्रहज्यो ध्यान सुज्ञान ४ आ०
संग अविद्या तजि भजि स्वस्थता रे, ज्यु पसरे शुभ ध्यान,
जन्म जलधि तारक ए आतमा रे, ध्यानरूप कर मान ५ आ०
व्यसन कहू जो तुझ विवेकथी रे, थयो हुवे थिर हीउ,
मोहनिंदथी जो जाग्यो अछे रे, तो ध्यान सुधारस पीउ ६ आ०
बाहिर अतर पर मूरछा अछे रे, विषय प्रमाद निवार,
तत्त्वरूप सुषकारण आदरो रे, आतमध्यान उदार ७ आ०
रागादिक भ्रम जो तुझ क्षय गया रे, तो धरि ध्यानको व्याप,
सवेगादिक धीरज धरि धरो रे, न वमे शुद्ध ए आप ८ आ०
काम भोग वपुनी ममता टले रे, ध्यान योग्यता थाय,
जन्म मरण दुषथी जो ऊभग्यो रे, तो धरि ध्यान उपाय ९ आ०
चित्त पवित्र करे दे मोक्षने रे, योगी गोचर ध्यान,
ज्ञान ज रूपी साधक ज्ञाननो रे, साध्य रूप पिण ज्ञान १० आ०
के सखेपरुचि विस्ताररुचि रे, चित्र विचित्र प्रकार,
दाख्यो सूत्रमाहि सक्षेपथी रे, आतम तीन प्रकार ११ आ०
पुण्य पाप उपयोगनी शुद्धता रे, दाख्या तीन प्रकार,
पुण्य शुद्धलेश्यावसि ऊपजे रे, ध्यान द्रव्य सुविचार १२ आ०
मिथ्या पाप कषाय प्रमादिथी रे, ऊपजे ध्यान अशुद्ध,
रागादिक क्षय आतम शातना रे, हुवे शुद्धातम लद्धि १३ आ०
दिव्य सौख्य जन ध्यानथकी लहे रे, अनुक्रम तो शिव थान,
दुष्ट ध्यान दुरगतिकार अछे रे, अन कटुकफल मान. १४ आ०

के वलि कारण दोयसुं, भाषे शिवप्रापति वाण रे;
कल्पै नव नव कल्पना, ते नर मिथ्याती जाण रे. १६ भ०
ज्ञानहीन किरियाथकी, वांछे नर जे फल शुद्ध रे; भ०
चक्षुहीन चाहे तिकै, तरुछायाथी फल शुद्ध रे. १७ भ०
अंध क्रिया पंगु ज्ञान छै, श्रद्धा विण न सरे काज रे; भ०
ज्ञान क्रिया दर्शन थकी, पामे सहु आतमराज रे. १८ भ०
कारकक्रम सहु लोकमे, विवहार चले छे अद्य रे; भ०
एकांतवादी माने नही, निज पक्षग्रहंता सद्य रे. १९ भ०
जसु मति जिनमतवादनी, ध्यान सिद्ध भणी ते योग्य रे; भ०
चंचल मन मुनि ध्यानमें, जिनवचने कह्या अयोग्य रे. २० भ०
ध्यानयोग्य नही मुनिनाम जे, लिंगधारी सूत्र विरुद्ध रे; भ०
मन वच काया भिन्न जै, ते न लहे ध्यान विशुद्ध रे. २१ भ०
पूज्यपणो निजमे कहे, परने लघु जाणै जेह रे; भ०
कर्म विकलतामें पड्या, मतिहीन कह्या जिन तेह रे. २२ भ०

दूहा.

संयम भार धरी करी, शील वीना मदवंत;
इंद्रीवश मन चल थका, ध्यान न साधे तंत. १

कीरति पूजा वंदना, जे चाहै ज्ञानविहीन;
अंतर मन निरमल विना, न लहे तत्त्व नगीन. २

ध्यान नही दूसम अरे, के कहै एहवी वाणि;
कामी मिथ्यामें पड्या, साधी न सकै ज्ञाण. ३

मन चंचल अति जेहनो, पररंजन जसु ज्ञान;
मौनपणे मार्जारसम, ते साधे किम ध्यान. ४

ढाल—जत्तीनी व्रत नीम न साजे आणी

कदर्प्पादिक पण भेद, रुन्ध्या धर काम उमेद,
विण रुन्ध्या इद्रीग्राम, नवि जाणे आतमराम १
विण रुन्ध्या चचलचित्त, पाम्या विण ज्ञाननिमित्त,
निर्वेद सवेग विहीन, किम पामे निजगुण पीन २
ये भोगथकी लयलीन, मन ज्ञान दयाथी हीन,
परवजक पापी दुष्ट, किम साधे ध्यान ते श्रेष्ट ३
नवि रूधे जे मन वाग, जे राता इद्री राग,
जे भारी कर्मने भारे, ते निज गुण ध्यान न धारे ४
जसु मनमें तीने शाल, विण कीधा आतम निहाल,
जे चढिया कोप ने मान, ते साधि न सके ध्यान ५
बहु पाप अनुज्ञा लीन, अज्ञानज्वरे करि भीना,
वलि मोह निद्रायीं मड्या, अति भोग लालचिआ लूड्या ६
जे राता परस्त्रीरगे, शकित भय भीति अनगे,
निज स्वारथ साधि न जाणे, भव सावे ध्यान अयाणे ७
साता रस रिद्धिना लोभी, बहु पाप करै महादमी,
निज देव भणी नवि जोवे, विणु काज ए नरभव पोवे. ८
आकर्षण वासि विक्षेप, मारण उच्चाटण पेप,
रस पाणी अनलनो थभ, जे साधे ए आरभ ९
ज्योतिष वैदिक इत्यादि, मन रग करे नितवादि,
निज देव न देषि सके ते, वे काम पड्या बहके ते १०
मुनिवेष धरि वनकाजे, बहु पाप करत नवि लाजे,
जिनमार्ग विगवे शस्य, ते पडशे नरक अवश्य ११
अज्ञानी मूरप सग, गृहवास आरभी चग,
यतिलिंगी परनें वंचे, तसु सग न कीजे रच. १२

पामी यतिवेष विशुद्ध, आरंभे कर्म विरुद्ध;
अहो ए अचिरजनी वात, देषो मन चंचलजाति. १३
भोगवीया वहु स्त्रीभोग, वलि मेली धनसंयोग;
वैरी जीता बहु आय, पांम्यां शिवकाज न थाय. १४
एहवा जन ध्यान न साधे, परमारथ निज विण लाधे;
तिण ध्यावौ अजर अनन्त, परमातम देव महंत. १५
जिनवचनतणी रचनायी, वाषाणे देव अनायी;
अेसा पंडित धन वांछे, कोडे गाने जगमै छे. १६
आनंदसुधारस भीना, भवसंभवतापविहीना;
एहवा जोगीसर राय, तीन च्यारेक नीतु लहाय. १७
संयम स्वाध्याय विहीना, मद राग कदाग्रह पीना;
विषयी भंडावे वेष, पडीया शंकाने द्वेष. १८
एहवा न करी सकै ध्यान, नवि जाणै तप विज्ञान;
ग्रंथ जीरणनें संहि नांणे, मुनि देवचंद्र वाषाणे. १९

दूहा.

परमारथ निश्चय करी, वधतै मन वैराग;
इंद्री सुख निस्पृह थका, साधु इसा वड भाग. १
भावशुद्धि भवभ्रमणथी, छूटा जे जोगीस;
काम भोगथी उभग्या, तनरी स्पृहा न रीस. २
प्राण त्याग पिण ध्यानथी, छूटै नही लिगार;
परत्यागी मुनिवर तिके, ध्यानतणा आधार. ३
महा परीसह सापथी, जन निंदाथी जास;
क्षोभ न प्रामे मन तनक, वसता निजगुण वास. ४

राग द्वेष राक्षस थकि, भय नवि पामै जेह,
नारिथी मन नवि चले, अक्षय निजरस गेह ५
तप दीपकनी ज्योतिथी, बाल्या कर्म पतग,
ज्ञान राज्य त्रय लोकनो, विलसे जेह निसग ६
तपथी तननें पीडवे, उपशम रस भडार,
लोक सर्व सुखकारजे, मोह अगनि जलधार ७
निज स्वभाव आनदमय, शात सुधारस ठाम,
योग महागज जीपने, व्रतधारी समधाम ८

ढाल—तार कर तार ससारसागरथकी एहनी

महा समधार सुखकार मुनिराय जे;ध्यान ध्याता भणी जोग थावे,
देह आधार ससारसुख निस्पृही, तेह जोगीस निज देव पावे '१ म०
शुद्ध ज्ञानरसपानथी शात मन, थावर जगम दया धारी,
मेरु जिम अचल आकाश ' जिम निरमला, पवन जिम सग विणु
लोभ वारी. २ म०
भव्यसारग सुषकार उपदेशथी, देह शोभा तजी मोक्ष साधे,
ज्ञान शक्ति करी आतम निज ओलषे,शुद्ध निज ध्यान ते मुनि
आराधे ३ म०
एण निज देवने मोक्षगृह चढणने, कही सोपानसम साधु सेवा,
ध्यान ते साधुने मोक्षकारण कह्यौ,विमल विख्यात निज गुण वहेवा ४म०
दात मन विहग इद्री भणी जे दमे,ज्ञानना गेह पातक विडारे,
कर्मदल गंज नै चित्त निरमल थका, एम जोगीश शिव मग
सुधारै ५ म०
गिरि नगर कदरा गेह शय्या शिला, चद्रकर दीप मृग सग चारी,
ज्ञान जल तप अदन शात आत्मा थका, धन्य निग्रथ सुविहित
विहारी ६ म०

प्राण इंद्री वली देह संवर करी, रोकि संकल्प मन मोह भंजी;
धन्य निज ध्यान आनंद आलंब धरि, शुद्धपद आत्मनी ज्योति रंजी. ७ म०

हेय आदेय त्रिभुवन गिणै साधु जे, क्षय करै पुण्यने पाप केरो;
आत्म आनंद स्याद्वादथी विषयने, विष गिणी भंजता कर्म घेरो. ८ म०

कार्य संसारना साधता ज्ञान विण, जगतमे एहवा बुहत दीसे;
काटी भव दुष वलि ज्ञान जल झीलता, एहवा साध दोय तीन दीसै. ९ म०

वडे प्रासादमै नरम पल्यंक परि, राति जै पौढता नारिसंगै;
तेह गिरि कंदरा कठन शिला उपरे, रहे नित जागतां ध्यानरंगे १० म०

चित्त थिर रागनै द्वेषनो क्षय करी, जीप इंद्रीय आरंभ छोडी;
ज्ञान उद्दीपना थकी आनंदमय, देषि निज देवनै कर्म मोडी. ११ म०

छोडि परसंग आत्मा भणी सिद्ध समा, ध्यावतां सुमतिसुं मोह वारे;
आत्मस्वभावगत जगत सहु अन्य गिणि, ज्ञाननिधि मोक्षलक्ष्मी सुधारे. १२ म०

तत्त्वचिंता करे विषयने परिहरे, स्वहित निजज्ञान आनंद दरीयो;
सुमतिसंयुक्त तप ध्यान संयम सहित, एहवो साध चारित्र भरीयो. १३ म०

एहवा पंडित वचनरचनाथकी, नित थुणे आत्मने बहुत असा;
शुद्ध अनुभूति आनंदसूं राचीया, कटै भवपास दुरलंभ तेसा. १४ म०

एहवा योगधारी जिके मुनिवरू, ध्यान निश्चल ति केइज राषै;
ध्याननें योग अणयोग्यनी ए कथा, ग्रंथ अनुसार मुनिचंद भाषै. १५ म०

दूहा

सम्यग दर्शन ज्ञान गुण, वलि तीजो चारित्र,
तीन मित्या चेतन भणी, शिवमंदिर प्रापति १
कर्म कठोर ज तोडिवा, कारण एहि ज तीन,
ध्यानसिद्धि गुणत्रय सहित, निफल गुण त्रय हीन २
रत्न त्रय विणु ध्यान जे, चाहै मूरष कात,
कुसुम आकाशे सिल कमळ, वन्ध्या सुत दृष्टांत ३
दरसण जे रुचि तत्त्वनी, तत्त्वकथक ते ज्ञान,
शुद्ध द्रव्य श्रद्धान जे, ते समकित कहवाय ४
सहज थकी उपदेशथी, प्रापतिकारण दोय,
क्षायक उपशम मिश्र ए, समकित त्रय विधि जोय ५
पचेंद्री परयापतो, सज्ञी जीव सुभव्य,
काल लबधि पाम्या लहे, समकित श्रद्धा नव्य ६
सात प्रकृतिनो क्षय थया, क्षायक उपशम वीय
उपशमीया क्षय उपशम्या, मिश्र लहे तव जीव ७

ढाल—धरम सुणी राजा प्रतिबूधो ए ढाल

साभल ज्ञानी समकित वाणी, उपशम आस्तानी सहि नाणी, साभ०
द्रव्य तणा गुण जाण्या पामे, दोष पचीस भणी जे नामे सा० १ आ०
जीवादिक सग तत्त्व पिछाणे, हेयादेयपणो जे जाणे, सा०
जीव अनतो नित्यता धारी, एक सिद्ध बीजो ससारी २ सा०
नित्य अनत चतुष्टय धारी, जन्म मरणग दुष निवारी, सा०
निज आत्मीक स्वभाव वहता, जयवता इम सिद्ध अनता ३ सा०
त्रस थावर आदिक बहुभेदी, जीव ससारी ए अतिपेदी, सा०
भू आदिक थिर पचवा जाणो, वळी अनेक त्रस भेद वषाणो ४ सा०

चौगति भमता बहु दुष देषै, नाम धरे बहु कर्म विशेषै, सां०
विकलेंद्री वलि पांचे थावर, चित्त विना तिरि गति दुष आगर ५ सां०
ज्ञान अंक संकोच वियारी, कर्त्ता भोक्ता ए तनुधारि; सां०
जयवंतौ त्रयकाल अषंडित, जीव कहै तिण कारण पंडित. ६ सां०
एक थकी मांडी दस पर्यंत, जीव भेद जाणौ गतिवंत; सां०
शुद्धनयें करि एक महंत, निज निज भावे द्रव्य अनंत. ७ सां०
जीवराशि सहजे द्विप्रकारी, भव्य अभव्य लषो सुविचारी; सां०
परमातम रिद्धिनें जे वरिस्यै, भव्य कह्या ते श्रीजगदीसै. ८ सां०
कबहि न जाणै आतमकाजै, तेह अभव्य कह्या जिनराजै; सां०
तीन काल ए भवमें वास, न मिटे जनम मरण दुष जास. ९ सां०
भव्य तिके शिवपुरनें योग, दूर करी त्रय कर्म कुरोग; सां०
अनादि संयोगी कर्मने जीव, कनकोपल जिम जाणि सदीव. १० सां०
भव्य भणी भव सांत अनादि, अभव्य भणी ते अनंत अनादि; सां०
जीव समास अने गुणठाण, चवदे भेद मारगणा जाण. ११ सां०
गुणठाणादिक सगलि वाणि, संसारीनी दशा वषाणि; सां०
शुद्धनये करि ए सहु हेय, एक शुद्धता छै आदेय. १२ सां०

दूहा.

अजीव तत्त्व बीजो हिवैं, तेहना पंच प्रकार;
धर्म अधर्म नभ काल, अणु पुदगल पंचम धार. १
शुद्ध रूप पूर्वे कह्यौ, छठो चेतन दर्व;
आस्तिकाय पण काल विणु, भिन्न सहाइ सर्व. २
पांच अचेतन जीव विणु, अमुरतीक अणुहीन;
थिति उतपत्ति विनाश युत, सदाकाल स्वाधीन. ३
वरण गंध रस फरस युत, अणु स्कंध दो भेद;
थूलादिक षड भेद धर, पुदगल वसु अ षेद. ४

धर्म अधर्म आकासत्रयी, थिर अक्रिय अरूप,
सर्वलोक व्यापि धरम, चलण सहाय अनूप ५
मीन चले जीम नीरमे, जीव धर्मसु तेम,
अधर्म द्रव्य थितिकार छे, पथीनै तरु जेम ६
जे देवे अवगाहना, ते कहींये आकाश,
अनतप्रदेशी नित्य छे, लोकालोक निवास ७
नव जीरण पुद्गल भणी, करे जेह ते काल,
परावर्त्तरूपी समय, व्यवहारे सभाल ८
गत आगत व्रतमानता, भजे जाणि ते काल,
असंख्यात रेणुक प्रमित, अस्तिकाय विणु भालि ९

मेघमुनि कांइ डमडोलै रे ए.

धर्म अधर्म नभ कालनें जी, एक अर्थ पर्याय,
पुद्गल जीव भणी उभे जी, व्यजन द्रव्य गिणाय १
भविक जन साभलि, तत्त्व तत्त्व स्वरूप,
जिणथी निज गुण उलसैजी, प्रगटे ज्ञान अनूप २ भ०
जीव भणी पण भाव छे जी, पुद्गलनै दोय भाव,
परमाणिक धर्मादिनें, जी, समझिज्यो करि मत दाव ३ भ०
धर्म अधर्म चेतनतणा जी, छे असष परदेस,
कालाणुक असख्यात छे जी, व्योम अनत कहेस ४ भ०
एक आदि अनता लगे जी, पुद्गल देस विचार,
व्यजन पर्याय स्थूल छे जी, सूषिम अरथ सभारि ५ भ०
बंध तत्त्व चोद छे जी, थिति रस प्रकृति प्रदेस,
ज्ञानावर्णादिक कह्या जी, अष्ट करम दुप देस. ६ भ०

बंध हेतु पण दाषिया जी, मिथ्या अविरति योग;
कषाय प्रमाद बसै करी जी, वाधै कर्मनो रोग. ७ भ०
उत्कर्षण अपकर्षणा जी, तेह प्रकृतिनो बंध;
थिति ते थितिबंध जाणीयैं जी, फल अनुभव रस बंध. ८ भ०
आठ कर्मनी वर्गणा जीं, मेलै बंध प्रदेश;
बंध तत्त्व ए हेय छै जी, शुद्धातम निज देश. ९ भ०
आश्रव संवर निर्जरा जी, दाष्या भावनमांहि;
मोक्ष तत्त्व हिव वर्णवु जी, ते सुणज्यो धरि उच्छाह.१० भ०
अष्ट गुणें करि शुद्ध छै जी, अनंत ज्ञायक गुणषांणि;
नित्य अरूपी सिद्ध छै जी, साधक दस गुणठाण. ११ भ०
लोकालोक देषै अछै जी, समय समयमै जेह;
थिति उतपत्ति विनाससु जी, सिद्ध सुद्ध गुणठाण.१२ भ०
द्रव्यार्थिक परज्यायथी जी, जाणि सरदहै जेह;
स्व पर विवेचन जे करै जी, समकित धारी तेह. १३ भ०
समकित रतन जिणें कह्यो जी, शिव सुषनो दातार;
तप संयम श्रुत सफल छै जी, समकितरे आधार. १४ भ०
समकित बिन किरिया सहु जी, हेय अछै निस्संदेह;
कर्मरोग औषध अछै जी, समकित किरीया एह. १५ भ०
समकितधारी जै अछै जी, शिवपुर साधक सोय;
ज्ञान चरण दरसण विना जी, सिव साधक नवि होय. १६ भ०
अनुपम सुषनो गेह छै जी, भव अंभोनिधि जिहाज;
कर्मवृक्ष परसी समो जी, आपे शिवपुर राज. १७ भ०
हेय उपादेय जाणिनें जी, जाणिइ निजगुण जेह;
नित्य अबाधित पामिसै जी, देवचंद पद तेह. १८ भ०

दूहा.

गुण पर्याय अनत युत, अछै ज्ञान उपयोग,
तीनकाल गत भावनें, जाणै जेह असोग १
कर्मदाहने टालिवा, करिवा निज गुण ध्यान,
लोकालोक प्रवास कर, जिनवर दाख्यो ज्ञान. २
मति श्रुति अवधि पर्याय मन, तीस सतक छतीस विध,
मतिज्ञान तू जाणि ३
अगादिक वहुभेदथी, शब्द रूप श्रुति देपि,
देव नरकनें भवनित, अवधिज्ञान सपेष. ४
गुण प्रत्यय नरतिरियमे, छविह अविधि अपेद,
ऋजुमति विपुलमती गिणौ, मनपर्यय दुय भेद ५

ढाल–चुवलै योवन झिलरयौ एहनी ॥

अनत द्रव्य पर्यायसु, प्रगट क्षायिक गुण धार, भवियण
स्वपर प्रकाशक नित्य छे, निरमल ज्योति अपार १ भ०
शुद्ध ज्ञान आदेय छै, ज्ञायकता गुणगेह, भवि०
भ्रातिना गत कल्पना, निजस्वरूपी गतदेह. २ भ० शु०
लोकालोक समस्त ए, जास अनतम अस, भ०
तिण आगै रवि चद्रनी, ज्योति सहु निरवस ३ भ० शु०
भवदुष सकट टालिवा, कारण समकित ज्ञान, भ०
ज्ञान विना सहु अघ छै, ज्ञान जगतगुरु मानि ४ भ० शु०
ज्ञानमत्रथी वसि हुवे, चल इद्रीय मन नाग, भ०
मोहशत्रु हणिवा भणी, ज्ञान कह्यौ वडभाग ५ भ० शु०
तजि निद्रा आलस सहू, मुनिवर तप जप लीन भ०
सावै केवलज्ञाननें, अनुभवरससु मीन. ६ भ० शु०

अज्ञानी आश्रव करै, ज्ञानी संवरवंत; भ०
कोटि भवार्जित कर्मनौ, क्षणमांहि आणै अंत. ७ भ० शु०
तप जप ध्यान क्रिया जिका, ज्ञान विना सहू झुठ; भ०
ज्ञानी ज्ञानबलै करी, दे वै. कर्मने पूठ. ८ भ० शु०
शिवमंदिर पिण ज्ञान छै, दुरति तिमिर रवि एह; भ०
व्यसन विषय घन वायु ज्युं, तत्त्व दीप गुणगेह. ९ भ० शु०
भव वनमय बन्धन पड्या, क्रोधादिकथी भीम; भ०
मोहनीन अज्ञानथी, रडवडै चौगत सीम. १० भ० शु०
ज्ञानउ य निज गुण लहै, भंजी कर्म नरिंद्र; भ०
शुद्धनीति शिव निग्रहै, देवचंद्र सुषकंद. ११ भ० शु०

दूहा.

हिव चारित गुण वरणवुं, जसु साधे मुनिवृंद;
परपुदगलनी त्याग मति, ग्रहिवा निजगुण चंद. १
सामायिक पण ग्रहभेदथी, चरित कह्यौ जिणचंद;
पंच महाव्रत सुमति पिंण, तीन गुपति गुणवृंद. २
हिंसाऽनृत चोरि विरति, मैथुन परिग्रह त्यागि;
व्रत पंचे जिनवर कहे, अक्षय शिवपुरमाग. ३
भाषा मन काया थकी, चर थिर सगला जंत;
तेहतणी रक्षा करै, तेह अहिंसा संत. ४
तेव हण्या हणीयां विना, अज्ञानीनें बंध;
ज्ञानी संवर भाव युत, सदा हैवै निरबंध. ५
संरंभादिक तीन गिण, जोग करण त्रय वेद;
च्यार कषायथकी गुण्या, हिंसा–अठ सत भेद. १०८ ॥ ६

तजि प्रमाद समभाव भाजि, हरि हिंसा-परिणाम,
हिंसा भवभ्रमकार छे, दुष अनतनौ धाम ७
हिंसक जावै नरकगति, वलि निगोदे जाहि,
क्षमा ध्यान तप फलतणो, नास करे क्षणमांहि. ८

ढाल-चंद्राउलीनी

दान ज्ञान फल सहु गमे रे, हिसारत ते जीव,
अनुमत देता लोकने रे, नरकै करस्यै रीव
नरकै करस्यै रीव रे भाई, नव नव पीडा सहस्यै लाई,
हिंसा करता धर्म न थाय, दुष अनतानत नीहाइ जी. १
सांभल समकिती रे, एतौ दुरगतिनी दातार,
शिव मारग वट पार, दापी केवली रे. आकणी
निस्पृहता महता गमे रे, उदासीन तनु ताप,
हिंसकने सहु वूल छे रे, ए करै कुल सताप
कुलसतापे कीर्ति गमावे, नित प्रति विघन कोडि उपजावे,
सुषमगलने दूर नसावे, गति निगोद लघु आयुष पावे जी २ सा०
शिला चढि जल तरवा करै रे, ते मूर्खनो स्वामि,
धरम बुद्धि प्राणी हणे रे, कहे शास्त्रनो नाम
कहे शास्त्रनो नाम ते गोला, परभवमें दुष सहसै बहुला,
चारित्र ज्ञान दया विणु निवला, नासै हिंसाथी जिन सुकला जी.
सांभली० ३
भलो दया-अक्षर भण्यो रे, पापशास्त्र लप कुड,
जीव हणं ओषध भणी रे, शुभफलने द्ये धूड निरतर.
नासे शील दया शम गुण कर, मोह कषाय वधारे बहुपरि;
हिंसा जीवदया अंतर, जी० ४ सा०

सर्व ग्रंथनो सार छे रे, जीवदयाव्रत एह;
जग माता जग सुषकरू रे, कृषि उपरि जिम मेह.
कृषि उपरि जिम मेह सुहावै, स्वर्ग मोक्ष सुख वीज कहावै;
व्यसन विषय दहवद्ट गमावे, जिन वरया धरम गुण गावै जी. ५सां०

सप्त द्वीप भूदानथी रे, जाय न हिंसा पाप;
स्वर्ण कोडि धनने सटै रे, प्राण तजै न को आप.
प्राण तजै न को आपणो लोक, स्नेहवसै हिंसा करै फोक;
सूल चक्र असि धनुष ए थोक, राषे देव तिके युत सोकजी. ६ सां०

सुष आषे मार्यां थकां रे; पांमै सिवपुर वास;
तो हणि निज परिवारने रे, पामै ते सुष षास.
पामै ते सुप षास समाज, दीन अनाथ हणौ किण काज;
हिंसाथी नभ सम दुष सांज, हिंसा एह कही जिनराज जी. ७ सां०

ज्ञान ध्यान तप जप तणी रे, जीषदया कही माता;
दयावंत इंद्री दमे रे, लहै ज्ञान शिव साता.
लहै ज्ञान शिव सात दयाथी, चित्त कठोर मधुर रसनाथी;
ते पिण दाष्यौ हिंसक साथी, लेज्यो भविक दया जय हाथीजी. ८ सां०

नरक लहै झष तुं दली रे, हिंसाने परिणाम;
संयमथी अधिकी अछे रे, जीवदया सुषधाम.
जीवदया सुषधाम अपारू, जन्म मरण भय तणीय निवारू;
शिवपुर मारग साथ ए वारू, पर तनु पीडा दुष नीकारूजी. ९ सां०

मानव पिण राक्षस समो रे, जे छे हत्याकार;
जीवदया माता समी रे, विद्यानी दातार.
विद्यानी दातार ए वाणी, अभयदान द्यौ करुणा आणी;
आवे संपत जेम न भाणी, ते न कही सकै इंद्र इंद्राणीजी. १० सां०

अभयदान जतु जिण दीयो रे, दीया दान अनेक,
जिम जिम करुणा थिर हुवै रे, आवै तेम विवेक अपारै
कष्ट पड्या करुणा न विसारै, जीवदयाथी सुष जस सारैं,
अनेक भवार्जित कर्म निवारे जी. ११ सा०
भवमें कष्ट कष्ट दोहाग जे रे, ते हिंसाथी होय,
ज्योतिषमैं रवि शशि वडा रे, सुमनसमी हरी जोय,
सुमनसमें हरि जोय सदाई, गिरि मंदिर तरु कल्प वडाई,
देवचंद्र जगनाथ कहाई, तेम दया धर्म्म सहुनी याई जी. १२ स०

दूहा

हिव बीजो व्रत साभलौ, शिवसुषनो दातार,
सत्य वचन पादप तुम्हे, पालो सजम धार. १
जीवतणी रक्षा भणी, कूडतिको पिण साच,
जीव हणाये जिण थकी, दूर टाल ते वाच २
तपथि जे दुष नवि गमै, तेह गमावै एह,
हिंसा आकूलता रहित, सत्य वचन गुणगेह ३
कनो मोनपणौ भलौ, जो बोलै तो सत्य,
भव कारण वच झूठ ए, भवियण टाले नित्य. ४
मिथ्याग्रय कदाग्रही, वदै झूठ खल लोय,
स्याद्वाद सुणि वैण जै, दावै मुनिवन सोय. ५
झूठ वचन विष सम कह्यौ, मारे भव भव एह,
अडगो गुण कोई नही, ववे झूटथी जेह. ६
कहिवा सुणिवो पिण नही, वचन पापनो धाम;
धर्म विरोधक नवि वदे, गुणी वचन वेकाम ७
धन्य तिकेइ ज मुष थकी, सत्यवचन भाषत,
जिन शासन कारिज पड्या, मुषथी झूठ कहंत. ८

ढाल—इडर आंबा आंबिली रे. एहनी.

मोह बसै श्रवणे सुण्या रे, बोल्या दुषनो धाम;
ध्वज कोलक इण संगथी रे, इण भव साधे काम. १
चतुर नर परिहर वचन अलीक, ए तो दुषदायक तहतीक;
चतुर नर प० ए आंकणी.
झूठ कथकनौ मुष कह्यौ रे, नगरनि छार समान;
तिरिय नरय गति मै भमै रे, पामै दुष विण ज्ञान. २ चतुर०
शीतल चंदन चंद्रथी रे, मीठी वाणि सुहाय;
दव दाध्या वलि पालवै रे, वचन दाह न षमाय. ३ चतुर०
मधुर बचन जग प्रिय छे रे, कटुक सत्य पिण छोडि;
मधुर सत्य भाषीतणे रे, दरसणथी सुख कोडि. ४ चतुर०
सुचिवादी नर जे अछे रे, सफल जनम तसु धार;
झूठा बोला मानवी रे, किम उतरे भवपार. ५ चतुर०
व्रत श्रुत संजम भारनौ रे, सत्य वचन छै कोष;
देव दानव न करी सकै रे, ते ऊपरि तिल दोष. ६ चतुर०
आनंद करिए चंद्रयु रे, पाय नमै जसु देव;
रूप जाति धन हीन ज्युं रे, तेहनें एह ज टेव. ७ चतुर०
तापस योगी मूंडीया रे, नागा चीवर धार;
कूड वचन कहता थका रे, ते छे पातककार. ८ चतुर०
वाधे धन परिवार जौ रे, तोय न बोलै अलीक;
अन्य पुन्य सहु तोलतां रे, तो हि न ए सम ठीक. ९ चतुर०
बहिरौ सठने बोबडो रे, ज्ञानहीन मुख रोग;
योनि वली षर स्वाननी रे, पामै कूडनौ योग. १० चतुर०
सातादिक गुणगणतणो रे, कूड केर छे हांणि;
सुहणे संग न कीजिये रे, झूठ वचन दुष षांणि. ११ चतुर०

वदनीक त्रय जगमे रे, वधे द्रव्य परिवार,
सत्य वचनथी सुष लहे रे, ऊचित्रादि अणगार. १२ चतुर०
परकारण वच झूठे रे, बोल्या दे दुष लक्ष,
असत्यवचनथी दुष लह्या रे, वसुराजा परतक्ष. १३ चतुर०
मानव दानव सुरपती रे, ग्रह खेचर जनपाल,
वदे जिन ते पिण कहे रे, सत्य वचन व्रत पाल १४ चतुर०
सत्यवचनथी सुख लहे रे, सत्य वचन सुषषाणि,
सत्य वचन कह्यो प्राणिया रे, देवचन्द्रनी वाणि १५ चतुर०

दूहा.

तीजो व्रत पाल्या विना, शिवमग दुरगम होय
शिवनी इच्छा जो करो, मत ल्यो परधन कोय १
बाह्य प्राण धन जन तणा, दसे हण्या तसु प्राण
गुण विद्या जस सहु गमे, चोरी दुषरी षाणि. २
परधन परआमिष समो, लीधा तप जस नास
गुरू बधव माता पिता, करे न तसु वेसास ३

ढाल—मया मोहि दक्षिणीआणि मिलाइ एहनी.

परधन आमिष सारिषो रे, दुष द्ये पनग जेम
तसु वेसास न को करे रे, तो आदरीये केम १
चतुर नर परिहर चोरीसग ॥
चोरीथी दुष ऊपजे रे, नहि होवे तसुनो भंग २ चतुर०
भ्रात पिता सुत मित्रथी रे, तूटे तेहनो नेह
मानवथी डरतो रहे रे, मृग जिम भयनो गेह ३ च०
पिण एक नींद करे नही रे, मरणथकी भयभ्रत
जो को मुजने जाणस्ये रे, तो करस्ये मुझ अंत. ४ च०

विद्या गरुवाई गमे रे, निज रक्षा नवि थाय;
सज्जन पिण निंदा लहे रे, तस्कर संग पसाय. ५ च०
प्रान करे तृणनी परे रे, चोर भणी सहु लोक;
पंडित पिण मूरष हुवे रे, मुनि पिण पामे शोक. ६ च०
घोर नरक दुःष वैस सही रे, चोरी केरी बुद्धि;
एहनी संगति ते तजे रे, जे चाहे निज शुद्धि ७ च०
सिम्बर नपरन परबतमें पड्या रे, परधन लीजे साहि;
तृण सम पिण परवस्तुनी रे, मत मन धरजे चाहि. ८ च०
शिव सुषनी जे चाह छे रे, राषण चाहे धर्म;
सुख चाहे इण परभवे रे, तो तजि एह कुकर्म. ९ च०
विरति मूल यम साष छे रे, संयम दल सम फूल;
पंडितजन पंषी अछे रे, फल ते ज्ञान अमूल. १० च०
धर्म वृक्ष एहवो दहे रे, चोरी मत मन आणि;
परउपगारी आदरो रे, देवचंदनी वाणि. ११ च०

दूहा.

ब्रह्मचर्य पाल्यां थकां, ब्रह्म लहे योगींद्र;
सप्रपंच ते वरणवुं, धरज्यो ए व्रत चंद्र. १
ब्रह्मचर्य जगे सत्य छे, मोटो महिमावंत;
संयम जीवन एह छे, धर्मवंत गुणवंत. २
दीन हीन आचार विण, राषी सके नवि तेह;
अंत विरस दुःषदाय छे, दसविध मैथुन एह.
तनु शोभा रस सेवना, तीजो नारिसु रंग;
अशुभ संग चिंता विषय, वली देषे स्त्रीअंग. ४
स्माने आदरमान दे, याद करे गतवंत;
नरमी चिंता आगमन, दसम शुक्रसो पात.

किंपाकफल सम भोग ए, आदि रम्य दुष अंत
दोष दशे न्युन भोग तजि, ब्रह्म गहो मतिमंत ६
मैथुन काक प्रकोपना, दोष जीप तजि नारि
जलधारा सींच्यो थको न बुझे कामविकार ७
ग्रीषम रविथी पिण अधिक अछे काम संताप
राख करे तन मन सही, वारवार दुष व्याप ८
इण विष धृस्यो जग तिणी, तजी जोगी ले ध्यान
काम सर्प मद गालिवा, ग्रहि तु गरुड सुज्ञान ९

॥ नदी यमुनाके तीर उडे दोइ पषीया एदेशी ॥

एह मदन महासुर जगत जीतो जिणे,
मोटी जगतो शक्ति अवर सहू अवगिणे.
पीडे ए जगधाम काम सका नहीं,
एहनो कोय न दाव जाय जिणयी वही १
कालकूट महादुष्ट भणी ओषध लगे.
कंदर्प विषनो नाश करी नवि को सके
काम अगनि महाताप व्याप तपीया बहू.
पडे सीया तनु कीच वीच जग ए सह्व २
विसन धार मरुदेशसमे समागमे,
काम ताप तृष व्यापथकी तनु नीगमे.
नरनीक अति क्रूर गरि पातीक लहे
मदन सताप्यां जीव सगडीत सकट सहे. ३
थाये ते मतिहीन दीन मन नित रहे
पीडित कत्रप राग मान किहा नवि लहे
देषत थाये अंध निरुप सप्य हवे.
पडीया कदर्प पाश आसता अनुभवे. ४

सापडस्या सगवेग पीडथी तनु जले,
काम तणा दस वेग ते गका नवि चलै;
पहिला आवे चित बीय दरसण इच्छे,
मेल्हे तीय निसास तूर्ये ज्वर आग छे. ५

पंचम दाहे अंग रंगथी नवि जिमे,
सप्तम मूर्छावंत कि उन्माद आठमे;
नवमे प्राणसंदेह देंह दसमे गमे,
एह उदयथी चित्त तत्त्वमे नवि रमै. ६

मन संकल्प विकल्प जल्पथी ए वढे,
काम अगनि संताप हृदयपद ए कढे;
गिरवर गव्हर मूल गुहाश्रित जनतणा.
मदन उतारे मान इणे जीत्या घणा. ७

कामवशे स्त्रीदास मूंज राजा भयो,
माथ मुंडायो सीस भोज घोडो थयो;
वीरज श्रुत चारित्त घटे इण संगथी,
वालो भवियण चित्त ए कंद्रपरंगथी. ८

बेठां सूतां मित्र कुटुंब मेलापसुं,
तेह ना पामे सुख मदनने तापसुं;
धन लज्जा कुलनास मरण देखे नही,
पीडित काम विकार क्ता लोपे सही. ९

भूत दैत्य ग्रह दुःख जिसो नवि दे सके,
तेहवी पीडा थाय मदन प्रगटे थके;
सुंदर देखी नारी सारमति ते गमे,
का र दह्यो लहे मृत्यु परम गुण ते वमे. १०

सूर ते कायर थाय वृद्ध लघुता लहे,
पंडित थाये मूढ कामवसि दुःख सहे,
वनिताकाजे लाज बहुत कामी करे,
कंद्रपहठथी सूर मरण रणमे वरे. ११
उपेडण भ्रमवृक्ष मदन गजसम अछे,
प्रथम गमावे देह मरण पामे पछे,
चोर करे जिम कोप भोर दिन उपरे,
तिम ब्रह्मचारी देखी द्वेष कामी धरे. १२
हरि हर ब्रह्मा देव इणे मदने नड्या,
छोडि आपणी लाज नारी पाये पड्या,
घडी मात्र पिण छेक विवेक रहे नहीं,
लागा कंद्रप बाण प्राण तजस्ये सही. १३
पामी नरनो देह एह कंद्रप दमो,
छोडी विषय विकार सार निजगुण रमो;
बलतो कंद्रप ताप व्यापयी जग मुणी,
छोडे विषयासंग सरव पंडित मुणी. १४
मारी मदननो मान ध्यान आतम धरो,
पामो भवनो पार सार संयम वरो,
देवचंद नागेंद्र मदनवसि सहु पड्या,
दीठा बहुला दुःख के भवमे रडवड्या. १५

दूहा.

मदमाती ए कामिनी, जे जे साझ काज,
तेहनो थोडो अंग पिण, कहि न सके कविराज १
हृदय दुष्ट मुख मिष्ट छे, ए नारी सहजे नीच,
वज्रझाल यमदाढसम, दुःखदायक भववीच. २

गुणसमूह जावे वही, करतां स्त्रीनी व्रातः
नागिण पाधा दुष करे, याद कीयां स्त्रीजात. ३
अगनिदाहथी पिण अधिक, बाले नारीसंगः
नीच प्रीय चित अति कुटिल, नेह सांझिनो रंग. ४
निज कुल गृह मेंलो करे; धूमसमि ए नारिः
हृदय सठ इत्यादि बहु, दूषण नारीमझार. ५
पिता पुत्र पति लंघिने, रमे अन्यसूं जायः
स्त्री आगे मंत्र यंत्र ए, सगला कूडा थाय. ६
जे कारज नारी करे, करि न सके ते कोयः
तिलभर सुख काजे सहू, कुलक्षयकारक होय. ७
दान शीति महता सुजस, निज हित दूरे जायः
कुप्यो वाव दूष नवि करे, जे नारीथी थाय. ८
नरक लहे वार्त्ता कीयां, स्रीआलींगन टेवः
स्त्री पिशाच छलि नवि सके, सेवति को को देव. ९
मंड्यो जग इक लीलमे, दुसह ज्वाला नारिः
स्त्रीचर्य्याकृत पापनो, कोय न पामे पार. १०

ढाल—पारधीयारी.

वज्रपात विष वीजथी रे, दूषकारण तूं जाणि रे. ए नारी०
चित्त जुदी जुदी कायसुं रे, बोले बीजी वाणि रे. ए नारी० १
ए शिव मारग वट पारी, ए तो धूततणी धूतारी;
ए तो निज गुणनी हत्यारी, तुं तजी दे तुं तजि
एहनो संग रे. ए नारी० आंकणी ॥
ऊंचा पिण पडसी सही रे, स्त्री संगे कुच जेम; ए नारी०
रवि शीतलता जो ग्रहे रे, तोड न स्त्री थिर प्रेम रे. ए नारी० २

देव दानव गति जे कहे रे ते न कहे स्त्री भास रे ए नारी०
नारी जे जाणे तिके रे, थाये स्त्रीनो दास रे ए नारी० ३
पोत चडी सायर तरे रे, दुत्तर स्त्री आचार रे, ए नारी०
पिता पुत्र पतिने ठगे रे, सहेहे ए नारी रे ए नारी० ४
मीनथकी वनगिहथी रे, चपल छे स्त्री मन्न रे ए नारी०
मणि मंत्र को नहीं जिणथकी रे, दाक नजे स्त्री मन्न रे ए नारी० ५
मूढ पतिने मारिने रे, वछे दासशी भोग रे ए नारी०
पुरुष अक रमती थकी रे, चाहे बीयसु योग रे ए नारी० ६
मन्त्र विना नरने ठगे रे, नारी दुपनो गेह रे, ए नारी०
अधम नीच जन जे हुवे रे. नारीने प्रिय तेह रे ए नारी० ७
सहस्र लक्ष योद्धा जिके रे, स्त्री आगल ते दीन रे, ए नारी०
गुणवन्त करिने मानिजे रे, अते ए गुणहीन रे ए नारी० ८
रीस करे जी जी करया रे, गुण ऊपरि दुपकारि रे, ए नारी०
अनाचार करी ढाकले रे, जग वचक ए नारि रे. ए नारी० ९
दाता भोक्ता पति भणी रे, मारे नारी साहि रे, ए नारी०
विषयी जो अमृत हुवे रे, तो स्त्री मन मल जाय रे. ए नारी० १०
वध्या सुत नभपुष्प जो रे, थाये तो स्त्री शुद्धि रे, ए नारी०
जाले दोनु कुल भणीरे, जे मानव स्त्रीलुब्ध रे ए नारी० ११
निश्चल सुरगिरि सारखो रे, कपावे स्त्री तेह रेह रे, ए नारी०
रोगी दुर्बल धन विना रे, छोडे पतिने एह रे, ए नारी० १२
शूरवीर्यो अधिकी वही रे, जनमन भेदन काज रे, ए नारी०
कीय कल्मी नारिये रे, अब धारी [illegible]राज रे ए नारी० १३
[illegible] भमे [illegible] आयमे रे. [illegible] नारी [illegible] रे ए नारी०
[illegible] लहे नहीं भोगवी रे. [illegible] [illegible] रे. ए नारी० १४

रावण पिण नरके गयो रे, लोभाणो इण नारि रे; ए नारी०
नारी भय कलि मूल छे रे, पापशोग दुषकारि रे. ए नारी० १५
नारी दोष अपार छे रे, कविजनथी न कहाय रे; ए नारी०
भववासी जन बांधवा रे, ए नारी० १६
दृष्टे देषे अवरने रे, मुष बोलावे ओर रे; ए नारी०
सांन करे किण औरने रे, मन राषे वीय ठोर रे. ए नारी० १७
सुरपति सुरगुरु नवि कहे रे, नारी दूषण छेह रे; ए नारी०
नारी दुष क्यारी गिणी रे, सुगुण तजो स्त्रीनेह रे. ए नारी० १८
तापलता दुषकाल छे रे, विषय जलधिनी वेलि रे; ए नारी०
नरकपोलि विषनी कुडी रे, परिहरी स्त्रीनी केलि रे. ए नारी० १९
कूडकपटनी कोथली रे, छोडो नारीनी टेक रे; ए नारी०
निजकुलमंडन काहुस्ये रे, शीलवती स्त्री एक रे. ए नारी० २०
विनयवंत पंडित सती रे, पृथ्वीमें स्त्रीकाय रे; ए नारी०
पंडित निस्पृह सम धणी रे, ब्रह्मव्रती मुनिराय रे. ए नारी० २१
अनुभवस्वादी जे हुस्ये रे, ते तजिस्ये स्त्रीपास रे; ए नारी०
देवचंद्र इम जाणिने रे, मति करी स्त्रीवेसास रे. ए नारी० २२

दूहा.

कामदाह मैथुनथकी, कहे उपशमे जेह;
आगि बुझावे मूढ नर, अक्रुतरमथी तेह. १

नरककारर्ण निंद्य छे, नारीनो भग एह;
मूढ काम ताप्या रहे, नारीपंके तेह. २

स्त्रीसुष मनमान्यो तुम्हे, ते अंते दुषगेह;
दृष्द कनकमे यो गिणे, मैथुनसुष तिम तेह. ३

रोगी जेम कुपथ्यने, कहे पथ्य तिम भोग.
फल किंपाक समा अछे, मुह मीठा बहु सोग ४

मैथुन आचरतो थको नर पामे स्त्री लाल
कामी मैथुन सुख कहे, पामी जेम पजयाल ५

अशुचि अंग नारीतणो, चाटे कूकर जेम
कामी कष्ट बहू लहे, क्षय कोष्टादिक तेम ६

ढाल–सांझ थई दिन आथम्यो गुरुनी

कूड कपट घर ए त्रिया, तिनको संग निवार रे भाई,
मैथुन दुखदायक तजी, आतम गुण संभार रे भाई १ ना०

नारी संग तजो तुम्हे, नारी दुखनी खाणि रे भाई
नारी संगे दुख हुवे, ए श्रीजिनवरवाणि रे भाई. २ ना०

पून वहे जसु देहथी, कायो व्रण वहे जेम रे भाई,
तिम स्त्रीजोनि अशुचि धरे, तिणपरे राचो केम रे भाई ३ ना०

मूत्रगेह दुरगंध छे, नारी भग दुख खाणि रे भाई,
मूरख रंग धरे तिहां, नवि राचे इसु जाणि रे भाई. ४ ना०

श्वान रुधिर निज जिम पीये, सुख माने मनमांही रे भाई,
कामी तिम स्त्रीसंगथी, चित्त धरे उछाह रे भाई ५ ना०

नारी योनि अशुचि अछे, नारी दुरगतिमाग रे भाई,
आदर न द्ये को वृद्धने, तो तरुण ऊपर स्यो राग रे भाई ६ ना०

राहूथी जोरावर अछे, नारी अबला नाम रे भाई,
योनिद्वार दुख द्वार छे, पंडित तजिजो वाम रे भाई. ७ ना०

भोगरता तन नारीना, लागे छे सुकमाल रे भाई
मन्त्रीथी कडवी अछे उदयागत रे काल रे भाई. ८ ना०

मैथुन सेवंता थका, जीव मरे लष कोडी रे भाई;
महानिसीथे दाषीया, योनिलिंगने जोडी रे भाई. ९ ना०

दुरगंध मलधर भयकरूं, मंडूकी आकार रे भाई;
चरमरंध्र नारीतणो, राग किसो विण सार रे भाई. १० ना०

सर्व अशुचिमय लिंग ए, दुरगंध नारी गुह रे भाई;
राचे मूरष मानवी, पंडित विरमे जेह रे भाई. ११ ना०

कुथितमृतक गंध जोनि छे, कृमिकुल पूरण एह रे भाई;
क्षर मृत्र झरती रहे, तिण उपर स्यो नेह रे भाई. १२ ना०

ए सरूप जाणी तजे, पंडित स्त्रीनो संग रे भाई;
मदन मोह झीपी लहे, देवचंद्र पदरंग रे भाई. १३ ना०

दूहा.

शिव प्राप्ति चाहे जीके, ते छोडे स्त्रीरंग;
अशनि जेम गिरि गेडवे, तिम ज्ञानी स्त्रीसंग. १

व्रती तपस्वी नारिने, संगे लहे कलंक;
चोर तपीने चालवे, नारि ए निःसंक. २

व्रत तप संयम गुण सरव, स्त्रीसंगे क्षय थाय;
नारीमुष दरसण थकी, संयमगुण गल जाय. ३

संयम तां लगी थिर रहे, जां न मिले स्त्रीयोग;
माषणसम जनमन गले, वनिता आग संयोग. ४

काम वधे स्त्रीसंगथी, ज्युं अपथ्यथी व्याधि;
श्रुतथिर मनने चालवे, नारी वडी उपाधि. ५

तत्वदृष्टि तां थिर रहे, ज्यां न लगे स्त्रीबाण.
तन मन दहे संकल्पथी, आदरियां दुषषाण. ६

प्रथम नारी संगथी नरक देय सीधान
उत्तम व्रत शिवदाय जे स्त्रीसंगे तसु वान ७
चित्र नारी देखी करी, मानव मति मुर्झाय,
दीठी मनमांहे पछे, किकर जिम गुणकाय ८
प्रथमवयथी वेहुनो मन बांधे जिम वेलि,
पछे मूर स्मर अति करु, अंगअंगमे केलि ९
नेह वधे वलि जो गम, चाहे तन मन भोग
हास विलास करन तिन वधे काम वड रोग १०
पछे वियोगे तन तप बांधे अधिकु ध्यान
तिण कारण स्त्रीसंग तजि स्त्रीरागति दुखथान ११

॥ ढाल—हडीरे रे बारण गमला पदमीनी रे एहुनी ॥

श्रुत सयम तप शील दहे सहू रे वनिता अगनि अगाध।
स्त्रीरागे दुख कोन कहीं सके रे, बांधे तिम मन आध १ ना०
नारीसंग तजोये प्राणीया रे, नारी दोषनो कोष,
निच जाति छे ए वनितानणी रे, पिण रागी पिण रोष २ ना०
नारीसंगति चारित्र दूषवे रे, गरुआई रति जाय,
नीच नारीसंगति मोटानणी रे, जगमे निंदा थाय, ३ ना०
चारित्र तरुवरने छेदण भणी रे, नारी संग कुठार
क्षणमांहे सहू जग ए वश करे रे, नारीचरित्र अपार, ४ ना०
स्त्री परि दृष्टि रगी नवि कीजे रे, दृष्टिणी ज्यू जडकीच
एक भाग नागणि डसी भलो रे, पण स्त्रीदरसण नीच, ५ ना०
देव सेव जेहनी नित साचवे रे, नारी पडया तेह,
लहे कलंक तजे चारित्र भणी रे, भमेर्या स्नेह, ६ ना०

मन वशील विनागन तेज छे रे, बूझे अगनि सम जाण;
जेहने दरशणथी जग सुष लहे रे, स्त्री षंडे तसु माण. ७ ना०
मोटा तपसी ध्यानी स्त्री छल्या रे, न चल्यो बल तिलमात
तिण वेगे गज गिरवर पिण वहे रे, तो सी मृगसुत वात. ८ ना०
कुरबक तिलक अशोकादिक तरु रे, स्त्रीथी लहे विकार;
एहवी चंद्रमुषी दिठां रहे रे, को जोगी अविकार. ९ ना०
हाव भाव नव नव करती थकी रे, मृगमद तिलक निलाड;
तीषे लोयण मटके निरषती रे, पंडितने करे बाल. १० ना०
तां लगि थिर मन श्रुत तप ऊपरे रे, तत्वदृष्टि थिर जात;
चंचल नारी लोयण बांणथी मन तन विंध्यो जात. ११ ना०
वनिता अंग बाण मारण भणी रे, वर संयम सन्नाह;
ब्रह्मचर्य थिर कारण वारज्यो रे, नट विट संगति चाह. १२ ना०
काम अंध पापी वंचक जिको रे, उभय लोक दुषधाम;
पंडितने पिण ए पंडित करे रे, परी बूरी छे वाम. १३ ना०
ज्ञान ध्यान तप संयम आगला रे, निसंगी गुणषाण;
ते पण नारी संगतिथी पड्या रे, बीजा के होनाण. १४ ना०
देज्यो पूठ म थाज्यो सामुहा रे, मत देषो स्त्रीरूप;
देवचंद्र सिद्धांते दाषवी रे, नारी भवदुष कूप. १५ ना०

दूहा.

विद्या विनय वधारिवा, उभय लोक सुष काज;
भव समुद्र तरवा भणी, वृद्धसेवना पाज. १
विषय कषाय गमांडिवा, रोगादिक क्षय हेतु;
उपशम बीट पमाडिवा, वृद्धसेवनासेतु. २

निज पर रूप पिछाके, शुद्ध बोध जिण लिद्ध
वृद्ध ति केडज दाषव्या, सितकच यथा न वृद्ध ३
वृद्ध ति के विषयादिके, जसु मानस न पलाय
शीलवत आतमरुची, युवा वृद्ध ते थाय ४
कोई वृद्ध लोभीकके, ज्ञानी युवा मलीन
वृढापे तनु बल घटे, इद्री विषय विहीन ५
वृद्ध वृत्तविण तरुण छे, तरुण चरणयुत वृद्ध,
वृद्ध सेव माना समी, हित श्रुतकारी शुद्ध ६
कर्मयोग माता फिरे, पिण सत शिवसुप गेह,
सत वाणि जिण नवि लही, अध अछे नर तेह ७
साधु सग अमृत थकी, वाधे वृक्ष विवेक,
चित्त कमल बोधन रवी, सयमश्रीनी टेक. ८

ढाल—हरिया मन लाग्यो एहनी

वृद्ध सेववा जगनमें, तत्व न जाण्यो जाय रे, सेवो वृद्ध भणी०
वृद्ध सेव चारित सधे, सायर शशि करपाय रे सेवो० १
आशा अगनि गमाडिवा, वृद्ध सेव गुणराशी रे, से०
क्रोधादि कमल अपहरे, वाधे चारित वास रे सेवो० २
विषय तृषा जाये मिटी, उत्तम सग पसाय रे, से०
ज्ञान भजे थिरता वढे, कातरता दुष जाय रे. सेवो० ३
सज्जन सेवाथी लहे, कुज्ञान सागर पार रे, से०
तप श्रुत सयम ऊपरा, पीत वधे तसु सार रे सेवो० ४
वज्र समो शुभ सग छे, भजन गिरि मिथ्यान रे से०
अज्ञपणो जाये सहु, न रहे तम तिलमान रे से० ५

शुद्धातम चाहे जिके, चाहे जे भव नास रे; से०
ज्ञान वधे जग जय लहे, ने सेवे गुरु वास रे. से० ६
पुण्य वधे किरिया सधे, विनय वृद्ध निरोग रे; से०
आगम अध्यातम सधे, उत्तम गुरु संयोग रे. से० ७
ध्यान सधे गुरुसंगथी, ज्युं हेम पावक आग रे; से०
गुरुनी भय लज्जा करी, वाधे साहस भाग रे. से० ८
भोजन देह संसारथी, विषयथी विरचे तेम रे; से०
जिम जिम गुरु संगति वधे. होवे तपवृद्धि तेम रे. से० ९
नृत्य देषि के कीरतणो, देषाडे निज पूठ रे; से०
गुरु संगत सेव्या विना, जप तप सघलो जूठ रे. से० १०
कामित पूरण सुरतरू, मोटां तणो य सहाय रे; से०
सुपने कुमति न ऊपजे, वलि वच सुगति प्रदाय रे. से० ११
गुरु पद सेवाथी लहे, जे सुख तिसो न अन्य रे; से०
मोह अंधारो टालवा, दीपसमा गुरु धन्य रे. से० १२
पापकर्म बंधन दहे, वाधारे तप भाव रे; से०
विस्तारे निज ज्ञानने, गुरुसेवा शिवदाव रे. से० १३
मूकि संग परपंचथी, मोह तजी निज जाण रे; से०
गृह संयम स्वस्वरूपथी, शिव पुरुषारथ ठाण रे. से० १४
सुषनिधान गृह धाननो, निकलंक सम धान रे; से०
अविकारी जगज्ञायकू, भजि निज आतमराम रे. से० १५
धन्य २ तिके मुनि गणिवरू, श्रुतसंयम भंडार रे; से०
नारी लोयण बाणथी, न भजि मन कुविकार रे. से० १६
प्रज्ञा गेह विवेकनो, उपगारी वच जास रे; से०
निष्कलंक चारित्त धरे, ध्यान करे कर्म नास रे. से० १७

ज्ञानसुधारसपानथी, शांति चित्त गुणधार रे से०
काम विषय जीत्यो जिणे, धन्य तिके अणगार रे से० १८
नारी नयन कुटाग्थी जसु नवि भेदे शील र से०
कामझाल व्यापे नही, ते पावे शिवलील रे से० १९
विषय पिशाची जे गया, मोह नींद गई भाजि रे से०
जो नारी मनथी तजी, तो निज मारग लाग रे सेवो० २०
काम तपावे जगतने शील करे जसु त्राणि रे से०
देवचन्द्र निज ज्ञानसु, मलज्यो कटपमाण रे सेवो० २१

दूहा

परिग्रह केरे भारसु भवसागर निवडति
ते परिग्रह छोय मेल्थी, अतर बाह्य करति १
द्विविध परिग्रह बाह्य छे, अतरग अज्ञान
दस प्रकार पहिलेतणा, चवद भेद बीय मान २
वस्तु क्षेत्र धन धान्य वलि, द्विपद चतुष्पद यान
कुप्य भाट असन शयन, दसविध बाह्य पान ३
निपरिग्रह मूर्छा सहित, तेह परिग्रहवत
तिण कारण मूर्छा तजो, धरि निज आतम सत ४
राग द्वेष मिथ्या दशा, हास्य कषाय निवेदः
ए अतर परिग्रह तजो, जो शिवमार्ग उमेद ५
जती संवरी सुख लहे, आनातणे प्रसाद
मोक्षार्थी परिग्रह तजो, छोडी मनि विषवाद ६
गुण गाले अवगुण चधे, तिण उभय परिग्रह छोडि
पर्सी तो कर्ता नके उभय पयनी जोडि ७
अतरगनी शुद्धि विण, बाह्य शुद्धी ये काम,
काम क्रोध क्रियाथकी पामे नरक कटाम. ८

ढाल—राग गोडी जीव जा गोरी एहनी.

दुष कारण परसंग छे, सुण प्रांणी रे. रागादिकनो हेतु.
समझी जिन वाणी रे;
सत्य क्षमा संतोषता, सु० नास करण धूमकेतु; सम० मन आणी रे;
नाणी तजी धन संग. सम० ए आंकणी. १
देह षेह दुष गेह छे, सु० पंडित जाणे असार; सम०
लोभ वधे धनवृद्धिथी, सु० वाधे कामविकार. सम० २
पर संगे विद्या घटे, सु० उवेडे सुविवेक; सम०
काम भोग अहि विष वढे, सु० परिग्रहकेरे टेक. सम० ३
धन संगे तृष्णा वधे, सु० मोह गांठि दृढ होय. सम०
उपसर्ग सहि न सके मुनी. सु० सुरते कायर सोय. सम० ४
परिग्रह संग न जे तजे, सु० निजगुण घातक तेह; सम०
संजम जप तप श्रुत घटे, सु० परिग्रहसुं जसु नेह. सम० ५
पुण्यकाज मनशुद्धिने, सु० घात करे छे एह; सम०
मूढ न जाणे धर्म थकि, सु० वाधे कर्म अछेह. सम० ६
शीत थाय रवि गीरगिडे, सु० तो संवर परसंग; सम०
कर्मतिक्ष्ण किम हणी शके, सु० जे नवि तजे कुसंग. सम० ७
कामराग प्रसंगनो, सु० धन जडतानो गेह; सम०
लव धन विण जडजन भणी, सु० लावे दोष अछेह. सम० ८
निसंगि नीभय सदा, सु० धनधारी भयवंत; सम०
भीत रहे सुत भ्रातनी, सु० राज चौर स्त्री नित्त. सम० ९
कर्म वधे धन आसथी, सु० भव भव दुष भंडार; सम०
निस्संगी ध्यानी धरो, सु० आतम संवर धार. सम० १०
धन आशा जेहनी टली, सु० ते पामे सुष षेम. सम०
जे सग्रंथ ए जन करे, सु० वाधे दुष जन तेम. सम० ११

निज पाले पर्पी मूया, सु० मन आवे अपसोस, सम०
निस्सगी वन नगरमे, सु० निरभय रहे निरोस सम० १२
लह्यो दुपे दुष राषता, सु० नाश हूवा दुष मूर, सम०
धन काजे गुरुथी लडे, सु० भक्ष्य काज पग कूर सम० १३
हिंसारभ कषायने, सु० करे नरकमे स्थान, सम०
सुपने पिण न करी सके, सु० धनधारी निज ध्यान सम० १४
काल विषय दुष मूल छे, सु० नरक हेतु धन छोडि, सम०
धरि सतोष अमद ए, सु० जो चाहे शिव थोडि. सम० १५
पाप वधे धन सगथी, सु० गया वधे दुष दाह, सम०
इम जाणी आशा तजे, सु० पाप ताप टली जाय. सम० १६
धन पाम्यो स्थिर राखवा, सु० ते नित रहेय विचार, सम०
धरता मन दुष वधे, सु० धन दुष रूप असार सम० १७
स्त्री त्यागी बहु जन अछे, सु० धन त्यागी को एक, सम०
आशा तजी आतम भजे, सु० देवचद्र धरि टेक. सम० १८

दूहा

बहि अतरता शुचि भणी, आशा छोडे सत,
धन तन ममता ज्या लगे, त्या लगे मोह महत १
ज्यां लगि आशा नवि घटे, त्या नवि जाय मोह,
जो आशा दूरे गई, तो पामेस निज सोह २
सयम श्रुत रवि उदय वली, उपसम अने विवेक,
निराशीने स्थिर रहे, शिवसुप लहे अनेक ३
आशा विषवल्लीसमी, आशा छे दुषवास,
भवसागर तट तिण लह्यो, जिण जीती परआश ४
आशायुत मन थिर नहीं, आशा तजि भजि शुद्धि,
न वधे कर्म निराशना, न हुवे तसु भववृद्धि. ५

आशा विणु सहु सत्य छे, श्रुत तप अने विवेक;
पाप तापना नवि मिटे, जो आशानल टेक. ६

ढाल–टोडरमल्ल जितो रे अथवा आदीश्वर तूठा रे. एहनी ॥

निस्पृहता अमृतथकी रे, पावन करि निज चित्त;
भविक मन धारो रे, परिहर आश अनित्य सकल दुष वारो रे. १
जसु मन आशाथी टल्यो रे, तसु फलीयो तरुज्ञान; भ०
आशाथी सुरपति दुषी रे, आश हण्या शिव मान. भ० २
सहू आशा जसु क्षय गया रे, तसु सिध्या सवि काम, भ०
मन कषाय इंद्री दमे रे, नीरीसी सुषधाम. भ० ३
कासुं कहीये अतिघणुं रे, आशा दूर निवार; भ०
निराशी जन पूज्य छे रे, उभय लोक सुषकार. भ० ४
पर आशा भवभयकरु रे, आश गया शिवसार; भ०
ए आलोची आचरो रे, जे जाणे हितकार. भ० ५
चलचितकारि जन विसरे रे, तो किम द्ये शिव एह भ०
मारू विषय अरु त्यागनी रे, संकट घटि घटि गेह. भ० ६
अवसर लहि मुनिवर छले रे, आश पिशाची एह; भ०
सहू जग आशा जीपीयो रे, ए जीपे धन तेह. भ० ७
राजसार पाठकरि धूरे, जैनागम गुणजाण; भ०
ज्ञान धरम मानसतटे रे, राजहंस सुप्रमाण. भ० ८
तासु शिष्ये इम उपदिश्यो रे, देवचंद्र सुषदाय; भ०
प्रीतिवंत गुण आगरू रे, कुंभकरणसु सहाय. भ० ९

इति श्रीज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे पंडितदेवचंद्रमुनिविरचिते ढालभाषाबंधे ध्यानसिद्धौ रत्नत्रयपंचमहाव्रतवर्णनो नाम द्वितीयः षंडः संपूर्णः ॥ २ ॥

दूहा.

दरसन ज्ञान चरित्रमय, मिलियां शिवपुर जंत;
षीर खड घृतसु मिल्यां, अनुपम स्वाद लहंत. १
तिण तिय षड सुण्यां थकां, वधस्ये आतमज्ञान,
सावधान थई साभलो, तजि दूरमति अभिमान २
गुण गुरुताग्रह देवनत, ज्ञान रूप व्रत पच,
आदरज्यो पडित तुम्हे, अक्षय सुष गुण सच ३
भावना दाषी व्रत तणी, शुद्ध भणी पचवीस,
ईर्यादिक पण समिति त्रय, गुपति कही जगदीस ४
चैत्य देव गुरु वादवा, जावतां वड भाग,
रवि फरस्यो जन बहु वह्या, मुनि चाले तिण माग. ५
दृष्टि देषि मग चालता, उपयोगे अप्रमाद,
ईर्यासमिति तणो कह्यो, धारक मुनि आह्लाद ६

ढाल—दान उलटे धरी दीजीये एहनी ॥

साधुगुण एहवा साभलो, निरदलो कर्मदल मूर रे,
चोर कामी ठगे आदर्यां, ते तजो वचन अति क्रूर रे साधु० १
दोष दस रहित मुनिजन वदे, शुद्ध भाषा भय टाल रे,
कर्कश दुष्ट कटु निष्ठुर, कोपकारी दुपकाल रे साधु० २
दीन अतिमान अतिभय करी, भूतहिंसा करी जेह रे,
दोष दस वचनना ए तजी, सत्य भाषे गुणी तेह रे साधु० ३
षोडश दोष उद्गमतणा, सोल उत्पादना दोष रे,
च्यार अगार दूषण कह्या, दोष दस मलतणो पोष रे. साधु० ४
दोष छ च्यालविणु मागिने, लेय आहार अणगार रे,
कालनिटा निज योग्य ते, एषणासमिति सुपकार रे. साधु० ५

उपकरण शयनगृहे, देषीने वली पडिलेह रे;
साधु गुणषाणने ते कही, समितिआदान सुप गेह रे. साधु० ६
मूत्र श्लेष्मादि मल नाषतां, भूपरी सहज उपयोग रे;
सुमति उतसर्ग नीते धरे, मुनिजन नित्य निरोग रे. साधु० ७
छोडी संकल्प रागादिना, वसि करे चित्त निज सत्य रे;
सूत्र सिद्धांतमे प्रेरवे, मनतणी ते मनोगुप्त रे. साधु० ८
संवर मौनधारी यती, गोपवे आपणी जीह रे;
स्थिर करी देह उपसर्ग सहे, कायगुप्ति मुनीसिंह रे. साधु० ९
व्रततणी आठ माता कही, संयमवृद्धिने काजरे;
एहवो चारित आदरे, शुद्धमति मुनिराज रे. साधु० १०
पंडित उपशम आदरो, पामि पांचे समवाय रे;
त्रिभुवन पूज्य भजी एह ल्यो, शुद्ध आतम सुषदाय रे साधु० ११
मुक्तिनो हेतु हितु जीवनो, एह दाष्यो जिनराय रे;
जे गया शिवजिके जायस्ये, जाय छे तास ए दाय रे. साधु० १२
आतम गुण जाणवो ज्ञान ते, दरसण चारित्त तेह रे;
आतम जाण्याथकी मुक्ति छे, विगर जाण्या भवगेह रे. साधु० १३
दरसण ज्ञान चारित्रनो, धाम छे ए निज देव रे;
आतम जाण्या पछी शिव भणी, चाहवी सी परसेव रे. साधु० १४
सिव भव कारण एहनी, शुद्ध अशुद्धता चाल रे;
शेष संयोग सहु कर्मना, आय मिल्या लहि काल रे. साधु० १५
आतम अनुभूतिथी सिद्ध ए, साधवा योग्य पिण एह रे;
आतम इण जाणवाने कह्या, ग्रंथ सघला गुणगेह रे. साधु० १६
छोडी संकल्प निज रूप ग्रहे, अनुभवो निज चिदानंद रे;
इंद्रिय उपसम्यां पामस्यो, आतमदर्शी गुणचंद रे. साधु० १७

अक्षर शुद्ध अमूरती, देव निज सेव नितमेव रे,
दीपतो आतमज्ञानसू, कल्पनातीत निज देव रे. साधु० १८
शुद्ध आनंद चिद्देह जे, नित्य अनंत निरोग रे,
जग तजि ए वस्तुना रागीया, तेहथी जास नही जोग रे. साधु० १९
त्रिभुवन हेय छे जेहने, हेय छे सर्व परभाव रे;
लोक अलोकने देषतो, अनुभवे निज शुद्ध भाव रे. साधु० २०
परम आतमतणे ज्ञानसू, नवि लपे ते किसी रीत रे,
अनुभवो आत्म अनुभूतथी, परम आनद गुणमीत रे. साधु० २१
जन्मभ्रम मूक साहस धरी, धारज्यो शुद्ध गुण धाम रे,
शुद्ध निश्चय गुण आगलो, राजविमल सुष ठाम रे. साधु० २२

दूहा.

सयम उपशमने दहे, एह क्रोध वड आग,
ज्ञानादिक गुण कोसने, दूर गमावण लाग. १
सयम अमृतने करे, विष सम एह कषाय,
ज्ञानादिक गुणने दहे, एह क्रोध दुषदाय. २
क्रोध दहे निज धर्मने, दहे आगि तरु जेम,
आप तपे पर तापवे, क्रोध अव गतपेम. ३
क्रोधे मुनि नरगे पडे, उभय लोक दुषदाह,
क्रोधे द्वीपायन ऋषी, कीयो द्वारिकादाह. ४
पाप नरक अपकारनो, कारक गुण रिपु रोष,
काल अनादि कषाय ए, राहु समो दुष पोष ५
क्रोध जीप शम ग्रहो, लहि जैनागम त्राण,
क्रोध तजो समजल भजो, सयम गुणनो ठाण. ६
कीये मुनिवर क्रोधने, उभय लोक दुषगेह;
रोषपोषने टालवा, भजिज्यो भावना एह. ७

ढाल—ओलगडीनी ॥

भावन भावन भवियण एहवी भावज्यो रे, भाजे भवदुष जेह;
करम करम पीडजे मुझनी ना गमे रे, शुद्ध सित्र मुझ तेह. भावन० १
घातक२ जे छे आतम गुणतणा रे, तीयां पोष्यां किम सुष;
उपशम२ आदरी तजि क्रोधादिने रे, जे शिवगम अभिमुष. भा०२
कुवचन२ परना मुषथी सांभली जी, मुनिवर ध्यावे एम;
न हण्यो२ मुझने जो हणीयो इणे रे, पिण न लीया गुणहेम. भा०३
संयम२ गुणने दाहे क्रोधए रे, तो सी जीवत आस;
भोगवता२ निज कीधे कर्मने रे, सुष दुष कारण तास. भा०४
मुझने२ रोष वधे तो फेरस्यो रे, पंडित अने अजाण;
उदय२ करम आये दुष उपजे रे, रोष करे नवि जाण. भा०५
भोगवि२ पूरव दुष मन स्थिर करी रे, मत कर को आलोच;
उपसम२ नास करे अति क्रोधथी रे, अज्ञानी अति सोच. भा०६
संकट२ अति आयां रूसे नही रे; जाणि कर्मनो घेर;
कंटक२ पीड्यां जो उपशम तजे रे, तो क्रोधी स्यो फेर. भा०७
बंधन२ क्लेश मिल्यां सषरूं थयूं रे, थास्ये कर्मनो छेह;
पूरव२ उपसम ज्ञान परीषवा रे, आव्या छे दुष एह. भा०८
उपसम२ छोड भजे जे क्रोधने रे, तसु स्यो ज्ञान सुजाण;
निर्जर२ करवा सहेजे कर्मनी रे, सहो परीषह बाण. भा०९
पंडित २ क्रोध करे पर ऊपरे रे, तो स्यो मूरष दोष;
मानव २ मातो जे संसारमे रे, रागद्वेष दुष कोस. भा० १०
पर प्रति २ बोधक गुण तुममे नही रे; पिण मत मूझो आप;
पराविष २ हर न सके पिण आपने रे, कोण करे विषवाप भा० ११
मानव २ दोषी परी रूठा थई रे, अरु धरतां उपसम भाव;
उत्तम २ सुष दायक ते ओलषी रे, आदरिज्यो धरि चाव. भा० १२

तोषण २ परनेके तन धन तजे रे, रूसे किम तूं आज,
उपसम २ धार्या आतम शिव लहे रे, रोषकीयां दुषराज भा० १३
मरण २ कष्ट आर्यां पिण साहसी रे, धरे क्षमा शिवकार,
करण २ परीक्षा कसवट ए मिली रे, इम जाणी शम धार भा० १४
उपसम २ शुद्ध ति कोइज जाणज्यो रे, क्रोध भेल जिहां नाहि,
उपसर्ग २ आया क्रोध जिको करे रे, तसु सबलो तप जाहि भा० १५
चदन २ वासा सम करि जे गिणे रे, शिव साधक मुनि तेह,
कारण २ योगे उपसर्ग उपने रे, जसु मन मल न धरेह भा० १६
पूरव २ कृत ए निर्जर थाय छे रे, कर्म शुभाशुभ रूप,
नरक २ छोडावी जे दे शिवपुरी रे, धरि ते उपसम मूप भा० १७
करम २ सुसे भवभयसक नसे रे, जिणथी ते धरि टेक,
दुषनी २ आगी तपे ससारमे रे, वसता दुष अनेक. भा० १८
उपशम २ ज्ञानहिन रिपु जैनना रे, मोही निर्दय बुद्धि,
मुनिवर २ दोषी जो जन है नहीं रे, तो साधु लहे किम सिद्धि. भा० १९
मुनिवर २ आतमध्यानी भव तजे रे, शुद्ध द्रव्य पिहचान,
उपशम २ भाव भजे तजि क्रोधने रे, सुष दूष सरिषा मान भा० २०
करम २ षपावण मुनि तप बहु करे रे, दुक्कर कष्ट अलेप,
सहज २ उदे आयां षपवा भणी रे, षमी हितकारि देष. भा० २१
धरम २ वृष दाहक दव रोप्पए रे, नासाडे सनीत,
उपसम २ भजन निश्चल करज्यो सहू रे, देवचंद्र सुमीत. भा० २२

दूहा.

ईश्वर कुलना मद थकी, पामे नीची जात,
रतन विवेक न ले सके, जसु मन मदनी तात १
अहंबुद्धि गिरिशिर चढ्या, लोपे कुळ मरजाद
गमे विवेक शीलादिने, मान बडो परमाद, २

ज्ञान नसे अज्ञान दे, लोपावे गुरु नीत;
इच्छा चाले विनय विणु, माने उद्धत चीत. ३
निज चारित्त मैलो करे, नीचो झले काम;
गुण मानि तेहज षरो, जेह लषे निजराम. ४
आपा परघातक अछे, मान सर्वथा हेय;
रंक करे राजा भणी, देय विडंबन केय. ५
मसे मनोरथ चिंतवत, गाले कीरतिवेल;
हणि त्रिवर्ग निज गुण हणे, मानव मदनी केल. ६

॥ ढाल—एक लहरि ले गोरलो एहनी ॥

गृह अपयश शस्त्र ज्ञाननो रे, पाप षाड ए माय रे;
निजगुण शिवपुर अरगला रे, शील दाहक दुषदाय रे. १
माया ममता परिहरो रे, कुगति कुमतिनी षाण रे;
मायायुत व्रत अफल छे रे, सुपनराज जिम जाण रे. माया० २
मायायुत किरिया करे रे, राषे शिवनी चाह रे;
मायावी न टिकी सके रे, पल एक शिव मग माहि रे. माया० ३
साधु ति केइ जस लहीय रे, जेह हवे गतसाल रे;
भयकारी पंडित कह्यो रे, माया मोटो साल रे. माया० ४
अपजस दे दुरगति करे रे, उभय लोक दुषकार रे;
चितमे सोच रहे सदा रे, वाधे करम असार रे. माया० ५
संयम मारग नासवे रे, भांजे शिवनी चालि रे;
बकसम वंचक जग ठगे रे, परभवनौ भय टालि रे. माया० ६
लोभ न करज्यो मानवी रे, लोभ गमावे सोभरे, "ए आंकणी"
कष्ट करी भव नीगमे रे, करतो नव नव लोभ रे. लोभ० ७
पेट भराई नवि मीले रे, तो पिण चाहे राज रे;
मात पिता गुरुने हणे रे, लोभी धनने काज रे. लोभ० ८

जे जे कारण नरकना रे, ते सब लोभथी थाय रे,
श्रुतमे लोभ बुरो कह्यो रे, निरलोभी शिवराय रे लोभ० ९
रोष दमो उपशमथकी रे, मद दमि मार्दव सोभ रे,
आर्जवथी माया दमो रे, निरपृहताथी लोभ रे लोभ० १०
योग मिल्या विण नवि करे रे, क्रोधभणी ते साधु रे,
क्रोधादिक जित्यां पछे रे, मोक्षमार्ग ते साधे रे लोभ० ११
निज अनुभव प्रगट्यो हवे रे, पामे आतमसिद्धि रे,
ज्वर कषाय जीती लहे रे, देवचन्द्र पदऋद्धि रे लोभ० १२

दूहा.

इंद्रिय गण जीत्या विना, नवि उपशमे कषाय,
क्रोधादिक जय कारणे, अक्ष दमे मुनिराय १
इंद्रिय विकरथायी वधे, क्रोध गहन वड व्याधि,
तिम तिम इंद्रियसुख लहे, तेम वधे मद आधि २
रिपु कषाय जयचाह जो, तो पहिला इंद्रिय जीति,
अक्ष कषाय निग्रह भणी, एह अपूरव रीति ३
इंद्रिय सुख दुखसम अछे, सर्व क्लेशनी साधि,
इंद्रिय गज मत रथ थकी, जोडि ज्ञान गुण बधि ४
इंद्रिय अहि विष टालिवा, मंत्र वीरजिन वाण,
संयमपंजरमे तवे, इंद्रिय हरि निज नाण ५
शुद्ध बोध जसु मन अछे, तेहने न इंद्रिय जोर,
तेह न जाणु केण विधि, राचे मूरख चोर ६
जिम जिम इंद्रिय वश करे, त्यु त्यु वाधे ज्ञान,
विषय जेम रति आतमसु, कीधा शिवसुख मान ७
मोह तृषा दुख वीजए, अक्ष सौख्य मन धारि,
नरक पथ सबल समो, साटक शिवपुरद्वारि. ८

ढाल—मारो मन मोह्यो इण डूंगरे. एहनी.

इंद्रिय विषय तजिजो तुम्हे, विघ्न आपद भय बीज रे;
अक्षसुष इंद्रिय ग्राह्य छे, कारवे पग पग धीज रे. इंद्रिय० १
विषय जग वंचिवा चतुर ए, दक्ष ए नरक दुषदेण रे;
सहज चंचल विषय दुषसमा, भाषीया जिनवर वेण रे. इंद्रिय० २
लालच दोष अति विस्तरे, विषयथी जाय विवेक रे;
विषयनेइं विषतणो अंतरो, मेरु सरिसव समो छेकरे. इंद्रिय० ३
रहित संवेग कामी पडे, जगतमे जन्म दुष जाल रे;
अक्षय उपशम नवि धर्यो, तो आत्म कीयो दुषमाल रे. इंद्रिय० ४
ध्यान शिव अक्ष जीतां लहे, साधु अध्यात्म सुष जेह रे;
आतम आधीन अनंक्षहू, निरवधि अनंत अछेहरे. इंद्रिय० ५
साधु सेवे दमे अक्षने, आतमथी आत्मने भाव रे;
तेह अध्यात्म सुष आत्मने, शुद्ध आदेय शिवदाव रे. इंद्रिय० ६
अक्ष तस्कर मनग चढ्या, हरे माणिक्य निधान रे;
विषय रमणीक आदेय छे, अंत्य विषपाक समान रे. इंद्रिय० ७
नीरथी जलधि शिषि इंधणे, तृप्ति पामे सुरजोग रे;
तो हि कामी विषय भोगथी, नवि लहे तृप्ति जगलोक रे. इंद्रिय० ८
विषय तुझ वंचिवा आवीया, थिर मन विषय तुं वंचि रे;
दुरगति ताप दुष गेह छे रे, विषय तजि अनुभव संचिरे. इंद्रिय० ९
काम संकल्प जिम जिम वधे, वधे तृष्णा तिम व्याधि रे;
मोक्ष लहे नही तां लगे, जां लगे अक्ष उपाधि रे. इंद्रिय० १०
आपद बीज महा निंद्य छे, कटु विपाकी दुष ठाण रे;
मूकी परपंच इंद्रियतणो, विषय सुष दुष सम जाण रे. इंद्रिय० ११
दुषनिधि धाम उपाधिनो, विषयथी जसु शिव चाह रे;
शुद्ध नागेंद्रना दांतथी, कुड्य षणण उच्छाह रे. इंद्रिय० १२

सर्व इंद्रिय सुख मिलणथी, लोभ वाधे निखेद रे,
दुःख कुहर नरकदायक विषे, तेथ रडे बटो पेदरे इंद्रिय० १३

रसन वश मीन गज फरसथी, नयन पतग वली भृग रे,
गंधपेमे भृग गीतथी, ते लहे मरन भग रे इंद्रिय० १४

मरण द्ये अक्ष इक मोकले, तो किसी सर्वनी वात रे,
कूर्म जिम अक्ष जे संवरे, तसु हुवे कर्मनी घाति रे इंद्रिय० १५

विषयथी जसु मन ऊभग्यो, ते लहे सदेजे सुखकंद रे,
श्रीजिनवाणी अनुसारथी, एम भाषे मुनिचंद रे इंद्रिय० १६

दूहा.

गुणमणि सागर सर्व गत, ए आतम साक्षात
सरव जाण दरसी सकल, परम निरंजन जात १
कर्म उदयवश आतमनो, रूप न जाणे तत,
वीतराग सुप आगले, सुखरूप भाग अनंत २
निर्मल गुण निज अनुभवो, मूकी विषय विकार,
ज्ञायक निज गुण तणा, अनंत चतुष्टय धार ३
शक्ति अनंत अगम्य छे, आतप अचल प्रताप,
कर्म खपावी ध्यानथी, परमातम हूं आप ४
निज गुण विकले ध्यानथी, सर्व कर्म क्षय जाय;
सर्व द्रव्य निज देखवे, गुणसागर कहेवाय ५
शुद्धातम चिद्रूप ए, सकल तत्त्व शिर एह,
ध्यान तत्त्व ए आतमा, अणिमादिक गुणगेह. ६
निज स्वभावथी ऊपनो, अनंत ज्ञान सुखवास;
इम सकल दर्शी ए, आतम गुण भंडार. ७

पांचमतपत्रिध सांभलो.

हिवे आतम गुण सांभलो, जिम पामो निजरूपो रे;
द्रव्य चतुष्क निज लही, बहि अंतर सुष भूपो रे. हिवे० १
लहि स्वभाव त्रय गुणतणो, जसु आवरण विनासी रे;
शुक्क ध्यान ज्वाला वले, निज अतिशय शक्ति विकासी रे. हिवे० २
अनादि संबंधी जीवथी, त्रिविध कर्मनो बंधो रे;
तेह षपावी मूलथी, पास्यो निजगुण सिंधो रे. हिवे० ३
अनंत चतुष्टय प्रगटीया, तम नासे जिम सूरो रे;
आतम परमातम हिवे, ए शिव तत्त्व सनूरो रे. हिवे० ४
अविरत प्रभा प्रकाशथी, दीपे जिम जग भाणो रे;
शूरवीर क्षत्रीय समो, सरव सूर्सीनो राणो रे. हिवे० ५
एरावण हाथी चढ्यो, वज्र शस्त्र धरि हाथे रे;
सुर नर सुरपति ए सही, इंद्राणीने साथे रे. हिवे० ६
सर्व जीव सुष दुष लहे, जेत्ता इण जगमांहे रे;
पुण्य पाप रचना सहू, गरुड तत्त्वने मांहे रे. हिवे० ७
गगन गोचर भूषण अछे, जय विजय भुजंगो रे;
अनंत रूप परमीस ए, नभ चाले सुचंगो रे. हिवे० ८
रोगज्वर विषकाकनी, ग्रह किंन्नरने यक्षो रे;
मारि अरी द्विप हरि अनल, इत्यादिक भय लक्षो रे. हिवे० ९
यंत्र मंत्र दैत्यादिनी, टाले भीत समस्तो रे;
गारुड सूद्रारूप ए, आतम रूप प्रशस्तो रे. हिवे० १०
सरव तत्त्वनो सार ए, समय सार ए थायो रे;
कर्म नाग विष एह रे, निज अनुभव पंष वायो रे. हिवे० ११
अविनाशी अविकार ए, रतन त्रय गुण भूपो रे;
निज आतमसु ए ग्रह्यो, गरुड तत्त्वनो रूपो रे. हिवे० १२

चमत्कारी सहु जगतणो, कुसुमसायक ए कामो रे,
शिवकामी जे मुनि कह्यो, अतर आतम रामो रे हिवे० १३
चचलभ्रूनी चालना, सुंदर रूप सहाया रे,
स्त्री समूह रागी हूवे, ते ए चेतन राया रे हिवे० १४
अविनाशी नित चेतना, ज्ञान ज्योति निज नारी रे,
तसु चाहक ए आतमा, काम तत्त्व गुणवारि रे हिवे० १५
ऋतु वसत फूली सहू, वनराय अढारह भारो रे,
सरस मलय वाजीया, कदर्प्प उदयना कारू रे. हिवे० १६
सुदर लील विलासनी, रूपवत गुणकारी रे,
मुनिजन मनने चलाविवा, नारी धूतारी सारी रे हिवे० १७
रोचक शिवपुरमग तणी, सहु जगनी जयकारी रे,
नारी गुणधारी थयी, काम तत्त्व गुण चारी रे हिवे० १८
जे जे गुण छे जगतमे, जे गुण इण तनमाहे रे,
ते सहु इण आतमतणा, गुण दाष्या ग्रथ निवाहे रे हिवे० १९
तिण ए आतम दाषीयो, गुणसागर सदा स्वरूपो रे,
इद्रियमे जे सुपतणो, तिण काम तत्त्वनो भूपो रे. हिवे० २०
देव मानव अहि शक्ति जे, जे जग विस्मयकारी रे,
ते सहु आतम शक्ति छे, तिणआतम ध्यान धारो रे हिवे० २१
शक्ति अनंत चेतनतणी, दाषे कूण शक्ति सरूपो रे,
नव नव ध्यान पदे चढे, कटे करमनो कूपो रे. हिवे० २२
चरणतले जग शक्ति छे, जसु ज्ञान ज्योतिने आगे रे,
जगपति जगकारण गुरु, निजज्ञान करीने जागे रे. हिवे० २३
कर्म मले मेलो थयो, स्वेछाइ कर्मने वंधे रे,
नवि देषे निजरूपने, अज्ञान पटलथी अधे रे. हिवे० २४

राग अज्ञान वशे पड्यो, पामे भव दुष अपारो रे;
दृषद कंचन सम न मानो तो, बंधे बहु कर्मनो भारोरे. हिवे० २५
सुष दुष परिणामे लहे, इष्ट अनिष्ट प्रभावे रे;
काम अर्थ लालच लगे ए, नव नव संकट जन पावे रे. हिवे० २६
काम अरथ लालच तजो, ध्यावो जिनधर्म स्वभावो रे;
निज अनुभव रस आदरो, ज्युं देवचंद पद पावो रे. हिवे० २७

दूहा.

हिवे केइ यम नियम वली, आसन प्राणायाम;
प्रत्याहारने धारणा, ध्यान समाधि वसु नाम. १
यम नियमा द्वय टालिने, के अषे छे अंग;
के मुनि बीजा छ कहे, उत्साहादिक चंग. २
ए कारण मन थिर भणी, थीर मनथी ह्वे सिद्धि;
क्लेशहीन मुनि मन दमे, यम नियमादिक लद्धि. ३
अष्ट योग मन थिर करी, शिवमग साधक थाय;
मन थिरथी शिव लहे, ... ५
मन विकार रुंध्या लहे, मुनि अक्षय सुष छोडि;
इण कारण मन वश करो, ज्युं नासे दुष कोडि. ६
चित्त दम्यां निज गुण वधे, जन्म मरण भ्रम जाय;
मन विणु जीते अफल सव, मन जीते शिव थाय. ७

ढाल—नायकानी.

कुसल लाभ मन रोधथी रे, आतम तत्त्वनो लाभ रे. सुगुण नर०
आपा पर वंचे जिके रे लाल, निजमन थिरता साह रे. सुगुण० १

मन गज वस कर ज्ञानसु रे लाल, मन वशि विण शिव नाहि रे, सुगुण०
ध्यान सिद्ध मन शुद्धथी रे लाल, भाजे भव दुष दाह रे सुगुण० मन० २

तिन भुवन तसु दास छे रे लाल,जसु वशी मनमातग रे, सुगुण०
मुक्ति गेह ते जन लहे रे लाल, जसु मन छे नि सग रे सुगुण० मन० ३

जिम मननी शुद्धि हुवे रे लाल, तिम तिम वधे विवेक रे, सुगुण०
शिव चाहे मन वश विना रे लाल, मृगतृष्णा सम भेक रे सुगुण० मन० ४

ज्ञान ध्यान तप जप सहु रे, मन थिर कीवा साच रे, सुगुण०
जग दुष दायक मन अछे रे लाल, विषय ग्राममे राच रे सुगुण० मन० ५

ज्ञान पराक्रम फोरिने रे, वश करी मन गजराज रे, सुगुण०
नव वन मन कपि जिण दम्यो रे लाल, तसु सिद्धा सवि-काज रे सुगुण० मन० ६

मन गज वश न करी सके रे, तसु ध्यानादिक पेह रे, सुगुण०
जे न सधे श्रुत तप थकी रे लाल, मन थिर साधे तेह रे सुगुण० मन० ७

अनत कर्म चउ भेदना रे, मन थिर किवा जाय रे, सुगुण०
जसु मन वश ते शिव लहे रे लाल, दटो रयाने काय रे सुगुण० मन० ८

श्रुत तप यम मन वश विना रे, तुस पटन सम जाण रे, सुगुण०
मन वश विण शिव नवि लहे रे लाल, मन वशे शिव सुष टाण रे सुगुण० मन० ९

मन वशे निगुण गुण लहे रे, जिण विण सहु गुण जाय रे; सुगुण०
तिन भुवन जीत्या मने रे लाल, मन जयकारको थाय रे.
सुगुण० मन० १०

श्रुतधर पिण मनवश विना रे, नवि जाणे निज रूप रे; सुगुण०
शांति विषय विणु मन करी रे लाल, मुनि थाये शिव
भूप रे. सुगुण० मन० ११

स्वर्ग मृत्यु पातालमे रे, द्वीपउदधी गिरसीस रे; सुगुण०
तीन लोकमे नित भमे रे लाल, देवचंद्र गतराग रे. सुगुण० मन० १२

दूहा.

तजे विकल्प मन थिरसु रे, शुद्धातमनो वास;
थिर मन पिण निज ज्ञानसुं, षंडे मोहने पास. १
शांत चित्त रागादियुत, भ्रमसागर निवडंति;
ते उद्यम करी बापडा, जिणथी मोह गडंति. २
रागादिक स्वभावथी, हणे ज्ञान गुणराज;
त्यागी योगी ते छले, रागादिक भवसाज. ३
शंकित कंषित मूढ चित, रागादिकथी थाय;
अति यतने करी वारता, रागादिक नवी जाय. ४
रागादिक जीत्या विना, देहकष्ट वे काम;
राग द्वेषने जीपने, मुनि पामे शिवठाम. ५
मोहराग भ्रम क्षय गयां, मुनि देषे निजरूप;
शिव इच्छक षग ज्ञानथी, हणे मोह भव भूप. ६

॥ ढाल—मेलो थापि चल्यो वलि रावण. एहनी ॥

मोह दमो निज आतम बलथी, निश्चल मने करि सिंह रे;
ज्ञानरोह गिरथी चेतनने, पाडे मोह अवीह रे. मोह० १

रागद्वेष तजि शिव सावन भजी, मुक्ती जनम क्षय भर्म्म रे,
रागद्वेष वच्यो ए चेतन, नवि जाणे निज ब्रह्म रे मोह० २
रागनास चित थिर वशिवाथी, मुनि जाणे सहु ज्ञेय रे,
वीतराग आनदने आगे, त्रिभुवन आनद हेय रे मोह० ३
घटे अज्ञान राग अभावे, राग वधारे ताहि रे,
सहज आतमसुष आगले भवसुष, अनंत भाग पिण नाहिरे मोह० ४
रागद्वेष अनादि महारिपु, भवदुष सतति वीज रे,
रागी बंधे हरे विरागी, जिनवच पिण एहिज रे. मोह० ५
ज्ञान भानु आतापथी सोषो, रागद्वेष ए नीर रे,
रागद्वेष अणु मात्र थका पिण, नावे ज्ञान सुधीर रे मोह० ६
नित्यानंदमयी शिवसंतति, पामे श्रीवीतराग रे,
एक ठोड दो थाय अवश्ये, जिहा द्वेष तिहा राग रे मोह० ७
ज्ञान राज्य चाहे मानव जे, ते छोडे रागने द्वेष रे,
पष विना जिम पंषी निबलो, तिम मन विणु रागद्वेष रे मोह० ८
रागद्वेष तरू मूल नीकंदी, वसि करि मनि कपि चाल रे,
मोहथी वाधे रागद्वेष तिण, मोह भणी तु टालि रे मोह० ९
रागद्वेष तरू वीज मोह छे, दोष सेनापति मोह रे,
भवमाणी दावानल सम ए, कर्मबंध दृढ मोह रे. मोह० १०
मोह नींद रागादिक वशथी, जीव लहे दुष कोडी रे,
लोकालोक ज्ञानी ते देषे, जे हणे मोहनी जोडी रे मोह० ११
मोह अनल जल श्रुत उपशमथी, शम पामे क्षणमाहि रे,
मोह सहित ससारी कहीये, मोह विना शिवसाहि रे मोह० १२
अज्ञानी निज पर न पीछाणे, मोहतणे वसे लागि रे,
राग द्वेष मद मोह दमो ए, निश्चय शिवपुर माग रे मोह० १३

मोह रागादिक भव कारण ए, तजिज्यो एहनो संग रे;
देवचंद्र सुषरूप पिछाणे, निज अनुभवरस चंग रे. मोह० १४

दूहा.

मोह वह्नि उपशमविवा, उथेडण तस राग;
संयमथी थिर करणने, भजि उपशम वड भाग. १
इष्ट अनिष्ट संयोगथी, जसु मन थिर सोभंत;
काम भोग तनुराग तजि, उपशम भजि गुणवंत. २
भववागुरने छेदने, ग्रहिं शिवपुरनो राज;
शम रविथी हरि राग तम, भजि आतम शिव ताज. ३
निज आत्मा निश्चय करी, जीव कर्म नित भिन्न;
ज्ञान राज्य सुष तेहने, जे शमधारी धन्न. ४
निज आतम गुण अनुभवो, तजि रागादिक भाव;
राग वाग भंजे मुनि, उपशम गजने दाव. ५
मोह राग बंधन गयां, वाधें उपशम कंति;
आश अविद्या नवि रहे, आयां उपशम शंति. ६

ढाल—पास जिणंद जुहारिये. एहनी ॥

उपशम नाव धरो मुनि, जिम छूटे कर्म अनंतो रे;
परम ध्यान संयम जिन दाष्यो, उपशम भाव महंतो रे. उप० १
शांतचित्त मुनि सुखीयो दाष्यो, ज्ञान ध्यान गुणधारो रे;
सहज सिद्धि सुष वांछे जे ते, धरस्यें उपशम सारो रे. उप० २
दोष जोग त्रय विणु निज आतम, भावे उपशम भावे रे;
अन्य द्रव्य पर्यायथी आतम, भिन्न करण समदावे रे. उप० ३

अचल सौख्य अव्यय पद तेहने, जे उपशम गुण धामी रे,
तेय जगत्रय शुभाशुभ रूपी, गृह्य आतम गुण स्वामी रे. उप० ४
क्रूर जतु पण वैरि तजे निज, मुनि उपशम परसादो रे,
पशु पिण मित्राई करे, तजि मच्छर विषवादो रे उप० ५
क्रूर जतु भय सहु टले, सम सगे घन जिम दाहो रे,
निर निरमल मन थाये वली, आसू जल जिम वाहो रे. उप० ६
ग्रह जक्ष सुर नर भय टाले, सिंह सरभ भय जायो रे,
रोग वैर बधन टाले, उपशमतणे सहायो रे उप० ७
शशि रवि धरणी वायु ए, छे जगमे उपकारी रे,
एथी पण अधिको अछे, मुनिवर शम अधिकारी रे उप० ८
हरि हरिणी मेला रहे, तिम हस विलीने रगो रे,
नाग मोर मेला रहे, शमधारी मुनिने सगो रे उप० ९
के वदे नदे कोइक वली, के मारे को पूजे रे,
तो पिण समदृष्टि जे मुनि ते, निज स्वभावने पूजे रे उप० १०
पुर वन कनक दृषद अहि माला, शील शय्यादि अनेको रे,
सुष दुष बेऊ जे सम जाणे, ते समधारी छेको रे उप० ११
गृह स्मशान निदकने वदक, कुकुम कर्दम लेपो रे,
कटक कुसुमतणी शय्या जसु, शम मुक्ताफल सीपो रे.उप० १२
दिव्यरूप नारी जग प्यारी, देषी मन नवि चाले रे,
अनुपम उपशम लीलविलासी, शुद्ध शिव निज भाले रे. उप० १३
मेरु चले पण उपसर्ग योगे, न चले मन शम धारो रे,
भ्रात मूढ सुतो मदमातो, मुनि जाणे जग सारो रे उप० १४
सुरगुरु पिण उपशमनी महिमा, पूरण न शके दाषी रे,
पाटक राजसार गुणसागर, शुद्ध अर्थना भाषी रे. उप० १५

वाचक आगम परमागमना, ज्ञानधर्म गुणज्ञाता रे;
आतम अनुभवरस मानससर, राजहंस विष्याता रे. उप० १६
शुद्धादेय अमोल अरूपी, देवचंद्र नित ध्यावो रे;
अक्षय निज परमातमनो शिव, आनंद सिंधु रस पावो रे. उप० १७

इति श्रीज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे पं० देवचंद्रविरचिते ढालभाषाबंधे पंचसमितित्रिगुप्तिमोहजयवर्णनो नाम तृतीयः षंडः ॥ ३ ॥

दूहा.

दान शील तप भावसुं, मीलियां जिम सुषदाय;
तिम आतम गुण साधवा, चोथो षंड कहाय. १
वस्तु सहज अणजाणता, जन छे अज्ञ अनेक;
आनंदी भवभय विना, दोय तीनके एक. २
उपशम मुनिने मन रह्यो, ध्यान विना थिर नांहि;
ध्यान थिरे शम थिर अछे, भेद नही इणमांहि. ३
शम थिर थाये ध्यानथी, कर्म कोटि कटि जाय;
धरे ध्यान समवंत मुनि, तजि विभाव पर्याय. ४
भवदव दाह शम्या विना, ध्यान षीरनिधि जेम;
ध्यान सिद्ध साधक प्रवर, दुरति काष्ट दव तेम. ५
अशुद्ध ध्यान दुष ध्यान तजि, मुक्ति बीज भजि ध्यान;
के मूरख माने इसो, नरक दायने ध्यान. ६
काम क्रोध पीडित करे, रिपु हणवाने ध्यान;
चाहे कूडां शास्त्र कहि, निज पूजा अभिमान. ७
उनयमार्गच्युत पापमति, द्ये अशुचि उपदेश;
ध्यानी शिवधारक करे, शुद्ध ग्रंथ आदेश. ८

चिंतारोध ते ध्यान छे, अपर भावना जाण,
अनुप्रेक्षा चिंतन अरथ, लख्यो शास्त्र सहि नाण. ९
शुद्ध अशुद्ध दु भेदथी, ध्यान मोक्ष भव थान,
निज ध्यानी निराग मुनि, ध्यावे शुद्ध ज ध्यान १०
अज्ञानि रागादियुत, ध्यावे ध्यान अशुद्ध,
आर्त्त रौद्र कुध्यान छे, धर्म शुक्ल दो शुद्ध ११

ढाल—गौतमसामी समोसरचा. एहनी ॥

आर्त्त रौद्र तजो तुम्हे, धर्म शुक्ल धरि ध्यान रे,
चउविध एहिज ध्यान छे, प्रथम ध्यान दुष थान रे आर्त्त० १
प्रथम अनिष्ट सयोग छे, बीजो इष्ट वियोगो रे,
राग प्रकोप तीजो दाषव्यो, तुर्य निदान सयोगो रे. आर्त्त० २
दव वन विप मातंग हरि, दुर्जन रिपु वली रायो रे,
धन तन घातक देषीने, पहिलो आरत थायो रे आर्त्त० ३
उपज्या चर थिर भावथी, स्मृत दिठा वली दृष्टो रे,
जे मन क्लेशने अनुभवे, तेही ज आर्त्त अनिष्टो रे आर्त्त० ४
एह अनिष्ट गमाडिवा, चिंते तास उपायो रे,
प्रथम आर्त्त मन जल्पथी, जिनवर देव दिषायो रे. आर्त्त० ५
राज्य वधु स्त्री नाशथी, शोक मोह मम थायो रे,
बीय आर्त्त दु ख आर्त्त ए, इष्टवियोग कहायो रे आर्त्त० ६
कास श्वास ज्वर पित्तथी, श्लेष्म वात दुष धामो रे,
आधि व्याधिथी आर्त्त य, रोग चिते इण नामो रे आर्त्त० ७
स्वल्प रोग पिण उपना, चिंते बहुत उपायो रे,
चित्त पेद बहु अनुभवे, तीजो आर्त्त कहायो रे. आर्त्त० ८

काम भोग स्त्री राजस्युं, अन्य सरव आनंदो रे;
इंद्रिय सुष नित चिंतवे, तूर्य आर्त्त भवकंदो रे. आर्त्त० ८
जिन सुरपति पदपुण्यथी, रिपु कुल क्षय पण तेमो रे;
पूज्य लाभ चाहे हुवे, आर्त्त नियाणा एमो रे. आर्त्त० ९
सुख काजे रिपु मारिवा, जेह दुष्टपरिणामो रे;
आर्त्त नियाणा नाम ते, दाख्यो दुषनो धामो रे. आर्त्त० १०
एम संक्षेपथी चोविधे, कह्यो आर्त्त जिनरायो रे;
अनंत जीव परिणामथी, भेद अनंत कहायो रे. आर्त्त० १२
ए कुध्यान चउभेदथी, छे पांचे गुणधामो रे;
छठेमैं त्रय भेद छे, नही नियाणा नामो रे. आर्त्त० १३
निंद्य लेशथी उपजे, एह दुरित द्रव धामो रे;
पूर्वबद्ध संस्कारथी, वली थाये दुष धामो रे. आर्त्त० १४
फल तिरिगति छे एहनो, काल महूरत मानो रे;
मिश्र भाव बल ए हुवे, दुक्ख अनंतनो थानो रे. आर्त्त० १५
शंका शोक प्रमादता, भय कलि चिंता भस्मों रे;
विषयोत्सुक उन्मादता, भ्रांति नींद तनु सम्मों रे. आर्त्त० १६
बाह्य लिंग ए आर्त्तना, दाख्या श्रुतमें एमो रे;
हेय कुध्यान करी ग्रहो, देवचंद्र गुण हेमो रे. आर्त्त० १७

दूहा.

रौद्र ध्यान चउ भेद सुणि, रौद्र चित्त दुषनीम;
क्रूराशय करुणा विना, रौद्र कार्य करी भीम. १
हिंसानंद प्रथम पय, बीये मृषा आनंद,
तीय चौर्य आनंद सुणी, तुर्य संरक्षानंद. २

पापकथक हिंसानिपुण, नास्तिक निर्दय मीत,
सहज क्रूर कपट मदी, कह्यो रौद्र दुखभीत ३
हणे हणावे उपदिशे, चाहे शिवसुखगेह,
जीव हणे अरचे गुरु, हिंसानदन तेह ४
चर थिर जीव हण्या लहे, मनमे कौतक जेह,
मन चाहे रणमांहि ए, हारे जीत्रे एह ५
वधवार्त्ता दीठां सुण्या, हरपे जे दुखखाणि,
हु मुज रिपु कदि मारिस्युं, एह रौद्रमति जाणि ६
मुज वइरी जीइअ छे, हणस्यु कलबल पामि,
हिंसानदन रौद्रता, किता कहू परिणामि ७
परने दुर्पीयो देषीने, मन पामे सनोष,
परसुष देपी दुष लहे, एह रौद्रनो पोष ८
द्ये हिसाना उपगरण, पोषे हिंसक जीव,
बाह्य लिंग ए रौद्रना, निर्दयपणो सदीव. ९

ढाल—अधिका ताहरा हूता अपराधी एहनी ॥

चतुर नर रौद्रध्यानने छाडो, मोटो कर्म भयवासी,
बीजो रौद्र मृषा आनदे, मूक उक्त मलवासी चतुर० १
कूडा शास्त्र कुमत देषावी, लोका व्यसन लगावे;
हय गय रथ पुर कन्या धन वन, कूड प्रसा देय ल्यावे. चतुर० २
भोला जनने घरमथी पाडे, जूठे पथ चलावे,
साचो जूठ करे रिपु मारे, कूड रौद्र परिमावे चतुर० ३
व्यसन संकटमें पाडुं जनने, कूड बोली धन जोडुं;
वचन युक्तिसुं भत्र कादमने, अज्ञानीजन बोळुं, चतुर० ४

कूडो बोल अकारज साधे, निजने वक्ता माने;
मृषा आनंद रौद्र ते कहीये, जूठ जल्प सुख जाने. चतुर० ५
चोरी कर्म वषाणे दाषे, चोरीनी विधि याची;
चौर्यानंद रौद्र ते कहीये, दुष जल वापी साची. चतुर० ६
चोरी चित्त रहे नित मनने, चोरी करतो हरषे;
चौर्यानंद रौद्र कह्यो जे, तिण नित परधन निरषे. चतुर० ७
दुष्ट चौरमति करि निजसाथी, परषाट्या धन लूंटे;
दसविध परिग्रह आणे चोरी, दीन मानवने चूंटे. चतुर० ८
इत्यादिक चोरी विधि नव नव, नित नित मनमे ध्यावे;
तीजो रौद्र कह्यो दुषसागर, नरकनिगोद भमावे. चतुर० ९
बहु आरंभ परिग्रहरातो, मातो वीकलप मोहे;
चोथो रौद्र संसारनो कारण, आठ मदे करी सोहे. चतुर० १०
रिपु पुर ग्राम हणी रिपु मारी, अति ईश्वरता वरस्युं;
जे मुझ जनपदनो तृण चोरे, तास कुलक्षय करिस्युं. चतुर० ११
मोटा सेवक धनमणिबहुला, सवि लोके शिर नाम्युं;
तरि सागरतट भेदि अरि हणि, जगत राज्य में पास्युं. चतुर० १२
विषय प्रयोग विश्वास करीने, रिपु हणिने धन आणुं;
परिग्रह रक्षानंद इण नामे, तुर्य रौद्र दुष थाणुं. चतुर० १३
परिग्रह मेलण राषण काजे, जे मन नित आलोचे;
रौद्र करम उदयाचलि आव्या, नित भवभ्रम तो सोचे. चतुर० १४
क्रूर कठोर वंचक बचवादी, दंड दुष्ट निस्त्रंशी;
लिंग पांच ए रौद्र तणा गिण, कृष्ण लेश निस्त्रंशी. चतुर० १५
लाल नयण बांका अति भीषण, दुष्टाशय भयकारी;
सिश्र महुरथमति थिति छेय जसु, निच मार्ग संचारी. चतुर० १६

धर्मवृक्षमाहे दहे, ए कुध्यान सहाये,
रोगी विषय कषाय गृहीने, निंद्य ध्यान बहु थाये. चतुर० १७
दृढ संस्कार पूरवकृतयोगे, मुनिने पण प्रस्तावे,
आवे पिण निज अनुभव आगळी, कायर जिम नासी जीवे. चतुर० १८
ध्यानयुगल कटुफल मळआगर, दुरति कुगतिनो स्वामी,
देवचद्र ए हेय कह्यो छे, छोडो शिव विसरामी हो. चतुर० १९

दूहा.

उपशम धरी मन वश करी, तजी भोग अनुराग,
अनुक्रमरूपे वर्णवु, धर्मध्यान मग लाग १
मैत्र्यादिक चउ भावना, ध्यान तणी गत शोग,
जे ज्ञानी मुनि शातमन, तेह ध्यानने योग २
थावर जंगम जीव सव, के हिंसक के शांत,
के सुष के दुषकारके, के विषयी के दात ३
निज स्वभाव पाम्यो सकल, सहु पाम्यो सुष गेह,
समदृष्टीभावे मुनि, मैत्रीभावन एह. ४
रोगी दीन सशोकभय, वध बंधनथी नद्ध,
भूष तृषा श्रमसु नड्या, शस्त्रघात भय रुद्ध ५
मरणभये पीडित भणी, रक्षानी मति जेह,
अभयदान मति निरमळी, करुणाभावन तेह ६
दरसन ज्ञान चरित्तयुत, तत्त्वलीन सम धार,
जित कषाय तृष्णारहित, सुमति गुपति भडार ७
जिनशासन पुरि भावना, नित नित वधनी देषी,
मन प्रमोद पामे अधिक, मुदिता भावन पेषी, ८

निर्दय परस्त्रीलंपट, सत्रभक्षी अतिदुष्ट;
मुनिनिंदक नास्तिकमति, निजसंगी गुणभ्रष्ट. ९
एहवा जनने संग पणि, रहे मध्यता साहि;
तेह अपेक्षा भावना, कही जिनागममांहि. १०

ढाल—धणरी त्रिंदली रंग लागो. एहनी.

हांरे मोरा लाल आनंद कर ए भावना, रागहीन शिवमाग मोरा लाल;
आतमसौख्य मुनि अनुभवे, रमतो भावन वाग मोरा लाल. १

भावो जे गुणभावना, अध्यातमगुणरूप मोरा लाल;
निरविषयी ज्ञानी मुनि; परमातम सुष मूप मोरा लाल. भावो० २

हांरे० मोह मिटे ए भावतां, योग ध्यान थिर थाय मोरा लाल;
परम सौख्य मुनि भोगवे, उदासीनता रोग मोरालाल. भावो० ३

हांरे० निरागी मुनि एकता, ग्रहे ध्यान थिर काज मोरा लाल;
निच ऊंच कुण ध्यान छे, साधन ध्यान समाज मोरा लाल भावो० ४

हांरे० ठाम दोषथी चित्त ए, तुरत थाय सविकार मोरा लाल;
तेह ठाम एकांत लहि, थाये शांत सुषकार मोरा लाल. भावो० ५

हांरे० पाषंडी मिथ्यामति, म्लेच्छ नीच जिहां राय मोरा लाल;
रौद्र भूत देवीतणो, नास्तिक मंदिर थाय मोरा लाल. भावो० ६

हांरे० वेश्या व्यभिचारी वली, जिहां कुग्रंथ वंचाय मोरा लाल;
मानी दुशीली जिहां, नट विट मेला थाय मोरा लाल. भावो० ७

हांरे० कामी भील चंडालनो, राक्षस हिंसाधाम मोरा लाल;
जूवारी मद्यपाननो, जे चीतारा ठाम मोरालाल. भावो० ८

हांरे० नारी मनचलकारणी, वली नपुंसक गेह मोरा लाल;
नीच करम कर गेहमे, न रहे ध्यानी जेह मोरा लाल. भावो० ९

हारे० मोह क्षोभ मनने करे, अस्थि रुधिर हुवे जेथी मोरा लाल,
मीमशब्द जीहा जीवना, ध्यानी न रहे तेथी मोरा लाल भावो० १०
हारे० ध्यानव्यसना जगनमे, जिके कारण जाणि मोरा लाल;
ते निश्चयस्यु मुनि तजे, देवचंद्रनी वाणि मोरा लाल. भावो० ११

दूहा

शेत्रुजादिक तीर्थ शीर, वळी कल्याणक ठाम,
सागर गिर वन गव्हरे, नदी तीर गढ धाम १
तरु कोटर उद्यानमे, गुहागर्भ समशान,
जिनगृह आदिक थानके, मुनि आरमे ध्यान. २
गतकोलाहल मन करी, निरुपद्रव सुप थान,
भुहर मटप शन्य गृह, मुनि आरमे ध्यान. ३
घन तप वायु तुपारथी, जिण थानक नहि हाण,
जिहा नव धरे रागादि नित, मुनि आरमे ध्यान. ४
काष्ट शिला भूपट्ट परि, आसन मडे साधु,
वज्र वीर पर्यक तिम, कायोत्सर्ग अगाधु ५
जिन आसन मन थिर रहे, तेही ज आसन सार,
काउसग पर्यक दो, आसन पचम आर. ६
प्रथम सवयणी निर्भयी, थिर आसन मतिधीर,
शुद्धध्यान धरि आपणो, सिद्ध लहे मुनिवीर ७
नवि चाले स्वभावथी, आय मित्या अति दुप,
सहे परिषह सवरी, निज आतम सनमुप ८
हरि अहि हाथी असुर भय, भूमि भ्रमण विधान;
चक्र शल दुप उपना, धीर न छोटे ध्यान. ९

निज धीरजथी मुनि भणी, भय नवि थाये कोय;
निर्विषयी संवेग धर, निज निज ध्यानी सोय. १०

ढाल—सीता अतिसोहे. एहनी.

थिर मन विघन निवारो, शुद्धातम ज्ञान संभारो हो०
मुनिवर ध्यान धरो १
थान आसन ए थोक, मन वश विण सघला फोक; मुनिवर०
थिर निरमल मन धीर, संवेगी ध्यायक वीर हो. मुनिवर० २
बहु जन थानक शस्य, जो एकम थाये वश्य हो; मुनिवर०
सनमुख पूरव उत्तर, ध्यानी छे सड्ग अंतर. मुनिवर० ३
त्रिगुण सहित गतमच्छर, पहिला सिख्या बहु मुनिवर; मुनि०
मुख्य गौण मुनि भाख्या, अप्रमत्त प्रमत्त दोय दाख्या. मुनि० ४
अप्रमत्तथि काया, ते ध्याता ध्यान सुहाया हो; मुनि०
अप्रमत्त लघुज्ञानी, मुनि थाये धर्मनो ध्यानी हो. मुनि० ५
तूर्यथी सपतम तांई, धर्मध्यानतणा गुण थाई हो, मुनि०
ध्याता ध्यान त्रिभेद, लेश्याथी फलउमेद हो. मुनि० ६
मुनि आसन जयकारी, सुसमाधि अषंड विहारी हो; मुनि०
आसन चलथी चल अंग, तिण वाधे षेदनो संग हो. मुनि० ७
वात धूप अतिपाले, आसनधर मन नवि चाले हो; मुनि०
लहि अभिमत थिर थाने, पर्यंकासन धरे ध्याने हो. मुनि० ८
पर्यंक मध्य उत्तान, विकसन करकमल समान हो; मुनि०
नासाग्रदृष्टि थिर शांत, निश्चल तारानी कांति हो. मुनि० ९
भ्रू चालि विकार विहीन, थिर अधर पल्लव मनमीन हो; मुनि०.
सुतमत्स्य सर जेम, थिर वदनकमल गतप्रेम हो. मुनि० १०

थिर मन ऋजु तन धारे, चित्राममूरति आकारे हो, मुनि०
मन मल धोय विवेके, निज ज्ञानथी राग न रोके हो मुनि० ११
सागर जेम गभीर, कनकाचल जिम अति धीर हो,
शात समस्त विकल्प, नाठी सहू भ्रमणा जल्प हो मुनि० १२
दृषद चित्रामसम जाणे, जसु सुरति सहू सम जाणे हो, मुनि०
थिर आसन गुणगेह, शुद्धातमध्यानी तेह हो, मुनि० १३
इण विधि ध्यान जे ध्यावे, ते देवचद्रपदवी पावे हो मुनि० १४

—दूहा.

ध्यान सिद्ध निज शुद्धिने, मन धर प्राणायाम,
आगमरीति वर्णवु, कारण शिवसुख ठाम १
मन थिर प्राणायाम विण, करि न सकेइ कोय,
पूरक कुंभक रेचके, तीन भेद सो होय २
बाहर आग्गुल पाचिने, जे पूरिजे वायु,
पूरक पवन कह्यो तिको, पवन जाणमे रायु ३
रुधे थिर करि पवनमे, नासिकमल थिर पंति,
कुभ तणी परि तेहने, कुंभक पवन कहत ४
हलवे हलवे नीसरे, कोठाथी जे वायु,
चित्त शात कारण तिको, रेचक पवन कहायु ५
नासिकद हृदिपद्म विचि, पवन नायनो ठाण,
आयु शुभ फल कहे, पवन चालिना जाण ६
जोगी पवनाभ्यास धर, जाणे चेतन चालि,
हृदयकमलमें आणीने, पवन सहित मन वालि ७
विषयाशा मन जल्प सहु, घटे वधे निज नाण,
अक्ष कपाय नासे अलग, स्वातभावना आण ८

किहां पवन विश्राम छे, नाडी संक्रम केथि;
कुण मंडल गति पवननी, सो हिव कहीइं एथि. ९

ढाल—प्रभु प्रणमुं रे पास जिणेसर थंभणो. एहनी ॥

मन थिर करी रे प्राणायाम अभ्यासीये,
जिणपरतक्ष रे प्राणायाम प्रकासीये;
प्राणायाममे रे मंडल वायु तपे करे,
तसु चित्ते रे ध्यानसिद्धि अति विस्तरे;
विस्तरे नासा विवरमांहे रच्या चारे मंडला,
जूजूया लक्षण लक्षभेदे कह्या पवनसु मंगला;
ते च्यार मंडल अति हि दुरगम जासु शक्ति अपार छे,
स्वसंवेदनथकी जाणे सहु जगमें सार छे. हां सहू० १

तिहां आद्ये रे पार्थिव बीय वरुण अछे,
तीय मारुत रे चोथो वह्नि कह्यो पछे;
धर मंडल रे भूमि बीज प्रभ हेमनी,
वज्रलांछन रे चोकूणक धर षेमनी;
ते षेमनी धर अरध चंद्राकार वारुणमंडलो,
चंद्राभ वारुण वरुण मंडित झरे अमृत अति भलो;
अति नील अंजन घनसप्रभ वृत्तबिंदु समाकुलो,
अति चपल दुरगम पवन मंडल लहे पंडित गुणनिलो. २

ज्वालायुत रे भीम त्रिकोण सुप्रीत छे,
वह्निमंडल रे स्वस्तिकबीज समेत छे;
पुर चोमेरे एह पवन नित संचरे,
तिणने नित रे प्रणिधान ज्ञानी अनुसरे;

ते हवे नागसिवर पुरि उण पीले रग जे,
अति स्वस्थ हलयो अष्ट अंगुल हृदय नासा सग जे,
अति शीघ्र शीतल श्वेतवर्णे वरुण वायु वहे सदा,
अनुभवे पवन विहार जायक द्वादश अंगुलचर मुदा ३

वहे तीछो रे छ अंगुल रग श्याम ए,
शीत उन्होरे फरुस पवन पुर धाम ए,
चोरगुल रे अर्द्धवृत्त नवदवसमो,
अति उह्लोरे अग्नि तत्त्वथी मन दमो,
थिर कार्य पार्थिव तत्त्व दाख्यो वरुण उत्तम कामने,
चल मलिन काजे वायु वसिक जिनवह्नि तत्व सुवामने;
गज तुरग रामा राज्य धन शुभ लाभ भूतत्त्व उपदिसे,
स्त्री राज्य धन सुप सुजन अभिमत सिद्ध वरुण समादिसे. ४

भवनीदा रे शोकविघ्नपरपरा,
इम दाखे रे वह्नि तत्त्व दुपकंदरा,
भय कलिकर रे वैरमणदायक अछे,
वायुतत्त्वे रे सिद्ध कार्य पण क्षय गछे,
क्षय गछे पग्रवेशकाले तत्त्व चारे सुपकरु,
ते चलणमे अहित दुपकर तत्त्व च्यारे भयवरु,
ते पेगला रवि सोम नाडी सुप कारण जाणिज्यो,
जी नीकले द्वय नाडी सेती अछे दुपनी पाण तो. ५

वामनाडे रे तत्त्वभूमि जल सुप मुणे,
नीतागना रे अग्नि पवन रविथी हणे,
षोभटल रे गमनागमन पवनने,
नगु दाधू रे भग्गो मगे फल जनने,

जन्नने मध्यम वाम नाडे चलत दहन समीर ए,
जल भूमि दक्षण नाडि चलतां मध्य फल कह्या धीर ए;
शशि शूर नाडी दाहत्रय त्रय कही शस्यसुलक्षणा,
सितपक्ष वामा उदयकाले कृष्णपक्षे दक्षिणा. ६

चंद्रनाडे रे उदय अस्त रविमे भलो,
ए उवै रे पवन विपर्यय गुणनिलो;
सितपक्षे रे प्रातसमे पडिवातणे,
वामनाडे रे पवन चार सुष गण भणे;
गण भणे ते विपरीत वहती प्रथम दिन मन भय करी,
धन हाणि वीजे दिवस तीजे पंथ देशांतर चरी;
अतियुद्ध अर्थविनास विभ्रम दुःख थान विकार ए,
दे दिवस पांच लगे चलतो पवन पूठे चार ए. हां प० ७

वाम नाडे रे अमृतमय हितकारणी,
प्राणीने रे रविनाडी सुषवारणी;
वामनाडी रे अमृत जेम तनु सुष धरे,
तिम दक्षण रे सितपक्षे वर सुष करे;
सुख करे ते संग्राम भोजन सुरतकार्ये दक्षिणा,
मन इष्ट उत्तम धर्म कार्ये वाम नाडि विचक्षणा;
जे काज ग्रहगण थकी न थाये तेह वामामे रह्यो,
क्षिति वरुण तत्त्वे पवन राजा सर्व सुष साधक कह्यो. हां सर्व० ८

करलिप्रश्ने रे पूर्ण नाडि पृच्छकतणो,
जय शून्ये रे वामे पर रिपुनो गिणो;
पंडितनो रे नाम लेय निज ले पछे,
तो सीझे रे कारिज विपरीतें न छे;

सम चरण ठांमे नाडि वामे थित पृच्छकनो जय कह्यो,
नवि नाड वेग विषम नामे शस्त्र सपातन लह्यो,
रोगार्त्त मृतगृहीत सर्प्प दष्टने ताजो करे,
शशि नाडि चारी ग्रहे मत्री तो उभयनो दुष हरे ह्रां० उ० ९

वाम नाडी रे वायु पूर्ण जल जो वसे,
इहितनी रे सिद्धि तुरत तिहा उपदिसे,
जव जीवत रे धन तन लाभादिक वहू,
हैनिष्फल रे पवननष्टथी सुष सहू,
सुष सहू जाणे पवनसे ती पुष्प पाडे आपणो,
ते पछी जाणे मरण जीवन सुष दुषनो चापणो,
अति शीघ्र लाभे वरुण भूमे बहु दिने कारज सरे,
ए तुच्छ लाभे पवन अग्ने सिद्धता पिण क्षय करे ह्रां० सि० १०

शीघ्र आवे रे जलतत्त्वे थिर भूमिमे,
बीय ठामे रे कहे पवन मृत अगनिमे,
वह्नितत्त्वे रे घोर क्षुद्र भय अनलमे,
भूमितत्त्वे रे युद्धे जय वली वरुणमे,
वरुणमे झीपे अधिक दीपे सिंधु थाये रिपुथकी,
कै शत्रुदलनो भंग थाये वधे जगमे जस वकि,
भतत्त्वमाहे थाय वर्षा वरुणतत्त्वे अति सही,
झड थाय धन विण पवनतत्त्वे वह्नितत्त्वे घन नही. ११

भूजलमे रे सस्य बहूत अति हे सही,
नभ पवने रे मव्य अग्निमे हे नही,
गुरु राजा रे वध वृद्ध मिलवा भणी,
मने हित रे सिद्धि चाह नारीतणी,

जो व्याह नारी तणी सुजने भाखि पूर्ण नाडिका,
रिपुगुरू चोरी दुष्टकाजे गहो रिक्ता नाडिका;
रिपु धाउलेती पूर्ण नाडी गात्ररक्षा जे करे,
तसु अंग बीजे शस्त्र न लगे सर्व गुणे जय करे. १२

भूजलमे रे गर्भप्रश्नथी सुत लहे,
अग्नि पवने रे पुत्री गर्भने नाम कहे;
शुन्यनाडी रे पृच्छक जो लेवे सही,
सुत पामे रे रिक्ता नाडि पुत्री कही;
कही पुत्री सम्मुख नाडी पंढ उतपति जाणवी,
सुष्मणानाडे युगलसंक्रम गर्भहाणि वखाणवी;
श्रवण आपी अरु नासिका मुष ढांकी अंगुष्ठादिथि,
जे वामवेला चले दक्षिण अंग पीडा तो कर्यो. हां० अंग० १३

शशि थानकरे वाम अग्रिम नाडी कही,
रवि थान करे दक्षिण पृष्ठ नाडी लही;
संक्रमतो रे पवन जीव पंडित कहे,
थिरक्रमतो रे तेह पवन निरजीव है;
निरजीव पवने जगत मृतसम जीव पवने जीवतो,
सुष दुख लाभालाभ फल पिण कहो इण विधि दीपतो;
जे नाडि छोडे तिका रित्का पूर्ण संक्रम अवसरे,
पूर्णांग पग जे धरे आगे सर्व कारिज तसु सरे. हां० सर्व० १३४

विष चूस्या रे जीवे चंद्र नाडी करी,
रवि नाडे रे तेह मरे विष विस्तरी;
आकर्षण रे पूरक थिर कूंभक धरे,
उथान रे रेचकथी योगी करे;

एक रे योगी सरव कारिज पवनने परभावथी,
जे करे नाडीतणो शोधन योग मारग दावथी,
अति चपल ए छे पवन दुरगम वसत भवने वासमे,
ते लघी जोगी तजी आलस करत नाडि अभ्यासमे. हां क० १५

दूहा.

हिव नाडीरी शुद्धिता, कहु ग्रथ अनुसार,
जसु अभ्यासे जाणिये, पवनतणो परकार १
कला सहित इक बिंदुयुत, रेफाक्रात हकार,
नाभिकमलमे चिंतवे, अर्हं अक्षर सार २
शोझै तेण हकारथी, रविसम भासुरकांति,
अग्निज्वालयुत अग्निकण, मालाथी आक्रात. ३
चपल बीजसम घूमथी, रुध्या दसदिसी पड,
इद्र चद्रने साध्य नहि, नभचारि ग्रह मड ४
शरदचद्रसम धवलप्रभ, मद मद नभचार;
झरे सुधा शिशिनाडिमे, पूरे पवन उदार ५
नाभिकमलमे आणिने, धरे पवन थिर देश,
करे चित्तथी पवनने, निक्रम अने प्रवेश ६
नाभिकमल हृदय कुज, आणे वारे वायु,
नाडिशुद्धि करे तिहा, दहन मडले आयु ७
रवि नाडीथी निसरे, चद्रे पेसे वायु,
इम नाडीशुद्धि कीजता, सहु इच्छा क्षय जाय ८

ढाल—योग लियो राजा भरतरी. एदेशी ॥

साढा च्यार घडी रहे, वायु एके माहि,
पीछे बीजी नाडिमे, जाये ते छाडि छाडि. धरो० १

एकवीस सहस उच्छ्वास ए, षटसत तिहां मेली;
स्वस्थ मनुज अहोरात्रिमे, आनपान सुमेलि. धारो० २
पवन चालि जाण्या विना, न लहे निज तत्त्व;
नाडिवेध हिव चिंतवुं, चित चित्र निमित्त. धारो० ३
करि निश्चल आलस तजी, ले श्वास सुगंध;
जाती फल वहुलादिने, भूवेधनि संधि. धारो० ४
कुंकुम अगर कपूरसम, छे वरूणनो वेध;
थूल वेध ओलष करो, सूषम संवेध. धारो० ५
भ्रमर शलभ मृग पक्षिमे, नर तूरंग शरीर;
धातु पक्ष पाषाणमे, भूवस तरु नीर. धारो० ६
इक मंडलथी निसरे, पेसे वीयठाम;
स्वेछाये चाले सदा, ए उत्तम धाम. धारो० ७
नवरपुरमे संचरे, ए कौतक काज;
प्राणायाम प्रसादथी, सीझे शिवकाज. धारो० ८
काम दर्प मन जय करे, सहु रोग विलाय;
तन थिरता जोगी करे, वायुतणे सहाय. धारो० ९
जन्म लक्ष कृत पापनो, क्षय करे तुरत्त;
वेय घडीमे मुनिवरु, प्राणायामनीसत्त. धारो० १०
एक विंदु जलनो पीये, मास दोयने छेह;
तो पिण प्राणायाम सम, नवि थाये तेह. धारो० ११
प्राणायामनी साधना, निश्चयथी हेय;
देवचंद्र जिनधर्ममे, ए नवि आदेय. धारो० १२

दूहा.

इंद्रिय सुषयी षाचने, शांत करे निज चित्त;
प्रत्याहार कह्यो तिके, इच्छातणी निवृत्ति. १

निस्संगी मन संवरी, कछ जेम दमि अक्ष,
शमधारी मुनि संवरी, धरे ध्यान सुमत्यक्ष २
इंद्रिय दमि मन वश करी, धरे भाल धरी ध्यान,
तजि उपाधि मन स्वच्छ करि, चित्त धरे सम थान. ३
प्राणायाम अभ्यासथी, मन नवि पामे थान,
निज समाधि थिर साधिवा, प्रत्याहार प्रधान ४
शांत संवेगी रागविण, मुनि नवि साधे वायु,
आतमज्ञानी मुनि तजे, प्राणायाम उपायु ५
वायु चालणरा दुःख करे, मन पामे बहु पेद,
अधिक सिद्ध पिणका नहीं, तिण न कह्या बहु भेद. ६
इंद्रि दमि सम आदरी, धर्मध्यान थिर चित्त,
नेन श्रवण युग भाल मुष, नाभि हृदय सुष चित्त. ७
नासा अग्रसु लालभ्रु, इत्यादिक तन अंक,
तिहां इक थानक मन करी, धरे ध्यान उमंग ९
शांति चित्त मुनिने वधे, ज्ञान ध्यान निज चित्त,
प्रत्याहार सुधारणा, दाषी ध्यान निमित्त १०

ढाल—रंगीले आतम एहनी

गुण अनंतधर जीवने, वचे भवमे कर्म, धरो निज भावना० १
राग द्वेष मुषहिवहळ्या, सनु हणु धरि ध्यान, धरो०
आतम रूपो निजज्ञानसु, बाली कर्म अज्ञान. धरो० २
कर्म हणु तिम ध्यानसुं, जिम न पडु भवमांहे, धरो०
भव ज्वर अजाने नड्या, नवि दिठो शिव राह. धरो० ३
परमातम जगगुरु ठग्यो, नीरस विषयने संग, धरो०
सर्वज्ञ आतम नवि लग्यो, भ्रम अज्ञाने रंग धरो० ४

आतमरूप पिछाणवा, ज्ञानदृष्टि धरि देषि; धरो०
पंच ध्येय अरु आतमा, ज्ञान गुणे इक लेषि. धरो० ५
नित्य छतो छे सहज तो, केवल गुण मुजमांहि; धरो०
मोह दाह तिहां पिडवे, ज्ञान अमृत जां नाहि. धरो० ६
कर्म उदे चउगत भमूं, निश्चय शुद्धस्वरूप; धरो०
कर्म न भंजू केम हूं, अनंत चतुष्टय भूप. धरो० ७
तजि आशा निज शक्तिस्युं, हुं आनंदस्वभाव; धरो०
छेद अज्ञान अनादिरो, आज लह्यो निज दाव. धरो० ८
इम जाणी धिरज धरी, रागादिक मल षोय; धरो०
ध्यावे आतमशक्तिसुं, धर्म शुक्ल ध्यान दोय. धरो० ९
ध्येयादेय स्ववेद ध्यान; धरो०
कर्महिन सर्वज्ञता, निरमल शिव भगवान. धरो० १०
जड चेतन जीवादि ए, ध्येय स्वभाव पिछाणि; धरो०
ध्यान लहो मन थिर करो, ज्ञान दयामे आणि. धरो० ११
परमेसर परमातमा, ध्येय अरूपी देव; धरो०
द्रव्यार्थिक नय सासतो, इक परमातम सेव. धरो० १२
दर्शन ज्ञान आनंदमय, अक्षर विगत विकार; धरो०
इंद्रिय विणु निकल गुणी, शांत जाण शिव धार. धरो० १३
भवद्रुम क्षय कर शुद्ध छे, ज्ञाननीथपर सिन्न; धरो०
जगत सकल आदर्शज्युं, जीर्ण ज्योतिमय धन्न. धरो० १४
शुद्ध अष्टगुणयुक्त छे, निर्मल अमय अमेय; धरो०
परत्यागी अक्षय गुणी, ज्ञानीने आदेय. धरो० १५
अणुथी पण जे सूक्ष्म छे, नभथी पण जे वृद्ध; धरो०
जगत पूज्य निर्भय सदा, परमातम शिव सिद्ध. धरो० १६

ध्याने कर्म सहु गले, जग गुरु अमर अनूप, धरो०
जिण जाणे सहु जाणीये, जाय अविद्या रूप धरो० १७
तत्त्वदृष्टि निज थिर हुवे, जाणे निज अनुभूति, धरो०
ध्येय ज्ञेय आदेय ते, अनर आतम भूत धरो० १८
वचन अगोचर भ्रम विना, वीतवि सहज अनत, धरो०
जास ज्ञानमे अशज्यु, भासे द्रव्य अनत धरो० १९
आत्मज्ञानथी आत्मने, जाण्या थाये सिद्धि, धरो०
मुनि तन्मय गुण तिहा लहे, तजि ग्रहिक ग्रहि लद्धि धरो० २०
लीन थई ग्रहे एकता, ध्याता ध्यान सुधेय, धरो०
परमातम अतरातमा, एक अभिन्न अभेय धरो० २१
कटमे कट कर्त्ता तणी, दीसे दुविधा रीत, धरो०
पिण ध्यान ध्येय ए आतमा, एथी न बीय परतीत धरो० २२
भवमे भम्यो अज्ञानथी, विण लाधा निज नाण, धरो०
परमज्योति जग दुपहरू, तेहिज अनुभव जाणि. धरो० २३
भावे इम निज भावना, ध्यान बीज गुण धाम, धरो०
देवचद्र सुपसागरू, ध्यान अमोलक पासि धरो० २४

दुहा.

निज स्वरूप जाण्या विना, न कहे आतमरूप;
तिम आतमगुण वर्णवु, परमपुरुष गुरु भूप १
आत्मज्ञान विन जीव सव, कर्म पकी मुझाय,
आपा परनी भिन्नता, सुपने पण नवि थाय. २
तिण मुनि आतम थिर करे, सर्व कल्पनामुक्त,
निर्विकल्प ते उपदिशे, द्रव्यार्थिक गुण युक्त. ३

बहिरातम इक भेद सुणी, अंतर आतम बीय;
ध्यान ध्येय एक तत्त्व धर, परमातम प्रभुत्रीय. ४
आतमबुद्धि तन उपरा, पररागी गुणहीन;
सो बहिरातम जाणज्यो, मोहनींदलय नील. ५
देहराग प्रेमराग तजि, निज आतम पहिचाण;
परमातम सम भावीवो, अंतर आतम जाण. ६
निर्विकल्प निर्लेप शिव, केवलज्ञान सुभान;
शुद्ध बुद्ध आदेय शुचि, परमातम सुषषाणि. ७
देह राग परभाव तजी, मूकि बहिर्मुख भाव;
निर्विकल्प मुनिसावयुत, शुद्धातम गुण ध्याव. ९

ढाल—म्हारे मीभलीयां नयणाणो पाणी लागणो पाणी रूजी एहनी.

चेतन पुदगल भिन्न करो निज भावथी, ज्ञानीजी
तो मुरष माने एक विवेक अभावथी; ज्ञानी०
इंद्रिय देहसूं नेह तजो पररूपसुं, ज्ञानी०
सुर नर तिरियग योनि सहू दूषकूप ए. ज्ञानी० १
अज्ञानी नवि जाणे आतम अमूरती, ज्ञानी०
परमातमसम जाणे जन तन सूरती ज्ञानी०
आतमबुद्धे शून्य अचेतन दर्वने. ज्ञानी० २
अज्ञानी धन पुत्र कलत्रने आपणा, ज्ञानी०
भिन्न अचेतन द्रव्यभणी निज जाणतो, ज्ञानी०
तसु लाभादिक कारण निजने ठाणतो. ज्ञानी० ३
देहभणी निज बुद्धि अज्ञान अनादिनो, ज्ञानी०
देह जीव गिण एक हठी ते वादिनो; ज्ञानी०
देहभिन्न निज बुद्धि ठगे सहू लोक ए. ज्ञानी० ४

इंद्रिय विषय दमो रमो निज ज्ञानसु, ज्ञानी०
तजि बहिरातमराग लगो निज ध्यानरसु, ज्ञानी०
जे तुज दीसे एह सहू पर हेय छे, ज्ञानी०
ज्ञान सरूप अनुपमु आतमध्येय छे ज्ञानी० ५

ज्ञानी ज्ञेय ज एह अछे निज आतमा, ज्ञानी०
तेह अज्ञानी अथ कीयो परतीतमा, ज्ञानी०
निज रागी परत्यागी ज्ञानी निज मलो, ज्ञानी०
रज्जु नागभ्रम जेम देहममता दलो ज्ञानी० ६

नागतणो भ्रम भागे साकलि तिण कही, ज्ञानी०
देहयुक्ताने त्यागथी चेतना लह लही, ज्ञानी०
एक दोय बहु वचन रचनमे प्रभु नही, ज्ञानी०
ज्ञानगम्य पर ज्योति त्रिगुणमें ए सहि ज्ञानी० ७

जिणसुरे जगसुप्त जगे जागे सहू, ज्ञानी०
निज सवेदन गम्य ए आतम गुण ग्रहू, ज्ञानी०
रागद्वेषनो नाश हवे जिण ओलपे, ज्ञानी०
नवी को मुज रिपु मीत न कोई मने लपे ज्ञानी० ८

पूरवकृत भव रीत सुपन सम तेहने, ज्ञानी०
शत्रु मित्र सम रीत गृहे ते निज मने, ज्ञानी०
शुद्ध सीपर ज्योति सनातन जाणहू, ज्ञानी०
अक्षय आतम देषो आतम नाणहू ज्ञानी० ९

तजि बहिरातम राग भजो निज आतमा, ज्ञानी०
निरमल जाणो नित्य जिसो परमातमा, ज्ञानी०
पर सयोगे भव मोक्षपर त्यागथी, ज्ञानी०
भवमोक्षगुणी वालो मन रागथी. ज्ञानी० १०

ज्ञानी रहे अबंध कि ज्ञान प्रसादथी, ज्ञानी०
मिथ्यात्वि बंधाय अज्ञान प्रसादथी; ज्ञानी०
नव मे दीठा दुःख सहू परसंगथी, ज्ञानी०
न पडे भवमे कोय के ज्ञान उमंगथी. ज्ञानी० ११
ए आतम निज पास अछे ज्ञानी लहे, ज्ञानी०
बाहिर देषे तेह निकामे दुष हे; ज्ञानी०
सोहं सोहं आपरम्याथी जेहु रे, ज्ञानी०
ते परमेष्ठीरूप तत्त्वं निज गुणवरे. ज्ञानी० १२
सिद्धांतमे पण एह एह परमीश छे, ज्ञानी०
देषणहारो एह एह जगदीश छे; ज्ञानी०
इंद्रियथी मनषा धरो निज ज्ञानमे, ज्ञानी०
निज जाण्या विना दुष अछे तप दानमे. ज्ञानी० १३
ज्ञानसुधारस युक्त षेद दुष नवि सहे, ज्ञानी०
राग द्वेष मलहीन वीन निज गुण लहे; ज्ञानी०
निर्विकल्प मन थापी करो निज काजने, ज्ञानी०
चंचल चित्त न देषे ते निजराजने. ज्ञानी० १४
राग द्वेष अज्ञान हरो क्षण एकमे, ज्ञानी०
ज्ञानानंद सरूप स्व आतमविवेकमे; ज्ञानी०
निज अज्ञानेज कर्म जाय निज ज्ञानथी, ज्ञानी०
कर्म न तूटे तपथी ते गले ध्यानथी. ज्ञानी० १५
देह बुद्धिथी बंधमोक्ष आतमगुणे, ज्ञानी०
तीन लिंग विणु नित्य शुद्ध आतमथुणे; ज्ञानी०
योगीने लिज ज्ञानथकी परम्रस षले. ज्ञानी० १६
अंतर तजे वहेलेह तत्त्वविण मूढथी, ज्ञानी०
शुद्धातम सुप्रत्यक्ष गहे अतिशुद्धथी; ज्ञानी०

करे काज सहु अन्य तोहि मन ज्ञानमे, ज्ञानी०
भवसुख जाणे मूढ अने मुनि ध्यानमे ज्ञानी० १७
आत्मज्ञान गुणज्योति सदा आनंद छे, ज्ञानी०
कर्म उदय वश दु ख तोहि सुख कंद छे, ज्ञानी०
दुखतिको पिण सुख कह्यो मुनिरायने, ज्ञानी०
ज्ञानविना अति दु ख कह्यो सुररायने ज्ञानी० १८
ज्ञेय ध्येय निज देव जाणि सशय हरी, ज्ञानी०
देवचद्र सुमति धरो मन थिर करी. ज्ञानी० १९

दूहा.

विषयथकी सुष ना हवे, तोही धरे जड प्रीति,
अति दाध्यां पिण मूढथी, न लखे आतम रीति. १
परागीकु ज्ञान नहि, तिण उपदेश म देहि,
अज्ञानी जडलीन छे, ज्ञानी ज्ञानने गेह २
जो गति निज ज्ञानसुं, जोड्या भवक्षय जोय,
पट जिम तन जूने हुये, आतम जीर्ण न होय. ३
थीर जोगि ते जग सथिर, जाणी ते शिवजति,
ज्ञान ज्योति जाण्या विना, वध छेद न करति. ४
पुद्गलगण तनु आत्मसम, अज्ञानी मानत्ति,
आत्मज्ञान विना मुगति, अस्थिरता दुषयति. ५
स्थूल सूक्ष्म गुरु जीर्ण लघु, दीर्घ दुषी तन रंग,
ध्यान काज ज्ञानी तजे, योग चपल मनसग ६
गाम नगर तुज ठाम नहि, तुज थानक निज नाण,
देह राग भव राग तजि, भिन्न आत्मतनु जाण, ७

चेतनथी तनु परि गिण्यां, न षलाये मुनि नाण;
जग काकर सम ते गिणे, शुद्ध ज्ञान सहिनाण. ८
तन पर दाष्यां शिव नहीं, जां नवी भेद प्रतीत;
सुपने पिण तनुराग तजि, धरी आत्मगुण प्रीत. ९

ढाल—राग धन्याश्री.

भविक जन आतम ध्यान धरो, तजी संकल्प शुभाशुभ बंधक;
निज परमारथ वरो. भविक० १ प्रथम बाह्य संयम छे साधक;
निश्चय आतम षरो; जन्म लिंग तन एह अनादि आतमसुं ऊपरो.
भविक० २
अंध पंगु जिम जोग अथिर छे, त्युं तन थै जीउरो,
ज्ञानि आतमज्ञानसे दीनप्रति, तन थै भिन्न खरो. भविक० ३
मदमातो निज पर नवि बूझे, त्युंजी उपज करो;
आपापर जाण्या तिनु पटणो, निफल गिण सगरो. भविक० ४
बाटि दीपसंगति है दीपक, त्युं शिव यह जीउरो;
परमातम सम ध्यान आराध्यां, है चेतन उजरो. भविक० ५
वचन अगोचर यह परमातम, थिर प्रतीत अपरो;
बिना यतन अनुपमपददायक, आतम गुण समरो. भविक० ६
सुपन भ्रांति जाग्यां ज्युं भांजे, त्युं पर भ्रांति हरो;
चिदानंद अविनाश अरूपी, निर्विकल्प आचरो. भविक० ७
शास्त्रजाण पिण देहनो रागी, हे बंधक नबुरो;
पराधीन सुख स्वाद तजो यह, ज्ञानस्वाद पकरो. भविक० ८
सुष मूळ चिद तत्त्व भणो मुनि, निज शरणो अनुसरो;
चेढि स्वभाव जिहां जवि भ्रमको, नीरधिलंधि उतरो. भविक० ९

त्रिभुवन जाण तत्त्व निरुपाधि. ज्ञानानंद भर्यो,
परममुनि निज आतम ज्ञानी, निज ज्ञानने उचरो. भविक० १०
धर्म शुक्ल ध्यान ध्येय भेद यह, आण्यो अर्थ परो,
पाठक राजसार मतिसागर, ज्ञायक निज गुणरो भविक० ११
आतमज्ञान धरम गुणवाचक, जय इंद्री मदरो,
राजहंस जिम भेद जाणधर, चेतन अर तनरो भविक० १२
अक्षर त्रय गुणसु करिं थिरता, ध्यान ज देवचंद्ररो,
आतमज्ञान आनंदसिंधूर चटि, अक्षय सुख चरो भविक० १३

इति श्रीज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे ढालभाषाबंधे पंडित-देवचंद्रमुनिविरचिते ध्यानध्येयप्ररूपणाभिधानो नाम चतुर्थ. खंड. संपूर्ण ॥

दूहा.

पंच महाव्रत जिम मिल्या, शिव सुखना दातार,
जिम पंचम पंड सांभल्या, अक्षय सुख आधार १
मोह अज्ञान कदाग्रह, तत्त्वदृष्टि न रहाय,
शुद्धातम जाण्या विना, निज तत्त्व थिर नवि जाय २
मन थीरथी साक्षात हे, शुद्धातम स्वभाव,
लक्ष थूल सालंबथी, सूक्ष्म निरालंब भाव. ३
आज्ञापाय विपाक वलि, लोकस्थिति आकार,
इसे विवेके भावना, धर्म ध्यान चौवार ४

ढाल—जे वे मुनिवर विहरण पांगुर्या रे ए देशी.

ध्यान धर्मरो चित्त धरि चंगे रे, आज्ञाविचय सुनाम रे,
वस्तु तत्त्व सिद्धांते जे कह्या रे, ध्याने माने थिरपरिणाम रे ध्यान० १

दोय प्रमाण निक्षेपा चारथी रे, सातनये युत ए स्याद्वाद रे;
हेतु युकति करि ते हणवो नही रे, जिनवर न वदे कूडावाद रे.
ध्यान० २

स्वाभावि स्वाधीन त्रिकालमे रे, ए छे गुणपर्याय अनंत रे;
आज्ञाना सिद्ध द्रव्यने मानितू रे, व्यय उत्पादन ध्रुगुणवंत रे.
ध्यान० ३

श्रुत ज्ञान निरमल जिनवर दापीयो रे, शब्द अर्थ यूं नित्यचितार रे;
शुद्धाशुद्ध द्रव्य जाणे सहु रे, तेह शक्ति जिन श्रुतनी
सार रे. ध्यान० ४

पूर्वापर अविरोधी शुद्ध ए रे, निकलंक अनादि गंभीर रे;
सर्व जाण नय उपनय युक्त छे रे, गहन अरथ मुनि वंद्य
सुधीर रे. ध्यान० ५

रत्नकर जिमे शोभे अतिघणो रे, पद अधिकार रंगथी युक्त रे;
कुमति सर्प्प मिथ्यातम गालवा रे; ग्रीष्म रविसम जेहनी
सक्त रे. ध्यान० ६

त्रिभुवन पूज्य शुद्धि कर आतमनो रे, जसु अनुयोगादिक चउ भेदरे;
द्रव्यार्थिक पर्यायनये करि रे, सादि अनादि अछे गत
छेद रे. ध्यान० ७

नय निक्षेप करी कसवटी समो रे, कुमति भुधर भंजणहार रे;
उत्तम संत मुनिने ध्येय छे रे, आगम जलधि अनंत
अपार रे. ध्यान० ८

त्रिभुवन पूज्य जन्म भय क्षय कारे रे, स्यातपद लक्षण युत ध्येय रे;
उत्पादादिक युत षट् द्रव्य छे रे, जिन भाष्यो श्रुत ए
शिव देय रे. ध्यान० ९

विबुधानंदन विद्यागेह छे रे, शिव प्रस्थान पडह सम एह रे;
तत्त्व कथक अज्ञान विना सहु रे, उत्तम भणज्यो थे श्रुत
एह रे ध्यान० १०

कुमतिभंजक रंजक मुनितणो रे, मोह गमावी शिव दातार रे,
साधु बंध क्षय सुष द्ये जीको रे, एम जिनागम आदरि
सार रे. ध्यान० ११

आज्ञायुत निज आतम भावज्यो रे, केवल ज्ञानादिक गुण खाणि रे,
सरदहिज्यो निश्चय श्रद्धा करी रे, इम ए देवचंद्रनी वाणि रे.
ध्यान० १२

दूहा.

कर्म नाश करवा भणी, धरे मुनिसर ध्यान,
तेह अपाय विचय कह्यो, बाधा रे निज ज्ञान १
स्याद्वाद पाम्या विना, भवदुष लह्या अनंत,
जिनवच पोत समो कह्यो भवसायर बूडंत २
महा व्यसन दवदान ए, भव वन भमतां आज,
आत्मज्ञान पामो तुम्हे, सीलण शिव सुख काज ३

ढाल—लाज गमावे रे लालची एहनी ॥

ध्यानतणी विधि सांभलो, अपाय विचय जसु नाम,
जन्मअंध कूपे पड्या, काढि द्ये शिव ठाम ध्यानत० १
मिथ्या अविरत जोगथी, बांध्या कर्मकलंक,
ते मुज जूठे रे किणपरे, काज करू य निसंक ध्यानत० २
कर्मवशे किम दुख सहु, हु छु सिद्धस्वरूप,
कर्मसैन्यथी वेगलो, हु छु निजगुण भूप ध्यानत० ३

ध्यानि कर्म दही करी, कब हुवे आतम शुद्धि;
उपादेय निज आतमा, निगुण सहित निज सिद्धि. ध्यानत० ४
आस्रवबंधनो हेतु को, कोण निर्जरा हेतु;
मुज आतमगुण निरमलो, मुक्तिरूप सुखकेतु; ध्यानत० ५
मोक्ष लहुं किण हेतुथी, सहज सुखी निरबाध;
सर्व जाण जगपूज्य ए, शुद्धातम आराध. ध्यानत० ६
सर्व जाणे एक आतमा, इण पूंठे सहु दर्व;
इक निज आतम जाणतां, वस्तु जाणीये सर्व. ध्यानत० ७
ज्यांलगे पर संयोग छे, त्यांलगे निज गुण हाण;
इम शुद्धातम भावतां, पामीजे शिव ठाण. ध्यानत० ८
कर्मविनाशन हेतु ए, अक्षय सिद्ध उपाय;
कर्मथकी पर जाणज्यो, शुद्धातम सुखदाय. ध्यानत० ९
तजि प्रमाद नित्य ध्याईए, कर्म विनाशन ध्यान;
अक्षर रत्न गुणयुत लहे, देवचंद्र शुभ थान. ध्यानत० १०

दूहा.

कर्म चित्रता चिंतवन, तेहिज विचयविपाक;
चेतन सुख दुःख अति सहे, कर्म उदय फलपाक. १
वस्त्राशन स्त्री नृत्य सुख, मित्र पुत्र मेलाप;
सुरभि गंध बहु भोग रस, वनक्रीडादिक पाप. २
गृह गज हरि चाकर पुरि, अशन पान बहु सुख;
कर्म उदयथी ते लहे, थये पुण्य सनमुख. ३
काम भोग क्षेत्रादि वर, पाम्या माने सुख;
तेहिज पापतणे उदये, थाये दायक दुःख. ४
वध बंधन अरि योगथी, इष्टवियोगे शोग;
जन्म मरण भव दुख बहु, थाये पापने योग. ५

सहज रौद्र भयकार जे, क्षेत्रादिक दु ख स्थान,
बहुत शीत तप घन रहित, ते रीत शुद्ध करि मान. ६
शीत ताप वर्षा प्रबल, इति भीति दुष हेतु,
कर्म भिन्न निज भावयुत, प्रसन्न भाव सुष केतु. ७

ढाल—सुगुण सोभागी हो साहिब मारा एहनी
कर्म विपाक विचारो इण परे, आतम भिन्न असार सोभागी,
मूल भेद आठ कर्मतणा कह्या, जन्म मरण भ्रमकार सोभागी० कर्म० १
ज्ञानावर्ण कर्म अज्ञानमय, घाती पंच प्रकार, सो०
बीजो घाति नवविध कर्म छे, दर्शन ढांकणहार. सो० कर्म० २
मधुयुत असिधारा सम वेदनी, द्विविध वेदनीय जाण सो०
सुरनर उत्तम मद सुख अक्षना, साता उदय प्रमाण सो० कर्म० ३
आधि व्याधियी मुंजे प्राणीयो, तेह असाता रे कर्म; सो०
दर्शन मोह हणे समकित भणी, तीन भेद बहु भर्म; सो० कर्म० ४
चारित्र मोह उदे निज भावयी, न लहे चारित्र शुद्ध, सो०
लाधो पण पाडे प्रमादयी, भेद पचीस विरुद्ध; सो० कर्म० ५
सुर नर तिर्यग नरक चोभेदथी, आयुकर्म हडि जेम, सो०
तीन पुण्यमे एक छे पापमे, सुख दुख दायक तेम सो० कर्म० ६
नाम करमथी नाम बहु लहे, गति जात्यादिक भेद; सो०
भेद बयाणु चितारे समो, गोत्र करम दो भेद. सो० कर्म० ७
दानादिक पण शक्ति भणी हणे, तेह करम अंतराय, सो०
उत्तरभेद कह्या अडनालसो, चेतनने दुखदाय. सो० कर्मवि० ८
संवरवन मुनितप आगल, चढतागुणनी श्रेणि, सो०
कर्मबंधने मद करे वली, क्षयकारी पिण तेण. सो० कर्मवि० ९
इहि समवाय षपावे कर्मने, तुर्य ध्यान संयोग, सो०
ज्ञानि निर्मल कर्म षपावीने, दीपे शुद्ध निरोग. सो० कर्म० १०

कर्मचित्रता इण परि चिंतवे, जन्म मरण दुषकार; सो०
चर थिर जोग तिभावजगत्रता, चेतनथी परधार. सो० कर्म० ११
कर्मउदयकरी बहुदुष जन लहे, जन्म मरण भयहानि; सो०
कर्मभिन्न इम ध्यानी ध्यावज्यो, देवचंद्रनो ध्यान सो० कर्म० १२

दूहा.

नभ अनंत जिनवर कह्यो, तामे लोकाकाश;
असंखप्रदेशी त्रिगुणमय, छहूं द्रव्यका वास. १
उर्द्ध मध्य अध भागथी, त्रिभुवन कहीये लोक;
त्रिविध वायु आधार छे, सर्व द्रव्यनो सोक. २
प्रथम घनोदधि बीय छे, घनमारुत तनवात;
लोक धर्यो निजशक्तिथी, अति ऊंचो जसु गात. ३
लोकांते घनोदधि छे, तसु तलि घन तनुवात;
अधोलोक सगराजनो, उर्द्धलोक रज्जु सात. ४
वेअसमा आकार अध, मध्ये झालरि जेम;
ऊरधलोक मृदंगसम, त्रिविध लोक थिर एम. ५
अधोलोक सग नरक छे, नारक षंट वसंत;
दुख क्लेश प्राणी लहे, शीततृषादि अनंत. ६
शीतवात तो सी कहूं, मेरु गले जसू ताप;
हिंसादिक पण कारणे, नरक लहे दुखव्याप. ७
मिथ्या अविरति रौद्रता, कृष्णलेश अति क्रोध;
छेदन भेदन ताडना, लहे नरकने सोध. ८
बंध अधोमुख अगनितल, ज्वालन पिलन यंत्र;
लोहकंटके चालवण, छेदन भेद अषत्र. ९
दुस्सह रोगप्रकोपथी, पडे उपडे तेह;
अतिदुषीया सरणो तके, पूरवकृत फल एह. १०

मित्रवध न तिको तिहा, निरदय पापी सर्व,
हुडाकृति कुध्यानगत, रौद्रमुष विण दर्व. ११
वहे पूति दुरगध अति, करे रौद्र अति कूप,
रौद्रध्यान अति चिंतवे, निज थिरतायी चूप १२
विभगतणे बल जाणिने, निजकृत कर्म स्वभाव,
अज्ञानी अति दुख धरे, ज्ञाता उपशमभाव १३

ढाल—सूरजसाम्हा हो पोलि. एहनी ॥

साध मोक्ष मुनि सहो ज्ञानी, सवेगे नरभव लही, म्हारा लाल०
तजि विषया सारी सहो ज्ञानी, कर्म हणे तप आदरी हो० म्हा०१
साधे इच्छित तेह, ज्ञानी० कष्ट पड्या धर्म नवि तजे, म्हा० क०
तेहिज ज्ञाननो गेह, हो० तजि प्रमाद निजगुण भजे म्हा०क०२
हितवत्सल गुणवत हो० तिण मुनिने बहु दुख दीया, म्हा० क०
तिणनु दुख पडत हो० दुख सहित प्राणी निज कीया म्हा० क०३
मे अज्ञानमे लाग हो० चर थिर जीव हण्या घणा, म्हा० क०
परधन परस्त्री राग हो० व्यसन पड्यो पर रागथी म्हा० क० ४
रौद्र ध्यान वश एह हो० दुख लह्या मे नरकना, म्हा० क०
इद्रिय सुखने नेह हो० लोक ठग्या मे कूडथी. म्हा० क० ५
जे ते मार्या पूठ हो० ते तूझ मारे न्यायथी, म्हा० क०
रीस म करि इहा जूठ हो० एतो वारी आपणी. म्हा० क० ६
निज हित नरभवमाहि हो० न कीया तो हिव स्या हवे, म्हा० क०
भञ्जी धर्मनो राह हो० नीच करम बान्ध्या घणा. म्हा० क० ७
ग्राम नगर दे दाह हो० निरबल जीव हण्या घणा; म्हा० क०
ते मुझ दुष दे साही हो० कर्म छोडे वचनी परे. म्हा० क० ८
स्यु करु जाउ केथ हो० असरण कर्मवशे पड्यो, म्हा० क०
हु दु ख देषु एथ हो० अणदिठाविण पारकाए म्हा० क० ९

पुत्र मित्र स्त्री दास हो० के किहां मै तिणकारणे; म्हा० क०
कीधा पाप विकास हो० पिण दुख देषु एकलो. म्हा० क० १०
कर्म शुभाशुभ एह हो० एथी मुझ वीय को नही; म्हा० क०
नरकथी काढे जेह हो० तेह धरम नवि आदर्यो म्हा० क० ११
निज गुण विना सहाय हो० कोय नही त्रयकालमे; म्हा० क०
लव सुख काज उपाय हो० कीधां दुख अनंत ए. म्हा० क० १२
जैनधरम जगमांहि हो० दुख हरे सुखने करे; म्हा० क०
रंज्या परिग्रह ग्राह हो० मरणतणा भय नवि लषे. म्हा० क० १३
सागर वसे असंख्य हो० मांसाहारी नरकमे; म्हा० क०
भाजे करडि अंष हो० छेदन भेदन अति करे. म्हा० क० १४
पूरव वेर चीतार हो० लडे विडे सहू नारकी; म्हा० क०
रौद्र कृत्य भयंकार हो० क्षेत्र दोषथी नारकी. म्हा० क० १५
कूंभी अगनिने पाक हो० न मरे वैक्रियतनवले; म्हा० क०
परम अधर्मिकार हो० शतशत षंड करे तिहां. म्हा० क० १६
तातो तरूयो पान हो० फल ते मदिरापानना म्हा० क०
मांस भषे तसु आन हो० फल ते मांसाहारना. म्हा० क० १७
परस्त्रीसंगे तस हो० लोहपूतली तिहां मिलै; म्हा० क०
दुष गृह नरक ए सप्त हो० निमिषमात्र पण सुख नही. म्हा० क० १८
विसरयो पूरव वेर हो० चितरावे सुर पापना; म्हा० क०
भूष नरकसे ढेर हो० दुष तसु को न कही सके. म्हा० क० १९
अन्न पान तिलमात हो० न मले भूष तृषा घ्रमे; म्हा० क०
तिलसम षंड्यो गात हो० कर्मवसे वलि तसु मिले. म्हा० क० २०
देह थान भज ध्यान हो० नरके सहू दुखकार छे; म्हा० क०
अधोलोकनो थान हो० वरण्यो मध्य कहूं हिवे. म्हा० क० २१

जम्बू लवण आदि हो० अत स्वयम्रमण छे, म्हा० क०
संख्या तीन अनादि हो० द्विगुण प्रविस्तार छे, म्हा० क०२२
सार्द्धद्वीप क्षेत्र हो० मानुषोत्तर गिरयी उरइ, म्हा० क०
तीस युगलीया क्षेत्र हो० कर्मभूमि पनरह गिणो म्हा० क०२३
आरिज म्लेछ दुभेद हो० जन्म मरण दुख नरगते, म्हा० क०
पराधीन दुख षेद हो० तिरिगतिमे दुख बहुत छे. म्हा० क०२४
कर्मवसे उदेवसि एह हो० सवि षमे प्राणी लहे, म्हा० क०
अक्षरत्रय गुणगेह हो० देवचंद्र सुखसागरू. म्हा० क० २५

दूहा.

ज्योतिषीय तिण उपरा, चर थीर सुखी अपार,
रविचद्रादि असख पिण, तिरछे लोक मझार १
सोहमथी अच्युत लगे, उपराउपर कल्प,
ग्रैवेयक विजयादि पीण, बहुत सुषी दुख स्वल्प २
नहि विभाग दिनरातनो, रतन तेज दीपत,
षड ऋतु सुख सम काल छे, नहि अति शीत तपत ३
ईत भीत उत्पात अहि, सिह चोरभय नाहि,
पचरग मणि तेजसु, दीपे भुवन उच्छाह ४
रत्नवावडी रत्नसर, तिहां खेले सुरनारि,
कल्पवृक्ष चिंतामणि, सार वस्तु आधारि ५
ध्वज छत्रांक विमानमे, सौंसगे सुखवत,
क्रीडा गिरक वहीरमे, कर्नसे जेम त खंत ६
मेहके चपक मालती, तमे मृगनी कोडि,
लीलावन मंदारुतले, खेले स्त्रींनी जोडि ७
गावे देवी गीत गुण, वाये वीण मृदग,
गीते सुरने रीझवे, अमरी मनने रग. ८

सुखसंपद सुरधामनी, उपमा कही न जाय;
पंचरंग मणी चैत्यगृह, वन वापि तिहां थाय. ९
गढ परिष्या तोरण सहित, पोलि चैत्यमणीरूप;
सामानिक तनुरक्षकर, सग अनीक इक भूप. १०
थिरशृंगार सुपीन कुच, शशीमुख सुरनी नारि;
कामकेलि गुणआगरु, लक्ष्मीने अनुहारि. ११
सुंदर गुण अणिमादियुत, भूषणयुत मतिधीर;
पंडित विनय सुजाण नर, जसु अम्लान शरीर. १२

ढाल—थारा म्होला उपर मेह झरूषे दामनी. हो लाल
झरोषे दामनी. एहनी ॥

नही य दुषी को रोग को तिहां दीन छे हो लाल, नको०
थिर शोभा छे जास वास सुखमे अछे हो लाल; वास०
सभ्य समानिक मंत्रलोक तनुपाल छे हो लाल, लोक०
गायन नट्टया एम विविध सुरमाल छे. विवि० १
देवलोक सुखओक सदा सुखमे रमे हो लाल, सदा०
शीलरूप गुणवंत सहज मनमे गमे हो लाल; सह०
नितनित नवनव रंग गीत जयजय सदा हो लाल, गीत०
सातधातु गुण देहरूप सुखकर मुदा हो लाल. रूप० २
अतिसुकुमाल शरीर चतुर पंडितवरू हो लाल, चतु०
दोष क्लेश भयहीन शांत जिम निशकरू हो लाल; शांत० ३
महारिद्धि गुणवंत जिहां सुर अति घणा हो लाल, जिहां०
बेठा सभा मोझार इंद्र सरीषा बण्या हो लाल; इंद्र०
पुण्यउदे लहे सुख सदा मन ऊमहे हो, सदा०
देवलोकनी भूमि सदा सुष गुण गहे हो लाल. सदा० ४

सेवे अमर असष कषम नहीं हो लाल, कष०
माने सहु जग आण ताहरी ए सहु हो लाल, ताह०
पुण्य उदयनो सुख कहे कवि केटलो हो लाल, कवि०
सुरपति आगे आय मनि कहे एतलो हो लाल. मनि० ५

सुरपति चेतन ताम काम ए पुण्यना हो लाल, काम०
पूरव कृत तप शील चरण वर दानना हो लाल, चरण०
पिण शिवसाधक माग एण गमे नहीं हो लाल, एण०
एह विनासी सुख दुख गिणजे सही हो लाल दुष० ६

तिहा समकिती देव तत्त्व निज थिर करे हो लाल, तत्त्व०
सारे जिनवरसेव जैन महिमा करे हो लाल, जैन०
कल्पव्रक्ष दसभांति देय मनकामना हो लाल, देव०
इंद्रिय सुखकु तेथि नहि काई मना हो लाल. नहि का० ७

देवलोक द्विकतार् अछे देवागना हो लाल, अछे दे०
अच्युत लगी सुर नारि जाय छे दुख विना हो लाल. दुष० ८

उपर नहीं विकार इद्रिय पिण को नही रे लाल, इद्रि०
ग्रैवेका लगि चालि मिथ्यात्वीनी कही हो लाल, मिथ्या०
पचानुत्तर देव सहित समकित अछे हो लाल, सहि०
सर्वारथसिद्ध देव एक भवभय छे हो लाल. एक० ९

चौगतिमे सुख दुख लह्यो में बहु परे हो लाल, लह्यो०
पिणमे राच्या मुझ गरज न विकासे रे हो लाल, गरज०
ध्यावो निश्चल देव सरव जगजाण हो लाल, सरव०
भमियो चवदह राज तोहि शिवठाण ए हो लाल. तोहि० १०

तिन भुवननो जाण त्रिविध गुण राव ए हो लाल, त्रिविध०
चोथो धर्म सुध्यान लोकथिति ध्याव ए हो लाल, लोक०

परमातम आदेय सदा थें आदरो हो लाल, सदा०
अक्षर त्रयगुणयुक्त देवमुनि मन धरो हो लाल. देव० ११

दूहा.

हिव पिंडस्थ पदस्थ वलि, रूपी रूपातीत;
और ध्यानविधि च्यार ए, ध्यावो धरि प्रतीत. १
तिहां पिंडस्थध्यानथी, पिण धारणा अनूप;
पार्थिव आग्नेयी पवन, वरुण तत्त्व स्वरूप. २
मुनि तत तीन छे लोकसम, जलधि जेम आकाश;
जंबूद्वीप सहस्रदल, मेरुसिंवासन भास. ३
तिहां बेठो यो सवर, ध्यावे आतमध्यान;
मन भमे ने वशी करे, सो पार्थिवगुण मान. ४
थिर अभ्यासे नाभिमे, कमल सोल दल सार;
पत्रे सूरगण चिंतवे, अर्हं मध्य उदार. ५
तिण अर्हंथी अग्निगण, हृदय अष्टदल देह;
ऊंचे मुख अडकर्मने, दहे बल ध्यान तेह. ६
वह्नि बीज समकीतसहीत, मंडले अग्नित्रिकोण;
धूमरहित कलधौतद्युति, दहे कर्म भगौण. ७
दही कर्म ले शांतता, तृण विणु अग्नि समान;
धरे शुद्ध निज धारणा, ए आग्नेयी मान. ८

ढाल—कूमरी बुलावे कूबडो. एहनी ॥

ध्यान पिंडस्थ विचारीये, शुद्धातम गुणधामो रे;
आतमशक्तिस्वभाव ए, लोकालोकनी सामो रे. ध्यान० १
आतमशक्तिस्वभावथी, कर्मधूलि उडावे रे;
ते पिंडस्थ सुध्यानथी, वायुधारणा थावे रे. ध्यान० २

करुणा धारणा ध्यावतां, मेघरूप ते ध्यावे रे,
आतमध्यान मुनीरथी, कर्ममेलने नसावे रे. ध्यान० ३
सात धातु तन मल विना, केवलज्ञाननो नाथो रे,
ज्ञानादिकअतिशयधरू, परमातम सुखसाथो रे ध्यान० ४
भिन्नकर्म्म निरुपाधिए, देहमाहि निज देवो रे,
ध्यान पिंडस्थ हृदि चिंतवे, परमातम नितमेवो रे ध्यान० ५
उज्ज्वल निर्मल आतमा, जिनसम कर्मविहीनो रे,
धारक (गुण) अनंतनो, ध्यावे निजगुणलीनो रे. ध्यान० ६
भय ग्रह राक्षस सिंहनो, रिपु विषधर गजराजो रे,
भय पूरवकृत कर्मनो, नासे ध्यानथी आजो रे ध्यान० ७
देहमाहि निज आतमा, सिद्धसमो जे ध्यावे रे,
निज अक्षरत्रयगुण लही, देवचंद्रपद पावे रे ध्यान० ८

दूहा.

उत्तम पद आलंबिने, धर पदस्थ मुनीश,
नित्य वरण माला स्मरे, श्रुतज्ञान गुण ईश १
षोडश कमले स्मरे, षोडशे स्वरनी माल,
हृदय पदम चोवीस दल, वर्ण पचीस विचाल २
वदनकमल अठ दल तिहा, चिंते अक्षर आठ;
हरे रोग मन चिंतने, दहे कर्मवड काठ. ३
वर्ण मंत्र पद नाथ ए, अर्ह अक्षर सार,
सरव देवनंत सूर्यसम, हरे सर्व अंधकार. ४
कनक गतमल सिद्धसम, ध्यावे मुनि निजदेव;
ब्रह्मा हरि हर बुद्धके, जड बहु सारे सेव. ५
जैन ध्यावे जिन भणी, निश्चय आतमराम,
शिव साधिक भय क्षय करे, गुण अनंतनो धाम. ६

गतरागद्वेष अलेषज्ञायक, सिद्ध जग जगनाथ रे;
अविकार वीतप्रपंच आतम, अज्ञानताप्रमाथ रे. ध्यावो० ९
श्रीराजसागर प्रसिद्ध चिन्मय, नित्य ज्ञाननिधान रे;
परम ज्ञान धरम उज्जल, राजहंससमान रे. ध्यावो० १०
देवचंद्र सुखी सदाई, अक्षरत्रय गुणयोग रे;
चढ्या ज्ञानानंद सिंधुर, लषे लोग अलोग रे. ध्यावो० ११

इति श्रीज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे ढालभाषाबंधे पं० देवचंद्रविरचिते पंचमः षंडः ॥ ५ ॥

दूहा.

उपशम धरी हरी दोष सहू, आदरि आतमस्वभाव;
कर्मकोटि दुषने कटे, १
राग द्वेष हणि थीर करे, मुनि आतमपरिणाम;
अनुप्रेक्षा फल धारिने, कहूं तास गुणग्राम. २
दीप हणे जिम तम भणी, तिम मुनि दाहे कर्म;
मुनि मन चंचलता रहे, रागद्वेषने भर्म. ३
प्रथम संघयणी दृढ बली, शुक्लध्याननै योग;
छेद्यो भेद्यो पिण जिको, न लहै कंप न सोग. ४
न सुणै देषे न न कहै, मूर्तिलेपसम तेह;
निस्संगी निश्चल यति, शुक्लध्याननो गेह. ५
बहिरंतर समवायविण, न सधै ध्यानसमाधि;
जडपर तनममता तजी, शुद्धातम आराधि. ६

ढाल—रामे सीता खबर करी. एहनी ॥

बहिरातम ममता तजी प्राणी, अंतर आतम रूप जी;
मन थिरता करी ध्यान ध्येय विधि, शुद्धातमनो भूप जी.
गुण गावो० १

जिम शुद्धातमपद ध्यावो रे, जिम निरमल शिवपद पावो रे ॥
ए आंकणी०

गुण असंख इक समय वधारे, कर्म असंख गमाय जी,
उपशम श्रेणे उपशम पामे, क्षय कीना क्षय जाय जी. गुण गा० ३
धर्मध्यान थिति अंतर मुहूरत, मिश्रभाव शुक्ल लेश जी,
धरी विवेक उपशम धर ध्यानी, परमातम मुख देश जी गुण गा० ४
ध्यान विषे जो छोडे भव्य तनु, पामे ते सुरलोक जी,
सर्वारथसिद्ध नव ग्रैवेके, पामे सुख अशोक जी. गुण गा० ५
सुमनस मालसहित वलिलांछन, शशीसम निर्मलकाय जी,
वीरजगंध सहित कामच्युत, भोगवे सुरसुख पाय जी. गुण गा० ६
ग्रैवेयक अनुत्तरवासि सुर, अति उदार सुख सोय जी;
वधती पुण्यपरंपर नित नित, ज्यु वारिधि शशि बोध जी. गुण गा० ७
सुरसुखथी असंख्यातगुणो छे, कल्पातीतने थान जी,
काल न जाणे भवनो जातो, इद्रीसुख अनुमान जी. गुण गा० ८
तिहांथी चवीने मानवभवमे, लहे उत्तम कुल जाति जी;
तनु नीरोग सुभोग सयोगे, वधते सुख मन रति जी गुण गा० ९
भेदज्ञान वैराग्य प्रभावे, ते छोडे गृहवास जी,
निजरत्नत्रय सौख्य आराधे, मूकी दुष्ट परआस जी. गुण गा० १०
सज्वलना चोकडी प्रभावे, न लहे श्रेणिनो टाण जी,
तीने समकित सत्तम गुण लगे, ध्यावे धर्म सुजाण जी. गुण गा० ११
रागादिक सहु रोग विणासे, डीपे इद्री वित्त जी,
भवदु रा वारे ज्ञान सुधारे, मुक्तिस्त्रीनो मित्त जी. गुण गा० १२
मोह भंजी आतमगुण रंजी, निजपरमेष्टनो कार जी,
पोढी सम शिवमंदिर चढना, धर्मध्यान तिण धार जी. गुण गा० १३

प्रथम ह्रीं प्रणव दोय, आगे विची ए अक्षर सार जी;
सःक्ष्वींहं अंते दोय प्रणवह्रीं सेती, विद्या ए जगसारजी.
ध्यावो० १५
सिद्धचक्र ए मंत्रशिरोमणि, सहु विद्यानो सार जी;
अरिहंताणं पापक्षयंकरं, सिद्धाणं सिद्धकार जी. ध्यावो० १६
आचारिज निज गुणने चरचे, व्याधि हरे उपाध्याय जी;
साधुसुखंकर निजगुण साधे, चोचुलकपद धार जी. ध्यावो० १७
इत्यादिक उत्तमपद ध्यावे, बाह्यालंबनरूप जी;
मैत्रीभाव धर्या सहु उपर, निजगुण ग्रह्यो अनूप जी. ध्यावो० १८
वीतराग मुनि नित प्रणिध्यानि, परमसंसर्ग विहीन जी;
स्यादवाद श्रुतसार लहीने, लेवे त्रिगुण नगीन जी. ध्यावो० १९
बाह्यभावथी मगनभाव तजि, निज शुद्धातम ध्यावे जी;
अक्षरत्रय गुण लही अमोलक, देवचंद्र सुख पावे जी. ध्यावो० २०

दूहा.

हिव रूपस्थ तणी कथा; सुणो भविक चित लाय;
सर्वजाण अर्हंत प्रभु, सो परमेसर ध्याय. १
जगहित थीर मंदिरसमो, ज्ञानादिक गुणगेह;
सप्तधातुविण संवरी, शिवलखमीसु नेह. २
जसु चरित्र अचिंत्य छे, जगबांधव जगजाण;
विषय कषायादिक दमी, भवदव नीरस माण. ३
देवादिक को नवि कहे, जेहनी ज्ञानविभूति;
भंजे सहु मिथ्यातगिर, स्यादवादनी रीति. ४
गुणनिधि ज्ञानी सर्वगत, परमातमपद धार;
ए ज्ञानी निज आतमा, परमातमसम सार. ५

दोष अढारे आ वस्यो, जनम मरण भय व्याप्त,
ए आतम निज ज्ञानसु, ध्यावो निज सम आप्त. ६
परशासन सहु छोडीने, धारो सम्यक्त्व ज्ञान,
गुण धर गुण धर-ज्ञानयुत, ते पण आतम ध्यान ७
जसु ज्ञान आदर्शमें, छए दर्व भासत,
लोकालोक प्रकाशकर, ध्रुवस्वभाव गुणवत ८
जसु ज्ञानरविज्योतिथी, भासे कुनय पद्योत,
सदा अगोचर सर्वनन, धरे अपडित ज्योत ९

ढाल—वाह वाह वणायो विंझणो. एहनी ॥

ध्यान धरो निज धर्मनो, निज अक्षय सुखनो कार रे लाल,
जसु फरसे शुचि थाये धरा, शिवमारग दाखणहार रे लाल. ध्या० १
जितो रवि भामडले, ए देव अनाथा नाथ रे लाल,
पडतां दु ख समुद्रमे, एहिज साहिब दे हाथ रे लाल. ध्यान० २
थिति सिंहासन उपरे, धरि छत्रत्रयनी शोभ रे लाल,
सुरपति चामर विंझवे, क्षय कीवो रागने लोभ रे लाल, ध्यान० ३
पुष्पवृष्टि सुरदुदुभि, वळी वृक्षअशोके युक्त रे लाल,
अड प्रातिहारज करी, शोभे वीतराग विमुक्त रे लाल. ध्यान० ४
शुक्लध्यानी शात छे, भवदु ख हरे गतराग रे लाल,
एक सनातन व्यक्त छे, गतकामी ए शिव मान रे लाल. ध्यान० ५
जगचक्षु जगनायक धणी, ए ज्योतिरूप आनंद रे लाल;
ईश चतुर्मुख कृष्ण ए, एहिज जिन आतम सत रे लाल ध्यान० ६
सिद्ध सुमति जगज्येष्ट ए, मुनिवर अक्षर गुणधार रे लाल,
निरागी जिन सर्वज्ञ ए, ध्रुव अव्यय जीर्ण उदार रे लाल. ध्यान० ७
इम एकत्व प्रतीतसु, ध्यानी थावे शिवरूप रे लाल;
जिण जाण्या मुनिवर शिव लहे, आराध्यो ते गुणभूप रे. ध्यान० ८

गतरागद्वेष अलेपज्ञायक, सिद्ध जग जगनाथ रे;
अविकार वीतप्रपंच आतम, अज्ञानताप्रमाथ रे.
श्रीराजसागर प्रसिद्ध चिन्मय, नित्य ज्ञाननिधान रे;
परम ज्ञान धरम उज्जल, राजहंससमान रे. ८८
देवचंद्र सुखी सदाई, अक्षरत्रय गुणयोग रे;
चढ्या ज्ञानानंद सिंधुर, लषे लोग अलोग रे. ८८

इति श्रीज्ञानार्णवे योगप्रदीपाधिकारे ढालभ देवचंद्रविरचिते पंचमः षंडः ॥ ५ ॥

दूहा.

उपशम धरी हरी दोष सहू, आदरि आतमर
कर्मकोटि डुषने कटे,
राग द्वेष हणि थीर करे, मुनि आतमपरिणा
अनुप्रेक्षा फल धारिने, कहूं तास गुणग्राम.
दीप हणे जिम तम भणी, तिम मुनि दाहे
मुनि मन चंचलता रहै, रागद्वेषने भर्म.
प्रथम संघयणी दृढ बली, शुक्लध्याननै योगः
छेद्यो भेद्यो पिण जिको, न लहै कंप न र
न सुणे देषे न न कहै, मूर्तिलेपसम तेह;
निस्संगी निश्चल यति, शुक्लध्याननी गेह.
बहिरंतर समवायविण, न सधै ध्यानसमाधि;
जडपर तनममता तजी, शुद्धातम आराधि.

ढाल—रामे सीता खबर करी. एहनी

बहिरातम ममता तजी प्राणी, अंतर आतम रूप
मन थिरता करी ध्यान ध्येय विधि, शुद्धातमनो मृ
गुण

जिम शुद्धातमपद ध्यावो रे, जिम निरमल शिवपद पावो रे ॥
ए आंकणी०

गुण असंख इक समय वधारे, कर्म असंख गमाय जी,
उपशम श्रेणे उपशम पामे, क्षय कीना क्षय जाय जी गुण गा० ३

धर्मध्यान थिति अंतर महूरत, मिश्रभाव शुक्ल लेश जी,
धरी विवेक उपशम धर ध्यानी, परमातम सुख देश जी गुण गा० ४

ध्यान विषे जो छोडे भव्य तनु, पामे ते सुरलोक जी,
सर्वारथसिद्ध नव ग्रैवेके, पामे सुख अशोक जी. गुण गा० ५

सुमनस मालसहित वलिलांछन, शशीसम निर्मलवाय जी,
वीरजत्रय सहित कामच्युत, भोगवे सुरसुख पाय जी. गुण गा० ६

ग्रैवेयक अनुत्तरवासि सुर, अति उदार सुख सोध जी,
वधती पुण्यपरंपर नित नित, ज्युं वारिधि शशि बोध जी. गुण गा० ७

सुरसुखथी असंख्यातगुणो छे, कल्पातीतने थान जी,
काल न जाणे भवनो जातो, इंद्रीसुख अनुमान जी. गुण गा० ८

तिहाथी चवीने मानवभवमे, लहे उत्तम कुल जाति जी,
तनु नीरोग सुभोग सयोगे, वधते सुख मन रति जी गुण गा० ९

भेदज्ञान वैराग्य प्रभावे, वे छोडे गृहवास जी,
निजरत्नत्रय सौख्य आरावे, मूकी दुष्ट परआस जी. गुण गा० १०

संज्वलना चोकडी प्रभावे, न लहे श्रेणिनो ठाण जी,
तीने समकित सत्तम गुण लगे, ध्यावे धर्म सुजाण जी. गुण गा० ११

रागादिक राहू रोग विणासे, जीपे इंद्री चित्त जी,
भवदुःख वारे ज्ञान सुधारे, मुक्तिस्त्रीनो मित्त जी. गुण गा० १२

मोह भजी आतमगुण रजी, निजपरभेदनो कार जी;
पोडी सम शिवमंदिर चढनां, धर्मध्यान तिण धार जी. गुण गा० १३

दूहा.

विगलेंद्री अक्रिय छे, ध्यान धारणा हीन;
ज्ञाता मुनि चउविधि धरे, शुक्लज्ञान गुणपीन. १
त्रय चोकडी कषायनी, क्षय अथवा उपशांत;
प्रथम दोय छद्मस्थने, केवलिने दोय अंत. २
पृथक्त्ववितर्क विचारयुत, प्रथम शुक्ल ते ध्यान;
एक वितर्क विचार विण, बीय शुक्ल शिव थान. ३
शुद्ध नाम तीय शुक्लरो, सूक्ष्मक्रिय प्रतिपात;
शुद्ध साध्य शिवपद रमे, उछिन्नै क्रिय वात. ४
जेथ विचारे भिन्नता, ते सविचारवितर्क;
निश्चय इक निज आतमा, जाण्या ए वितर्क. ५
व्यंजन व्यंजन अंतरे, अर्थांतरमे अर्थ;
योगादिक योगांतरे, संक्रम करण समर्थ. ६
शुद्ध द्रव्य गुणने स्मरे, ध्यानी विगतकषाय;
तीन योग दमि तीनी गुण, साधै पहिलै पाय. ७
प्रथम शुक्ल प्रभावथी, मुनिवर विगत अपाय;
केई कर्मने उपशमे, किणहीरा क्षय जाय. ८
सात प्रकृतिने उपशमे, उपशम समकित थाय;
चउत्थे छे अट्ठम थकी, उपशम श्रेणि चढाय. ९
सत्तायै तितली रही, उदय उपशम मोह;
केइ पडे भवने क्षये, के अद्धा क्षय लोह. १०

ढाल—सफल संसार अवतार ए हुं गिणुं. एहनी ॥

ध्यान निज आतमा सिद्धसम ध्याईयै, धोईये कर्ममल नित्य सुख पाईये;
दर्शन मोह त्रय चोकडी प्रथमनी, एह शम उपशम्यां ज्योति उपसम्मनी. १

पछे वीय चोकडीवले तिय चोकडी, उपशम्यां प्रकृति इम ता
सु पनरह झडी,
पछे हास्यादि छ उपशमे तेहने, २
प्रथम द्रव्य वेदने तेह मुनिवर वमे, पछे उदयागत वेद तसु उपशमे,
उपशमे नवमगुण सज्वलनिक तिहा, दशम गुण सुहम पिण लोभ
उपशमे जिहा ३
चढे इग्यारमे थान निज ज्ञानथी, थाय उपशात जिन शुक्लनिज
ध्यानथी, चरण अहक्खाय गुण पाय वसि कलने, के मरे के पडे
मोहने झालने ४
जे मरे ते टिके आय समकितगुणे, एग अवतार सव्वट्ठ सिद्धे थुणे,
जे पडे ते टिके सग छग पचमे, कोय चउथे निये होइ पहिले रमे. ५
भाव पचे हवे शुक्ल पहिलो स्मरे, च्यारस सहु कालने इकभवे दो करे,
सर्वश्रुतिजाण मुनि शात मुनि सवरी, ध्यान ध्यावे तिको आतमगुण
आदरी ६
ध्यान सवितर्कथी जीप कषायने, ध्यान एकत्वसवितर्क गुण ध्यायने;
चित्त निर्मल करी ध्यान सुपृथक्त्वथी, ध्यान एकत्व ध्यावे निज
सत्त्वथी ७
शुक्ल वीय पाय ध्यावे अछे क्षायकी, निरमल केवलज्ञाननी जसु वकी;
एक निज आतमा त्रिगुणनी एकता, ध्यान ध्यातातणी एकता
थिरता ८
द्रव्य पर्याय एकत्वथी जे धरे, निश्चल द्रव्य एकत्वथी जे धरे,
शुक्ल एकत्वता ध्यान अभ्यासथी, पामे केवल कर्मना नाशथी. ९
श्रेणि आरोहिने क्षपक कोई मुनि, करे अपूरवपणे गुण कर्मनी,
कोडि थिति घात करि महूरत थिति करे, छेदि अनतरसभाग
अतिम नरे १०

चढे गुणश्रेणि असंख गुण नित वधे, कर्मदल विहचिने तास नासन धरे;
दशम गुण लोभनो क्षय करी बारमे, गुण चढी कर्म घाति भणी ते वमे. ११
तेरमे थानके केवलज्ञानने, दरसण चरण वीरज्ज अनंतने;
पूर्व नवि लद्ध ते गुणचतुष्टय लही, देव सर्वज्ञ भगवान ते सुख मही. १२
जेहना नामथी कर्मबंधन गले, जन्ममरणादिविनु सिद्धसुखने मिले;
अगम अगोचर ज्ञानसंपद धरे, शेष अघाति चोकर्म हिव क्षय करे. १३
मास छ शेष आयुष थकां जे लहे, केवल ते समुदघात निश्चय वहे;
आयुथी वेदनीकर्म जो अधिक छे, तो समुदघातने आदरी शिव गछे. १४
चवदह राजनो दंड पहिले समे, बीय कपाटमंथाण तीजे समे;
भुवन पूरे सहू आत्मपरदेशथी, समे चोथे जगव्यापक आपथी. १५
कर्मचतुष्कने सम करी केवली, ते वली संहर आत्मप्रदेशावली;
अनुक्रमे च्यारविधि चोसमे संहरे, अड समयमांहि त्रय समय नवि आदरे. १६

दूहा.

कोय करे को नवि करे, समुद्घात विधि एह;
ज्ञानी धर्म वदे इशो, स्यादवाद गुणगेह. १
द्रव्य क्षेत्र काल भावथी, निजरूपे सहि अस्ति;
पर द्रव्यादिक देवता, नास्ति सहित सहु वस्तु. २
एकसमे दोउं अछे, अस्तिनास्ति तिण थाय;
अवक्तव्य चोथो तिणे, जे एकसमे न कहाय. ३
अवक्तव्ययुत भंगत्रय, मेल्या भांगा सात;
सूक्ष्मनिगोदथी सिद्ध लगि, सत्त भंग थिर घात. ४

द्रव्यार्थिकपर्यायथी, अस्तिनास्तिता जाण,
नित्यानित्यादिकपणे, एक अनेक वखाण. ५
जिम घटमे घटअस्तिता, लकुटनास्तिता जाण,
अस्ति जीवमे चेतना, भडता नास्ति वखाण ६
सिद्ध द्रव्यमे द्रव्य गुण, पर्याये करि होय,
अस्तिनास्तिता भग सम, द्रव्य एकता जोय. ७
द्रव्यार्थिक उत्सर्गभग, पर्याये अपवाद,
ए गुणधारक आतमा, सिद्धरूप स्याद्वाद ८

ढाल—जिनदेव तु जयकारी एहनी ॥

बीजी देशी–देहु देहु नणद हठीली ए देशी ॥

निज जाणननय गुण जाणो, जिम आतमरूप पिछाणो रे, निज०
नैगमनय कारिज साही, सकल्पमात्रनो ग्राही रे निज० १
कारिजनो अंश न साधे, सत्तागुणने आराधे रे, निज०
कोइक जन माणो लेवा, चल्यो वन काठ ग्रहेवा रे निज० २
कोईक पूछे किहां जास्यो, प्रस्थलेवण तिण भास्यो रे, निज०
सूक्ष्मनिगोदी जीव ते, दाख्यो सिद्ध सदीव रे निज० ३
तेरम चवदम गुणधारी, ते जिन दाख्या ससारी रे, निज०
दाखी नैगमनय वाणी, सुणि सग्रहनय सहि नाणी रे निज० ४
लक्षण असाधारण एको, अविरोधी परथी छेको रे, निज०
सहु गुणनो सग्रह थाये, विण दाख्ये गुण पर्याये रे निज० ५
घट दाख्यो घने भावे, घटजाति लिंग सहू आवे रे, निज०
तिम जीव चेतनगुण जाण्यो, ज्ञानादि त्रिगुण सहु ठाणे रे निज० ६
द्रव्य कह्या छहकेरा, आवे गुण पर्याय भेरा रे, निज०
सग्रहनय लक्षण एह, विवहार सुणो गुणगेह रे. निज० ७

संग्रहनय दाख्यो आवे, ते विहचे करि विधि दावे रे; निज०
विहचे गुण पर्याय भेदा, ज्यां लगि अविभागी छेदा रे. निज० ८
घट दाख्ये घटनी जाति, आवे सहु न पडे भ्रांति रे; निज०
संग्रहनय भेद कहावे, चेतन जड भेद न पावे रे. निज० ९
पण जड एक चेतनवंत, संसारी सिद्ध महंतो रे; निज०
दरसण नाण चरित्र, इकना त्रय नाम पवित्रो रे. निज० १०
इत्यादिक विभजनकारि, नय व्यवहार विचारी रे; निज०
ऋजुसूत्रे ऋजुमग साहे, गतागत काल न चाहे रे. निज० ११
विद्यमान कालनी साखे, संसारी अरु शिव आखे रे; निज०
दाखी ऋजुसूत्रनी वाणी, हिव सांभल शब्द कहाणी रे. निज० १२
लिंग संख्यादिक व्यभिचारो, न फरे जिहां अर्थ विचारो रे; निज०
घट अक्षर दोय भासे, तब नीर आधार प्रकाशे रे. निज० १३
जिहां चेतन शब्द कहावे, तिहां ज्ञानादिक गुण आवे रे; निज०
निशहु संज्ञाशब्दे लहीये, हिव समभिरूढनय कहीये रे. निज० १४
नाना शब्दे इक अर्थे, आरोहे नांही अनर्थे रे; निज०
इंद्र शक्र सुरईश, ए नाम भेदे कईसो रे. निज० १५
अथवा जे गुण छे जिणरा, तेहिज दाखे ते तिणरा रे; निज०
रूपी चेतन नभ नांही, नही जडता चेतनमांही रे. निज० १६
आतमना नाम अनेक, तो पिण भावार्थे एक रे; निज०
समभिरूढने गिणीये, हिवे एवंभूतनय भणीये रे. निज० १७
निज कारण पूरण साधे, यथार्थपणे आराधे रे; निज०
जल भरीयो नारिसीस, तेहीज घटरूप जगीस रे. निज० १८
अष्टानंतक धर बुधे, शिववासी कहीये सिद्धो रे; निज०
सिद्धगमन लो काल, तेम गिणे सिद्ध विचालो रे. निज० १९

एवंभूतक नय लीधो, पूरव पटनयसु सिद्धो रे, निज०
इक इकना सत सत भेद, जाणे ज्ञानी गतखेदो रे निज० २०
सूक्ष्म उत्तरोत्तर छे, तिमहीज कारण कारज छे रे, निज०
साते नय इक सद्दहीये, तदि सम्यग्ज्ञानी कहीये रे निज० २१
इक इक भगे सग नय छे, नयविणु भगा शिवमे छे रे, निज०
अक्षरत्रय गुण जब ध्यावे, तब देवचद्रपद पावे रे निज० २२

दूहा

इक प्रत्यक्ष परोक्ष वन, छे प्रमाण द्वे रूप,
मति श्रुत ज्ञान परोक्ष, केवल परतिप मूप १
मन.पर्यं-अरु अवधिगुण, देसत परतप जाग,
अनुमानादिक भेद सहु, जाणि परोक्ष प्रमाण २
क्षीणमोह गुणठाणा लगि, सम्यग्ज्ञानी जीव,
छउमत्थ चोनाणी भणी, ज्ञान परोक्ष सदीव. ३
निक्षेपा चोविध कह्या, नाम थापना दर्व;
भावनिक्षेपो मुख्य छे, अगे साचो सर्व. ४
निर्गुण गुणयुत वस्तुनी, सज्ञा करवी जाय,
नामनिक्षेपो जेमको, नामे केवल थाय ५
थापीजे-ते थापना, जैनबिंब जिनरूप,
द्रव्यनिक्षेपो बाहारत,- द्रव्यलिंगनो मूप ६
गुण-पर्यायधारी प्रवर, मुख्यादेय सदीव;
भावनिक्षेपो ते कह्यो, जे चेतनलक्षण जीव ७
नय प्रमाण निक्षेप विधि, नहीं सिद्धमे एह,
द्रव्यार्थिक पर्यायुत, सिद्ध शुद्ध गुणगेह. ८

ढाल—वधावानी अयोध्या हे राम पधारिया. एहनी ॥

परमातम निज घर आवीया, वलि पाम्या हे ज्ञानादिक गुणहेम;
कायजोग वादर दमी, वलि रुंधे हे सूक्ष्मवचने तेम. परमा० १
काययोग सूक्ष्म दमी, वलि रुंधे हो बादरमननी हो चालि;
सूक्ष्मकिरीया ध्यान जे, ते ध्यावे हो आतमनिहालि. परमा० २
प्रकृति बहुतर कर्मनी, तिहां क्षय करि हो शेलेशीनो काज;
समुच्छिन्नक्रिय ध्यानने, ते ध्याये हो निरमल शिवसाज. परमा० ३
तेरे प्रकृति खपाविने, शिव पावे हो सहू कर्म खपाय;
निरमल शांत निरामयी, निरंजन हो शिव विगतअपाय. परमा० ४
काल वरण पण तेर हे, चवदम गुण हे तजी होय ते सिद्ध;
अष्टानंतक गुणधणी, जगनायक हो वलि परम विशुद्ध. परमा० ५
उरधगति बललोकने, शिखरे ते हो जई वसेय उल्लास;
धरम द्रव्यनय अलोकमे, तिण कारण हो तेहनो तिहां वास. परमा० ६
लोकाकाश शिखरे रह्यो, ते देखे हो सहु लोक अलोक;
ते सुखनीय नवि को लखे, अतिइंद्री हो परमातम सुखओक. परमा० ७
इंद्रिय सुख त्रयकालना, जिण आगे हो अंश अनंत;
द्रव्यार्थिक पर्यायने, जाणे ते हो सहु द्रव्य महंत. परमा० ८
दोष अढारह विणु सदा, निरंजन हो नित्यानंदनो भूप;
परमेष्ठी परज्योति छे, ते जाणे हो त्रयलोकनो रूप. परमा० ९
निज स्वभाव गुण देखतो, ते देखे हो सचराचर विश्व;
गुण अनंत धारक प्रभु, निकलंकी हो नही दीरघ ह्रस्व. परमा० १०
पुरव जे नवि अनुभव्या, तेहिज सुख हो लहे सिद्ध जिनेश;
जाणे केवलज्ञानथी, वचने करि हो न कही शके लेश. परमा० ११
परतिख लोकशिरोमणि, निरद्वंद्वी हो निजसह जसवाद;
निरूपम थिर अविच्छेदतो, ते विलसे हो सुखसंग अनादि. परमा० १२

दरसण ज्ञान चारित्र वळी, सुख वीरज हो जसु प्रगट अनत,
भवतमव्वंसा भानुज्यु, सिद्धांतमे हो अतिमहिमा महत परमा० १३
ज्ञान सुधारससम सजे, अविकारी हो परमानदनो धाम,
देवचंद्र सुखसागरू, अक्षरत्रय हो गुण निजराम परमा० १४

दूहा.

श्रीजिनशासन अगमगुण, शिवसुखनो दातार,
स्याद्वाद परिणाम धरि, आतमदर्शक सार. १
मिथ्यातमभर भाजिवा, रविसम जिनमत एह,
सिद्ध शुद्ध परमात्मरस, धारक निजगुणगेह २
सूक्ष्म निगोदी सिद्धिथिति, बहु द्रव्य पर्याय,
एकता व्ययउत्पादनी, इण विण बीय न कहाय ३
नामजेन जन बहुत छे, तिणथी सिद्ध न काय,
सम्यग्ज्ञानी शुद्धमति, भावजेन शिवराय. ४
सिद्ध साधिवा समकिती, आराधे निज ध्यान,
तेह वखाण्यो जेनमे, अगम अपार प्रधान ५
सोकिरे इक आखरे, में वरण्यो छे एह,
सुधासम झिलेज्यो तुरत, ग्रंथ तणो गुण लेह ६
पूरणध्यानतणी कथा, जाणे जिनवर देव,
निश्चय शिवसाधक गिणी, धरज्यो ते नितमेव ७

ढाल–राग धन्याश्री इणपरि भाव भगत मन आणी एहनी देशी॥

ध्यानकथामे एह वखाणी, आतमरूप पिछाणी जी,
पूरवसूत्रतणी सहि नाणी, जिम दीठि तिम आणी जी ध्यानक० १
पंडितजन मनसागर ठाणी, पूरणचद्र समान जी,
सुभचद्राचारिजनी वाणी, ज्ञानीजन मन भाणी जी. ध्यानक० २

भविक जीव हितकरणी धरणी, पूर्वाचारिज वरणी जी;
ग्रंथ ज्ञानार्णव मोहक तरणी, भवसमुद्र जलतरणी जी. ध्यानक० ३
संस्कृतवाणी पंडित जाणे, सरव जीव सुखदाणी जी;
ज्ञाताजनने हितकर जाणी, भाषारूप वखाणी जी. ध्यानक० ४
ढाले अठावन षड अधिकारू, शुद्धातमगुण धारू जी;
आखे अनुपम शिवसुखवारू, पंडितजन उरहारू जी. ध्यानक० ५
संवत लेश्या रसने वारो १७६६, ज्ञेयपदार्थ विचारो जी;
अनुपम परमातमपद धारो, माधवमास उदारो जी. ध्यानक० ६
कृष्णपक्ष तेरस रविवासर, ए अधिकार प्रकास्यो जी;
भणतां गुणतां सुणतां सुखकर, ज्ञानगेहमे आस्यो जी. ध्यानक० ७
खरतर आचारिज गच्छधारी, जिणचंदसूरि जयकारी जी;
तसु आदेश लही सुखकारी, श्रीमुलतानमझार जी. ध्यानक० ८
अध्यातम श्रद्धाना धारी, जिहां वसे नरनार जी;
परमिथ्यामतना परिहारी, स्वपरविवेचनकारी जी. ध्यानक० ९
निजगुणचरचा तिहांथी करतां, मन अनुभवमे वरतां जी;
स्यादवाद निजगुण अनुसरतां, नित अधिको सुख धरतां जी. १०
भणसालि मिठूमल ज्ञाता, आतमसूरज ध्याता जी;
तसु आग्रह करी चउपई जोडी, सुणतां सुखनी कोडी जी.
ध्यानक० ११
निज शुद्धातम ध्यानने ध्यावो, युगप्रधान गुण गावो जी;
श्रीजिनचंद सूरनो दावो, महूरतमांहे पावो जी. ध्यानक० १२
निजगुणपाठक पुण्यप्रधाना, सुमतिसागर गुणथाना जी;
आतम साधुरंग वखाना, वाचक शुभ ग्रंथाना जी. ध्यानक० १३
जयवंता पाठकगुणधारी, राजसार सुविचारी जी;
निर्मलज्ञान धरम संभारी, वाचक सहु हितकारी जी. ध्यानक० १४

राजहस राहू गुरुसुपसावे, मुझ मन सुख नित पावे जी,
एह सुग्रथ रच्यो शुभ भावे, भणता अतिसुख पावे जी १५
अक्षरत्रय गुणचाह सुसगे, निजमनतणे उमगे जी,
मित्र कुभकरणने सगे, देवचद्र मनरगे जी. ध्यानक० १६
ढालबध ए ग्रथसु कीधो, मानवभवफल लीधो जी,
आशीर्वाद एह मे दीधो, ज्ञान लहो सहु सिद्धो जी ध्यानक० १७
ध्यानदीपिका एहवो नामो, अरथ अछे अभिरामो जी,
रविशशिलगि थिरता ए पामो, देवचद्र कहे आमो जी ध्यानक० १८

इति श्रीज्ञानार्णवे ढालभाषाबधे पडितदेवचद्रमुनिविरचिते शुक्लध्याने स्याद्वादाधिकारवर्णनो नाम षष्ठमो खड संपूर्ण ॥

इति श्रीध्यानदीपिकाचतुष्पदी समाप्तेय ॥

वछित पूरण सुरतरू जेहा, विविध वरण जसू देहा रे,
चोवीसे जिनवर गुणगेहा, थुणता वाधे नेहा रे वछित० १
वासुपूज्य पद्मप्रभु राता, सुविधि चदप्रभु धोला रे,
मुनिसुव्रत नेमिसर काला, सोवनवरणे सोला रे वछित २
मल्लि पास प्रभु दोउ नीला, केई माणेक केई हीरा रे,
पच वरणनी माला गुंथी, हियडे पहिरे दोला रे वछित० ३
मणी जडियाने केहवो माणिक, ध्यान कुदण विच थापे रे,
हियडे पहिरे जडावनी चोकी, पहिर्यांथी सुख आपे रे. वछित० ४
भूत प्रेतनो रोग न व्यापे, राज चोर भय पीडा रे,
भावसहित भगवत भजता, शिवपुरना सुख नेडा रे, वछित० ५

इति श्रीचोवीसभगवानरगस्तवन सपूर्ण. ॥

अथ

श्रीमद्देवचन्द्रकृतः

कर्म्मग्रन्थस्य टवार्थः

मूलगाथा—

सिरिवीरजिणं वंदिय, कम्मविवागं समासओ वुच्छं।
कीरइ जिएण हेउहिं, जेणं तो भण्णए कम्मं ॥१॥

अर्थ—प्रणिपत्य जगन्नाथ, वर्द्धमान गिरापतिम् ।
गणभृद्गौतम पूज्य, देवेन्द्रसूरिमुत्तमम ॥ १ ॥
राजसार गुरु नत्वा, ध्यात्वा वाग्देवता वराम् ।
सुखार्थं कर्मग्रथस्य, टवार्थ. क्रियते मया ॥ २ ॥

श्री चोत्रीस अतिशयें सहित वीरजिणं महावीर भगवत प्रतें वंदिय वांदीनें–शासननायक महावीर छे तिणे कारणे महावीर स्वामी प्रतें वंदिय कहेता वादीने कम्म आठ कर्मनो विवागं विपाकफल समासओ सक्षेपें वुच्छं कहु छु जे कर्म्म ते किस्यु जे ते कहे छे–कीरइ कीजीये–प्रारसीयें छे जिएण जीवें हेउहिं च्यार ४ हेतुएं करीने ते हेतु कहे छे–मिथ्यात्व १, अविरति २, कषाय ३, योग ४, करीनें जेणें तओ तिको भण्णए कहीजे. कम्मं कहेतां कर्म्म. ए प्रथमगाथार्थ.॥१॥

ते कर्म्मना च्यार भेद छे—

पयईठिईरसपएसा तं चउहा मोयगस्स दिट्ठंता।
मूलपगइट्ठउत्तरपगईअडवन्नसयभेअं ॥ २ ॥

अर्थ--प्रकृतिबंध-कर्मनो स्वभाव १, स्थितिबंध-कालनो मान २, रसबंध-चीकणाइ ३, प्रदेशबंध-दलनो मान ४, तं तिको कर्म च्यार भेदें छे. मोदकने दृष्टांते छे-जिम मोदक कोयक वायने हरे, कोयक पुष्ट करे, तिम कर्म पण ज्ञानावरणी ज्ञानने हरे, दर्शनावरणी दर्शननें हरे, इत्यादिक. स्थिति लाडूनी जेम दश दिन प्रमुख तिम कर्मनी स्थिति त्रीस कोडाकोडी आदि. रस लाडू मेथी प्रमुखमां मीठो कडवो कल्पाय छे तिम एक-ठाणीयो प्रमुख. प्रदेश दलमान एवं तिहां प्रथम प्रकृतिबंध कहे छे. मूलप्रकृति आठ छे-कर्म आठ छे अने उत्तर प्रकृति-आठ कर्मना उत्तरभेद १५८ एकसो अट्ठावन छे, आप आपणो कर्मस्वभाव छे. ॥२॥

हवे इहां आठ कर्मनां नाम कहे छे--

इह नाणदंसणावरणवेयमोहाउनामगोयाणि ।
विग्घं च पणनवदुअट्ठवीसचउतिसयदुपणविहं ॥३॥

अर्थ--प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म कहीए १. बीजो दर्शनावरणीय कर्म २. अने वेय त्रीजो वेदनीयकर्म ३. मोह चोथो मोहनीयकर्म आऊ पांचमो आउखा कर्म. नाम छट्ठो नामकर्म. गोयाणि सातमो गोत्रकर्म-ज्ञानावरणीयकर्म ज्ञानगुणने आवरे, दर्शनावरणीय दर्शनगुणने आवरे, वेदनीयकर्म अव्याबाध अनंतसुख गुणने रोके. मोहनीय कर्म सम्यक्त्व अने चारित्रगुणने रोके, आउखा कर्म अनवगाह गुणने रोके-(अक्षयस्थिति गुणने रोके) गोत्र कर्म अगुरुलघुगुणने रोके. आठमो अंतराय कर्म वीर्य गुणने रोके. ए आठ नाम कह्या. हवे एहनी उत्तरप्रकृतिनो १५८ नो थडो कह्यो ते कहे छे-ज्ञानावरणीयनी पांच प्रकृति, दर्शनावर-

णीयनी प्रकृति नव ९, वेंदनीय कर्मनी बे प्रकृति २, मोहनीय कर्मनी अठ्ठावीस प्रकृति २८, आउखा कर्मनी ४ च्यार प्रकृति, नामकर्मनी एकसो त्रण १०३ प्रकृति, गोत्रकर्मनी बे प्रकृति २, अतरायकर्मनी पाच प्रकृति ५. एव सर्वप्रकृति १५८ एकसो अठावन छे ॥ ३ ॥

मइसुयओहीमणकेवलाणि नाणाणि तत्थ मइनाणं।
वंजणवग्गह चउहा मणनयणविणिंदियचउक्का ॥४॥

अर्थ—हवे प्रथम ज्ञानावरणीय कर्म तेहना भेद केहेवा ते ज्ञानावरणीय ज्ञानने रोके तिणे प्रथम ज्ञानना भेद मंगलिक रूप वखाणे छे ज्ञानना भेद पाच छे, मइ—मतिज्ञान, सुअ—श्रुतज्ञान, ओही—अवधिज्ञान, मण मन.पर्यवज्ञान केवलाणि—केवलज्ञान. नाणं णि ए पाच ज्ञान जाणीये वस्तुस्वरूप जाण्याथी ते ज्ञान कहीजे हवे तिहा मतिज्ञानना भेद २८ कहे छे मननी विचारणारूप ज्ञान ते मतिज्ञान कहीजे (इद्रियोनी अपेक्षापूर्वक) व्यजनावग्रह जे इद्रियोना विषय मिल्या थका जे अव्यक्त उपयोग असख्यसमयात्मक ते व्यजनावग्रह कहीजे तेहना भेद ४ छे. मन नयन कहीता आख्य मन विना च्यार इद्रियने व्यजनावग्रह छे. जे कारणथी मन, आख्य अप्राप्यकारी छे. अने च्यार इद्रियने प्राप्यकारी छे. स्पर्शेंद्रियव्यजनावग्रह १ रसनेंद्रियव्यंजनावग्रह २ घ्राणेंद्रियव्यजनावग्रह ३ श्रोत्रेन्द्रियव्यजनावग्रह. ४ ॥४॥

अत्थुग्गहईहावायधारणा करणमाणसेहिं छहा।
इय अट्ठवीसभेयं चउदसहा वीसहा व सुयं ॥५॥

अर्थ--अत्थुग्गह-अर्थावग्रह-किंचित् ज्ञान ते अर्थाव-ग्रह, तेहना भेद छ छे. इहा-विचारणा, तेहना भेद ६ छे अवाय-इहितज्ञाननो निश्चय ते अपायना भेद ६ छे. अविस्मरण ज्ञान ते धारणा, तेहना भेद ६ छे (पांच इंद्रि मन करी एक एकना छ भेद छे.) स्पर्शनेंद्रिय अर्थावग्रह १ रसनेंद्रिय अर्था-वग्रह २ घ्राणेंद्रिय अर्थावग्रह ३ चक्षुरिंद्रिय अर्थावग्रह ४ श्रोत्रेंद्रिय अर्थावग्रह ५ मन अर्थावग्रह ६. स्पर्शनइहा १ रसनइहा २ घ्राणइहा ३ चक्षुइहा ४ श्रोत्रइहा ५ मनइहा ६. स्पर्शन-अवाय १ रसनअवाय ३ चक्षुअवाय ४ श्रोत्रअवाय ५ मन अवाय ६. स्पर्शनधारणा १ रसनधारणा २ घ्राणधारणा ३ चक्षुधारणा ४ श्रोत्रधारणा ५ मनधारणा ६. (एम ए सर्वे मळी २८ भेद मतिज्ञानना जाणवा.)

हवे श्रुतज्ञानना भेद कहे छे-चउदसहा १४ भेदे छे-श्रवणेंद्रिय अने श्रुतज्ञानस्युं थाय ते श्रुतज्ञान कहीजे. वीसहा वळी वीस भेद पण छे. ॥ ५ ॥

तेमां पेहेला १४ भेद कहे छे.

अक्खर[१] सन्नी[२] सम्मं[३] साइयं[४] खलु सपज्जवसियं[५] च।
गमियं[६] अंगपविट्ठं[७] सत्तवि एए सपडिवक्खा ॥६॥

अर्थ-अक्षरश्रुत-अक्षर बावनें करी अवबोध ते १. अक्षर विना ज्ञान थाय. अंकादिक थकीज ते अक्षरश्रुत. २. संज्ञीपं-चेंद्रीने जे श्रुत ते संज्ञीश्रुत ३ हवे असंज्ञीनुं श्रुत ते असंज्ञीश्रुत ४ समकितीनुंश्रुत ते सम्यग्श्रुत ५ मिथ्यात्वीनुं श्रुत ते मिथ्यात्वी-श्रुत ६ सूत्रें करी गणधर नवां रचे तिणे सादीश्रुत ७ महाविदेहमां वर्ततुं श्रुतज्ञान ते अनादिश्रुत ८ तिमज सूत्रें करी तीर्थविच्छेदे

भरते ऐरवतमे विनाश छे तिणे सपर्यवसितश्रुत ९ अर्थे करी महाविदेहक्षेत्रमें सूत्रें पण विच्छेद नही तिणे अपर्यवसित श्रुत छे १० गमियं–सरखा पाठ नये करी ते गमिकश्रुत कहीये ११ अने सामान्यपाठ ते अगमिकश्रुत कहीइ अगमी ते बार श्रुत कहीये १२ द्वादशागी सिद्धात ते ए मूळअग तेमाही जे अर्थ ते अगप्रविष्टश्रुत १३ अने द्वादशागी विना आवश्यकादि अनग प्रविष्टश्रुत १४ सात मूलभेद सूत्रमाहि कह्या अने सात तेना प्रतिपक्षीभेद एम १४ थया ॥६॥

पज्जयअक्खरपयसंघाया पडिवत्ति तह य अणुओगो ।

पाहुडपाहुडपाहुड वत्थुपुव्वा य ससमासा ॥ ७ ॥

अर्थ–पर्यायश्रुत ते सूक्ष्मलब्धी अप० निगोदने भव प्रथम समयथी बीजे समये वृद्धि पामतु श्रुत ते पर्यायश्रुत १ अनेक पर्याय जाणे ते पर्याय समासश्रुत कहीये. २ अक्षरना ३ भेद–सज्ञाक्षर १ लब्ध्याक्षर २ व्यजनाक्षर ३ एमाहि एकभेद जाणे ते अक्षरश्रुत ३ सर्व अक्षरभेद जाणे ते अक्षर समासश्रुत ४ पद्र अधिकार विशेष ते एक जाणे ते पदश्रुत कहीये ५ सर्व अनेकपद जाणे ते पद समासश्रुत कहीये ६ मार्गणा एक जाणे ते सघातश्रुत कहीये ७ सर्वे मार्गणा जाणे ते सघात समासश्रुत ८ बासठ मार्गणाए करी योगादि एकबोल जाणे ते पडिवत्तीश्रुत कहीये. ९ हवे बासठ मार्गणाए योगादि सर्व बोल जाणे ते पडिवत्तिसमास–श्रुत कहीये १० उपक्रम, निक्षेप, अनुगम, नय, ए चार अनुयोगमांहि तथा सतपदादी नव योगमाहे एक अनुयोग जाणे ते अनुयोग श्रुत कहीये ११ सर्व अनुयोग जाणे ते अनुयोग

समास श्रुत कहीये. १२ पूर्वने विषे पाहुड–अधिकार विशेष ते एक जाणे ते पाहुड श्रुत १३ वणा जाणे ते पाहुड समास श्रुत कहीये १४ पाहुड पाहुड पण अधिकार विशेष तेहना भेद पण इम बे जाणवा १६ वस्तुश्रुत १७ वस्तुसमास श्रुत १८ पूर्वश्रुत १९ पूर्व समास श्रुत २० ए सर्व अधिकार विशेष छे ए वीस भेद छे। इंम वीजा क्षिप्रादिक अनेक भेद छे ते नंदीथी जाणजो. इहां न कह्या छे संक्षेपार्थ माटे. दश नाम सूत्रमें कह्या अने तेहिज दस समासपद जोड्यां वीस थयां. ॥ ७ ॥

अणुगामि वड्ढमाणयंपडिवाईयरविहा छहा ओही।
रिउमई विउलमई मणनाणं केवलमिगविहाणं ॥८॥

अर्थ—हंवे अवधिज्ञानना भेद कहे छे–जिहां उपनो तिहांथी पछी सर्व साथे चाले ते अनुगामी अवधि १ अने जे उपना पछी वधतो होय ते वर्द्धमान अवधि कहीजे २ जे उपना पछी जाय ते पडिवाई अवधि कहीजे ३ त्रण भेद इतर प्रतिपक्षी लेवा. साथे न चाले ते अननुगामी अवधि कहीये ४ घटतो जाय ते हीयमान अवधि कहीये ५ जे उपना पछी जाय नही ते अप्रतिपाति अवधि कहीये. ६ एवं ६ छ भेद अवधिना जाणवा. यद्यपि अवधिज्ञानना भेद असंख्याता छे; परं इहां मोटा भेद लीधा छे.

मनःपर्यवज्ञानना भेद बे ते मननी वर्गणा जाणे ते मनः पर्यवज्ञान जाणवो. जे अढी अंगुल उणी अढाई द्वीप मास निरधारना मनोगतभाव जाणे, सामान्यपणे चरमशरीरीनो

नियम नही ते ऋजुमति मन पर्यव १ अने सपूर्ण अढाइ द्वीप ना मनोगतभाव जाणे विशेषपणे तद्भव मोक्षगामीने विपुलमति मन पर्यवज्ञान २ ए बे भेद मन पर्यवज्ञानना जाणवा यद्यपि मननी वात अवधिज्ञानी पण जाणे पण सूक्ष्म मननी वात मन पर्यवज्ञानी जाणे

अने केवल–असहाई निरावरण सर्व जाणे ते केवलज्ञान त्रिणकाल त्रिणलोक छए द्रव्यना गुण पर्याय जाणे ते केवलज्ञान. ए ज्ञानना पाच भेद कह्या सिद्धान्तमा. ॥ ८ ॥

एसिं जं आवरणं, पडुव चक्खुस्स त तयावरणं ।
दसणचँउ पण निद्दा वित्तिसमं दंसणावरणं॥ ९ ॥

अर्थ—ए पाच ज्ञानने आवरे ढाके ते ज्ञानावरणीय कर्म आख्यने जेम पाटो तिम तेहनो आवरण कहीजे मतिज्ञानने आवरे ते मतिज्ञानावरणीय कर्म १ श्रुतज्ञानने आवरे ते श्रुत ज्ञानावरणीय २ अवधिज्ञानने आवरे ते अवधिज्ञानावरणीय कर्म ३ मन पर्यवज्ञानने आवरे ते मन पर्यवज्ञानावरणीय कहीये ४ केवलज्ञानने आवरे ते केवलज्ञानावरणीय कहीजे. ५ एव पाच भेद एटले ज्ञानावरणीय कर्मना भेद कह्या.

हवे दर्शनावरणीय कर्मना भेद कहे छे तेमा दर्शनावरणीय च्यार भेदे छे अने पाच प्रकारनी निद्रा एव नव ९ भेद छे. वित्ति–छडीदार समान दर्शनावरणीय कर्म जाणवो ॥९॥

चक्खुदिट्टि-अचक्खूसेसिंदियओहिकेवलेहिं च ।
दसणमिह सामन्नं तस्सावरणं तयं चउहा ॥१०॥

अर्थ—चक्षुदर्शन दृष्टि जे आंख्यथी सामान्य उपयोग १ अचक्षुदर्शन जे स्पर्शन, रसन, घ्राण, श्रोत्ररूप च्यार इंद्रियनो जे सामान्य उपयोग ते अचक्षुदर्शन कहीये २ अवधिज्ञानीने सामान्य उपयोग ते अवधिदर्शन कहीये ३ केवलज्ञानीने जे सत्ताग्राहक सामान्योपयोग ते केवलदर्शन कहीये ४ इहां मनःपर्यवज्ञानने दर्शन न कह्यो ते इण कारण दर्शन इहां सामान्यनो उपयोग अने मनःपर्यवज्ञान ते विशेष उपयोगे ज छे तिणे दर्शन न कह्यो ते च्यार दर्शनने आवरे ते च्यार भेदे छे, चक्षुदर्शनावरणी १ अचक्षुदर्शनावरणी २ अवधिदर्शनावरणी ३ केवलदर्शनावरणी ४ ए च्यार भेद छे. ॥१०॥

सुहपडिबोहा निद्दा निद्दानिद्दा य दुक्खपडिबोहा ।
पयला ठिओवविट्ठस्स पयलपयला उ चंकमओ॥११॥

अर्थ—हवे निद्राना पांच भेद छे ते कहे छे सुखे थोडे खरुके जागे पण तरत जागे ते निद्रा कहीजे १ दुःखे घणे साद करे अत्यंत पोकार करे कुकुआ करे जागे ते निद्रा-निद्रा कहीये २ अने बेठां उभां निंद आवे ते प्रचला त्रीजी कहीजे ३ चालतां उंघे घोडानी पेरे ते प्रचलाप्रचला कहीजे. ४ घोडो जेम बाजरी खाते कांकरो आवे त्यारे जागे तिम ते काम पडे जागे. ॥ ११ ॥

दिणचिंतियत्थकरणी थीणद्धी अद्धचक्किअद्धबला ।
महुलित्तखग्गधारालिहणं व दुहा उ वेयणियं ॥१२॥

अर्थ—अने दिननो चिंतव्यो काम रात्रे करे निद्रामां जेम

लघु चेले हाथीना दांत रात्रें काढ्या तिम दिनचिंती तेहने कहीजे ते थीणद्धी निद्रा पाचमी कहीजे एहनो बल अर्द्ध-चक्रवर्त्तिं जे वासुदेव तिणथी आधोबल होवे निद्रामाही ब्रत-वतां करे

हवे वेदनीय कर्मनो स्वरूप कहे छे—मधु सहतथी लेपी खड्गनी धारा तेहनो जे चाटवो ते समान छे. जिम मीठास लागे ते सातावेदनी १ अने चाटता कटाइ जे ते असातावेदनी २ दुहाःउ—दोइ भेदें वेदनीयकर्म छे. अव्याबाधगुणत्व रोके छे वेदनीयकर्मनो स्वरूप छे.॥१२॥

ओसन्नं सुरमणुए सायमसायं तु तिरियनरएसु ।
मज्जं व मोहणीयं दुविहं दंसणचरणमोहा ॥ १३ ॥

अर्थ—उसन्न-प्राये देवगतिने मनुष्यगतिमा सातावेदनीनो प्रबल उदय छे, अने तिर्यंच नारकीने असाता प्रबल छे इहां. जिन भगवानना जन्म समये नारकीने पण साता थाय छे अने गजरत्न अश्वरत्न तिर्यंचने पण साता छे पण ते कदा कालें थाय छे सदा नहीं तेणे न गणी.

हवे मोहनीयकर्मनो स्वरूप कहे छे—मदिरापान समान मोह-नीयकर्म छे. जिम मदिरापान कीधा माणस गहेलो विव्हल थाय तिम मोहनीयकर्मथी पण जाणवो ते मोहनीयकर्मना बे भेद छे—एक दर्शनमोहनी जे दर्शन समकितगुणने मुझावे ते दर्शनमो-हनी १ अने चारित्रविरतिने मुझावे ते चारित्रमोहनी कहीजे.१३॥

दंसणमोहं तिविह सम्मं[1] मीसं[2] तहेव मिच्छत्तं[3] ।
सुद्धं[1] अद्धविसुद्धं[2] अविसुद्धं[3] तं हवइ कमसो ॥१४॥

अर्थ—तिहां दर्शनमोहनीना त्रण भेद छे, त्रिणे गुण समकीतने रोके छे; यद्यपि समकितमोहनीना उदयथी क्षयोपशमसमकीत छे तोपण मिथ्यात्वनां शुद्ध दल वेदे छे (वेठि छे) ते सम्यक्त्वमोहनी १ मिश्रमोहनी २ तेमज वळी मिथ्यात्व मोहनी त्रीजी कही. इहां ग्रंथिभेद करतां प्रथम यथाप्रवृत्तिकरण थाय. सात कर्मनी स्थिति एक कोडाकोडी बाकी रहे त्यारे. बीजो अपूर्वकरण एक अंतर्मुहूर्त्त प्रमाण करे. त्रीजो अनिवृत्तिकरण करीने सम्यक्त्व फरसे इहां मिथ्यात्वने चरम समये त्रीण पुंज करे एक शुद्ध पुंज बीजो अर्द्धविशुद्ध पुंज त्रीजो अशुद्धश्याम पुंज ए स्थितिना त्रण पुंज करे शुद्ध पुंजनो दल वेदे ते सम्यक्त्व मोहनी १ अर्द्धविशुद्ध पुंज वेदे ते मिश्रमोहनी. २ अशुद्धश्याम दलने वेदे ते मिथ्यात्वमोहनी. ॥१४॥

जियअजियपुन्नपावासवसंवरबंधमुक्खनिज्जरणा ।

जेणं सद्दहइ तयं सम्मं खइगाइबहुभेयं ॥ १५ ॥

अर्थ—जीवतत्त्व चेतनालक्षण स्वरूपमय १. अजीवतत्त्व चेतना रहित शुष्क काष्टादि २. पुन्न–पुण्य शुभ कर्म ३. पाव–पाप अशुभ कर्म ४ आश्रव कर्मआवरणनो हेतु ५. संवर नवां कर्म आवतां रोके ६. बंध–जीव प्रदेश कर्म एकतारूप ७. सकळ कर्म क्षय पावे ते मोक्षतत्त्व कहीये ८. पूर्वकृतकर्मनी निर्जरा ते निर्जरातत्त्व कहीये ९. ए नवतत्त्व सूधा जाणे–निश्चये करी जाणे व्यवहारे करी प्रवर्त्ते ते निश्चय सम्यक्त्व कहीजे ते समकीतना घणा भेद छे क्षायक १ क्षयोपशम २ उपसम ३ वेदकादि भेदें करी. ॥ १५ ॥

मीसा न रागदोसो जिणधम्मे अंतमुहु जहा अन्ने ।
नालियरदीवमणुणो मिच्छं जिणधम्मविवरीयं ॥१६॥

अर्थ—मिश्रदृष्टिने राग नही द्वेष नही जिणधम्मे–जिन वीतरागना धर्मउपरें रागद्वेष नही ते मिश्रदृष्टि, अतर्मुहूर्त्त एहनी स्थिति ज होय अन्ने जहा–जेम अन्न उपरे नालियेर द्वीपवासी मनुष्यने अन्न कदी आखे नहीं दीटो तिणे तेहने अन्न उपरे राग नथी द्वेष पण नथी इम मिश्रमोहनीवतने जिनधर्म उपर रागद्वेष नथी मिथ्यात्व जे ते जिनधर्मथी विपरीत जे अज्ञानमुद्रित थको जीव कुश्रद्धान जीवादि पदार्थशु अरोचकबुद्धि ते मिथ्यात्व ॥ १६ ॥

सोलस कसायँ नव नोकसायँ दुविहं चरित्तमोहणियं।
अणँ अप्पचक्खाणाँ पचक्खाणा यँ संजलणाँ॥१७॥

अर्थ—हवे चारित्रमोहनीना २५ भेद कहे छे–तिहा चारित्रमोहनीना दोय भेद छे एक कषायमोहनी १ अने बीजी नोकषायमोहनी २ ते कषायमोहनीना १६ नोकषायमोहनीना ९ भेद छे अे दोनु मोहनीना २५ पचवीस भेद छे. चारित्र गुणने रोके तिणे चारित्रमोहनी कहीजे तिहा कषाय सोल १६ भेद छे अण अनतानुबधीना ४ भेद–अनतानुबधी क्रोध १ अनतानुबंधी मान २ अनतानुबधी माया ३ अनतानुबधी लोभ ४ । अप्रत्याख्यान देशविरतिने रोके तेहना ४ भेद–अप्रत्याख्यानी क्रोध १ अप्रत्याख्यानी मान २ अप्रत्याख्यानी माया ३ अप्रत्याख्यानी लोभ ४ । प्रत्याख्यान सर्वविरतिने रोके प्रत्याख्यान क्रोध १ प्रत्याख्यान मान २ प्रत्याख्यान माया ३ प्रत्याख्यान

लोभ ४। संजलन ते यथाख्यात चारित्रने रोके-संजलनो क्रोध १ संजलनो मान २ संजलनी माया ३ संजलनो लोभ ४ ॥१७॥

जाजीववरिसचउमासपक्खगा नरयतिरियनरअमरा।
सम्माणुसव्वविरईअहक्खायचरित्तघायकरा ॥१८॥

अर्थ—हवे एहनो दृष्टांत स्थिति कहे छे-कर्मस्थिति तो सोलकषायनी जघन्य अंतर्मुहूर्त्तनी, उत्कृष्टी ४० कोडाकोडी सागर छे. ए परिणामरूप स्थिति जाणवी. अनंतानुबंधीनी जावजीव स्थिति अप्रत्याख्याननी वरस १ स्थिति, प्रत्याख्याननी चउमास ४ मास स्थिति छे, संजलननी पक्ष १ स्थिति छे, अनंतानुबंधीने परिणामे मरे तो नरकगतिए जाय. १ अप्रत्याख्यानना परिणामे मरे तो तिर्यंचगतिमांहे जाय. २ प्रत्याख्यानना परिणामे मरे तो मनुष्यगतिमांहे जाय ३ संजलनने परिणामे मरे तो देवगतिमांहे जाय. ४ अनंतानुबंधी समकीतने घात करे. १ अप्रत्याख्यान अणुव्रतनुं देशविरतिनो घात करे. २ प्रत्याख्यान सर्वविरतिनुं घात करे. साधुव्रतनुं घात करे आवण देवे नहीं ३ संजलन यथाख्यातचारित्रनुं घात करे. एटले इणि कषाय उदय थकां इतला गुण प्रगटे नहीं. ॥१८॥

जलरेणुपुढविपव्वयराईसरिसो चउव्विहो कोहो।
तिणिसलयाकट्ठट्ठिय। सेलत्थंभोवमो माणो ॥१९॥

अर्थ—संजलणो क्रोध जलरेखा समान छे. जिम जलनी रेखा तरत मिटे तिम संजलनो क्रोध तरत मिटे, प्रत्याख्याननो क्रोध रेणु-वेलूनी रेखा समान वाय प्रमुख लागे मिटे. तिम नमति खमति कीधां उतरे, अने अप्रत्याख्यानी क्रोध पुढवी-

माटीचीकणीनी रेखा समान छे, जे चीकणीमाटीनी रेखा मेह प्रमुख बूठे मीटे तिम घणे उपाये अप्रत्याख्यान क्रोध उतरे. अनतानुबधी क्रोध पर्वतरेखा समान छे जिम पर्वतनी रेखा पडी पछी फरी मळे नही, तिम अनंतानुबंधी क्रोध जावजीव त्याइ मिटे नहीं ते अनतानुबधि ४. सजलनो मान नेतरनी छडी समान जे तरत नमे, प्रत्याख्यान मान काष्ट लाकडी समान छे जे किणही कारणे नमे, अप्रत्याख्यानी मान अट्ठी हाड समान छे—घणे जतन कीया नमे तिम ते मानी पिण घणा जतन कीया नमे अनतानुबधी मान सेल पथ्थरना थाभा समान छे, जे किमही नमे नही, तिम अनतानुबधीमानवन किमहि मान छोडे नही ॥१९॥

मायावलेहिगोमुत्तिमिढसिंगघणवंसिमूलसमा ।
लोहो हलिद्दखंजणकद्दम किमिरागसारिच्छो ॥२०॥

अर्थ—सजलनीमाया वलेही* वासनी छोल समान जे तरत वाक छोडे. प्रत्याख्यानी माया गोमूत्रिका समान जे किणही कारणे कपट छांडे, अप्रत्याख्यानी माया मिंढारा सिंग समान छे, किणही कारणे करी वाक छोडे, अनतानुबधी माया वसमूल वासनी जड समान छे, अति गूढ—वक्र छे, वळ्या पण वाक छोडे नही एहवी माया अनंतानुबधीनी सजलणो लोभ हल्दरना रंग समान छे, जे जलचे थाय ते, तरत लालच छोडे, प्रत्याख्यानी लोभ खंजण—गाडीनी वागण रग समान छे जे जेने कीया ते रग उतरे अप्रत्याख्यानीयो लोभ नगर कर्दमना-

* 'समाणो' इति पाठातरम्

रंग समान छे, अनंतानुबंधी लोभ किमिराग कृमजी-रंग समान छे, एटले सोले कषायना भेद कह्या ते सद्दहवा. ॥२०॥

जस्सुदया होइ जिए हास[1] रई[2] अरइ[3] सोग[4] भय[5] कुच्छा[6] ।

सनिमित्तमन्नहा वा तं इह हासाइमोहणियं ॥२१॥

अर्थ—हवे हास्यादिक छ भेद कहे छे-जे कर्मप्रकृतिने उदयथी होवे जीवने हास्य घणो ते हास्यकर्म उदयथी. १ रति-हर्षकर्म. २ अरतिकर्म ते दिलगीरी. ३ सोग-मरणादिक करे, रुदनादि करे ते शोककर्म. ४ भयकर्म-डर घणो थाय. ५ कुच्छा -दुगंछा जे अशुभपुद्गलादिकसुं दुगंछा. ६ ए छए कार्ये निमित्तकारण मिळ्यां पण उदय आवे किण हीन निमित्त विना पिण उदय आवे ते इहां हास्यादिक मोहनी कहीजे. हास्य १ रति २ अरति ३ सोग ४ भय ५ दुगंछा ६. ॥२१॥

पुरिसित्थितदुभयं पइ अहिलासो जव्वसा हवइ सो उ ।

थी[1]नर[2]नपुंवेउदओ फुंफुम[1]तण[2]नगर[3]दाहसमो ॥२२॥

अर्थ—पुरुषनो अभिलाष थाय जेहने ते स्त्रीवेद कहीये १ अने जेने स्त्रीनो अभिलाष थाय ते पुरुषवेद कहीजे २ अने स्त्री पुरुष बिहुनो अभिलाष धरे ते नपुंसक वेद कहीजे. तिणे करी एटले स्त्रीने पुरुषस्युं बिहु साथे विषयनी चाह थाय अने पुरुषने स्त्रीसेव्यानी चाह थाय, स्त्री अने पुरुषसुं विषयनी चाह घणी थाय, ए तीननो अभिलाष ते शायी थाय ? इम जे कर्मना उदयथी थाय ते कर्म वेद कहीये. तिहां प्रथमस्त्रीवेद १, बीजो पुरुषवेद २, त्रीजो नपुंसकवेद ३, एहनी तृष्णा-ज्वाला एहवी छे के स्त्रीवेदनी अगनि फुंफुम कोउनी दाह समान छे १ अने

पुरुषवेदनी अगनि तृणानी आग समान छे. जे दीसति झाळा दिसे पण टके थोडी, तिम पुरुषदाह तरत मिटे अने नपुसकवेदनी अग्निदाह नगरदाह समान छे, जिम नगरनो दाह कदेइके बूझे नही, तिम नपुसकवेदनी दाह कदी मिटे नहीं. एटले मोहनीयकर्मनी २८ प्रकृति कही. ॥२२॥

सुरनरतिरिनरयाऊ हडिसरिसं नामकम्म चित्तिसमं।
बायालतिनवइविहं, तिउत्तरसयं च सत्तट्ठी ॥२३॥

अर्थ—हवे आउखाकर्मनी च्यार प्रकृति कहे छे–तिहा सुर देवतानो आउखो १ नर–मनुष्यनो आउखो २ तिर्यंचनो आउखो ३ नरय–नरकनो आउखो ४ ए च्यार भेद छे. हडिसरिसं–खोडा समान छे, जिम खोडामा पग पड्या पछी काट्यो ज नीकळे तिम आउखो कर्म भोगव्या छूटे.

हवे नामकर्मनो स्वरुप कहे छे–नामकर्म चीतारा समान छे–तेहना अनेकभेद अनेकप्रकारना छे ते जाणवा हवे तिहा बेताळीस ४२ भेद पण छे, तिनवइ त्रयाणु ९३ भेद पिण छे. अने १०३ एकसोतीन भेद छे, वळी सडसठि ६७ भेद पण छे ॥२३॥

गइजाइतणुउवंगा बंधणसंघायणाणि संघयणा ।
संठाणवन्नगंधरसफासअणुपुव्विविहगगइ ॥ २४ ॥

अर्थ—हवे प्रथम बेताळीस भेद कहे छे–गति १ जाति २ तणु–शरीरभेद ३ उपांगभेद ४ बंधनभेद ५ संघातनभेद ६ संघयणभेद ७ संस्थानभेद ८ वर्णभेद ९ गंधभेद १० रसभेद ११ फरसभेद १२ अनुपूर्वीभेद १३ विहायोगतिभेद ते १४. २४

पिंडपयडित्ति चउदसपरघाऊसासआयवुज्जोयं ।

अगुरुलहुतित्थनिमिणोवघायमियं अट्ठ पत्तेया ॥२५॥

अर्थ—पिंडप्रकृति ए चौद छे. पिंड—जेहनी एक प्रकृतिना घणा भेद थाय ते पिंडप्रकृति कहीजे. ते चउदभेदे परा घातनामकर्म १ ऊसासनामकर्म २ आतापनामकर्म ३ उद्योत-नामकर्म ४ अगुरुलघुनामकर्म ५ तीर्थंकरनामकर्म ६ निर्मा-णनामकर्म ७ उपघातनामकर्म ८ ए आठप्रकृति प्रत्येक प्रकृति कहीजे. ए प्रकृतिनो उत्तरभेद कोइ थाय नहीं. ॥२५॥

तसबायरपज्जत्तं पत्तेअथिरं सुभं च सुभगं च ।

सुसरआइज्जजसं तसदसगं थावरदसं तु इमं ॥२६॥

अर्थ—त्रसनामकर्म १ बादरनामकर्म २ पर्याप्तनामकर्म ३ ३ प्रत्येकनामकर्म ४ स्थिरनामकर्म ५ शुभनामकर्म ६ सुभग-नामकर्म ७ सुस्वरनामकर्म ८ आदेयनामकर्म ९ जसनामकर्म १० ए त्रसदशक जाणवो. जाणणहारने हवे थावरदशक कहे छे बीजो. ॥२६॥

थावरसुहुमअपज्जं साहारणमथिरमसुभदुभगाणि ।

दूसरणाइज्जाजसमिय नामे सेयरा वीसं ॥ २७ ॥

अर्थ—प्रथम थावरनामकर्म १ सूक्ष्मनामकर्म बीजो २ अपर्याप्तनामकर्म त्रीजो ३ साधारणनामकर्म चोथो ४ अथिर-नामकर्म पांचमो ५ अशुभनामकर्म छठ्ठो ६ दुर्भगनामकर्म सातमो ७ दुःस्वरनामकर्म आठमो ८ अनादेयनामकर्म नवमो ९ अपजसनामकर्म दसमो १० ए थावरदशक कह्युं बीजुं.

एटले त्रसदशक थावरदसक मिळ्या २० थया. हवे १४ पिंड-प्रकृति ८ प्रत्येक २० सेयरा ए सर्व मिळ्यो ४२ भेद प्रकृति थाय. एटले नामकर्मना ४२ बेतालीस भेद विवरीने कह्या छे २७॥

तसचउ थिरछक्कं अथिरछक्कं सुहुमतिगथावरचउक्कं।
सुभगतिगाइविभासा, तयाइसंखाहि पयडीहिं ॥२८॥

अर्थ—हवे सज्ञाविशेष कहे छे—तसचउ-त्रसचतुष्क कही त्रस १ बादर २ पर्याप्त ३ प्रत्येक ४ ए प्रकृति लेवी थिरछक्कं-थिरछक्क कह्या-१ थिर, २ शुभ, ३ सुभग, ४ सुस्वर, ५ आदेय, ६ जस ए छ प्रकृति लेवी. एने थिरछक्क कह्या. हवे अथिरछक्क—अथिरछ कह्या १—अथिर, २ अशुभ ३ दुर्भग, ४ दु स्वर, ५ अनादेय, ६ अजस ए छ प्रकृति लेवी ६ सूक्ष्म १ अपर्याप्त २ साधारण ३ ए त्रण प्रकृति सूक्ष्मत्रिक कहीजे थावर १ सूक्ष्म २ अपर्याप्त ३ साधारण ४ ए थावरचतुष्क कहीजे सुभग १ सुस्वर २ आदेय ३ ए त्रण सुभगत्रिक कहीजे दुर्भग १ दु स्वर २ अनादेय ३ ए दुर्भगत्रिक कहीजे जे प्रकृति लाधी होये ते प्रकृतिथी आगली सख्या प्रमाण गणी लीजे, तिवारे सख्या प्रमाण ठरे २८

वन्नचउ अगुरुलहुचउ तसाइ दुतिचउरछक्क इच्चाइ।
इअ अन्नावि विभासा तयाइसंखाहि पयडीहिं ॥२९॥

अर्थ—वर्णादिक च्यार ४ अगुरुलघुप्रमुख ४ च्यार त्रसादि बे, २ त्रसादि त्रण, ३ त्रसादिक ४ च्यार, त्रसादिक ६ छ, तेटली संख्या लेताहि तेहवो सकेत. हवे थीणद्धीत्रिक जिहा

कह्युं तिहां थीणद्धी १ निद्रा २ प्रचला ३ ए तीन लेवी. विशेष जाणवा माटे कहे छे—वर्णचतुष्क सामान्ये कह्यां ते वर्ण १ गंध २ रस ३ स्पर्शनाम ४ ए ४ ने वर्णचतुष्क कहीये अने अगुरुलघुनाम १ उपघातनाम २ पराघातनाम ३ ऊसासनाम ४ ए अगुरुलघुचतुष्क कहीये. त्रस १ बादरनाम २ ए त्रसद्विक कहीजे. १ त्रस, २ बादर, ३ पर्याप्त ए त्रसत्रिक लीजे, अने त्रस १ बादर २ पर्याप्ता ३ प्रत्येक ४ ए ४ ने त्रस-चतुष्क कहीजे. अने त्रस १ बादर २ पर्याप्त ३ प्रत्येक ४ स्थिर ५ शुभ ६ ए छने त्रसषट्क. एम जेटली प्रकृति होय ते त्रसादिनामथी जोइये. ॥२९॥

गइयाईण उ कमसो चउपणपणतिपणपंचछछक्कं।
पणदुगपणट्ठचउदुग इय उत्तरभेयपणसट्ठी॥३०॥

अर्थ—हवे ९३ नां प्रकृति कहे छे—गति आदिक १४ पिंडना उत्तरभेद कहे छे—गति ४ भेदे च्यार. जातिना पांच भेद ५, शरीरना पांचभेद, उपांगना तीनभेद ३, बंधनना पांच-भेद ५, संघातनना पांचभेद ५, संघयणना छ भेद ६, संस्थानना छ भेद, वर्णना पांच भेद ५, गंधना दो भेद २, रसना पांच भेद ५, फरसना आठ ८ भेद, आनुपूर्वीना च्यार भेद ४, विहायो-गतिना बे भेद २. एटले करी उत्तरभेद सर्व मिळ्यां पांसठ भेद थया. पिंडप्रकृतिना ए उत्तरभेद कह्या. ॥ ३० ॥

अडवीसजुया तिनवइ संते वा पनरबंधणे तिसयं।
बंधणसंघायगहो तणुसु सामन्नवन्नचऊ ॥ ३१ ॥

अर्थ—इणे ६५ भेदमे आठ प्रत्येक, त्रसदस, थावरदस, ए अट्ठावीस २८ भेद थया अे लीजे त्यारे त्राणु भेद थाय. ए ९३ सत्तामे गणीये अथवा बंधन पेहेला पाच गण्यायी तिण टामे पन्नरे १५ गणीये तिवारे एकसोतीन भेद पिण थाय. ते सत्तामे गणीये, अथवा एकसोतीन भेदमा पनर बंधन, पाच सघातन ए वीस प्रकृति शरीरमाहे गणीजे एटले वीस काढीजे ए शरीरना ज उत्तरभेद छे अने वर्णादिकना २० वीस भेद छे ते इहा सामान्य च्यार ४ भेद लेवा वर्ण १ गध १ रस १ फरस १ एव ४ बाकी १६ काढवा. ॥३१॥

इय सत्तट्ठी बंधोदए य न य सम्ममीसया बंधे।
बंधोदयसत्ताए, वीसदुवीसट्ठवन्नसयं ॥ ३२ ॥

अर्थ—तिवारे ३६ प्रकृति काढ्या सडसठि ६७ रहे, बंधे पण सडसठि ६७ छे. बंधोदय कहेता बंध अने उदयमे पण ६७ सडसटि छे वली मोहनीकर्मनी २८ प्रकृति छे, तेमाहि सम्यक्त्वमोहनी १ मिश्रमोहनी २ ए बे प्रकृति बंधमां न गणवी, तिवारे मोहनीकर्मनी बंधे २६ छवीस प्रकृति छे एटले सरवाले पाच ५ ज्ञानावरणी, नव ९ दर्शनावरणी, बे २ वेदनीय, २६ छवीस मोहनी, ४ आउखो, ६७ नाम, २ बे गोत्र, पांच ५ अंतराय, ए १२० एकसोवीस बांधे छे, तिहा मिश्रमोहनी २ मेलीजे तिवारे उदयमे १२२ छे, अने तिणमे नामकर्मनी सर्व १०३ गणीजे, तिवारे सत्ताअे एकसो अट्ठावन १५८ छे ३२

निरयतिरिनरसुरगई इगबियतियचउ पणिंदिजाईओ।
ओरालविउवाहारगतेयकम्मणपणसरीरा ॥ ३३ ॥

अर्थ—हवे गतिनामकर्मना च्यार भेद कहे छे—नरकगति १ तिर्यग्गति २ मनुष्यगति ३ देवगति ४। एकेंद्री जाति १ बेंद्रीनी जाति २ तेंद्रीनी जाति ३ चौरिंद्रीनी जाति ४ पंचेंद्रीनी जाति ५. ए पांच जाति जाणवी. औदारिक शरीर १ वैक्रिय शरीर २ आहारक शरीर ३ तेजस शरीर ४ कार्मण शरीर ५. ए पांच शरीर जाणवां. ॥३३॥

बाहूरु पिट्ठि सिर उर उयरंग उवंग अंगुलीपमुहा ।
सेसा अंगोवंगा पढमतणुतिगस्सुवंगाणि ॥ ३४ ॥

अर्थ—बांह्य दोय २, सायल दोय २, पुंठ १, सिर (मस्तक) १ हीयुं १ पेट १ ए आठ अंग छे अने आंगळी प्रमुख उपांग छे. शेष—बाकी नख, केशादिक सर्व अंगोपांग जांणवा ते अंगोपांग पहेला त्रण शरीरनां छे.—औदारिक उपांग १ वैक्रिय उपांग २ आहारक उपांग ३. ए त्रण उपांग कह्यां. ३४

उरलाइपुग्गलाणं, निबद्धबज्झंतयाण संबंधं ।
जं कुणइ जउसमं तं उरलाईबंधणं नेयं ॥ ३५ ॥

अर्थ—औदारिकादिक पांच शरीर पुद्गल केइक बांध्या पूर्वे शरीरपणें परिणमाव्या अने बीजां नवां बांधतां जे पुद्गल तेहने जे संबंध एकमेककरवो जेणे करीने ते बंधनकहीजे कर्मनो उदय ते लाखनी पेरें जिम लाख लाकडीने एकमेक करे चोटाडि राखे तिम बंधन पुद्गलने ग्रहि राखे छे. ते बंधन औदारिक १ वैक्रीय बंधन २ आहारक बंधन ३ तैजस बंधन ४ कार्म्मण बंधन ५. ए पांच बंधन जाणवां. ॥३५॥

जं संघायइ उरलाइ–पुग्गले तणगणं व दंताली।
तं संघायं बंधणमिव तणुनामेण पंचविहं ॥३६॥

अर्थ—जे कर्मना उदयथी सघातं कहेतां भेळा करे औदारिकादि पुद्गलोने जिम तृण गणना प्रतें जिम दंताली भेळा करे तिम पुद्गलने भेळां करे, ते सघातन कहीइ छे. जिम बंधनना पाच भेद कह्या तिम संघातनना पाच भेद कहेवा औदारिक सघातन १, वैक्रिय सघातन २, आहारक सघातन ३, तेजस सघातन ४, कार्मण संघातन ५. ॥ ३६ ॥

ओरालविउवाहारयाणं सगतेयकम्मजुत्ताणं।
नव बंधणाणि इयर–दुसहियाणं तिन्नि तेसिं च ॥३७॥

अर्थ—हवे १५ बंधन कहे छे. औदारिक औदारिक बंधन १, वैक्रिय वैक्रिय बंधन २, आहारक आहारक बधन ३. ए त्रिण सग पोताना बधनथी जाणवा अने ३ शरीरथी तेजस जोडिये वळी कार्मणने जोडिये तिवारे नव बंधन थाय. औदारिक तेजस बंधन ४, वैक्रिय तेजस बधन ५, आहारक तेजस बंधन ६, औदारिक कार्मण बधन ७, वैक्रिय कार्मण बधन ८, आहारक कार्मण बधन ९, ते ३ शरीरथी तेजस कार्मण जोडीये. औदारिक तेजस कार्मण बधन १०, वैक्रिय तेजस कार्मण बंधन ११, आहारक तेजस कार्मण बंधन १२, कार्मण कार्मण बधन १३, तेजस तेजस बधन १४, तेजस कार्मण बंधन १५. ए बधन जाणवां. एव १५ पंदर बंधन थया. ॥ ३७ ॥

संघयणमट्ठिनिचओ, तं छद्धा वज्जरिसहनारायं।
तह य रिसहनारायं, नारायं अद्धनारायं ॥ ३८ ॥

अर्थ—संघयण कहेतां हाडनो समूह—हाडं मांहोमांहे संबंध ते संघयणना छ भेद जाणवा. वज्रऋषभनाराच पहेलो संघयण महाबलवंत खीली पाटो मर्कट बंधन छे १. तिम बीजो ऋषभनाराच. जे मांहे खीला नहीं, पाटो मर्कट बंधन छे २. त्रीजो नाराच. जेहने मर्कट बंधन छे ३. चोथो अर्द्धनाराच ४ जेहने एकपासे मर्कट बंधन छे. ॥ ३८ ॥

कीलिअछेवट्ठं इह, रिसहो पट्टो य कीलिया वज्जं।
उभओ मक्कडबंधो, नारायं इममुरालंगे ॥ ३९ ॥

अर्थ—पांचमो कीलीका संघयण. जेहने खीली छे. ५ छट्ठो छेवटो संघयण. जिहां सर्वथा निर्बल छे. ६ ऋषभ—पाटो—पट्टो दोइ हाडनो संपुट मर्कटबंध उपरे पाटो छे, वज्र कहेतां खीली—मर्कट बंधने दोनु पासे कीली कहेतां खीली छे. उभओ—दोनु पासे हाडनो आंटो ते मर्कटबंध कहीजे. ए सर्व पहेले संघयणमें छे. महाबलवंत थाय, ए संघयण कर्म औदारिक शरीर धारीने उदय आवे. एटले तिर्यंच मनुष्यने छे; देवता नारकीने नथी. ॥ ३९ ॥

समचउरंसनिग्गोह—साइखुज्जाइ वामणं हुंडं ।
संठाणा वण्णा किण्ह—नीललोहियहलिद्दसिआ ४०॥

अर्थ—समचोरस संस्थान जे च्यार दोरी पर्यंकासन बेठां बराबर थाय अति सुंदर छे. १ निग्रोध संस्थान उपर त्रिग सुंदर छे, हेटलो त्रिक दुर्बल छे. २ सादि संस्थान त्रीजो नीचलो सुंदर छे. ३ कुब्जसस्थान जे कुब्जडो होये. ४ वामन संस्थान जे देहमान छोटो होवे. ५ हुंडक संस्थान सर्वथा लक्षण

रहित होवे ६ ए छ संस्थान कह्या. हवे वर्ण पांच काळो भमरनो, नीलो सूडानी पांख सरीखो, रातो हींगळो सरीखो पीळो कंचन सरिखो, श्वेत-धोळो रूपा सरीखो ॥ ४० ॥

सुरहीदुरही रसा पण, तित्तकडुअकसायअंबिलामहुरा।
फासा गुरुलहुमिउखर-सीउण्हसिणिद्धरुक्खट्ठा॥४१

अर्थ—सुरभिगंध १, दुरभिगंध २ रस पाच-तीखो ते लविंग सरीखो १, कडवो ते गळो सरीखो २, कसायलो ते हरडे सरिखो ३, खाटो ते लींबु आंबली सरिखो ४, मीटो ते खाड सरीखो कह्यो ५ हवे स्पर्श आठ कहे छे. गुरु-भारे लागे १, लहु-हलुओ २, मिउ-सुकमाल ३, खरखरो ते कटोर ४, सी-टाढो ५, उण्ह-उन्हो ६, सिणिद्ध-चीकणो ७, रुक्ख-लखो ए आठ फरस जाणवा ॥ ४१ ॥

नीलकसिणं दुगंधं, तित्तं कडुअं गुरुं खरं रुक्खं ।
सीअ च अहुहनवगं, इक्कारसगं सुभं सेसं ॥ ४२ ॥

अर्थ—प्रथम नीलवर्ण १, कीसन-काळो वर्ण २. दुरभिगंध ३, तिरो रस ४, कडुओ रस ५, गुरु-भारी स्पर्श ६, खरखरो ७, शीतल ८, लखो ९, ए नव ९ अशुभ जाणवा बाकी रह्या जे इग्यार वर्ण आदिक जे ते शुभ जाणवा. ए वचन प्रायिक निश्चे नहीं ॥ ४२ ॥

चउहगइव्वणुपुव्वी, गइपुव्विदुगं तिगं निआउजुअं ।
पुव्वीउदओ वक्के, सुहअसुहवसुट्टविहगगई ॥ ४३ ॥

अर्थ—च्यारगतिनी पेरे आनुपूर्वी जाणवी. नरकानुपूर्वी १

तिर्यंचानुपूर्वि २, मनुष्यानुपूर्वि ३, देवानुपूर्वि ४, गतिआनुपूर्वि मिळ्यां द्विक कहीजे. जिम देवद्विक–देवगति, १ देवानुपूर्वि २. नरकदुग–नरकगति, १ नरकानुपूर्वि २. इमज मनुष्यदुग–मनुष्य गति १ मनुष्यअनुपूर्वि २. ए द्विकमांहि ते गतिनो आउखो भेळीजे तिवारे त्रिक थाय. जिम देवत्रिक ते देवगति १ देवानुपूर्वि २ देवआउखो ३. इम नरकादिक त्रिक जाणवो. आनुपूर्वीनो उदय वक्रगतिमे छे. जे भवांतरे जेवारे जीव जाय, तिवारे आनुपूर्विकर्म उदय आवे छे. शुभविहायोगति १ जेथी जीवनी चाल्य शुभ थाइ, वृषभ गज हंसनी पेरे सुंदर चालि होवे १. अशुभविहायोगति. जे अशुभ चालि जे ऊंट रासभ सरखी चाल चाले महा असुंदर. ॥ ४३ ॥

परघाउदया पाणी, परेसिं बलिणंपि होइ दुद्धरिसो।
उससिणलद्धिजुत्तो, हवेइ ऊसासनामवसा ॥४४॥

अर्थ—पराघात नाम कर्मने उदयेथी प्राणी जीवने परेसि अन्य वैरी बलवंतने पिण होवे दुर्धर्ष होये जे ते जीवने कोइके आक्रमसंगे नही ते परावात नामकर्म १. उसास लेवानी लब्धि थाये एटले उसास पर्याप्तिना उदयथी श्वासोच्छ्वास सुखे ले ते ऊसास नामकर्म कहीजे. ॥ ४४ ॥

रविबिंबे उ जिअंगं, तावजुअं आयवाउ नउ जलणे।
जमुसिणफासस्स तहिं, लोहियवण्णस्स उदउत्ति ४५।

अर्थ—सूर्यना मंडळमां जे प्राणीना जीवना अंग छे सूर्य विमानमे जे पृथ्वीकायना जीव ते ताप सहित छे तावडो करे छे ते आतापना नामकर्मनो उदय जाणवो; पण अग्निने

विषे आताप नहीं. तो श्युं जे छे? जे कारणें अग्निमें फरस्यें उन्हो छे अने लोहिअ रातावर्णनो उदय छे. आतपनो उदय नहीं. ॥ ४५ ॥

अणुसिणपयासरूवं, जिअंगमुज्जोअए इहुज्जोआ ।

जइ देवुत्तरविक्किअ–जोइसखज्जोअमाइव्व ॥ ४६ ॥

अर्थ—अणुसिण उन्हो नहीं अने प्रकाशरूप अजुवाळो करे छे, जीव प्राणीनो अंग शरीर उद्योत करे ते उद्योत-नामकर्म कहीजे. यदि–जिवारे देवता उत्तरवैक्रिय करे, ज्योतिपी चद्र, ग्रह, नक्षत्र, ताराप्रमुखने यतिने आदिशब्दथी मणी, मोती, हीरा, माणिक्य प्रमुखने उद्योतनामकर्मनो उदय छे ते थकी तेज ज्योति छे. ॥ ४६ ॥

अंगं न गुरु न लहुअं, जायइ जीवस्स अगुरुलहुउदया ।

तित्थेण तिहुअणस्स वि, पुज्जो से उदओ केवलिणो ४७।

अर्थ—जे कर्मथी जिण जीवनो शरीर घणो भारी न थाइ, न घणो हल्को पणि थाइ मध्यम शरीर थाइ जेहनो ते अगुरुलघुनामकर्म उदयपणि जाणवो. तित्थय–तीर्थं-करनामकर्मना उदयथी जीव तीन भुवनने पूजनीक थाय, चोत्रीस अतिशय, पांत्रीस वाणी, अष्ट प्रातिहारज होवे ते तीर्थं-करनामकर्मनो उदय केवलीने थाय, केवलज्ञान उपन्या पछी ते उदये आवे. ॥ ४७ ॥

अंगोवंगनियमणं, निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं ।

उवघाया उवहम्मइ, सतणुवयवलविगाईहिं ॥४८॥

अर्थ—अंगोपांग नासिका आंख कान प्रमुख सखरा ठामने ठाम निपजावे. निम्माणं—ते निम्माणनामकर्म कहीजे सूत्रधार सरखो कहीजे छे जिम सूत्रधार पूतळी घडे ते सभी अंगोपांग सुंदर घडे. उपघातनामकर्मथी जीवनो शरीर हणाय; आपणे शरीरे वधती आंगुली जीभ–पडजीभी रसोली प्रमुख उपजे; तिण शरीर कुरूप होवइ, कुरूप दीसइ. ॥४८॥

बितिचउपणिंदियतसा, बायरओ बायरा जिआ थूला।
नियनियपज्जत्तिजुआ, पज्जत्ता लद्धिकरणेहिं ॥४९॥

अर्थ—बितिचउ–बेंद्री तेंद्री चौरेंद्री पंचेंद्री जीव सर्व चाले हाले छे तिणे ते त्रस कहीजे. बादरनामकर्मना उदयथी जीव दीर्घपणुं पामे. आप आपणी पर्याप्ति पूरी करे ते पर्याप्त नाम कहीजे. पज्जत्ता–ते पर्याप्ति बे प्रकारनी छे–लब्धि पर्याप्त १ अने करण पर्याप्त २ तिहां आपरी पर्याप्त पूरी पामस्ये ते लब्धिपर्याप्त १, जे पर्याप्त पूरी करी रह्या ते करणपर्याप्त. २ ॥ ४९ ॥

पत्तेअतणुपत्ते–उदएणं दंतअट्ठिमाइ थिरं ।
नाभुवरिसिराइसुहं, सुभगाउ सव्वजणइट्ठो ॥५०॥

अर्थ—जे एक शरीरे एक जीव ते प्रत्येकनामकर्म कहीजे. जेहना उदयथी दांत, हाड थिर रहे ते थिरनामकर्म कहीजे. नाभि उपरे मस्तकतांइ जे उपरलो त्रिक ते शुभ कहीजे. सुभगनामकर्मथी सर्व जगतने वल्लभ थाय, मोहनकारी थाय. ॥ ५० ॥

सुसरा महुरझुणी, आइज्जा सबलोगगिज्झवओ।
जसउ जसकित्तीओ, थावरदसगं विवज्जत्थं ॥५१॥

अर्थ—सुस्वरनामकर्मथी मीठी सुखकारी ध्वनि थाय, कंठ खरो कोयळना सरिखो थाय आइय—आदेयनामकर्मथी सर्व लोकने तेहनो वचन माननीक थाय जसनाम कर्मथी जस थाय, कीर्त्ति थाय अने लोकमे जस थाय. ए त्रसदसक थयो इणथी थावरदसक विपरीतार्थ छे थावर एकेंद्री १, सूक्ष्म—दृष्टि न दीसे २, अपर्यात पर्याप्त पूरी न करे ३, अनता जीवे एक शरीर ते साधारण ४, हाड दांत हाले ते अथिर ५, हेठलो निक ते अशुभ ६, दुर्भग लोकमे दोहाग थाय ७, दुस्वर—कठ सारो न होय ८, अनादेय—वचन कोइ न माने ९, अजस पणि जस न होय ए थावरदसक कहीजे दस ॥ ५१ ॥

गोअं दुहुचनीयं, कुलाल इव सुघडभुंभलाईअं।
विग्घं दाणे लाभे, भोगुवभोगेसु वीरिए अ ॥५२॥

अर्थ—गोत्र कर्मना दोय २ भेद छे—प्रथम उच्चैर्गोत्र १, बीजो नीचैर्गोत्र २. ए बे भेद जाणवा. कुलाल—कुभारसमान छे; जिम कुभार सुंदर घडो पणि करे अने असुदर घडो पणि करे तिम. हवे अंतरायकर्मना पाच भेद कहे छे. दानांतराय १, लाभान्तराय २, भोगान्तराय ३, उवभोगांतराय ४, वीर्य्यांतराय ५. ॥ ५२ ॥

सिरिहरिअसम एअं, जह पडिकुलेणं तेण रायाई।
न कुणइ दाणाईयं, एवं विग्घेण जीवो वि ॥५३॥

अर्थ—श्रीगृहक–भंडारी समान अंतराय कर्म जाणवो. जिम भंडारी अपूंठे थकां जिम राजानी दान देवानी बुद्धि हवे पणि ते पालितो दान देइ शके नही; इम अंतराय कर्मने उदये जीव दानादिक देइ शके नहीं. ॥ ५३ ॥

हवे आठ कर्मबंधनां कारण कहे छे.

पडिणीअत्तणनिन्हव–उवघायपओसअंतराएण ।

अच्चासायणयाए, आवरणदुगं जिओ जयइ ॥५४॥

अर्थ—तिहां पहेलां ज्ञानावरणी दर्शनावरणीनां बंध कारण कहे छे–प्रत्यनीकपणें जिनमतनो अपूंठो करे, निन्हव सिद्धान्तनां वचन उथापे, उपघात–ज्ञाननी प्रति प्रमुख फाडे, भणनार होय ते उपरे द्वेष धरे, द्वेष करे ते पओस कहीये. वळी भणतां अंतराय करे, सिद्धांत, गुरु, प्रतिमानी अति आशातना करे; तो जीव अंतराय बांधे. आवरण दोय ज्ञानावरण १, दर्शनावरणी कर्म जीव इतरे कारणे बांधे. ॥ ५४ ॥

गुरुभत्तिखंतिकरुणा–वयजोगकसायविजयदाणजुओ ।

दढधम्माई अज्जइ, सायमसायं विवज्जयओ ॥५५॥

अर्थ—गुरुभक्ति करतां, क्षमा करतां, दया पाळतां, व्रत पाळतां, योग वश करे, कषाय वश करे, दान देवे, दृढधर्मि होवे, धर्म उपरे स्थिर प्रतीत उपार्जे–बांधे सातावेदनी प्रत्यें; अने एथी विपरीत जे हिंसा, अव्रत, कषायथी असातावेदनी बांधे. ॥ ५५ ॥

उम्मग्गदेसणामग्ग–नासणादेवदव्वहरणेहिं ।

दंसणमोहं जिणमुणि–चेइअसंघाइपडिणीओ ॥५६॥

अर्थ—उन्मार्ग–खोटो मार्ग देखाडे, मार्ग शुद्ध स्याद्वाद न आवे एटले अशुद्ध मार्ग देखाडे देवद्रव्य–देहेरानो द्रव्य धन, साधारण द्रव्यनो हरनो, खानो, वावरे जीव दर्शनमोहनी कर्म बांधे जिन, तीर्थंकर, साधु, चैत्य, देहेरो, सव चतुर्विध, तेहनो प्रत्यनीक जीव मिथ्यात्वमोहनी बांधे ॥ ५६ ॥

दुविहंपि चरणमोहं, कसायहासाइविसयविवसमणो।
बंधइ निरयाउ महारंभपरिग्गहरओ रुद्दो ॥ ५७ ॥

अर्थ—दुविहं–दोइ भेदें चारित्रमोहनी जीव कर्म बांधे. कषाय क्रोधादिक हास्यादिक पाच इन्द्रीनो विषय तेहथी परवश पडयो एटले जे जीव विषयमें मस्त होवे ते चारित्रमोहनी बांधे अने महारंभ वावडी, कुआ, तळाव, कोट, बाग, खेत्र प्रमुख मोटा आरभ करतो थको तथा मोटा परिग्रह धन धान्यमें मूर्छित थको परिणामे रौद्र (रौद्रध्यानी)· ते नरक गति ज जाय ॥ ५७ ॥

तिरियाउ गूढहियओ, सढो ससल्लो तहा मणुस्साउ ।
पयइतणुकसाओ, दाणरुई मज्झिमगुणो अ ॥५८॥

अर्थ—तिर्यचनो आउखो बांधे जे हीयानो महागूढ गठीलो होवे, मूर्ख अज्ञानी होवे, साल (शल्य) सहित होवे, कूड कपट घणो करे ते तिर्यंचनो आयु बांधे. तिम तेणी रीते मनुष्यनो आउखो बांधे जे जीव प्रकृति स्वभावे तणु–पातळो कषाय जेहने होवे, दान देवानी बुद्धि जेहने होवे, गुणे करी मध्यम गुणी होवे ते मनुष्यायु बांधे. ॥ ५८ ॥

अविरयमाइ सुराउ, बालतवोऽकामनिज्जरो जयइ ।
सरलो अगारविल्लो, सुहनामं अन्नहा असुहं ॥५९॥

अर्थ—अविरतियी लेइ करीने सातमे गुणठाणे तांइ जीव देवतानो ज आउखो बांधे, वळी अज्ञानतप करतो जीव, अकामनिर्जरा करतो जीव देवतानो आउखो बांधे. सरलचित्त होवे, गर्व न करतो होय ते जीव नामकर्मनी शुभ प्रकृति बांधे अने कपटी अहंकार करतो होय ते नामकर्मनी अशुभ प्रकृति बांधे. ॥ ५९ ॥

गुणपेही मयरहिओ, अज्झयणज्झावणारुई निच्चं ।
पकुणइ जिणाइभत्तो, उच्चं नीयं इयरहा उ ॥६०॥

अर्थ—गुणग्राही-गुणरागी, मद अहंकार रहित, माननो पक्ष नहीं, भणवाने भणाववानी रुचि घणी होवे जेहने एहवो सरलबुद्धि जीव होवे वळी जे जीव जिन गुरु वचन बहु श्रुतनी भक्ति करतो होय ते जीव उच्चगोत्र बांधे. अने एहथी विपरीतपणे नीच गोत्रकर्म बांधे. ॥ ६० ॥

जिणपूआविग्घकरो, हिंसाइपरायणो जयइ विग्घं ।
इय कम्मविवागोयं, लिहिओ देविंदसूरिहिं ॥६१॥

अर्थ—जिनपूजा करतां जे अंतराय करे ते अंतराय कर्म बांधे वळी जे हिंसामां तत्पर-उजमाळ होवे ते जीव अंतरायकर्म बांधे, एटले करी कर्मनो विपाक कह्यो. एकसो अट्ठावन प्रकृति कही अने पूर्वला सिद्धांत देखीने देवेंद्रसूरि आचार्ये लख्यो छे. ॥ ६१ ॥

इति कर्म्मविपाकनाम प्रथमकर्म्मग्रंथटबार्थः संपूर्णः ॥१॥

अथ द्वितीयः कर्म्मग्रंथः

तह थुणिमो वीरजिणं, जह गुणठाणेसु सयलकम्माइं।
बंधुदयोदीरणया, सत्तापत्ताणि खवियाणि ॥ १ ॥

अर्थ—तह—तिम स्तवुं छु, मन वचन कायाइ करी, वीर महावीरजिन प्रत्ये नमु, जह—जेम गुणठाणाने अनुक्रमे निरमल परिणामे सकल कर्म ज्ञानावरणादिक बधपणे, उदयपणे, उदीरणापणे, सत्तापणे पाम्या जे कर्म ते सर्व खपाव्या जेणे ते महावीर प्रते वांदीने नमीने. ॥ १ ॥

मिच्छे सासणमीसे,अविरयदेसे पमत्तअपमत्ते नियट्टि।
अनियट्टिसुहुमुवसमखीणसजोगिअजोगिगुणा ॥२॥

अर्थ—हवे गुणठाणानो स्वरूप कहे छे—पेहेलो मिथ्यात्व गुणठाणो १, सास्वादन गुणठाणो २, मिश्र गुणठाणो ३, अविरति गुणठाणो ४, देशविरति गुणठाणो ५, प्रमत्त—गुणठाणो ६, अप्रमत्त गुणठाणो ७, अपूर्वकरण गुणठाणो निवृत्ति बादर गुणठाणो ८, अनिवृत्तिबादर गुणठाणो ९, सूक्ष्मसपराय गुणठाणो १०, उपशान्तमोह गुणठाणो ११, क्षीणमोह गुणठाणो १२, सजोगी केवली गुणठाणो १३, अजोगी केवली गुणठाणो १४. हवे गुणठाणानो परिणाम कहे छे. जे जिनधर्मथु विपरीत ते मिथ्यात्व १, समकीतथयुं पडी मिथ्यात्वमें आवे ते पडता काळने सास्वादन कहीजे २, जिन

धर्म उपर न राग न द्वेष ते मिश्र कहीजे ३, नवतत्त्व सुधा सद्दहे ते अविरति समकित कहीजे ४, समकीत सहित श्रावकव्रत पाळे ते देशविरति कहीजे. ५, साधुना पंच महाव्रत पाळे पिण प्रमाद सेवे ते प्रमत्त कहीजे ६, प्रमाद सेवे नहीं ते अप्रमत्त कहीजे ७, प्रति समय अध्यवसायो भिन्न भिन्न होवायी निवृत्तिबादर कहीजे ८, ज्यां क्रोध, मान, माया, उपशमावे अथवा खपावे ते अनिवृत्तिबादर कहीजे ९, लोभ उपशमावे खपावे ते सूक्ष्मसंपराय कहीजे १०, मोह उपशमावे ते उपशान्त कहीजे ११, मोहनीकर्म खपावे ते क्षीणमोह कहीजे १२, च्यार कर्म खपावे, केवलज्ञान पामे ते सजोगी केवली कहीजे १३, अघाती च्यार कर्म खपावे, मोक्ष जाय ते अजोगी केवली कहीजे १४. हवे चौद गुणठाणानी स्थिति कहे छे—मिथ्यात्वगुणठाणानी स्थिति अभव्यने अनादि-अनंत, भव्य ग्रंथि भेदे नहीं तेने अनादि-सांत, समकीतथी पडी मिथ्यात्वमे पडे तेहने जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट अनंतो काल १, सास्वादननी स्थिति ६ छ आवळी छे २. मिश्रनी स्थिति जघन्यने उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त ३. सम्यक्त्व गुणस्थाननी उत्कृष्ट ३३ सागर, देशविरतिनी ७० देशूण पूर्व क्रोड वर्ष. प्रमत्त एहनी जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट देशे ऊणी पूर्व क्रोड. (सर्व स्थिति एकत्र करतां) आठमे गुणठाणे (तथा अप्रमत्तना जघन्य समय ने उत्कृष्ट स्थिति अंतर्मुहूर्तने प्रवाहापेक्षाए देशूण पूर्व क्रोड वर्ष) थी मांडी बारमा तांइ (सुधी) पांच गुणठाणानी जघन्य एक समय. बारमानी जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट प्रत्येके अथवा सर्वनी एक अंतर्मुहूर्त्त, तेरमा गुणठाणानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्टी देशे ऊण पूर्वकोडी.

१४ चउदमे गुणठाणे स्थिति जघन्य उत्कृष्ट पांच लघु अक्षर प्रमाण छे. ए गुणठाणानो स्वरूप कह्यो. ए सिद्धांतमत छे ॥२॥

हवे चौद गुणठाणाने विषे बंध कहे छे.

अभिनवकम्मग्गहणं, बंधो ओहेण तत्थ वीसासयं।
तित्थयराहारगदुगवज्जं मिच्छंमि सतरसयं ॥ ३ ॥

अर्थ—नवा कर्मनो ग्रहण-लेवो, एटले जीवने नवा कर्म लगाववां ते बंध कहीजे ते बंधे सर्व सामान्ये एकसोवीस प्रकृति छे. पाच ज्ञानावरणी, नव दर्शनावरणी, बे वेदनी, छवीस मोहनी, ४ आउखो, ६७ नामकर्मनी, बे गोत्रकर्मनी, पाच अतरायकर्मनी एव १२० प्रकृति बाधे, तिणमे तीर्थंकर नामकर्म १, आहारक शरीर २, आहारक उपांग ३. ए तीन प्रकृति शुभ छे, समकीत सर्वविरति विना बधाय नहीं, तिणे ए तीन प्रकृति मिथ्यात्व गुणठाणे न बाधे, तिवारे बाकी मिथ्यात्वगुणठाणे ११७ एकसो सत्तर प्रकृति कही तेटली बाधे, तेमा ए तीन प्रकृति नामकर्मनी टाली छे. ॥ ३ ॥

नरयतिग जाइथावरचउ हुंडायवछेवट्ठनपुमिच्छं।
सोलंतो इगहिअसयं सासणि तिरिथीणदुहगतिगं ॥४॥

अर्थ—हवे सास्वादन गुणठाणे कहे छे—नरयतिग—नरकगति १, नरकानुपूर्वी २, नरकआउखो ३। जाति ४ एकेंद्री १, बेंद्री २, तेंद्री ३, चउरेंद्री ४। थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३, साधारण ४. ए ११, हुडक सस्थान १२, आतापनाम १३, छेवटो संघयण १४, नपुंसकवेद १५, मिथ्यात्वमोहनी १६, ए सोळे प्रकृति अशुभ छे. मिथ्यात्वगुणठाणे जीव जे होय ते

बांधे बीजा न बांधे तिणे सास्वादन गुणठाणे न बांधे तिवारे सोले प्रकृति वळी काढी; तिवारे सास्वादनगुणठाणे एकसोएक प्रकृति रही ते बांधे छे.२ हवे मिश्रगुणठाणे कहे छे—तिरितिग तिर्यंचगति १, तिर्यंचनी आनुपूर्वी २, तिर्यंचनो आउखो ३. थीणध्धीतिग—निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला २, थीणद्धी ३. दुर्भगतिग—ते दुर्भग १, दुःस्वर २, अनादेय ३. एवं नव ते उपरांत वळी ॥ ४ ॥

अणमज्झागिइसंघयणचउ निउज्जोअकुखगइत्थित्ति।
पणवीसं तो मीसे, चउसयरि दुहाउअबंधा ॥ ५ ॥

अर्थ—अनंतानुबंधी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४. मध्यसंस्थान च्यार न्यग्रोध १, सादि २, वामन ३, कुब्ज ४. मध्यसंघयण ४ रिषभनाराच १, नाराच २, अर्द्धनाराच ३, कीलिका ४ ए ४। नीचगोत्र १, उद्योतनाम १, अशुभविहायोगति १, स्त्रीवेद १. ए पचवीस २५ प्रकृति मिश्रगुणठाणे न बांधे त्यारे मिश्रगुणठाणे ए टाळवी. तिवारे मिश्रगुणठाणे ७४ चौहुत्तर प्रकृति बांधे. १०१ मांथी पच्चीस काढ्यां तो छहोत्तर ७६ होवे; तिवारे दोय आउखा मनुष्यनो आउखो १, देवतानो आउखो २. ए दोय वळी न बांधे तिवारे ७४ रहे. ॥ ५ ॥

सम्मे सगसयरि जिणाउबंधि वइरनरतिअबिअकसाया ।
उरलदुगंतो देसे सत्तट्ठी तियकसायंतो ॥ ६ ॥

अर्थ—हवे चोथे समकित गुणठाणे कहे छे—समकीत गुणठाणे ७७ सतहत्तरि प्रकृति बांधे. इहां तीर्थंकरनामकर्म १,

मनुष्यनो आउखो २, देवतानो आउखो ३, ए तीन प्रकृति पहेला काढी ते पाछी मेळीजे तिवारे ७७ सतहतुर बांधे. हवे पांचमे देशविरतिगुणठाणे कहे छे–वज्रऋषभनाराचसंघयण १, मनुष्यगति २, मनुष्य आनुपूर्वी ३, मनुष्यनो आउखो ४, बीजी चोकडी ते अप्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ ४. उरलदुग–औदारिक शरीर १, औदारिक उपांग २. ए दश १० प्रकृति देशविरतिगुणठाणे न बांधे; तिवारे ए १० काढीजे तिवारे ६७ सतसठी प्रकृति बांधे. हवे प्रमत्तगुणठाणे कहे छे–त्रीजी चोकडी ते प्रत्याख्यानी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४ ए च्यार काढीजे. ॥ ६ ॥

तेवट्ठि पमत्ते सोगअरइअथिरदुगअजसअस्सायं ।
वुच्छिज्ज छच्च सत्तव नेइ सुराउं जयानिट्ठं ॥ ७ ॥

अर्थ—त्यारे ६३ त्रेसठ रहे, ते प्रमत्त छठ्ठे गुणठाणे बांधे. हवे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे कहे छे–सोग १, अरति २, अथिर ३, अशुभ ४, अजस ५, असातावेदनी ६, किणीक जीवने ए छ ६ काढीजे अने किणहिने तो सात काढीजे, जे देवनो आउखो काढीजे देवतानो आउखो खपाव्यो होवे अथवा न बांधतो होवे तो सात काढीजे ॥ ७ ॥

गुणसट्ठि अप्पमत्ते, सुराउ बंध तु जइ इहागच्छे ।
अन्नह अट्ठावन्ना, जं आहारगदुग बंधे ॥ ८ ॥

अर्थ—जो छ काढीजे तो अप्रमत्तगुणठाणे गुणसट्ठि ५९ रहे, जिण कारणथी देवतानो आउखो जे जीव बांधतो थको सातमे गुणठाणे आवे वेद्रने ५९ अने जे जीव देवतानो

अाउखो खपावे सातमे गुणठाणे आवे तेहने अट्ठावन ५८ रहे. इहां तो दोय प्रकृति घटे छे; सत्तावन अथवा छप्पन्न थाय छे. तिणे आहारक शरीर १, आहारक उपांग २, ए दोय वळी घालीजे तिवारे गुणसठी ५९ तथा ५८ थाय. ॥ ८ ॥

अडवन्न अपुव्वाइम्मि निद्दुगंतो छपन्नपणभागे ।
सुरदुगपणिंदिसुखगइतसनवउरलविणुतणुवंगा ॥९॥

अर्थ—इहिज अट्ठावन ५८ अपूर्वकरण आठमे गुणठाणे तेहने पहेले भागे बांधे, पछी बीजे त्रीजे चोथे पांचमे छट्ठे ए पांच भागे छप्पन्न ५६ प्रकृति बांधे. निद्रा १, प्रचळा २, ए दोय प्रकृति काढीजे. पछी देवगति १, देवतानुपूर्वि २. पंचेंद्री १. शुभविहायोगति १. त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३, प्रत्येक ४, थिर ५, शुभ ६, सुभग ७, सुस्वर ८, आदेय ९. ए त्रस-नव तथा औदारिक विना ४ शरीर दोय उपांग—वैक्रिय शरीर १, आहारक शरीर २, तेजस ३, कार्मण शरीर ४. वैक्रिय उपांग १, आहारक उपांग २. ॥ ९ ॥

समचउरनिमिणजिणवन्नअगुरुलहुचउछलंसितीसंतो
चरमे छवीसबंधो, हासरईकुच्छभयभेओ ॥ १० ॥

अर्थ—समचतुरस्र संस्थान १, निर्माण १, जिननाम १, वर्ण १, गंध १, रस १, फरस १, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उसास १; छट्ठा भागने अंते ए त्रीस ३० प्रकृति काढीजे; तिवारे चरम छेहले सातमे भागे छवीस २६ प्रकृति बांधे. हवे नवमे अनिवृत्तिबादरगुणठाणे कहे छे—हास्य १, रति १, दुगंछा १, भय १. ए च्यार काढीजे. ॥ १० ॥

अनियट्टिभागपणगे, इगेगहीणो दुवीसविहबंधो ।
पुमसंजलणचउण्हं, कमेण छेओ सतरसुहुमे ॥११॥

अर्थ—अनिवृत्ति गुणठाणाना पांच भाग छे तिणमे पेहेले भागे बावीस बांधे, पाछले भागे सर्व एकेक घटाडीये बावीस मांहेथी घटाडीये अनिवृत्तिकरणने बीजे भागे पुरुषवेद काढीजे तिवारे एकवीस २१. त्रीजे भागे संजलनो क्रोध काढीजे, तिवारे २० वीस. चोथे भागे सजलनो मान काढीजे तिवारे १९ ओगणीस. पाचमे भागे सजलनी माया काढीजे तिवारे अढार १८ हवे दशमो सूक्ष्मसपराय गुणठाणो कहे छे—तिणमाहीथी सजलनो लोभ काढीजे, तिवारे सत्तर दशमे गुणठाणे १७ बांधे.

चउदंसणुच्चजसनाणविग्घं दसगं ति सोलसुच्छेओ।
तिसुसायबंधछेओ, सजोगि बंधंतणंतो य ॥ १२ ॥
बंधो सम्मत्तो ॥

अर्थ—हवे इग्यारमो उपशातमोह कहे छे—च्यार दर्शनावरणि उच्चगोत्र, जसनामकर्म्म, पाच ज्ञानावरणि, पाच अनराय ए दश ए सर्व सोळे प्रकृतिनो छेद कीजे, तिवारे इग्यारमे बारमे तेरमे ए तीने गुणठाणे बाकी १ एक सातावेदनी प्रकृति बधमे रहे, पछे तेरमे सजोगी केवळीने छेदे तेपण खपावे, अनध होवे, सर्व कर्मथी रहित होवे चौदमे गुणठाणे पछी अनंतो काल मोक्षपद पामे १२ ए बध अधिकार पूरो थयो छे.

उदओ विवागवेयणमुदीरणमपत्ति इह दुवीससयं ।
सतरसयं मीच्छे मीससम्मआहारजिणणुदया ॥१३॥

अर्थ—हवे चौद गुणठाणे उदय कहे छे—उदय कहेतां कर्मनो विपाक फल तेहनो भोगवणो शुभ सातादिक अशुभ असातादिक ते उदय कहीजे. अने उदय नाव्या कर्मने खेंची उदीरणकरणे करी जोरावरें करी उदय आणे ते उदीरणा कहीजे. इहां उदयमें उदीरणामें सामान्य एकसो बावीस १२२ छे. मोहनीना २८ भेद लीजे, मिथ्यात्व गुणठाणे ११७ एकसो सत्तरनो उदय छे. जे कारणे पांच प्रकृति काढीजे—मिश्रमोहनी १, सम्यक्त्वमोहनी २, जिननाम ३, आहारक शरीर ४, आहारक उपांग ५. ए पांच काढीजे. ॥ १३ ॥

सुहुमतिगायवमिच्छं, मिच्छत्तं सासणे इगारसयं।
निरयाणुपुव्विणुदया, अणथावरइगविगलअंतो ॥१४॥

अर्थ—हवे सास्वादन गुणठाणे कहे छे—सूक्ष्मत्रिक ते सूक्ष्म १, अपर्याप्त २, साधारण ३. आताप १. मिथ्यात्वमोहनी १. ए पांचनो उदय मिथ्यात्वमें छे, सास्वादनमें नहीं; तिवारे सास्वादनमें एकसो इग्यार प्रकृति उदय छे. सो एतो एकसो बारे रही तिवारे नरकआनुपूर्वि काढीजे तिवारे १११ रही. हवे मिश्रगुणठाणे कहे छे—अनंतानुबंधि क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, थावर ५, एकेंद्री ६, विकलेंद्री ते बेंद्री ७, तेंद्री ८, चौरेंद्री ९. ए नव काढीजे. ॥ १४ ॥

मीसे सयमणुपुव्वीणुदया मीसोदएण मीसंतो।
चउसयमजए सम्माणुपुव्वि खेवाबियकसाया ॥१५॥

अर्थ—तिवारे मिश्रगुणठाणे एकसो प्रकृति उदय छे. एतो एकसो दोय १०२ रही; तिवारे मनुष्यानुपूर्वि १, तिर्यंचानुपूर्वि १,

देवानुपूर्वि १..ए तीन वळी काढीजे, तिवारे नवाणु ९९ रहे. वळी मिश्रमोहनी मेळीजे, तिवारे पूरा सो १०० थाय.

चोथे गुणठाणे कहे छे—मिश्रमोहनी काढीजे अने समकीतमोहनी १, आनुपूर्वि ४ च्यार, ए पांच प्रकृति मेळीजे, तिवारे चोथे गुणठाणे १०४ एकसोच्यार प्रकृतिनो उदय छे. पांचमे देसविरति गुणठाणे कहे छे—बीजी चोकडी कषायनी—अप्रत्याख्यानी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ. ॥ १५ ॥

मणुतिरिणुपुव्वीविउवट्ठ-दुहगअणाइज्जदुगसतरछेओ
सगसीइ देसि तिरिगइआउनिउज्जोअतिकसाया१६॥

अर्थ—मनुष्यानुपूर्वी १, तिर्यंचनी आनुपूर्वी १, वैक्रियाष्टक ते वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय उपाग २, देवगति ३, देवानुपूर्वी ४, देवनो आउखो ५, नरकगति ६, नरकानुपूर्वी ७, नरकआउखो ८, ए आठ दुर्भग १, अनादेय १, अजस १, ए सतरे प्रकृति काढीजे, तिवारे देशविरति गुणठाणे सत्यासी ८७ प्रकृतिनो उदय छे. हवे छठ्ठो प्रमत्त गुणठाणो कहे छे- तिरजंचगति १, तिरजच आउखो १, नीचैर्गोत्र १, उद्योतनामकर्म १ त्रीजी चोकडी—प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ. ॥१६॥

अट्ठछेओ इगसीइ, पमत्ते आहारजुअलपक्खेवा ।
थीणतिगाहारगदुगछेओ छसयरि अप्पमत्ते ॥ १७ ॥

अर्थ—ए आठ प्रकृति काढीजे, तिवारे प्रमत्तगुणठाणे एकासी ८१-प्रकृति उदये छे. इहा गुणासी ७९ थाय छे, तिवारे आहारक शरीर १, आहारक उपाग २, ए दोय प्रकृति मेळीजे, तिवारे ८१ एकासी थाय छे. हवे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे

कहे छे–थीणध्धीतिग–निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला २, थीणद्धी ३, आहारक शरीर ४, आहारक उपांग ५. ए पांच प्रकृति काढीजे; तो छोत्तेर प्रकृति अप्रमत्तगुणठाणे उदय छे. ॥१७॥

सम्मत्तंतिमसंघयणतिगवुच्छेओ बिसत्तरि अपुव्वे।
हासाइछक्कअंतो छसट्ठि अनियट्टि वेयतिगं ॥ १८ ॥

अर्थ—हवे अपूर्वकरण कहे छे–समकीत मोहनी १ छेला तीन संघेण अर्धनाराच १, कीलिका १, छेवट्ठो १, ए च्यार प्रकृति काढीजे; तिवारे आठमे अपूर्वकरणगुणठाणे बहोत्तर ७२ प्रकृतिनो उदय छे. ७२ नवमे अनिवृत्ति बादर गुणठाणे कहे छे. हास्य १, रति १, अरति १, सोग १, भय १, दुगंछा १, ए छ प्रकृत्ति काढीजे; तिवारे छासठ प्रकृतिनो उदय छे, नवमे अनिवृत्ति गुणठाणे. हवे दसमे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे कहे छे–वेद तीन–पुरुषवेद १, स्त्रीवेद २, नपुंसकवेद ३. ॥ १८ ॥

संजलणतिगं छछेओ, सट्ठी सुहुमंमि तुरिअलोभंतो।
उवसंतगुणे गुणसट्ठि, रिसहनारायदुग अंतो ॥१९॥

अर्थ—संजलणा तीन–संजलन क्रोध १, मान २, माया ३. ए छ ६ प्रकृति काढीजे; तिवारे दशमे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे ६० साठ प्रकृतिनो उदय छे. हवे इग्यारमे गुणठाणे कहे छे–चोथो लोभ संजलणो लोभ १ ए एक प्रकृति काढीजे; तिवारे इग्यारमे उपशांतमोहगुणठाणे गुणसठि ५९ प्रकृतिनो उदय छे. हवे बारमे क्षीणमोहगुणठाणे कहे छे–तिहां क्षीणमोह गुणठाणना बे भाग छे. तिहां पेहेले भागे ऋषभनाराच १, नाराच २. ए बे काढीये. ॥ १९ ॥

सगवन्न खीणदुचरमि निद्दुगंतो चरमि पणपन्ना।
नाणंतरायदंसणचउछेओ सजोगिवायाला ॥२०॥

अर्थ—तिवारे पेहेले क्षीणमोह गुणठाणाना उपात्यसमये सत्तावन ५७ प्रकृतिनो उदय छे अने वीजे भागे निद्रा १ प्रचला १ ए दोय प्रकृति काढीजे, तिवारे क्षीणमोहने छेहडे पचावन ५५ प्रकृतिनो उदय छे. हवे तेरमे सजोगी केवळी गुणठाणे कहे छे-नाण-ज्ञानावरणी पाच, अतराय पाच, दर्शनावरणी ४ च्यार ए १४ चौदे प्रकृति काढीजे, तिवारे तेरमे गुणठाणे वायाला-वेताळीस प्रकृति उदये छे. जो के थाय छे एकताळीस पण. ॥ २० ॥

तित्थुदया उरलाथिरखगइदुगपरित्तितिगछसंठाणा।
अगुरुलहुवण्णचउनिमिणतेअकम्माइसंघयण ॥२१॥

अर्थ—ए एकताळीस रही तिवारे तीर्थंकरनाम एमां मेळीजे. तीर्थंकरनामकर्मनो उदय ते केवळज्ञान उपन्या पछी होवे माटे ४२ हवे चौदमे अजोगीगुणठाणे कहे छे तीस प्रकृति खपे ते कहे छे—ओदारिक शरीर १, ओदारिक उपांग २ अथिर १, अशुभ १. ए अथिरदुग तथा शुभविहायोगति १, अशुभविहायोगति १. ए खगतिदुग प्रत्येक १, स्थिर १, शुभ १ ए प्रत्येकतिग छ सस्थान ६ ते समचतुरस्र १, न्यग्रोध २, सादी ३, वामन ४, कुब्ज ५, हुडक ६, ए छ अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, उसास १, वर्ण १, गध १, रस १, स्पर्श १, निर्माण १, तेजसशरीर १, कार्मणशरीर १. आदि ते प्रथम वज्रऋषभनाराच सघयण. १ ॥ २१ ॥

दूसरसूसरसायासाएगयरं च तीसवुच्छेओ ।

बारस अजोगि सुभगाइज्जजसन्नयरवेयणीअं ॥२२॥

अर्थ—दुःस्वर १, सुस्वर १, सातावेदनी अथवा असाता ए दोयह मांहिली एक वेदनी एवं त्रीस प्रकृति खपावे; तिवारे चउदमे अजोगीगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय रहे छे. ते बार प्रकृतिनां नाम कहे छे—सुभग १, आदेय १, जस १, अने साता असाता मांहेली एक वेदनी जे रही होय ते साता अथवा असाता. ॥ २२ ॥

तसतिगपणिंदिमणुआउगइजिणुच्चंतिचरमसमयंता।

उदओ सम्मत्तो ।

उदउव्वुदीरणया, परमपत्ताइ सगगुणेसु ॥ २३ ॥

अर्थ—त्रसत्रिक ते त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३. पंचेंद्री जाति १, मनुष्यनो आउखो १, मनुष्य गति १, जिन—तीर्थंकरनाम १, उच्चैर्गोत्र १. बारे प्रकृति चउदसमे १४ में गुणठाणे तेहने छेहले समये खपावे तिवारे सर्व कर्म रहित होय तेथी मोक्ष पामे. एटले करी १४ गुणठाणे उदय अधिकार पूरो कह्यो. हवे उदीरणा ते उदयनी जेम जाणवी. उदीरणा १२२ नी छे. मिथ्यात्वे एकसो सतरेनी उदीरणा छे, सास्वादने एकसो अगीयारनी छे, मिश्रे एकसो १०० नी छे, अविरते १०४ एकसो च्यारनी छे, देसविरते सत्यासी छे. प्रमत्त गुणठाणे ८१ एक्यासी छे. इम छट्ठा गुणठाणा तांइ जाणवी. सातमे अप्रमत्त गुणठाणेथी फेर छे, ते आगली गाथाए करी कहे छे. ॥ २३ ॥

एसा पयडितिगुणा, वेयणीआहारजुअलथीणतिगं।
मणुआउ पमत्तंता, अजोगिअणुदीरगो भयवं ॥२४॥
उदीरणा सम्मत्ता॥

अर्थ—ए तीन प्रकृति ऊणी कीजे ते प्रथम सातावेदनी १, असातावेदनी २, मनुष्यनो आउखो १. ए तीननो फेर छे. वेदनी २, आहारक २, थीणद्धीतीन, मनुष्यनो आउखो १, ए आठ काढीजे उदयमे पाच नीकळे छे, उदीरणमे सातमे गुणठाणे ८ आठ काढीजे, तिवारे तिहुत्तर ७३ उदीरणा छे आठमे गुणहत्तर ६९ छे. नवमे त्रेसठि ६३ उदीरणा छे दशमे सत्तावन छे इग्यारमे छप्पन्न ५६ छे. बारमे पेहेले भागे चोपन ५४ उदीरणा छे अने बीजे भागे बावन्न ५२ उदीरणा छे. तेरमे गुणटाणे च्याळीस ४० उदीरणा छे. अने चौदमे अजोगी गुणठाणे उदीरणा नथी-अनुदीरक छे. सिद्ध थाय ते अकर्मा छे एटले चौदे गुणठाणे उदीरणा पूरी थइ. ॥२४॥

सत्ता कम्माण ठिइ, बंधाइअलद्धअत्तलाभाणं।
संते अडयालसयं जाउवसमुविजिणुबीयतईए॥२५॥

अर्थ—हवे चौदे गुणठाणे सत्ता कहे छे-तिहां सत्तानो अर्थ कहे छे-जे कर्मनी स्थिति बाध्या पछी उदय विना अथवा उदय सहित जे जीवशुं लागा रहे, जिम घरनी नीमी तिम जे कर्म ते सत्ता कहीजे, जे बंधादिकपणे आत्माथी लोलीभाव पामे ते सत्ता जाणवी. हवे उपशमश्रेणिनी सत्ता कहे छे-जे जीव उपशम समकीती, उपशम चारित्री, तेहनी सत्तामें काइ प्रकृति घटे नहीं, तेहने उपशम ११ इग्यारमे

गुणठाणा तांइ एकसो अडताळीस १४८ नी सत्ता छे. इहां सत्तामे एकसो अट्ठावन १५८ छे. तिना नामकर्मना भेद १०३ एकसोतीन गुण्या छे अने जो बंधन १५ पन्नर न गणीजे ने पांच गणीजे तो नामकर्मना भेद ९३ त्राणु थाय. जिवारे नामकर्मना तिनवे ९३ भेद गणीजे; तिवारे १४८ एकसो अडताळीस थाइ. ॥ २५ ॥

अपुव्वाइअचउक्के अणतिरिनिरयाउविणुवियालसयं।
सम्माइचउसु सत्तगखयंमि इगचत्तसयमहवा ॥२६॥

अर्थ—हवे वीजे पक्ष कहे छे. जे उपशमश्रेणिवंत आठमे गुणठाणे अनंतानुबंधी चोकडी खपावे, एटले अपूर्वकरण आठमा गुणठाणाथी मांडी इग्यारमा उपशांतमोह गुणठाणा तांइ च्यार ४ गुणठाणे अनंतानुबंधी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४. ए च्यार. तिर्यंचनो आउखो १, नरकनो आउखो. ए छ खपावे; तेहने इणे च्यारे गुणठाणे एकसोबेताळीस १४२ नी सत्ता छे. हवे कोइ जीव चोथे गुणठाणे सात प्रकृति खपावे, एटले अनंतानुबंधी क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४, ए च्यार समकित मोहनी १, मिश्र मोहनी २, मिथ्यात्व मोहनी ३. एम ए ७ सात प्रकृति जेणे खपावे ते जीव समकीतथ्री च्यारे गुणठाणे एकसो एकताळीस १४१ नी सत्ता छे. ए क्षायकसमकीती उपशमश्रेणि जीवने छे. ॥ २६ ॥

खवगं तु पप्प चउसुवि, पणयालं निरयतिरिसुराउविणा॥
सत्तगविणु अडतीसं, जा अनियट्टिपढमभागे ॥२७॥

अर्थ—क्षपकश्रेणीने मते च्यारे गुणठाणे अविरतिथ्री मांडी

अपूर्वकरण गुणठाणा तांइ एकसो पीस्ताळीसनी सत्ता छे नरकनो आउखो, तिर्यंचनो आउखो ने देवायुष्य एम तीन आउखो खपावे, तिवारे १४५ एकसो पीस्ताळीसनी सत्ता छे पछी अनतानुबंधी क्रोध, मान, माया, लोभ ४ समकीत मोहनी १, मिश्रमोहनी २, मिथ्यात्व मोहनी ३ ए ७ सात प्रकृति खपावे, तिवारे १४८ एकसो अडताळीसनी सत्ता रहे छे अनिवृत्ति बादरने पेहेला भाग ताइ. अनिवृत्ति बादरना नव भाग छे. ॥ २७ ॥

थावरतिरिनिरयायव–दुगथीणतिगेगविगलसाहारं। सोलखओ दुवीससयं, वियंमि वियतिअकसायं तो।२८।

अर्थ–हवे अनिवृत्तिबादरनो बीजो भाग कहे छे– थावर १, सूक्ष्म १, तिर्यंचगति १, तिर्यंचानुपूर्वि १, नरकगति १, नरकानुपूर्वि १, आताप १, उद्योत १, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, थीणद्धी १, एकेंद्री जाति १, बेंद्री १, तेंद्री १, चोरेंद्री १, साधारण १, ए सोळ प्रकृति सत्तामे खपे, तिवारे एकसो बावीस १२२ नी सत्ता छे, ए अनिवृत्ति बादरने बीजे भागे १२२ नी सत्ता छे हवे त्रीजे भागे कषायनी बीजी चोकडी अप्रत्याख्यान क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४. प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, लोभ. ए ८ आठ काढीजे ॥ २८ ॥

तइआइसु चउदसतेरबारछपणचउतिहिअसयकमसो। नपुइत्थिहासछगपुंस तुरिअकोहमयमायखओ॥२९॥

अर्थ–तिवारे अनिवृत्तिबादरने त्रीजे भागे ११४ एकसो

चौदनी सत्ता छे. अनिवृत्तिकरणे चोथे भागे नपुंसकवेद खपे; तिवारे एकसो तेर ११३ नी सत्ता छे. पांचमे भागे स्त्रीवेद खपावे; तिवारे ११२ एकसो बारनी सत्ता छे. छट्ठे भागे हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, भय १, दुगंछा १, ए छ प्रकृति खपावे; तिवारे एकसो छ ६ नी सत्ता छे. सातमे भागे पुरुषवेद खपावे तिवारे एकसो पांच १०५ नी सत्ता छे. आठमे भागे संजलनो क्रोध खपावे; तिवारे एकसो च्यार १०४ नी सत्ता छे. नवमे भागे संजलनो मान खपावे; तिवारे एकसो तीननी सत्ता छे. ए नवमो गुणठाणो पूरो कह्यो पछी संजलनी माया खपावे तिवारे. २९

सुहुमि दुसयलोहंतो, खीणदुचरिमेगसयदुनिद्दखओ।
नवनवइ चरमसमये, चउदंसणनाणविग्घंतो॥३०॥

अर्थ—दशमे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे एकसो दोय १०२ नी सत्ता छे. इहां क्षपकश्रेणि दशमे गुणठाणेथी बारमे गुणठाणे जाय. इग्यारमो न फरसे तिवारे बारमे गुणठाणे संजलनो लोभ खपावे; तिवारे क्षीणमोहने पेहेले भागे एकसो एक १०१ नी सत्ता छे. तिहां वळी निद्रा १, प्रचला १, ए दोय २, प्रकृति खपावे; तिवारे क्षीणमोहने बीजे भागे नवाणुं ९९ नी सत्ता छे. हवे दर्शनावरणी च्यार ४, ज्ञानावरणी पांच, ए चौदे प्रकृति खपावे तिवारे. ३०

पणसीइ सयोगी अयोगि, दुचरिमेदेवखगइगंधदुगं।
फासट्ठवण्णरसतणु—बंधणसंघायपणनिमिणं॥३१॥

अर्थ—तेरमे सजोगी केवळी गुणठाणे पंच्यासी ८५ नी

सत्ता छे. हवे अजोगी चौदमे गुणठाणाने पेहेले भागे तो पंचामी ८५ नी सत्ता छे. अने बीजे भागे बिहुतर खपावे ते कहे छे-देवदुग देवगति १, देवानुपूर्वि १. खगइदुग-शुभविहायोगति १, अशुभविहायोगति २, गंवदुगं-सुगव १, दुर्गंध २, फास-फरस आठ ८, वर्ण पांच ५, रस पाच ५, शरीर पाच ५, सवातन ५, पांच अने निर्माण नाम कर्म ॥३१॥

संघयणअथिरसंठाणछक्कअगुरुलहुचउअपज्जत्तं ।
सायं च असायं वा, परित्तूवंगतिगसुसरनीयं ॥३२॥

अर्थ-सवयण छ ६, अथिर १, अशुभ १, दुर्भग १, दुस्वर १, अनादेय १, अजस ए अथिर छ ६. संस्थान छ ६, समचउरसादि छ अगुरुलघु १, परावात १, उपवात १, उसास १, अपर्याप्त १, साता अथवा असाता एक प्रत्येक तिग उपागतीन औदारिक उपाग १, वैक्रिय उपाग २, आहारक उपाग ३ सुस्वरनामकर्म १, नीचैर्गोत्र ॥३२॥

बिसयरिखओअ चरिमे, तेरसमणुअतसतिगजसाइज्जं ।
सुभगजिणुच्चपणिंदिय-सायासायेगयरछेओ ॥३३॥

अर्थ-ए बहोत्तेर ७२ प्रकृति खपावे, तिवारे अजोगी केवलीने छेहेले भागे तेर प्रकृतिनी १३ नी सत्ता छे, ते तेर १३ प्रकृतिना नाम कहे छे-मनुष्यगति १, मनुष्य आनुपूर्वि २, मनुष्य आउखो १, त्रस १, बादर १, पर्याप्त १, आदेय १, सुभग १, जिनतीर्थंकर १, उच्चैर्गोत्र १, पचेंद्रीनी जाति १, साता असाता माहेली एक प्रकृति जे रही होय ते पण ए तेरे छेहेले समये खपावी मोक्ष पामे. ॥३३॥

अर्थ—हवे पहेली नरकगति मार्गणाए बंधस्वामित्व कहे छे—जिनतीर्थंकर नाम १, देवगति १, देवानुपूर्वि २, वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय उपांग २, आहारक शरीर १, आहारक उपांग २, देवतानो आउखो १, नरकगति १, नरकानुपूर्वि २, नरकआयु ३, सूक्ष्मात्रिक—सूक्ष्म १, अपर्याप्त २, साधारण ३, विगलतिग—बेंद्री १, तेंद्री २, चौरेंद्री ३, एकेंद्रीजाति १, थावरनामकर्म १, आतापनामकर्म १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्वमोहनी १, हुंडकसंस्थान १, छेवट्ठो संघयण १. ॥ ३ ॥

अणमज्झागिइसंघयण—कुखगइनीइत्थिदुहगथीण-तिगं।
उज्जोयतिरिदुगं, तिरिनराउनरउरलदुगरिसहं ॥४॥

अर्थ—अनंतानुबंधि क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४. मध्यसंस्थान ४. न्यग्रोध १, सादि २, वामन ३, कुब्ज ४. मध्यसंघयण ४, ऋषभनाराच १, नाराच २, अर्द्धनाराच ३, कीलिका ४, अशुभविहायोगति १, नीचगोत्र १, स्त्रीवेद १, दुर्भग १, दुःस्वर १, अनादेय १, निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला १, थीणद्धी १, उद्योत १, तिर्यंचगति १, तिर्यंचानुपूर्वि १, तिर्यंच आउखो १, मनुष्यआउखो १, मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वि २. औदारिक शरीर १, औदारिक उपांग २, वज्रऋषभनाराचसंघयण १, ए दोय गाथाए करी पंचावन प्रकृति ५५ कही. ॥४॥

सुरइगुणवीसवज्जं इगसओ ओहेण बंधहिंनिरया।
तित्थविणा मिच्छिसयं, सासणनपुचउविणा छनुई॥५॥

अर्थ—सुरगति आदिक ओगणीस १९ प्रकृति काढीजे—

देवगति १, देवानुपूर्वि २. वैक्रिय २, आहारक २ देवायु १, नरकत्रिक ३, सूक्ष्मत्रिक ३, विगलत्रिक ३, एकेंद्रि १, थावर १, आताप १ ए १९ काढीजे. एकसोवीसमायी १९ काढीये, त्यारे १०१. पेहेली तीन नरकमे एकसो एकनो ओघ-सामान्ये बंध छे जे पूर्वे कहीजे १९ प्रकृति, तिणमे नारकी न उपजे, तिणमे एकसो एकमे तीर्थंकरनाम काढीजे, तिवारे मिथ्यात्वगुणठाणे १०० एकसो प्रकृतिनो बंध छे तिणमाहियी नपुंसकवेद १, मिथ्यात्व १, हुंडक संस्थान १, छेवठो संघयण १, ए च्यार काढीजे, तिवारे सास्वादन गुणठाणे छन्नु ९६ प्रकृति बांधे ॥५॥ हवे वळी तेमाहीयी

विणुअणछवीसमीसे, विसयरि सम्मम्मि जिणनराउ जुआ।

इयरयणाइसुभंगा, पंकाइसु तित्थयरहीणो ॥६॥

अर्थ—अनंतानुबंधि ४, मध्यसंस्थान ४, मध्यसंघयण ४, अशुभविहायोगति १, नीचगोत्र १, स्त्रीवेद १, दुर्भग १, थीणद्धी ३, उद्योत १, तिर्यंच २, मनुष्यनो आउखो १, ए छवीस काढीजे, त्यारे मिश्रगुणठाणे ७० सीत्तेरनो बंध छे, इणमाहे तीर्थंकर १, मनुष्यनो आउखो १, ए दोय प्रकृति भेळीजे; तिवारे अविरतिगुणठाणे ७२ बहोत्तरनो बंध छे. नारकीमे ४, च्यार गुणठाणा छे. ए ४ गुणठाणा रत्नप्रभा १, शर्करा प्रभा २, वालुप्रभा ३, ए त्रण ताइ जाणवा पंकप्रभा, धूमप्रभा, तम प्रभा ए तीन नरके ओघ सामान्यमायी तीर्थंकरनाम काढीजे. त्यारे सोनो ओघ छे. इतले इणे नरकनो

आव्यो तीर्थंकरने थाय. मिथ्यात्वगुणठाणे सो १०० प्रकृतिनो बंध छे. सास्वादनमे ९६, मिश्रमे ७०, समकितमे ७१, एक मनुष्यनो आयु मेळीजे. ॥ ६ ॥

अजिणमणुआउ ओहे, सत्तमिए नरदुगुच्चविणु मिच्छे। इगनवई सासाणे, तिरिआउ नपुंसचउवज्जं ॥७॥

अर्थ—सातमी नरके ओघमांहेथी जिननाम १, मनुष्यनो आउखो १, ए दोय काढीजे; तिवारे सातमी नरके ओघे नवाणुं ९९ नो बंध छे. अने मिथ्यात्वगुणठाणे मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वि १, उच्चगोत्र १, ए ३ तीन काढीजे; तिवारे मिथ्यात्वगुणठाणे ९६ छन्नुनो बंध छे. सास्वादन गुणठाणे एकाणुनो बंध छे. पांच प्रकृति काढीजे. तिर्यंचनो आउखो १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्व १, हुंडकसंस्थान १, छेवठोसंघयण १, ए पांच वर्जीजे—काढीजे एटले ९१. ॥ ७ ॥

अणचउवीसविरहिया, सनरदुगुच्चाय सयरि मीसदुगे। सत्तरसओ ओहे मिच्छे, पज्जतिरियाविणुजिणाहारं ८

अर्थ—अनंतानुबंधी ४, मध्यसंस्थान ४, मध्यसंघयण ४, अशुभविहायोगति १, नीचगोत्र १, स्त्रीवेद १, दुर्भग ३, थीणद्धी ३, उद्योत १, तिर्यंचगति १, तिर्यंचआनुपूर्वि १, ए चोवीस २४ काढीजे अने मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वि १, उंचगोत्र १, ए तीन मेळीजे; तिवारे मिश्रगुणठाणे ७० नो बंध छे, इतले नरकगति कही छे. पर्याप्ततिर्यंचने ओघे-सामान्ये एकसो सत्तर ११७, अने मिथ्यात्वगुणठाणे ११७ नो बंध छे; केमके तीर्थंकरनाम १, आहारक शरीर २, आहारक उपांग ३, ए त्रण काढीजे. तिर्यंचगतिमे ए ३ नो बंध नही. ॥ ८ ॥

विणु निरयसोल सासणि[101], सुराउ अणएगतीस विणु मीसे।
ससुराउ सयरि सम्मे, वीअकसाए विणा देसे ॥९॥

अर्थ—नरकादि १६ सोले काढीजे—नरक ३, जाति ४, थावर ४, हुडक १, आताप १, छेवठो संघेण १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्वमोहनी १ ए १६ विना सास्वादन गुणठाणे १०१ नो बंध छे देवनानो आउखो १, अनंतानुबंधी ४, मध्यसंस्थान ४, मध्यसंघेण ४, अशुभविहायोगति १, नीचगोत्र १, स्त्रीवेद १, दुर्भगत्रिक ३, थीणद्धी ३, उद्योत १, तिर्यंच ३, मनुष्य ३, औदारिक २, वज्रऋषभनाराचसंघेण १, ए बत्रीस ३२ (इनामा ४२ लखी छे) काढीजे तिवारे मिश्र गुणठाणे, गुणहत्तर ६९ नो बंध छे वळी देवनानो आउखो मेळीजे, तिवारे समकीत गुणठाणे ७० सीतेर प्रकृतिनो बंध छे. वळी अप्रत्याख्यानी ४ काढीजे, तिवारे देशविरति गुणठाणे ६६ छासठ प्रकृतिनो बंध छे. ए तिर्यंचगति कही. ॥ ९ ॥

इअ चउगुणेसु वि नरा, परमजया सजिण ओहु देसाइ
जिण इक्कारसहीणं, नवसय अपज्जत्ततिरिअनरा॥१०॥

अर्थ—ए च्यार गुणठाण पेहेला मनुष्यगतिने, तिर्यंचगतिने समान जाणवा. पर एटलो विशेष छे जे ओघ सामान्ये सर्व छे चौदे गुणठाणे जिननाम १ मेळीजे, इनले सामान्ये १२० प्रकृतीनो छे मिथ्यात्वे ११७ प्रकृतो मतरे बंध छे सास्वादने १०१ प्रकृतो एक छे. मिश्रे गुणहत्तर ६९ नो बंध छे समकीते ७० सीत्तेर छे. देशविरते ६७, प्रमत्ते ६३ छे, इम १४

गुणठाणे जाणवो. बीजा कर्मग्रंथथी यथायोग्य लेवो. अने अपर्याप्तातिर्यंचने अने अपर्याप्ता मनुष्यने १०९ एकसो नवनो सामान्ये बंध छे. जिणादि ११ प्रकृतिनो बंध नहि—जिन १, सुर २, वेद २, वैक्रिय २, आहारक २, देवतानो आउखो १, नरकत्रिक ३, ए इग्यारे ११ नहीं. ए तिर्यंच मनुष्य अपर्यावस्थामें मरण पामे तेने मिथ्यात्व गुणठाणु होय. ॥१०॥

निरयव्व सुरा नवरं, ओहे मिच्छे इगिंदितिगसहिया।
कप्पदुगेवि अ एवं, जिणहीणो जोइ भवणवणे ॥११॥

अर्थ—जिम नारकीमे एकसो एक तिके देवताने पिण जाणवी, पिण सामान्यमें अने मिथ्यात्व गुणठाणे एकेंद्री १, थावर १, आताप १. ए तीन भेळीजे; तिवारे ओघे १०४ एकसो च्यारनो छे. मिथ्यात्वमें जिननाम काढीजे; तिवारे १०३ एकसो तीननो बंध छे. सास्वादने ९६, मिश्रे ७०, समकीते ७३, दोय पेहेले देवलोके सौधर्म इशान तांइ जाणवो अने ज्योतिषी, भवनपति, व्यंतर. एहने जिननामनो ओव नहीं; तिवारे १०३, सामान्ये मिथ्यात्वे छे. सास्वादने ९६, मिश्रे सित्तेर ७०, समकीते ७१ इकोत्तर जाणवी. ॥११॥

रयणुव्व सणंकुमाराइं, आणयाइउज्जोअचउरहिआ।
अपज्जतिरिअव्वनवसय मिगिंदिपुढविजलतरुविगले १२

अर्थ—सनत्कुमारसुं सहस्रार तांइ ए ६ देवलोक तांइ रत्नप्रभानरकनी पेरे एकसो एक सामान्ये सो १०० मिथ्यात्वे, ९६ सास्वादने अने मिश्रे ७०, तथा समकीतमे ७२ जाणवी. आनतसुं उपरला च्यार देवलोक, नव ग्रैवेयक, पंचानुत्तरविमान

एहने-उद्योत १, तिर्यंचगति १, तिर्यंचआनुपूर्वि १, तिर्यंच आउखो ए ४ काढीजे, तिवारे सताणु ९७ वेरो सामान्य छे ९६ मिथ्यात्वे छे बाणु सास्वादने, सितेर मिश्र गुणठाणे, ७२ समकीत गुणठाणे, जिम अपर्याप्ते तिर्यंचमे १०९ एकसो नव प्र० नो बंध सामान्ये अने मिथ्यात्वे कह्यो तिमहीज एकसो नव प्रकृतिनो बंध १०९ नो बंध एकेन्द्री मार्गणा १, पृथ्वीकाय मार्गणा अप्काय मार्गणा, वनस्पतिकाय मार्गणा, बेंद्री मार्गणा, तेंद्री मार्गणा, चैरेंद्री मार्गणा. इतली मार्गणामें एकसो नवनो सामान्य छे एकसो नव मिथ्यात्वमें जाणवी ॥ १२ ॥

छनवइ सासणि विणुसुहु मतेरकेइपुणविंतिचउनवइ।
तिरिअनराउहिं विणा, तणु पज्जत्तिं न जंति जओ १३

अर्थ—सास्वादन गुणठाणे छन्नुनो ९६ बंध छे. सूक्ष्मादिक तेरे काढीजे—सूक्ष्म ३, विगल ३, एकेन्द्री १, थावर १, आताप १, नपु १, मिथ्यात्व १, हुडक १, छेवठो १. ए १३ काढीजे कोइक आचारज सास्वादन गुणठाणे ९४ चोराणु कहे छे. तिरजच मनुष्यनो आउखो ए बे काढीजे जे काइ एकेन्द्रि, बेंद्री, तेंद्री चौरेन्द्री जीव सास्वादन गुणठाणे पूर्व भवथी लीधा आवे छे, ते आहारपर्याप्त ताइज सास्वादन भावमें वरते पछी शरीर पर्याप्त मिथ्यात्व गुणठाणामें करे तेणे आउखो कोइ न बांधे तिणे सास्वादनमें चोराणुनो बंध कहेवो. ॥१३॥

ओहुपणिंदितसे गइ, तसे जिणिक्कार नरतिगुच्चविणा।
मणवयजोगे ओहो, उरले नरभंगु तम्मिस्से ॥१४॥

अर्थ—पचेन्द्रि मार्गणा त्रसकाय मार्गणाने ओघे सास्वाद-

ननी पेरे १४ गुणठाणे बीजे कर्मग्रंथमे कह्या तिम जाणवा. एकसोवीसनो बंध कह्यो छे. गतित्रस ते तेउकाय, वायुकायमें जिणादि ११ इग्यार काढीजे. जिन १, देव २, वैक्रिय २, आहारक २, देवतानो आउखो १, नरक ३. ए ११. पछी मनुष्य ३, उच्चगोत्र १. एम १५ काढवी; तिवारे ओघे मिथ्यात्वे एकसो पांच १०५ नो बंध छे. एहनो गुणठाणो एक छे. मनोयोग १, वचनयोगमें १३ गुणठाणा १२० बंध बीजा कर्मग्रंथने परे जाणवी. औदारिक शरीरमें मनुष्यगतिनी पेरे जाणवी. एकसोवीस ओघे ११७ मिथ्यात्वे, १०१ सास्वादने, ६९ मिश्रे, ७१ समकिते. इम १३ तेर गुणठाणे जाणवो. ॥१४॥

आहारछगविणोहे, चउदससओ मिच्छि जिणपणगहीणं।
सासणि चउनवइ विणा, नरतिरिआऊ सुहुमतेर॥१५॥

अर्थ—आहारक मिश्रकाय योगमें आहारक २, देवआउखो १, नरक २, ए छ काढीजे; तिवारे ११४ एकसो चौदे ओघ सामान्ये छे अने मिथ्यात्व गुणठाणे जिननाम १, देव २, वैक्रिय २, ए पांच काढीजे; तिवारे १०९ नो बंध मिथ्यात्व गुणठाणे छे. सास्वादन गुणठाणे चोराणुंनो बंध छे. सूक्ष्म ३, विगल ३, एकेन्द्री १, थावर १, आताप १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्व १, हुंडक १, छेवठो १, एवं १३. मनुष्य तिर्यंचनो आउखो. ए १५ पनरे काढीजे. ॥१५॥

अणचउवीसाइ विणा, जिणपणजुअसम्मि जोगिणो सायं।
विणु तिरिनराउ कम्मे वि एवमाहारदुगि ओहो॥१६॥

अर्थ—अनतानुबधी ४, मध्यसंघेण ४, कुखगति १, नीच गोत्र १, स्त्रीवेद १, दुर्भगत्रिक ३, थीणद्धीत्रिक ३, उद्योत १, तिर्यंच २, ए चोवीस काढीजे अने जिननाम १, देव २, वैक्रिय २ ए पाच मेळीजे, तिवारे ७५ बध छे. समकित गुणठाणे छे औदारिक मिश्रमें मिश्र गुणठाणो नहीं अने चोथे गु पाठला १२, बारताइ गुणठाणा नहीं अने १३ समुद्घात करतो छे, जिम औदारिक मिश्र तिमहीज कार्मण शरीरमें जाणवो तिर्जंच मनुष्यनो आउखो सामान्यमें काढीजे; तिवारे एकसो ११२ बारनो सामान्य छे एकसो सात मिथ्यात्वे, ९४ सास्वादने, पचहत्तर, समकित एक सयोगी केवळीमे जाणवो. आहारक शरीर १, आहारक मिश्रमें छठ्ठे गुणठाणे ते साठ ६० प्रकृतिनो बध छे, त्यां एक छठ्ठो गुणठाणो छे. ॥१६॥

सुरओहो वेउव्वे, तिरिअनराउरहिओ अ तम्मिस्से।
वेअतिगाइमबिअतिअ—कसायनवदुचउपंचगुणा॥१७॥

अर्थ—जे देवनानो ओघ कह्यो ते वैक्रिय शरीरमे जाणवो. एकसो १०४ च्यारनो ओघ छे. वैक्रिय मिश्रमें तिर्यच मनुष्यनो आउखो काढीजे, तिवारे १०२ एकसोवेनो ओघ छे. गुणठाणा मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरत समकित, ए तीन छे. वेद तीन मार्गणामे नव गुणठाणे छे. आदिम चोकडी अनतानुबधी कषाय ४ च्यारमें दोय गुणठाणा छे, बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानी कषाय च्यारमे पुरला च्यारमें पुरला ४ च्यार गुणठाणा छे. त्रीजी चोकडी प्रत्याख्यानी कषाय च्यारमें पुरला पांच गुणठाणा छे इहां बधनो ओघ गुणठाणा जिम जाणवो. वेद ३ मे १२० बधे, अनतानुबधीमे ११७ बधे, पछी अप्रत्या-

ख्यानीमे ११८ नो ओघे बंध छे. गुणठाणा पूर्वलीपेरे जाणवां.
॥ १७ ॥

संजलणतिगे नव दस, लोहे चउअजइदुतिअनाणतिगे
वारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहक्खायचरमचऊ १८

अर्थ—संजलना क्रोध १, मान २, माया ३, ए त्रणमे नव गुणठाणा धुरला. ओघे १२० प्रकृति बीजो सर्व बीजा कर्मग्रंथनी पेरे जाणवो. संजलना लोभमें दस गुणठाणा धुरलां छे. अविरति मार्गणामे च्यार ४ गुणठाणा छे. ओघे ११८ मिथ्यात्वमे अज्ञान ३ मे गुणठाणा धुरला दोय अथवा तीन छे. अचक्षुदर्शनमे चक्षुदर्शनमें १२ धुरलां बार गुणठाणा छे. यथाख्यात चारित्रमे इग्यार ११ मो, १२ बारमो, १३ मो तेरमो, १४ चौदमो. ए ४ च्यार गुणठाणा छे. बंध एक सातानो छे.
॥ १८ ॥

मणनाणीसग जयाइ, समइअछेअचउदुन्निपरिहारे।
केवलदुगि दोचरिमा, जयाइनवमइसुओहिदुगे ॥१९॥

अर्थ—मनःपर्यायज्ञानमें सात गुणठाणे जातां प्रथम गुणठाणासु मांडी १२ तांइ ओघ ६५ पांसठनो छे. छट्ठे बंध त्रेसठ ६३ नो छे. एवं सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रमें छट्ठो, सातमो, आठमो, नवमो. ए ४ च्यार गुणठाणा छे. परिहारविशुद्धि चारित्रमें छट्ठो, सातमो दोय गुणठाणा छे. केवलज्ञान केवलदर्शनमें तेरमो, चौदमो ए दोय गुणठाणा छे. बंध एक सातावेदनीनो छे. मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, अवधिदर्शन मार्गणासे अजती चोथो अविरत गुणठाणासु मांडी १२ मो क्षीणमोहतांइ नव गुणठाणा छे. ॥ १९ ॥

अड उवसमि चउ वेअगि, खइए इक्कारमिच्छतिगिदेसे
सुहुमि सट्ठाणं तेरस, आहारगि निअनिअगुणोहो॥२०॥

अर्थ—उपशमसमकितमे चोथेथी मांडी इग्यार ११ मा तांइ आठ ८ गुणठाणा छे, क्षयोपशम समकितमे चोथेथी मांडी सातमालगे च्यार गुणठाणा छे, क्षायकसमकितमें चोथेथी मांडी चौदमा ताइ इग्यार ११ गुणठाणा छे मिथ्यात्वमार्गणामे एक मिथ्यात्व गुणठाणो छे सास्वादन मार्गणामे सास्वादन गुणठाणो छे. मिश्रमार्गणाए मिश्रगुणठाणो छे देसविरति मार्गणाए देसविरति गुणठाणो छे सूक्ष्मसंपरायमार्गणाए सूक्ष्मसंपराय गुणठाणो छे त्यां बंधप्रकृति गुणठाणा प्रमाणे जाणवी आहारकमार्गणाए अयोगीकेवळी टाळी तेरे गुणठाणा छे प्रकृति ओघ सर्व गुणठाणानी, जेम बीजे कर्म्मग्रंथमे कह्यो, तिम जाणवो ॥ २० ॥

परमुवसमि वट्टंता, आउ न बंधंति तेण अजयगुणे।
देवमणुआउहीणो, देसाइसु पुणसुराउविणा ॥२१॥

अर्थ—हवे उपशमसमकीतमे जे फेर छे ते कहे छे—जे जीव उपशम-समकितमे वरते छे, ते जीव आउखो कोइ न बांधे तिणे ओघे पचहुत्तर ७५ नो जाणवो जे अविरत गुणठाणे सत्तहत्तर ७७ हवी, पिण देवतानो मनुष्यनो आउखो ए दोय प्रकृति टाळी; तिवारें पंचहत्तर ७५ रही अने देसविरति गुणठाणे देवतानो आउखो काढ्यो, तिवारे छासठि रही. प्रमत्ते बासठि, अप्रमत्ते अठावन्न एव सर्वत्र जाणवो. ॥ २१ ॥

ओहे अट्ठारसयं, आहारदुगूणमाइलेसतिगे।
तं तित्थोणं मिच्छे, सासणाइसु सवहिं ओहो ॥२२॥

अर्थ—ओघे-सामान्ये ११८ एकसो अढार प्रकृति छे. आहारक दोय काढीजे; तिवारे ११८ एकसो अढारेनो बंध छे. तीन लेश्या कृष्ण, नील, कापोतमे तीनमे तीर्थंकर नाम काढीजे; तिवारे मिथ्यात्वमे एकसोसत्तर ११७ नो बंध छे, सास्वादन प्रमुखमे बीजे कर्मग्रंथमे कह्यो तिम जाणवो. ॥ २२ ॥

तेऊ निरयनवूणा, उज्जोअचउनिरयबारविणुसुक्का।
विणु निरयबारपम्हा, अजिणाहारा इमा मिच्छे ॥२३॥

अर्थ—तेजोलेश्यामे नरक ३, सूक्ष्म ३, विकलेंद्री ३, ए ९ नव काढीजे; तिवारे एकसो १११-इग्यारनो बंध छे. उद्योत १, तिर्यंच ३, ए च्यार ४. नरक ३, सूक्ष्म ३, विगल ३, एकेंद्री १, थावर १, आताप १, ए १२ मळीने १६ काढीजे; तिवारे शुक्ललेश्यामे १०४ एकसो च्यारनो बंध छे. अने नरकादिक १२ काढीजे; तिवारे पद्मलेश्यामे एकसो आठ १०८ नो बंध छे, ए तीने लेश्यामे जिननाम १, आहारक २, ए तीन काढीजे. मिथ्यात्वमे १०८, तेजोमे १११ एकसो इग्यार, शुक्लमे १०४, पद्ममे १०८ जाणवो. ॥ २३ ॥

सव्वगुणभव्वसन्निसु, ओहुअभव्वाअसन्नि मिच्छसमा।
सासणि असन्नि सन्निव, कम्मणभंगो अणाहारे ॥२४॥

अर्थ—भव्यमार्गणामे, संज्ञीमार्गणामे सर्व गुणठाणा छे. बीजा कर्म्मग्रंथनी पेरे बंधप्रकृति जाणवी. अभव्यमार्गणामे एक गुण-

ठाणो प्रकृति ११७ बंध छे. असज्ञीमार्गणामें मिथ्यात्वमें ११७ नो बंध छे सास्वादन गुणठाणे १०१ नो बंध छे. जिम सज्ञीनो कह्यो तिम जाणवो अनाहारकमार्गणामे कार्मणशरीरनी परे जाणवो ११२ सामान्ये, ११७ मिथ्यात्वे, ९४ सास्वादने, ७५ समकितमे तेरमे एकसाता १, अयोगिमे अबंध छे ॥२४॥

तिसु दुसु सुक्काइगुणा, चउसगतेरत्ति बंधसामित्तं ।
देविंदसूरिरइयं लिहियं, नेयं कम्मत्थयं सोउं ॥२५॥

अर्थ—कृष्ण १, नील २, कापोत ३, ए तीन लेश्यामे पहेला ४ च्यार गुणठाणा छे, तेजोलेश्या, पद्मलेश्यामे पहेला सात ७ गुणठाणा छे शुक्ललेश्यामे एक तेरमु १३ मुं गुणठाणु छे अयोगीगुणठाणे नहीं ए बंधस्वामित्व बीजो कर्मग्रंथ पूरो थयो. देवेन्द्रसूरि आचार्ये लिख्यो छे. कर्मस्तव बीजो कर्मग्रंथ भणीने पछी त्रीजो भणवो. ॥ २५ ॥

इति तृतीयकर्मग्रन्थ टबार्थसमेत समाप्त ॥३॥

ॐ नमः सिद्धम्. ।

अथ चतुर्थः कर्म्मग्रंथः

॥ आर्य्यावृत्तम् ॥

नमिअ जिणं जियमग्गण-गुणठाणुवओगजोगलेसाओ।
बंधप्पवहुभावे, संखिज्जाइ किमवि वुच्छं ॥ १ ॥

अर्थ—नमस्कार करी जिन वीतराग देव प्रत्ये ते स्या भणी जे अबोधजीवने बुझव्या. जीवना १४ भेद छे, मार्गणाना ६२ बासठ भेद छे, गुणठाणां १४ चौद, उपयोग १२, योग १५ पंन्नर, लेश्या ते छ ६ छे, बंधादिक च्यार ४, बंधहेतु ५७, अल्पवहुत्व, भाव मूळ पांच, उत्तरभेदें ५३, संख्यातो, असंख्यातो, अनंतो ए बोल विस्तारीने कहेस्युं ते कहुं छुं. ॥१॥

नमिअ जिणं वत्तव्वा, चउदसजिअठाणएसु गुणठाणा ।
जोगुवओगो लेसा, बंधोदओदीरणासत्ता ॥

पाठान्तरम् ।

चउदसजिअठाणेसु, चउदसगुणठाणाणि जोगा य।
उवओगलेसबंधो–दओदीरणसंतअट्ठपए ॥ २ ॥

तह मूलचउदमग्गण–ठाणेसु बासट्ठिउत्तरेसु च ।
जिअगुणजोगुवओगा, लेसप्पवहुं च छट्ठाणा ॥

पाठान्तरम् ।

चउदसमग्गणठाणे–सु मूलपएसु बिसट्ठि इयरेसु ।
जिअगुणजोगुवओगा, लेसप्पवहुत्त छट्ठाणा ॥ २ ॥

चउदसगुणेसु जिअजो-गुवओगलेसा य वंधहेऊ य।
वंधाइअचउअप्पा वहुं, च तो भावसंखाई ॥

पाठान्तरम् ।

चउदसगुणठाणेसु, जिअजोगुवओगलेस्सवंधा य।
वंधुदयुदीरणाओ,संतप्प वहुत्तदसठाणा दारगाहाओ ४

हवे पेहेला जीवना चौद भेद कहे छे

इह सुहुमवायरेगिंदि, वितिचउ असन्नीपंचिंदी।
अपज्जत्ता पज्जत्ता, कमेण चउदस जियठाणा ॥ ५ ॥

अर्थ—सूक्ष्म एकेन्द्रिय ए एक भेद १, बादर एकेंद्रिय ए बीजो भेद २, बेंद्री ३, तेंद्री ४, चौरेंद्री ५, असञ्ज्ञी पचेन्द्री ६, संज्ञी पचेन्द्री ए सात ७ पर्याप्ता, अने ए ७ सात अपर्याप्ता ए अनुक्रमे ससारी जीवना १४ चौद स्थानक जाणवां. ॥ ५ ॥

हवे चौदे जीवस्थानके गुणठाणा कहे छे.

वायरअसन्निविगले, अप्पजिपढमविअसन्निअपज्जत्ते।
अजयजुअसन्निपज्जे, सव्वगुणा मिच्छसेसेसु ॥ ६ ॥

अर्थ—बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तो १, असञ्ज्ञी पचेन्द्री अपर्याप्तो २, बेंद्री अपर्याप्तो ३, तेंद्री चौरेंद्री ५, अपर्याप्तो ए पाच जीवस्थानक भेदे पेहेलो मिथ्यात्व १, बीजो सास्वादन २, ए बे गुणठाणा छे अने सञ्ज्ञी पचेन्द्री अपर्याप्तो इण एक जीवस्थानकमें तीन गुणठाणा छे प्रथम मिथ्यात्व १, सास्वादन २, अने अविरति समकित ३ ए त्रण छे. संज्ञी पचेन्द्री पर्याप्तामें इणे एक जीवभेदमांहे सर्व १४ गुणठाणा

छे. शेष बाकी सूक्ष्म अपर्यासो १, सूक्ष्म पर्यासो १, बादर एकेन्द्री पर्यासो, बेन्द्री पर्यासो, तेन्द्री पर्यासो, चौरेन्द्री पर्यासो, असंज्ञी पंचेन्द्री पर्यासो, ए जीवस्थानक एक मिथ्यात्व गुणठाणो छे. ॥ ६ ॥

अपज्जत्तछक्कीकमुरल, मीसा जोगा अपज्जसन्नीसु।
ते सविउव्वि मीसएसु, तणु पज्जेसु उरलमन्ने ॥७॥

अर्थ—हवे १४ जीवस्थानके १५ योग कहे छे—सूक्ष्म अपर्यासो १, बादर अपर्यासो १, बेन्द्री अपर्यासो १, तेइंद्री अपर्यासो १, चौरेन्द्री अपर्यासो १, असंज्ञी पंचेन्द्री अपर्यासो ए छ ६. जीवस्थानकमें कार्मण १, अने औदारिक मिश्र १. ए बे योग छे. अने संज्ञी पंचेन्द्री अपर्यासामें कार्मण १, औदारिकमिश्र २, अने वैक्रियमिश्र ए त्रण ३ योग छे. अने शरीरपर्याप्ति कीधां पछी औदारिक काययोग भेळे ए ४ च्यार योग छे. ॥ ७ ॥

सव्वे सन्निपज्जत्ते, उरलं सुहुमे सभासु तं चउसु।
बायरि सविउव्विदुगं, पज्जसन्निसु बार उवओगा ॥८॥

अर्थ—संज्ञी पंचेन्द्री पर्यासामें सर्व १५ योग छे. सूक्ष्म पर्यासामें एक औदारिक योग छे. बेन्द्री पर्यासो, तेन्द्री पर्यासो, चौरेन्द्री पर्यासो, असंज्ञी पंचेन्द्री पर्यासो, ए च्यार जीवस्थानकमें दोय २, योग छे. औदारिक काययोग १, असत्या अमृषा वचनयोग २, बादर पर्यासामें तीन योग छे. औदारिक १, वैक्रिय २, वैक्रियमिश्र ३, ए तीन योग छे. बादर वायुकायआश्रीने वैक्रिय छे.

हवे जीवस्थानके उपयोग कहे छे संज्ञीपंचेन्द्रीपर्याप्तामें बारे उपयोग छे १२. पाच ज्ञान, त्रिण अज्ञान, च्यार ४ दर्शन, ए बार उपयोग कह्या. ॥ ८ ॥

पज्जचउरिंदिअसन्निसु, दुदंसदुअनाणदससु चक्खु विणा ।
सन्नि अपज्जे मणनाण–चक्खुकेवलदुगविहूणा ॥९॥

अर्थ—चौरेन्द्री पर्याप्तामें, असज्ञी पंचेन्द्री पर्याप्तामें दोय दर्शन, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन २ दोय २ अज्ञान–मति-अज्ञान १, श्रुत अज्ञान २. ए ४ च्यार उपयोग छे. सूक्ष्म पर्याप्तो १, सूक्ष्म अपर्याप्तो २, बादर पर्याप्तो ३, बादर अपर्याप्तो ४, बेन्द्री अपर्याप्तो ५, बेन्द्री पर्याप्तो ६, तेन्द्री अपर्याप्तो ७, तेन्द्री पर्याप्तो ८, चौरेन्द्री अपर्याप्तो ९, सज्ञी अपर्याप्तो १० ए दस जीवस्थानकभेदमें चक्षुदर्शनविना ३ त्रण ते मतिअज्ञान १, श्रुतअज्ञान २, अचक्षुदर्शन ए तीन उपयोग छे सज्ञी पचेन्द्री अपर्याप्ताने–मन पर्यवज्ञान १, चक्षुदर्शन १, केवलज्ञान ३, केवलदर्शन ४, ए च्यार ४ उपयोग नहीं, बाकी त्रण ज्ञान ३, त्रण अज्ञान ३, दोय दर्शन २ ए आठ उपयोग छे ॥९॥

सन्निदुगिछलेसअप–ज्जबायरे पढमचउतिसेसेसु ।
सत्तट्ठपधुवीरण–संतुदया अट्ठ तेरसनु ॥ १० ॥

अर्थ—हवे जीवस्थानके लेश्या कहे छे–सज्ञी पंचेन्द्री अपर्याप्तो ए दोयमे ६, छ लेश्या छे, अपर्याप्त बादर एकेन्द्रीने पहेली च्यार ४ लेश्या छे–कृष्ण १, नील २, कापोत ३, तेजो ४, ए च्यार छे. शेष ११, जीवस्थानके तीन लेश्या छे–

कृष्ण १, नील २, कापोत ३, एवं त्रण ३. हवे संज्ञीसूक्ष्म एकेन्द्रीथी मांडी संज्ञीपंचेन्द्री अपर्याप्तते पर्यंत १३, जीवभेद तांई सातकर्म आउखो न बांधे; तिवारे आठकर्म सहित दोय बंध छे. इम उदीरणा पण सातनी अथवा ८ आठनी ज छे. संज्ञीपर्याप्तामे मूळकर्म आठ बांधे. ॥ १० ॥

सत्तट्ठछेगबंधा, संतुदया सत्त अट्ठ चत्तारि ।
सत्तट्ठछपंचदुगं, उदीरणा सन्निपज्जत्ते ॥ ११ ॥

अर्थ—आउखा विना सात बांधे. मोहनी आयु विना छ ६ कर्म बांधे. दशमे गुणठाणे ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, नाम, मोहनीय, अंतरायनो बंध विच्छेद करे माटे ते विना ११ मे १२ बारमे गुणठाणे एक वेदनी कर्म बांधे. संज्ञीपंचेन्द्री पर्याप्तामे उदय अने सत्ता आठनी, मोहनी कर्म विना सातनी, ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय विना च्यार ४ नी जाणवी. संज्ञीपंचेन्द्रीपर्याप्तामे उदीरणामे आठनी, आउखा विना सातनी, आउखा वेदनी विना छनी, तिणमे मोहनी विना पांचनी, तिणमे ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय काढीजे; तिवारे दोयनी उदीरणा छे. ॥ ११ ॥

गइइंदिए अ काए जोए, वेए कसायनाणेसु ।
संजमदंसणलेसा, भवसम्मे सन्निआहारे ॥ १२ ॥

अर्थ—हवे १४ मार्गणा मूळ अने उत्तर मार्गणा ६२, तेनां नाम कहे छे—गति ४, इंद्रिय ५, काय ६, योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ८, इहां अज्ञानमे लीधा ते मार्गणा एकने वास्ते संयम ७, दर्शन ४, लेश्या ६, भव्य २, समकीत ६, सन्नि २, आहारक २. ए मार्गणानां नाम कह्यां. ॥१२॥

सुरनरतिरिनिरयगई,इगबिअतिअचउपणिंदि छक्काया।
भूजलजलणाऽनिलवण, तसा य मणवयतणुजोगा १३

अर्थ—हवे गति ४ ना नाम कहे छे—देवगति १, मनुष्यगति २, तिर्यंचगति ३, नरकगति ४ हवे पाच इन्द्री कहे छे—एकेन्द्री १, बेन्द्री २ तेद्री ३, चौरेन्द्री ४, पचेन्द्री ५ हवे छकाय कहे छे—पृथ्वीकाय १, अप्काय २, तेउकाय ३, वाउकाय ४, वनस्पतिकाय ५, त्रसकाय ६ तीन योगना नाम कहे छे—मनोयोग १, वचनयोग २, काययोग ३. ॥ १३ ॥

वेअनरित्थिनपुंसा, कसायकोहमयमायलोभत्ति ।
मइसुअओहिमणकेवल—विभंगमयसुअ अनाणसागारा ॥१४॥

अर्थ—हवे वेद त्रण नाम कहे छे—पुरुषवेद १, स्त्रीवेद २, नपुसकवेद ३ हवे कषाय ४ च्यारना नाम कहे छे—क्रोध १, मान २, माया ३, लोभ ४ हवे ज्ञान पाच; अज्ञान त्रण नाम कहे छे मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान २, अवधिज्ञान ३, मन पर्यवज्ञान ४, केवलज्ञान ५ मतिअज्ञान १, श्रुतअज्ञान २, विभगज्ञान ३ ए आठ साकारोपयोग—विशेष उपयोग कहीजे. १४

सामाइयछेयपरिहार—सुहुमअहक्खायदेसजयअजया ।
चक्खू अचक्खू ओही, केवलदंसण अणागारा ॥१५॥

अर्थ—हवे सात सयममार्गणा नाम कहे छे—सामायक १, छेदोपस्थापना २, परिहारविशुद्धि ३, सूक्ष्मसपराय ४, यथाख्या-

तचारित्र ५, देशविरति ६, अविराति ७. हवे ४ दर्शन नाम कहे छे—चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन २, अवधिदर्शन ३, केवल दर्शन ४. ए च्यारे दर्शन अनाकार उपयोग—सामान्य उपयोग छे. ॥ १५ ॥

किण्हानीलाकाऊ—तेऊपम्हा य सुक्क भव्विअरा।
वेअगखइगुवसममिच्छमीससासाण सन्निअरे ॥१६॥

अर्थ—हवे छ लेश्यानां नाम कहे छे—कृष्ण लेश्या १, नील-लेश्या २, कापोतलेश्या ३, तेजोलेश्या ४, पद्मलेश्या ५, शुक्ल-लेश्या ६. हवे भव्ये नाम कहे छे—भव्य १, अभव्य २. समकीते कहे छे—क्षयोपशम समकीत १, क्षायक समकीत २, उपशम ३, मिथ्यात्व ४, मिश्र ५, सास्वादन ६. संज्ञी १, असंज्ञी २. १६

आहारेअरभेआ, सुरनिरयविभंगमइसुओहिदुगे।
समत्ततिगे पम्हा, सुक्कासन्निसु सन्निदुगं ॥ १७ ॥

अर्थ—आहारक १, अणाहारक २. ए बासठ मार्गणानां नाम कह्यां. हवे बासठ मार्गणाए १४ भेद कहे छे—देवगति १, नरकगति २, विभंग अज्ञान ३, मतिज्ञान ४, श्रुतज्ञान ५, अव-धिज्ञान ६, अवधिदर्शन ७, उपशम ८, क्षायक ९, क्षयो-पशम १०, पद्मलेश्या ११, शुक्ललेश्या १२, संज्ञी १३, ए तेर १३ मार्गणामें संज्ञीपंचेन्द्री पर्यासो अने संज्ञीपंचेन्द्री अप-र्यासो ए बे जीवस्थानके लाभे बीजा नहीं. ॥१७॥

तमसन्नि अपज्जजुअं, नरे सबायरअपज्जतेऊए।
थावरइगिंदि पढमा, चउबार असन्नि दुदु विगले॥१८॥

अर्थ-अने मनुष्यगति मार्गणामें दोय तेहज अने असंज्ञी पचेद्री अपर्याप्तो भेळीजे तिवारे सज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो १, अपर्याप्तो १, असज्ञीपचेन्द्री अपर्याप्तो १, ए तीन जीवमें भेद लाभे छे. मनुष्य असज्ञी पर्याप्तो न थाय, १४, स्थानके उपजे परं अपर्याप्तोज मरे तिणेतीन जीवभेद कह्या छे तेजो लेस्यामे सज्ञीपचेन्द्री पर्याप्तो १, अपर्याप्तो १, ए दोय अने बादर एकेन्द्री अपर्याप्तो १, ए त्रण ३, जीवस्थानक छे, कारणके देवता मरीने एकेन्द्रीमे आवे तेने अपर्याप्तपणे तेजोलेश्या होय

थावर पाच पृथ्वी, अप्, तेउ, वाउ, वनस्पतिमे अने एकेन्द्रीमे सूक्ष्म अपर्याप्तो १, पर्याप्तो १, बादर एकेन्द्री पर्याप्तो १, अपर्याप्तो १ ए च्यार ४ जीवनस्थान लाभे असज्ञी मार्गणाए पहेला १२ बारे जीवस्थान लाभे बेन्द्री मार्गणा २, पर्याप्तो अपर्याप्ता तेन्द्रीमे तेज दोय, चौरेन्द्रीमे तेना तेज दोय जीवस्थान छे ॥१८॥

दसचरिमतसे अजया-हारगतिरिंतणुकसायदुअनाणे।
पढमतिलेसाभविअर-अचक्खु नपुमिच्छसव्वेवि ॥१९॥

अर्थ-बेंद्री १, तेंद्री १, चौरेन्द्री १, असज्ञी १, संज्ञी १, ए पाचं अपर्याप्ता ए दस जीवस्थानक त्रसकायमे लाभे. अविरति आदि मार्गणामें १४, जीवस्थानक कहे छे-अविरति मार्गणामें १, आहारक मार्गणामें २, तिर्यंचगति ३, काययोग ४, कषाय ४ च्यारनी च्यारे मार्गणाए ८, मतिअज्ञान ९, श्रुतअज्ञान १०, प्रथम त्रण लेश्या कृष्ण, नील, कापोत १३, भव्य १४, अभव्य १५, अचक्षुदर्शन मार्गणा ए १६, नपु-

सक मार्गणा ए १७, मिथ्यात्वमार्गणा १८ अढार मार्गणामे सर्व १४ जीवस्थानक छे. ॥ १९ ॥

पज्जसन्नी केवलदुगं, संजममणनाणदेसमणमीसे।
पणचरमपज्जवयणे, तिय छ व पज्जियर चक्खुम्मि २०॥

अर्थ—वळी केवलज्ञान १, केवलदर्शन १, सामायिक १, छेदोपस्थापनीय १, परिहारविशुद्धि १, सूक्ष्मसंपराय १, यथाख्यात १, मनःपर्यवज्ञान १, देशविरति १, मनोयोग १, मिश्रदृष्टि १. ए अगीयार ११ मार्गणामे पर्याप्तो संज्ञी जीवस्थानक ए एकज होय. वचनयोगे छेल्ला पांच पर्याप्ता जीवस्थान लाभे. बेंद्री १, तेंद्री २, चौरेन्द्री ३, संज्ञी ४, असंज्ञी पंचेन्द्री ५. ए पांचने भाषा छे, भाषापर्याप्ति कीधां पछी. चक्षुदर्शनमे त्रण अथवा छ जीवस्थान छे. चौरेन्द्री १, असंज्ञी पंचेन्द्री १, संज्ञी पंचेन्द्री १. ए तीन पर्याप्ता छे; अथवा एज ३ त्रण अपर्याप्ता अने पर्याप्ता ६ पिण जीवस्थान लाभे ते पछी चक्षुदर्शनमे १. ॥ २० ॥

थीनरपणिंदि चरमा, चउ अणाहारे दु सन्नि छ अपज्जा।
ति सुहुमअपज्जविणा, सासणि इत्तो गुणे वुच्छं॥२१॥

अर्थ—स्त्री वेदमे १, पुरुष वेदमे १, पंचेन्द्रीमे १, छेहेला ४ च्यार जीवस्थानक छे. असंज्ञी पंचेन्द्री पर्याप्ता १, अपर्याप्ता १, संज्ञी पंचेन्द्री पर्याप्ता १, अपर्याप्ता १. ए ४ च्यार जीवस्थानक छे. स्त्रीवेद १, पुरुषवेदमे १. संज्ञी पंचेन्द्रीमे न थाय. असंज्ञीमे नपुंसकवेद छे. पर इहां मान्या छे ते आचार्य जाणे.

अनाहारकमार्गणामे संज्ञी अपर्याप्तो १, पर्याप्तो १, सूक्ष्म अपर्याप्तो १, वेन्द्री अपर्याप्तो १, तेन्द्री अपर्याप्तो १, चौरेन्द्री अपर्याप्तो १, असञ्ज्ञी अपर्याप्तो १, बादर अपर्याप्तो १, ए आठ ८ जीवस्थानक छे. ए आठमेंथी सूक्ष्म अपर्याप्तो काढीजे, तिवारे सास्वादने ७ सात जीवस्थानक छे. बादर अपर्याप्तो १, वेन्द्री अपर्याप्तो १, तेन्द्री अपर्याप्तो १ चौरेन्द्री अपर्याप्तो १, असञ्ज्ञी अपर्याप्तो १, सञ्ज्ञी अपर्याप्तो १, संज्ञी पर्याप्तो १. ए सात छे. एटले ६२ मार्गणाए जीव भेद कह्या. ॥ २१ ॥

हवे वासठ मार्गणाए गुणठाणा कहे छे.

पणतिरिचउसुरनरए, नरसन्निपणिंदिभवतसिसवे। इगविगलभूदगवणे, दु दु एगं गइतस अभवे ॥२२॥

अर्थ—तिर्यंचमें पेहेला पांच गुणठाणा छे. सर्व देवता सर्व नारकीमा च्यार गुणठाणा छे. मनुष्यगतिमें १, सञ्ज्ञी मार्गणामें १, पंचेंद्रीमे १, भव्यमार्गणामे १, त्रसकायमे ए पाच मार्गणामे सर्व गुणठाणा छे १४ गुणठाणा छे. एकेन्द्रिय मार्गणामे, वेंद्रियमे, तेंद्रियमे, चौरेन्द्रियमे १, पृथ्वीकायमे १, अप्कायमे १, वनस्पतिकायमे १. ए सात ७ मार्गणामे मिथ्यात्व १, सास्वादन २. ए वे गुणठाणा छे. गतिनस ते तेउकाय १, वाउकायमें १, अभव्यमे १. ए त्रणमे एक १ मिथ्यात्व गुणठाणो छे. ॥ २२ ॥

वेअतिकसाय नवदस, लोभे चउ अजइदुति अन्नाणतिगे बारस अचक्खुचक्खुसु, पढमा अहक्खाइ चरमचउ २३

४, सत्यवचनयोग ५, असत्यवचनयोग ६, मिश्रवचनयोग ७, असत्याअमृषावचनयोग ८, वैक्रियकाययोग ९, आहारककाययोग १०, औदारिककाययोग ११, वैक्रियमिश्रकाययोग १२, आहारकमिश्रकाययोग १३, औदारिकमिश्रकाययोग १४, कार्मणकाययोग १५. ए पन्नर योगनां नाम कह्यां. अनाहारक मार्गणामें एक १ कार्मण काययोग छे. ॥ २७ ॥

नरगइपणिंदितसतणु–अचक्खुनरनपुंकसायसम्मदुगे।
सन्नि छलेसाहारग–भवमइसुओहिदुगे सव्वे ॥ २८॥

अर्थ—मनुष्यगति १, पंचेन्द्री १, त्रसकाय १, काययोग १, अचक्षुदर्शन १, पुरुषवेद १, नपुंसकवेद १, कषाय ४, क्षायिक समकीत १, क्षयोपशम समकीत १, सन्निमार्गणामे १, छ लेश्या मार्गणाए ६, आहारक १, भव्य १, मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान १, अवधिज्ञान १, अवधिदर्शन १. एटली मार्गणामे सर्व १५ पन्नर योग छे. ॥ २८ ॥

तिरित्थि अजय सासण-अनाणउवसमअभवमिच्छेसु।
तेराहारकदुगूणा, ते उरलदुगूण सुरनरए ॥ २९ ॥

अर्थ—तिर्यंचगति १, स्त्रीवेद १, अविरति १, सास्वादन १, अज्ञान तीन ३ मे, उपशम समकितमे १, अभव्य मार्गणामे १, मिथ्यात्वमे १, एतली मार्गणामे १३ तेर योग छे. आहारक दोय आहारक शरीर १, आहारक उपांग २. ए बे काढीजे; तिवारे १३ तेर रहे, तेमांथी वळी औदारिकद्विक– औदारिक शरीर १, औदारिक उपांग २. ए दोय काढीजे; तिवारें देवगति १, नरकगति १. ११ अगियार योग छे. ॥ २९ ॥

कम्मुरलदुगं थावर, ते सविउवि दुगपंच इगपवणे।
छ असन्नि चरमवयजुय, तं विउवि दुगूणचउविगले ३०।

अर्थ—पृथ्वीकाय १, अप्काय १, तेउकाय १, वनस्पतिकाय १, ए ४ थावर मार्गणामे कार्मण १, औदारिक २, औदारिकमिश्र ३: ए तीन योग छे एकेन्द्री मार्गणामे, वायुकाय मार्गणामे पाच योग छे ते कार्मण १, औदारिक २, औदारिक मिश्र ३, वैक्रिय ४, वैक्रियमिश्र ५ ए पाच योग छे असन्नी मार्गणामे चरम वचनयोग असत्याअमृषा मेळीजे, तिवारे पाच योग तेहिज एवं ६ छ योग छे वळी ए छ माहेथी वैक्रियद्विक काढीजे, तिवारे (विकलेन्द्री) बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्रीने ४ च्यार योग छे औदारिक १, औदारिकमिश्र २, कार्मण ३, असत्याअमृषा ए च्यार योग छे. ॥ ३० ॥

कम्मुरलमीसविणु मण-वयसमइअछेअचक्खु मणनाणे
उरलदुग कम्मपढमंतिममणवयकेवलदुगंमि ॥ ३१ ॥

अर्थ—कार्मण १, औदारिकमिश्र ए दोय विना बाकी १३ तेर योग छे च्यार मनना, च्यार वचनना, दोय वैक्रिय, एक औदारिक, दोय आहारक ए तेर योग छे मनोयोग १, वचनयोग १, सामायिक १, छेदोपस्थापनीय १, चक्षुदर्शन १, मन पर्यवज्ञान १. ए छ ६ मार्गणाए तेर योग १३ छे. उरलदुग—औदारिक १, औदारिकमिश्र २, कार्मण ए ३, तथा पेहेलो अने छेलो मन अने वचनयोग ते सत्य मनोयोग १, असत्य मनोयोग १, सत्य वचनयोग १, असत्य वचनयोग १. ए सात योग ते केवळज्ञान १ अने केवळदर्शन १ ए बे मार्गणाए सात योग छे. ॥ ३१ ॥

मणवय उरला परिहारि, सुहुमि नव तेउ मीसि सविउवा ।
देसे सविउविदुगा, सकम्मुरलमीसअहक्खाए ॥३२॥

अर्थ—मनोयोगना च्यार भेद छे. वचनयोगना ४ च्यार भेद अने औदारिक काययोग एवं नव ९ योग परिहारविशुद्ध संयममे छे. सूक्ष्मसंपराय संयममें ते नवयोग छे. अने मिश्र-दृष्टिमे नव तेहिज. मनना ४, वचनना ४, औदारिक १ अने वैक्रिय काययोग भेळीजे; एटले ए दश १० योग छे. देश-विरतिमें नव योग तेहिज अने वैक्रिय दोय २ भेळीजे; एटले ११ योग छे. यथाख्यात चारित्रमे नव तेहीज अने कार्मण १, औदारिकमिश्र २. ए बे भेळीजे; तिवारे ११ योग यथा-ख्यातमे छे. ए ६२ बासठ मार्गणाए योग कह्या. ॥ ३२ ॥

तिअनाण नाणपण चउ—दंसण बार जिअलक्खणुव-ओगा।
विणु मण नाण दुकेवल-नव सुरतिरिनिरयअजएसु ३३

अर्थ—हवे बार उपयोग कहे छे—तीन अज्ञान ३ ते मति-अज्ञान १, श्रुतअज्ञान २, विभंगज्ञान ३. पांचज्ञान ते मति १, श्रुत २, अवधि ३, मनःपर्यव ४, केवळ ५. च्यार ४ दर्शन ते—चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३, केवल ४. ए बार जीवलक्षण उपयोग छे—मनःपर्यवज्ञान १, केवळज्ञान १, केवलदर्शन १, ए त्रण ३ विना बाकी ३ ज्ञान, ३ दर्शन, ३ अज्ञान ए नव उपयोग ९. देवगति १, तिर्यंचगति १, नरकगति १, अविरति १. ए च्यार मार्गणामे नव ९ उपयोग छे. ॥३३॥

तस जोय वेय सुक्का-हार नरपणिंदिसन्नि भवि सव्वे ।
नयणेयर पण लेसा, कसाय दस केवलदुगूणा ॥३४॥

अर्थ—त्रसकायमे १, तीनयोग–मन १, वचन १, काय-योगमे तीनवेद–पुरुष १, स्त्रीवेद २, नपुसकवेद ३, शुक्ललेस्या १, आहारक २, मनुष्यगति १, पचेन्द्री १, सज्ञी १, भव्यमे १, ए तेर १३, मार्गणामे सर्व १२, बारे उपयोग छे–चक्षुदर्शनमे, पांच लेस्यामे–कृष्ण १, नील २, कापोत ३, तेज ४, पद्म ५, मे च्यार ४ कषायमें दश १०, उपयोग छे–केवलज्ञान १, केवलदर्शन २, ए दोय उणा कीजे. ॥३४॥

चउरिंदि असन्निदुअन्नाण, दंस इग बितिथावरि अचक्खू।
ति अनाण दंसण दुगं, अनाणतिग अभविमिच्छदुगे ३५

अर्थ—चौरेन्द्रीमें १, असज्ञीमे १, मतिअज्ञान १, श्रुतअज्ञान १, चक्षुदर्शन १, अचक्षुदर्शन १, ए च्यार ४ उपयोग छे–एकेन्द्रीमें १, बेन्द्रीमें १, तेंद्रीमे १, पाच थावरमें ५, ए आठ मार्गणामे दोय २, अज्ञान १, अचक्षुदर्शन ए तीन ३ उपयोग छे अने त्रण अज्ञान ३ मे अभव्यमें १, मिच्छदुगे मिथ्यात्वमे १, सास्वादनमे १, ए छ ६ मार्गणामे पाच उपयोग छे–३, अज्ञान अने बे दर्शन ए पाच मति अज्ञान १, श्रुतअज्ञान २, विभगज्ञान ३, चक्षुदर्शन ४, अचक्षुदर्शन ५, ए पांच छे ॥३५॥

केवल दुगें निअदुगं, नव ति अनाण विणु खइय अहक्खाए।
दंसण नाणतिगं देसे, मीसिअन्नाण मीसं तं ॥ ३६ ॥

अर्थ—केवळदुगे-केवलज्ञान केवलदर्शनमे आपणा एहिज केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोग छे. हवे तीन अज्ञान विना बाकी नव उपयोग-पांच ज्ञान च्यारदर्शन ए ९ क्षायिक समकीतमें तथा यथाख्यातचारित्र २, ए बे मार्गणामे छे. दर्शन ३, चक्षु १, अचक्षु १, अवधि १, तीनज्ञान मति १, श्रुत २, अवधि ३, ए छ ६ उपयोग देसविरतिमें अने एहिज छ उपयोग अज्ञान मिश्रित कीजे, ज्ञान काढीजे एटले दर्शन तीन ३ अज्ञान तीन ३, ए छ ६ उपयोग मिश्रमें छे. ॥ ३६ ॥

मणनाण चक्खु वज्जा, अणहारे तिन्नि दंसचउ नाणा।
चउनाण संजमोवसम, वेअगे ओहि दंसेय ॥ ३७ ॥

अर्थ—मनःपर्यवज्ञान १, चक्षुदर्शन १, ए दोय काढीजे बाकी अनाहारकमें दश उपयोग १० छे. तीन दर्शन—चक्षु १, अचक्षु २, अवधि ३, च्यार ४, ज्ञान मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान २, अवधिज्ञान ३, मनःपर्यवज्ञान ४, ए सात उपयोग ते च्यार ज्ञानमें ४, च्यार ४, संयममें ४, उपशम समकीतमें १, क्षयोपशम समकीतमे १, अवधिदर्शनमे १, ए इग्यारे ११, मार्गणामे पूर्वोक्त ७, सात उपयोग छे. हिवे मतान्तर कहे छे—मनोयोग जीवभेद पेहेली १ कह्यो छे. इहां सत्ताभावी गुण विचारतां जीवभेद बे २ छे. सन्नी पर्याप्तो अपर्याप्तो गुणठाणा तेर छे. ॥ ३७ ॥

दो तेरतेर बारस मणे, कमा अट्ठ दु चउ चउ वयणे।
चउ दु पण तिन्निकाए, जिय गुणजोगोवओगन्ने ॥ ३८ ॥

अर्थ—योग तेर छे. उपयोग १२ छे. मनोयोगमे अने

वचनयोग पूर्वे कह्यो ते मनोयोग सहीत पण ग्रह्यो छे. इहां मनोयोग विना ग्रहे छे तिणें जीवभेद ८, वेन्द्री २, तेन्द्रीना २, चोरेन्द्री २, असन्नी २, ए आठ ८, छे जे सन्नीमे वचन छे परं इहां न गण्या जे मुख्यता वचनयोगनी छे गुणठाणा वे छे सिथ्यात्व १, सास्वादन २, योग ४ च्यार छे चौरेन्द्रीने कह्या ते ते पण उपयोग ४, च्यार छे ते इहां वचनयोग मनोयोग विना ग्रह्यो छे. काययोग पूर्वे वचनसहीत मनसहीत लींधा छे. इहा एकलो काययोग लींधो ते तो एकेन्द्रीने हवे तिणे जीवभेद ४, च्यार एकेन्द्रीना योग पाच उदारिक वे, वैक्रीय वे, कार्मण १, गुणठाणा वे, मिथ्यात्व १, सास्वादन उपयोग तीन, वे अज्ञान, १ अचक्षुदर्शन एवं ३ छे, श्रुतातर २ छे, अन्य आचार्य इम कहे छे. ॥ ३८ ॥

छसु लेसासु सठाणं, एगिंदि असन्नि भूदग वणेसु।
पढमा चउरो तिन्नि य, नारय विगलग्गिपवणेसु॥३९॥

अर्थ—हवे वासठ मार्गणाए लेस्या कहे छे—तिहां छ लेस्या ६ मे आपआपणी लेस्या छे. कृष्णमे कृष्ण १, नीलमे नील २, कापोतमेकापोत ३, तेजमेतेज ४, पद्मगनेपद्म ५, शुक्लमेशुक्ल ६ छे

एकेन्द्रीमे १, असन्नीमे १, पृथ्वीकाय १, अपकाय १, वनस्पतिकाय १, ए पाच मार्गणामे पेहेली च्यार ४, ते कृष्ण १, नील २, कापोत ३, तेज ४ ए च्यार लेस्या छे. नरगगतिमे १, वेन्द्रीमे १, तेन्द्रीमे १, चौरेन्द्रीमे १, अग्निकायमे, वायुकायमे ए छ ६ मार्गणामे पेहेली तीन लेस्या छे, कृष्ण १, नील २, कापोत ३. ॥ ३९ ॥

अहखायसुहुमि, केवल दुगि सुक्का छाविसेसठाणेसु।
नर निरयदेव तिरिआ, थोवा दु असंखणंतगुणा ॥४०॥

अर्थ—यथाख्यात चारित्रमें १, सूक्ष्मसंपरायचारित्रमें १, केवलज्ञानमे १, केवलदर्शन १, में एक १, शुक्कलेश्या छे बाकीनी मार्गणा ४१ एकतालीसमें छ ए लेश्या छे ते ४१ मार्गणा ते ३, गति १, त्रस १, तेइंद्री योग ३, वेद ३, कषाय ४, ज्ञान ७, संजम पांच दर्शन ३, भव्य बे समकीत ६, सन्नी १, आहारक बे ए ४१ मार्गणाए ६ छ लेश्या छे हवे अलपबहुत्व कहे छे—मनुष्य थोडा छे—संख्याता छे. उत्कृष्टथी २९ आंकतांई छे. मनुष्यथी नारकी असंख्यात गुणा छे. नारकीथी असंख्यातगुणा देवता छे. देवताथी तिर्यंच अनंतगुणा छे जे सूक्ष्म बादर एकेन्द्रीय सर्वमांहि गणवा. ॥ ४० ॥

पणचउ तिदुएगिंदि, थोवातिन्निअहिया अणंतगुणा।
तसथोव असंखग्गी, भूजलनिल अहियवणणंता ॥४१॥

अर्थ—पंचेन्द्री थोडा पंचेन्द्रीथी चौरिद्रि अधिका. चौरेन्द्रीथी तेन्द्री अधिका, तेन्द्रीथी बेन्द्री अधिका, बेन्द्रीथी एकेन्द्री अनंतगुणा छे. एवं पंचेन्द्रीनी जाणवी, त्रसकाय थोडा छे, तिणसुं अग्निकाय असंख्यात गुणा छे, अग्निकायसुं पृथ्वीकायना जीव अधिका, पृथ्वीकायथी अपकाय अधिका, अपकायथी वाउकाय अधिका, वाउकायथी वनस्पतिकाय अनंतगुणा छे. ॥४१॥

मणवयणकायजोगी, थोवाअसंखगुण अनंतगुणा।
पुरिसाथोवा इत्थि, संखगुणा णंतगुण कीवा ॥४२॥

अर्थ—मनोयोगी थोडा छे, सन्नीजीव ग्रह्या छे, वचनयोगी असख्यात गुणा बेन्द्रीयादिक सर्व जीवग्रह्या छे, वचनयोगीथी काययोगी अनतागुणा छे, एकेन्द्री सर्व गण्या छे, पुरुपवेदी थोडा छे पुरुपवेदथी स्त्रीवेद संख्यात गुणा छे. जे तिर्यचमें त्रिगुणी स्त्री छे. तीन वळी अधिकी मनुष्यमे २७ गुणी छेअने २७ वळी अधिकी छे देवतामे ३२ गुणी छे बत्रीस अधिकी छे स्त्रीवेदीसु नपुसक अनंतगुणा छे. एकेन्द्रीयादिक सर्व लेवा ॥४२॥

माणी कोही माई, लोभी अहिअमणनाणिणोथोवा।
ओहि असंखामइसुअ,अहिअसम असंख विप्भंगा॥४३॥

अर्थ—कषायमे मानकषायी थोडा छे, मानकषायीथी क्रोधीसु मायावी कपटी अधिका छे मायाकषायीथी लोभी अधिका छे, मन पर्याय ज्ञानी थोडा छे जे मन पर्यायज्ञान मनुष्य साधुमेज होवे मन पर्यायज्ञानीथी अवधिज्ञानी असंख्यात गुणा छे. जे च्यारगतिमे समकिते सर्व जीव छे. अवधिज्ञानीथी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अधिका छे, जे च्यार ४ गतिना समकिती सर्व लेवा अने मति श्रत दोनुं बराबर छे तिणथी विभग ज्ञानी असख्यातगुण छे. मिथ्यात्वी देवता नारकी सर्व बीजा पण तीणथी ॥ ४३ ॥

केवलिणो णंतगुणा, मइसुअ अन्नाणि णंतगुणतुल्ला।
सुहमाथोवा परिहार—संख अहखाइ संखगुणा ॥४४॥

अर्थ—केवली अनतगुणा छे. सिद्धभगवनमाहे गण्या छे तिणथीमति अज्ञानी श्रुतअज्ञानी अनतगुणा छे एकेंद्रीयादि सर्व लेवा माहोमाही बराबर छे. सूक्ष्मसापराय चारित्रीया थोडा

वणा उत्कृष्ट एकसो वासठ १६२ छे. परिहारविशुद्धि संख्य-गुणा छे. नवसो उत्कृष्ट होय छे. यथाख्यात चारीत्रीया संख्यात गुणा छे. उत्कृष्ट नवकोडि छे. ॥४४॥

छेअ समईयसंखा, देस असंखगुण णंतगुण अजया ।
थोवाअसंख दुणंता, ओहिनयणं केवल अचख्खू ॥४५॥

अर्थ—तिणसु छेदोपस्थापनीय संख्यातगुणा छे. उत्कृष्ट नवकोडिसो छे. सामायिक संख्यातगुणा छे. नवसहस्रकोडि छे. देसविरति असंख्यातगुणा तिर्यंचगतिना मेळीजे. अविरति अनंतगुणा छे. दर्शन ४ च्यारनो अल्पबहुत्व कहे छे—अवधि दर्शनी थोडा छे. तिणसु चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा छे. तेथी केवलदर्शनी अनंतगुणा छे. तेथी अचक्षुदर्शनी अनंतगुणा छे. ॥४५॥

पच्छाणुपुव्वि लेसा, थोवा दो संख णंत दो अहिया ।
अभविअर थोव णंता, सासण थोवो वसम संखा॥४६॥

अर्थ—लेश्यानो अल्पबहुत्व कहे छे—पश्चानुपूर्विए कहीजे. शुक्ललेश्यावंत थोडा छे. पद्मलेश्यामे असंख्यगुणा छे. तेथी तेजोलेशी असंख्यगुणा. तिणसु कापोतलेशी अनंतगुणा. तिणसु नीललेशी अधिका. तिणसु कृष्णलेशी अधिका छे. अभव्य थोडा. भव्य अनंतगुणा छे. सास्वादन समकीती थोडा. तिणसु उपसम समकीती संख्यातगुणा छे. ॥४६॥

मीसाऽसंखावेयग, असंखगुण खइअ मिच्छ दु अणंता
सन्नि अर थोवणंता, णहार थोवे अर असंखा ॥४७॥

अर्थ—तिणसु मिश्र असंख्यातगुणा छे. तिणसु क्षायिक-

समकीती अनंतगुणा छे. तिणसु मिथ्यात्वी अनतगुणा छे अनाहारक थोडा. आहारक असख्यातगुणा निगोदनो असख्यातमो भाग सदा विग्रहगतिमे छे तिणसु इति ६२, मार्गणाए अल्पबहुत्व कह्यो छे. ॥ ४७ ॥

सव्वजिअठाण मिच्छे, सग सासणि पण अपज्ज सन्नि दुगं
सम्मे सन्नि दुविहो, सेसेसुं सन्नि पज्जत्तो ॥ ४८ ॥

अर्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे सर्व जीवना भेद छे. सास्वादन गुणठाणे ७ सात जीवना भेद छे. पांच अपर्याप्ता अने सन्निद्विक मळी सात ७—बादर एकेन्द्रीय अपर्याप्ता १, बेन्द्री अपर्याप्ता २, तेन्द्री अपर्याप्ता ३, चौरेन्द्री अपर्याप्ता ४, असन्नि अपर्याप्ता ५, सन्नि पर्याप्तो १, अपर्याप्तो २, ए सात समकीत गुणठाणामे जीवभेद बे छे—सन्नि पर्याप्तो १, सन्नि अपर्याप्तो १, ए दोय छे. सेसेसु—शेषमिश्र १, देसविरति पाचमु प्रमत्त छट्ठ अप्रमत्त ७, अपूर्वकरण ८, निवृत्ति बादर ९, सूक्ष्मसपराय १०, उपशान्तमोह ११, क्षीणमोह १२, सयोगी केवळी १३, अयोगीकेवळी १४, ए सर्व गुणठाणे एक सज्ञीपचेन्द्री पर्याप्तो जीव भेद लाभे इणे गुणठाणे बीजो जीव चढे नही हवे गुणठाणे पन्नर १५ योग कहे छे ॥४८॥

मिच्छ दुगि अजइ, जोगाहार दुगुणा अपुव्वपणगेउ।
मण वय उरलं सविउव्व, मीसि सविउव्व दुगदेसे॥४९॥

अर्थ—मिथ्यात्व, सास्वादन, अव्रति, ए ३, गुणठाणे १३, तेर योग छे—आहारकद्विक २, नही च्यार ४, मनना च्यार वचनना ८, वैक्रीयबे १०, उदारिकबे १२, कार्मण १३, ए

तेर योग छे. आहारक साधुने थाय. अपूर्वकरण ८ मुं, अनिवृत्ति बादर ९ मुं, सूक्ष्मसंपराय १० मुं, उपशान्तमोह ११ मुं, क्षीणमोह १२ मुं, ए ५ पांच गुणठाणे ४, मनना ४, वचनना १, औदारिक ए नवयोग छे. मिश्र गुणठाणे नव तेहीज तेमां वैक्रिय १, मेळीजे तिवारे १० दस योग छे. देसविरतिमे नव तेहीज अने वैक्रीय बे मेळीजे तिवारे ११, योग थाय. ४९॥

साहारदुग पमत्ते, ते विउवाहार मीसविणु इअरे।
कम्मुरल दुगंताइम, मणवयण सजोगि न अजोगि५०॥

अर्थ—ए इग्यार योग मांहे आहारदुग—आहारक शरीर १, आहारकमिश्र ए बे मेळीजे तिवारे प्रमत्त गुणठाणे १३ तेर योग छे. इण तेरमे वैक्रियमिश्र, आहारकमिश्र काढीजे तिवारे अप्रमत्त गुणठाणे ११ इग्यारे योग छे. नवी लब्धि न करे सातमो अप्रमादी छे, लब्धि प्रमादी फोरवे, कार्मण १, औदारिक बे, अंत्य आदिम, मनवचने मेळवे—सत्य मनोयोग, असत्यामृषा मनोयोग, सत्य वचनयोग, असत्यामृषा वचनयोग, ए ७ सात योग तेरमे सयोगी केवळी गुणठाणे छे. समुद्घात करतां कार्मण योग छे. चौदमे अयोगि केवळी गुणठाणे योग एकपण नथी अयोगी छे. ॥ ५० ॥

ति अनाण दु दंसाइम, दुगे अजयदेसिनाण दंसतिगं।
ते मीसिमीस समणा, जयाइ केवलि दुगंत दुगे॥५१॥

अर्थ—हवे गुणठाणे उपयोग कहे छे—मिथ्यात्व १, सास्वादन २, ए बे गुणठाणे त्रण ३ अज्ञान, बे दर्शन—चक्षु, अचक्षु ए पांच उपयोग छे. अविरति समकीत, देशविरति

गुणठाणे त्रण ज्ञान, त्रण दर्शन, एम छ मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान २, अवधिज्ञान ३, चक्षुदर्शन ४, अचक्षुदर्शन ५, अवधिदर्शन ६ उपयोग छे, मिश्र गुणठाणे एहीज ६ उपयोग छे, अज्ञान-सहीत छे, अने छट्ठे गुणठाणासुमाडी बारताइ ७ सात गुण-ठाणे च्यार ज्ञान तीन दर्शन ए सात उपयोग छे तेरमे चौदमे गुणठाणे केवलज्ञान १, केवलदर्शन २, ए दोय उप-योग छे ॥५१॥ हवे सिद्धांत अने कर्मग्रथे जेम भेद छे ते कहे छे—

सासण भावे नाणं, विउव्वगाहारगे उरल मीसं।
नेगिंदिसु सासाणो, नेहाहिगयं सुयमयंपि ॥५२॥

अर्थ—सिद्धांतमे सास्वादन गुणठाणे ज्ञान कह्यो छे, इहां सास्वादनमे अज्ञान कहे छे, अने वैक्रिय, आहारक शरीर नवो करता मूळगे औदारिक शरीरे मिश्रता थाय छे पण इहां न मान्यो छे, अने सिद्धातमे एकेन्द्रियमे सास्वादन गुणठाणो नहीं कह्यो छे, इहां कोइ उपशम समकीत वमतो सास्वादनपणो पामे, ते एकेन्द्रीयमे उपजे, तिणे एकेन्द्रीयमे सास्वादन थाय, एटले बोले सिद्धातना वचननो अधिकार कीधो नथी, ते इहा पूर्वानु-योग मुख्य छे तिणे न कह्यो छे ॥ ५२ ॥

हवे लेश्या कहे छे—

छसु सव्वा तेउ तिगं, इग छसु सुक्का अजोगि अल्लेसा।
बंधस्स मिच्छ अविरइ, कसायजोगतिचउहेऊ॥५३॥

अर्थ—छ गुणठाणामे छ लेश्या छे, अने एक सातमे गुणठाणे तेजो, पद्म, शुक्ल ए तीन ३ लेश्या छे, अने आठमा

गुणठाणासुं मांडी तेरमा तांइ ६ छ गुणटाणे एक शुक्ल लेश्या छे. अयोगी गुणठाणे लेश्या नथी. अलेशी छे. बंधना च्यार ४ हेतु छे—मिथ्यात्व १, अविरति २, कषाय ३, योग ४ ए च्यार कारणें करी जीवने कर्म लागे छे. ॥५३॥

अभिगहिय मणभिगहिया, भिनिवेसिअ संसइय मणाभोगं।

पण मिच्छ बार अविरइ, मण करणानियमु छ जिय वहो ॥ ५४ ॥

अर्थ—मिथ्यात्वना पांच भेद छे—अभिग्रहमिथ्यात्व परंपर मार्गज सत्य छे एम माने १ (आपणो कदाग्रह लेवे), बीजो अनभिग्रह मिथ्यात्व ते सर्व धर्म सत्य माने २, अभिनिवेश—वीतरागवचननी खोटी प्ररुपणा करीने कदाग्रह छोडे नहि ३, संसय—वीतराग वचन उपर मनमां संदेह आणे ४, अनाभोग—अज्ञानमिथ्यात्व एकेंद्रीसुं मांडी सर्व जीवने ए पांच मिथ्यात्व जाणवां. बार प्रकारनी अविरति छे—स्पर्श अविरति १, रसन अविरति २, घ्राण अविरति ३, चक्षु अविरति ४, श्रोत्र अविरति ५, मन अविरति ६, पृथ्वीकाय हिंसा ७, अप्काय हिंसा ८, तेउकाय हिंसा ९, वाउकाय हिंसा १०, वनस्पतिकाय हिंसा ११, त्रसकाय हिंसा १२, ए बार अविरति कही. ॥५४॥

नव सोल कसाया पनर, जोग इअ उत्तरा उ सगवन्ना।

इग चउ पण ति गुणेसु, चउ ति दु इग पच्चओ बंधो ५५

अर्थ—नव नोकषाय हास्यादि ६ तीन वेद सोळे १६ कषाय अनंतानुबंधीयादिक ए पचीस २५ कषाय. १५ योग

४ मनना, ४ वचनना, ७ कायाना ए पन्नर योग ए सर्व मळी ५७ सत्तावन कर्मबंधनाहेतु छे इणे प्रकारे जीव कर्म बांधे. एक मिथ्यात्व गुणठाणे च्यारे, मिथ्यात्व १, अविरति २, कषाय ३, योग ४, ए ४ बंधहेतु छे ४ गुणठाणे– सास्वादन, मिश्र, अविरति, देशविरति ए ४ गुणठाणे तीन बंधहेतु छे, मिथ्यात्वविना कषाय, अविरति, योग, ए ३ तीन छे अने पांच गुणठाणे–प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण, निवृतिबादर, सूक्ष्मसंपराय ए पांच गुणठाणे दु–बे हेतु छे कषाय अने योग ए बे बंधहेतु छे अने उपशांतमोह, क्षीण-मोह, सयोगीकेवळी ए तीन ३ गुणठाणे १ योग बंधहेतु छे ॥ ५५ ॥

चउ मिच्छमिच्छ अविरइ, पच्चइंया साय सोल पणतीसा जोगविणुतिपच्चइया, हारग जिण वज्ज सेसाओ ॥५६॥

अर्थ—एक सातावेदनी तो च्यारे प्रकारेकरी बंधाय छे. अने नरक ३, जाति ४, थावर ४, हुंडक १, छेवट्ठो १, आतप १, नपुंसकवेद १, मिथ्यात्व १, ए सोळ १६ प्रकृति एक मिथ्यात्वसुं बंधाय छे मिथ्यात्व विना बीजो कोइ इ-णोनो बंध हेतु नथी. १ अने पांत्रीस ३५ प्रकृति–तिर्यंच ३, थीणद्धी ३, दुर्भग ३, अनंतानुबंधि ४, मध्यसंस्थान ४, मध्य-संघयण ४, कुखगइ १, नीचगोत्र १, उद्योत १, स्त्रीवेद १, वज्रऋषभनाराच १, मनुष्य त्रिक ३, बीजी चोकडी अप्रत्या-ख्यानी ४, औदारिकद्विक २, ए पांत्रीस प्रकृति मिथ्यात्वमे अने अविरतिमे बंधाय छे अने योग विना तीन प्रत्ययथी एटले मिथ्यात्वथी, अविरतिथी, कषायथी ६५ पांसठ प्रकृति

बंधाय छे ते कहे छे ते सांभळो—त्रीजी चोकडी ४, सोग २, अरति १, अथिर २, अयश १, असाता १, देवायु १, निद्रा २, देव २, पंचेन्द्री १, शुभविहायोगति १, त्रस ९, नवक, शरीर ३, उपांग १, समचउरस्र १, निर्माण १, वर्ण ४, अगुरुलघु ४, हास्य १, रति १, भय १, दुगंछा १, पुरुषवेद १, संजलण ४ दर्शनावरणि ४, ज्ञानावरणि ४, अंतराय ५, जस १, उंचगोत्र १, ए ६५ पांसठ प्रकृति त्रिण्य ३, प्रत्ययथी बंधाय छे. आहारकद्रिक २, जिण १ ए त्रण्य ३ प्रकृति कषाय योगथी बंधाय छे ए १२० प्रकृतिनो बंध छे. ॥ ५६ ॥

पणपन्न पन्नतिय छहिय, चत्त गुण चत्त छ चउ दुग वीसा। सोलस दस नवनव सत्त, हेउणो नउ अजोगंमि ॥५७॥

अर्थ—हवे गुणठाणे हेतु कहे छे. मिथ्यात्व गुणठाणे ५५ पंचावन हेतु छे, सास्वादनमे पचास ५० हेतु छे. मिश्रमे त्रेतालीस हेतु छे. समकीत गुणठाणे ४६ छेताळीस बंधना हेतु छे. देशविरति गुणठाणे ३९ ओगणचालीस बंधहेतु छे. प्रमत्त गुणठाणे छवीस २६ बंधहेतु छे. अप्रमत्त गुणठाणे २४ चोवीस बंधहेतु छे. अपूर्वकरण आठमे गुणठाणे बावीस २२ बंधहेतु छे. अनिवृत्तिबादर गुणठाणे १६ सोळ बंधहेतु छे. सूक्ष्मसंपरायमे दश १० बंधहेतु छे. उपशांतमोहमे नव बंधहेतु छे, क्षीणमोहमे नव बंधहेतु छे. सयोगिकेवळीमे सात बंधहेतु छे, अयोगी गुणठाणु अबंधक छे, तेथी त्यां कोइ बंधहेतु नथी. ॥५७॥

पणपन्न मिच्छहारग, दुगुण सासाणि पन्नमिच्छविणा। मिस्सदुगकम्मअणविणु, तिचत्तमीसे अहछचत्ता ५८

अर्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे पचावन हेतु छे, ते मूळे सत्तावन थाय तिणमाहे आहारक शरीर १, आहारकमिश्र २, काढीजे, तिवारे पचावन बंध हेतु रहे ते छे सास्वादन गुणठाणे पचास ५०, होय छे, ते पाच मिथ्यात्व काढवा तिवारे ५० पचास बंध हेतु छे औदारिकमिश्र १, वैक्रियमिश्र २, कार्मण ३, अनतानुबंधी ४, ए सात काढीजे तिवारे मिश्र गुणठाणे ४३ त्रेताळीस बंधहेतु छे हवे छेताळीस होय छे ते कहे छे ॥ ५८ ॥

सदुमीसकम्मअजए, अविरइ कम्मुरलमीस विकसाए। मुत्तुगुणचत्तदेसे, छवीस साहार दु पमत्ते ॥५९॥

अर्थ—समकीत गुणठाणे–औदारिकमिश्र १, वैक्रियमिश्र २, कार्मण ३, ए त्रण्य मेळीजे तिवारे ४६, छेताळीस बंधहेतु समकीत गुणठाणे छे देसविरति गुणठाणे त्रसवधनी अविरति १, कार्मण १, औदारिकमिश्र १, अप्रत्याख्यानी ४, ए सात ७, काढीजे तिवारे ३९ गुणचाळीस बंधहेतु छे हवे प्रमत्त गुणठाणे छवीस २६ बंधहेतु छे–आहारक दोय मेळीजे एटले २६. ॥ ५९ ॥

अविरइ इगार तिकसाय, वज्ज अपमत्ति मीसदुगरहिया। चउवीस अपुव्वे पुण, दुवीस अविउव्वाहारे ॥६०॥

अर्थ—अविरतिनि इग्यारे ११, त्रीजी चोकडी ४, (प्रत्याख्यानीय) कषाय रहित छवीस हेतु होय आहारक दोय मेळीजे तिवारे छवीसनो बंध छे अप्रमत्त गुणठाणे वैक्रियमिश्र १, आहारकमिश्र १, ए दोय काढीजे तिवारे २४, बंध

हेतु छे. आठमे अपूर्वगुणठाणे–आहारक दोय काढीजे तिवारे बावीस २२ बंध हेतु छे. ॥ ६० ॥

अछहाससोलबायरि, सुहुमेदस वेअसंजलणतिविणा।
खीणुवसंति अलोभा, सजोगि पवुत्त सग जोगा ॥६१॥

अर्थ—हास्यषट्क ६ विना सोळ १६ बंधहेतु बादर संपराये होय. सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे तीन वेद, तीन संजलणा–३–संजलण क्रोध १, संजलणमान २, संजलणी माया ३, ए छ काढीजे तिवारे दस १० बंधहेतु छे. उपशांत गुणठाणे अने क्षीणमोह गुणठाणे संजलननो लोभ काढीजे तिवारे नव ९ बंधहेतु छे. सयोगी गुणठाणे दोय मन, दोय वचन दोय औदारिक, अने एक कार्मण, ए पूर्वोक्त सात ७, योग छे अयोगि गुणठाणे बंधहेतु छे नहीं. ॥ ६१ ॥

अपमत्तंतासत्तट्ठ, मीसअपुव्वबायरासत्त ।
बंधइ छ स्सुहुमो एग, मुवरिमाबंधगाऽजोगी ॥६२॥

अर्थ—हवे चौद गुणठाणे बंध उदय सत्ता कहे छे–अप्रमत्त गुणठाणा तांइ सात ७, के आठ ८, कर्म बांधे. मिश्र गुणठाणे अपूर्वकरण गुणठाणे, अनिवृत्ति बादर गुणठाणे, सातकर्मनो बंध छे. सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे मोहनीकर्म खपावे तिवारे छ ६ कर्मनो बंध छे. इग्यारमे, बारमे, तेरमे गुणठाणे एक वेदनी (साता) कर्म बांधे छे. अने अयोगी अबंधक छे. ॥६२॥

आसुहुमंसंतुदए, अट्ठवि मोह विणु सत्त खीणम्मि।
चउचरिमदुगअट्ठउ, संते उवसंति सत्तुदए ॥६३॥

अर्थ—सूक्ष्मसपराय १०, गुणठाणा ताइ सत्ता अने उदय पण आठ कर्मनो छे. सदा सर्व कर्म छे. मोहनी विना बारमा गुणठाणे सात कर्मनी उदय सत्ता छे. तेरमे चौदमे गुणठाणे ए बे गुणठाणे वेदनी १, नाम १, गोत्र १, आउखो १, ए च्यारनो उदय ने सत्ता छे उपशातमोह गुणठाणे उदय सात कर्मनो छे सत्ता आठ कर्मनी छे ॥ ६३ ॥

उइरंति पमत्तंता, सगट्ठ मीसट्ठ वेअ आउ विणा।
छग अपमत्ताइ तओ, छ पंच सुहुमोपणुवसंतो ॥६४॥

अर्थ—उदीरणा कहे छे—मिथ्यात्व, सास्वादन, अविरति, देशविरति, प्रमत्त, ए पाच गुणठाणे सात अथवा आठकर्म उदीरे छे मिश्र गुणठाणे आठकर्म उदीरे छे, सदा उदीरणा छे अप्रमत्त, अपूर्वकरण, अने बादर गुणठाणे वेदनी, आउखोविना ६ कर्म उदीरे छे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे छ कर्म, पछी मोहनी खपावे पछी पाच कर्म उदीरे छे. उपशात मोह गुणठाणे पांच कर्मनी उदीरणा छे ॥६४॥

पण दो खीण दु जोगी, णुदीरगु अजोगि थोव उवसंता।
संख गुण खीण सुहुमा, अनिअट्टि अपुव्व सम अहिआ६५

अर्थ—हवे क्षीणमोह गुणठाणे पेहेला पाच कर्म उदीरे छे पछी ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अंतराय, ए ३ तीन खपे तिवारे दोय २, नी उदीरणा छे सयोगी गुणठाणे दोयनी उदीरणा छे. अयोगी गुणठाणे .उदीरणा नथी हवे गुणठाणे अल्पबहुत्व कहे छे—उपशात ११, अगीयारमे गुणठाणे थोडा जीव छे. उत्कृष्टे ५४, चोपन जीव लाभे छे. तिणसु क्षीण-

मोह गुणठाणाना जीव संख्यात गुणा छे. तिणसु सूक्ष्मसंपराचना जीव, अनिवृत्ति बादरना जीव, निवृत्तिना जीव अधिका छे. जे कारजे. कारजअर्थि उपशम, क्षपक, श्रेणे बेउ इंणे गुणठाणे छे अने मांहोमांहे बराबर छे. ॥ ६५ ॥

जोगि अपमत्तइअरे, संखगुणा देस सासणा मीसा ।
अविरय अजोगि मिच्छा, असंख चउरो दुवेऽणंता ६६॥

अर्थ—तिणथी सयोगी केवळी जीव संख्यातगुणा छे, तिणसु अप्रमत्त गुणठाणाना जीव संख्यात गुणा छे, तिणसु प्रमत्त गुणठाणाना जीव संख्यात गुणा छे, तिणसु देशविरतिना जीव असंख्यात गुणा छे, तिणथी सास्वादनना जीव संख्यात गुणा छे. तिणसु मिश्र जीव असंख्यात गुणा छे, तिणसु अविरति समकीती जीव असंख्यात गुणा छे. तिणसु अयोगी सिद्ध अनंत गुणा, तेहथी मिथ्यात्वी जीव अनंतगुणा छे. ॥६६॥

उवसम खय मीसोदय, परिणामा दु नवट्ठारइगवीसा ।
तिअभेय सन्निवाइअ, सम्मं चरणं पढमभावे ॥६७॥

अर्थ—हवे पांच भाव कहे छे—उपशमभाव १, क्षायिकभाव २, क्षयोपशमभाव ३, औदयिकभाव ४, पारिणामिकभाव ५, तिहां प्रथम उपशमभावना बे २, भेद छे. क्षायिकभावना नव भेद छे; क्षयोपशमभावना अढार भेद छे. औदयिकभावना एकवीस भेद छे. अने पारिणामिक भावना तीनभेद छे. ए पांच भाव मळ्यां छतां जे संयोगी भांगा उपजे ते सन्निपातिक भाव कहीजे. तिहां पेहेला उपशमभावना दोय भेद

१, उपसम भावनु समकीत जे सात प्रकृति उपसमावे अने २, उपशम चारित्र जे पूर्वे मोहनीय कर्मनी प्रकृति उपसमावी छे ते. ॥६७॥

वीए केवल जुअलं, सम्मं दाणाइ लद्धि पण चरणं।
तइए सेसुवओगा, पण लद्धि सम्म विरइ दुगं ॥६८॥

अर्थ—बीजा क्षायिक भावना नव ९ भेद छे ते कहे छे. तिहा केवल ज्ञान १, केवल दर्शन २, क्षायिक समकित १, दानादिक पांच लब्धि–क्षायिकदान १, क्षायिकलाभ २, क्षायिकभोग ३, क्षायिकउपभोग ४, क्षायिकवीरज ५, ए पांच अने क्षायिकचारित्र १ ए नव ९ भेद क्षायिकना जाणवा. त्रीजा क्षयोपशमभावना १८ अढार भेद छे ते कहे छे जे च्यार ४ ज्ञान, मतिज्ञान १, श्रुतज्ञान २, अवधिज्ञान ३, मन.पर्यायज्ञान ४, तीन अज्ञान–मतिअज्ञान ५, श्रुतअज्ञान ६, विभंगज्ञान ७, तीन दर्शन–चक्षुदर्शन ८, अचक्षुदर्शन ९, अवधिदर्शन १० ए दश क्षायोपशमिक उपयोग कहीजे. पांच क्षयोपशमिक लब्धि क्षयोपशमिक दान ११, लाभ, १२, भोग १३, उपभोग १४, वीरज १५, क्षयोपशमनु समकीत १६, देशविरति १७, सर्वविरति १८ ए अढारे क्षयोपशमभावना भेद जाणवा.॥६८॥

अन्नाण मसिद्धत्ता, ऽसंजम लेसा कसाय गइ वेआ।
मिच्छं तुरिए भवा, भवत्त जिअत्तपरिणामे ॥६९॥

अर्थ—चोथा उदयिक भावना २१ भेद छे ते कहे छे. अज्ञान १, असिद्ध ससारी २, असजमी अविरति ३, छ लेस्या, ४ कषाय च्यार, १३ गति च्यार, १७ वेद त्रण, २०

मिथ्यात्व, २१ ए एकवीस भेद औदयिक भावना जाणवा. पांचमा पारिणामिक भावना ३, तीन भेद—भव्यत्व १, अभव्यत्व १, जीवत्व १ ए ३ भेद जाणवा. ॥ ६९ ॥

चउ चउ गईसु मीसग, परिणामुदएहिं चउ सखइएहिं।
उवसमजुएहिं वा चउ, केवल परिणामुदय खइए॥७०॥

अर्थ—हवे सन्निपातिक भावना भांगा कहे छे—तिहां केतलाइक जीवने मिश्र कहेतां क्षयोपशम उपयोग १, परिणाम जीवपणो १, औदयिक गति लेश्या प्रमुख, क्षयोपसम १, परिणामिक १, औदयिक १ ए तीन भाव रूप १, एक रुप भांगो मूळ छे. ए भांगो च्यार गतिना जीवमे छे. तिणे उत्तर भांगा च्यार ४ थया. ४ अथवा किणही जीवमे क्षयोपसम १, औदयिक १, पारिणामिक १ ए तीन अने तिमहीज समकीत क्षायिक होवे तो ए ४ सयोगी मूळ भांगो वीजो थयो पण च्यार गतिना जीवमे छे तेणे उत्तरभंग एहना ४ च्यार इतले आठ थया. **तिर्यंचगतिमे क्षायिकसमकितनो विसंवाद छे. परं इहां मान्यो छे.** तथा क्षयोपशम औदयिक पारिणामिक तिमहिज जे जीवमे उपशम समकीत थाय तेहने पण चतुःसंयोगी ए त्रिजो भांगो थयो. ए पण च्यार गतिआश्रि ४ थया इतले उत्तर भांगा बारे थया. ए अने संसारी केवळीमे पारिणामिक जीवपणो, औदयिक लेश्यापणो १, क्षायिकज्ञान, दर्शन, चारित्र, ए त्रिकसंयोगी १ भांगो छे तिवारे मूळ भांगा ४ च्यार थया. उत्तरभांगा तेर १३ थया. ॥ ७० ॥

खयपरिणामे सिद्धा, नराणपणजोगुवसमसेढीए।
इअ पनर सन्निवाइअ, भेया वीसं असंभविणो॥७१॥

अर्थ—अने सिद्धमे ज्ञान क्षायिक थाय छे, जीवपणो पारिणामिक छे, ए सिद्धने द्विकसयोगी एक भागो छे. ए मूळ पाच भागा थया अने उत्तर १४ चौद थया अने कोइ मनुष्य उपशमश्रेणे छे पण क्षायिक समकीती छे तेहने उपशमश्रेणिमे एक भागो थयो एतले मूळभेद छ ६ थया. उत्तरभेद १५ पन्नर सन्निपातिक भावे थया अने बीजा पण वीस भांगा सान्निपातिक उपजे पर असभावी भेद छे, जे कारणे किणही जीवमे लाभे नहीं तेणे असभावी छे ॥ ७१ ॥

मोहे वसमो मीसो, घाइसु अट्ठ कम्मसु अ सेसा।
धम्माइ पारिणामिअ, भावे खंधा उदइएवि ॥७२॥

अर्थ—उपशम भावतो मोहनीमेज थाय बीजा कर्ममे नही क्षयोपशमभाव च्यार ४, घातिककर्ममें छे बीजा केमा नही, अने औदयिक १, पारिणामिक १, क्षायिक १, ए त्रण भाव आठ कर्ममे छे इतले मोहनीकर्ममे पाच भाव छे. ज्ञानावरणी, दर्शनावरणी, अतराय ए तीन कर्ममे च्यार भाव छे उपशम भाव न होय. वेदनी, नाम, गोत्र, आउखो, ए ४ च्यारे कर्ममे तीन भाव छे उपशम, क्षयोपशम नथी बाकी ३ तीन भाव छे. धर्मास्तिकायादिक ६ छ द्रव्यमे एक पारिणामिक भाव छे खंध, पुद्गलीक, शरीरमें १ एक औदयिक भाव ने १ पारिणामिक भाव पण छे ॥ ७२ ॥

सम्माइ चउसुतिगचउ, भावा चउपणुवसामगुवसंते।
चउ खीणा पुव्वे तिन्नि, सेसगुणठाणगेगजिए ॥७३॥

अर्थ—समकीत १, देशविरति २, प्रमत्त ४ ए च्यार गुणठाणे जीव छे ने क्षायोपशमिक समकीती छे तेहने ३ तीन भाव छे १ औदयिक, २ पारिणामिक, ३ क्षयोपशम ए ३ छे. अने जे जीव उपशमी के क्षायिक समकीती छे तेहने तीन ३ भाव तेहिज अने उपशम अथवा क्षायिक ए ४ च्यार भाव छे. उपशम समकीतीने उपशमश्रेणिये च्यार ४ भाव छे. उपशम समकित चारित्र १, औदयिक १, पारिणामिक १, क्षयोपशम उपयोग ए च्यार छे. अने क्षायिक समकिति उपशम श्रेणिमां होय तेने पांच भाव छे—अपूर्वकरण गुणठाणा ८ थी क्षीणमोह १२ मा तांइ च्यार ४ भाव छे—क्षायिक भाव १, औदयिक भाव १, क्षयोपशमिक १ पारिणामिक ए ४ भाव छे. शेष, मिथ्यात्व, सास्वादन मिश्र ए ३ गुणठाणे पारिणामिक १, औदयिक १, क्षयोपशमिक १, त्रण भाव छे अने तेरमे चौदमे गुणठाणे पारिणामिक १, औदयिक १, क्षायिक १, ए त्रण भाव छे. ए १४ चौद गुणठाणे भाव कह्या एक जीवआश्री गुणठाणे भाव कह्या. ॥ ७३ ॥

संखिज्जेगमसंखं, परित्त जुत्त निय पय जुयं तिविहं।
एव मणंतंपि तिहा, जहन्नमज्झुक्कसा सव्वे ॥ ७४ ॥

अर्थ—हवे संख्यातादिकनो द्वार कहे छे. संख्यातादिकना जे भेद छे ते कहे छे—तेमां संख्यातानो १, एक भेद छे, अने असंख्याताना तीन भेद छे—१ प्रत्येकअसंख्यातो, २ युक्तअसंख्यातो, ३ असंख्यातअसंख्यातो ए तीन ३ असंख्याता जाणवा. इम अनंताना तीन भेद छे. १ परित्त-

अनंतो, २ युक्तअनंतो, अने ३ त्रीजो अनंतानंतो छे. ए ७ सात थया. तेना वळी एकेकना जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट ए त्रिण त्रिण भेदो छे जेमके जघन्य संख्यातो १, मध्यम संख्यातो २, उत्कृष्ट संख्यातो ३. एम सर्व त्रणगुणा करतां २१ एकवीस भेद थया. ॥७४॥

लहुसंखिज्जं दुच्चिय, अओ परं मज्झिमं तु जा गुरुअं।
जंबुद्दीवपमाणय, चउपल्ल परूवणाइ इमं ॥ ७५ ॥

अर्थ—जघन्य संख्यातो दोयने कहीजे अने ३ त्रणथी उपरांत जतांइ (ज्यांसुधी) उत्कृष्ट न थाय त्यांतांइ (सुधी) मध्यम संख्यातो कहीजे अने उत्कृष्ट संख्यातो जिवारे जंबुद्वीप प्रमाणे च्यारे ४ पल्यनी प्ररुपणा करतां जे थाय ते उत्कृष्ट संख्यातो कहीजे ॥७५॥ तेहनो स्वरुप कहे छे.—

पल्लाणवट्ठियसिलाग-पडिसिलागमहासिलागक्खा।
जोयणसहसोगाढा, सवेइअंता ससिहभरिया ॥७६॥

अर्थ—पल्य पेहेलो अनवस्थितपल्य १, बीजो सलागपल्य २, त्रीजो प्रतिसिलागपल्य ३, चोथो महासिलागपल्य ४ ए च्यारे पल्य एक लाख योजनना आयाम विखभ छे, एक हजार योजन ऊंडा छे. वेदीका योजन आठ ८ ताइ छे ते पर्यंत सरसवें करी भरीजे. एटले पेहेलो पल्य अनवस्थित भरीने. ७६

तोदीवुदहीसुइक्किक्क, सरिसवं खवियनिट्ठिएपढमे।
पढवं व तदंतं चिअ, पुणभरिए तंमि तह खीणे ७७

अर्थ—ते अनवस्थित पल्य कोइक देवता उपाडे तेमा-

हिंथी एक कण द्वीपें पछें एक कण समुद्रमें नांखतो, जाय तिवारे केतलाइक द्वीपमां नांखतां पेहेलो पल्य जिणे द्वीपें पूरो खाली थयो ते द्वीपने प्रमाणे बीजो नवो पल्य कल्पीइं ते पण सरसवें करी भरीजे तेपण एक कण द्वीपें एक कण समुद्रे नाखीजे, जिवारें ते पल्य खाली थाय, तिवारें एक सरसव सिलागापल्य मांहे घालीजे. तिहां कोइ कहे जे तेमांहेथी एक घालीजे. केइक नवो १ एक घालीजे. ॥७७॥

खिप्पइसिलागपल्लेगु, सरिसवो इअसिलागखवणेणं।
पुण्णो बीओअ तओ, पुव्वंपि व तंमि उद्धरिए ॥७८॥

अर्थ—इम सिलागापल्यमें एक दाणो मुक्यो पछे वळी त्रीजो अनवस्थित भरीजे, छेहेले द्वीप समुद्र प्रमाणे तेपण खाली थाय तिवारे बीजो दाणो सिलाकामध्य घालीजे, वळी जिणे द्वीपे समुद्रे त्रीजो अनवस्थित पूरो थयो छे तेटलो चोथो अनवस्थित कल्पीजे, ते वळी एक कण द्वीपें एक कण समुद्रे नांखतो खाली थाय, तिवारें एक त्रीजो कण सिलाकामे भेळीजे. इणे भांते (एवी रीते) नवनवा अनवस्थित भरीने खाली खाली करी एक कण सिलाकामें भेळतां सिलाकपल्य पूरो भराणो, तिवार पछी ते शिलाकापल्य पण पूरो उपाडी जे इमहीज द्वीप समुद्रे एकएक कण नांखतां खाली थाय तिवारें एक कण प्रतिसिलाकापल्यमें घालीजे. वळी तिहांथी नवनवा अनवस्थित करी भरीजे, खाली थाय तिवारे एक एक सिलाकामें घालीजे, वळी अनवस्थित काजे एक कण सिलाकामांही घालीजे, इम अनवस्थित नवनवा करी सिलाका बीजीवार भरीजे तेपण उपाडी जे द्वीपे समुद्रे ठोलाइजे. ॥ ७८ ॥

खीणेसिलागतइए, एवं पढमेहिं बीययं भरसु।
तेहिं तइयं तेहिय, तुरियं जा किर फुडा चउरो ७९॥

अर्थ—सिलाका खाली थाय तिवारे एक दाणो वळी प्रति सिलाकपल्य मांहे मुकीजे, इम अनवस्थितें करी सिलाका भरी, सिलाका खाली करी एक दाणो प्रतिसिलाकामाहे घालीजे इम करता प्रतिसिलाका भरीजे, ते प्रतिसिलाका उपाडीजे इमही जे द्वीपें समुद्रे खाली कीजे तिवारे एक दांणो महासिलाकामांहे घालीजे वळी नवनवा अनवस्थितें करी सिलाका भरीजे, सिलाका खाली करी एक दाणो प्रतिसिलाकामाहे मेळीजे, इम अनवस्थिते करी सिलाका भरीजे, सिलाका करी प्रतिसिलाका भरीजे, प्रतिसिलाका खाली करीने एक महा सिलाकामें कण घालीजे इम अनवस्थितेथी सिलाका भरीजे, सिलाकाथी प्रतिसिलाका भरीजे, प्रतिसिलाकाथी महासिलाका भरीजे, इम च्यारे पल्य भराय ए प्ररुपणाथी जाणवो. ॥७९॥

पढमतिपल्लुद्धरिआ, दीवुदहीपल्लचउसरिसवाय।
सव्वोविएसरासी, रूवूणो परमसंखिज्जं ॥ ८० ॥

अर्थ—हवे ते सर्व त्रिण्ये ३ पल्यें करी नांख्या हता, जे सरसव ते सर्व भेळा कीजे अने लाख लाख जोजनना ३ पल्य वर्जी अनवस्थितनाए ४ पल्यना सरसवना वळी भरी माहे नांखीजे तिवारे ते भेळा ढिग कीजे ए सर्व रासी एकठी थाय तिवारें रासीमांहीथी एक सरसव काढीजे, तिवारें उत्कृष्टो संख्यातो थाय. ॥ ८० ॥

रूवजुअं तु परित्ताऽसंखंलहुअस्सरासिअब्भासे।
जुत्ताऽसंखिज्जंलहु, आवलिया समयपरिमाणं॥८१॥

अर्थ—अने जे एक सरसव काढ्यो हतो ते भेळीजे तिवारे जघन्य परित्तअसंख्यातो थाय १ ए प्रथम असंख्यातो ए परित्त असंख्यातानी रासि छे तेहनो अभ्यास कीजीये तिवारें चोथो जघन्य युक्तअसंख्यातो थाय. इहां ए अभ्यासनी असत् कल्पना कहे छे ते किहां एक पांचनी एक रासी होवे तेमांहे पांच जुदा करी मांडीजे तेहनो धडो थाय ते सर्वनी नीचे मांडीजे ५५५५ पछी मांहोमांहे ए गुणा कीजे—पांचो पंचा पंचवीस, पचवीस पंचो १२५ थया तेने पांचगुणा कीजे ६२५ थया एहना पांचगुणा कीजे ते कीधे ३१२५ थया ए पांचनो अभ्यास थयो. इम परित्तअसंख्यनी रासी अभ्यास करतां जे थाय ते युक्त असंख्यातो जघन्य कहीजे. आवली एकमांहे जे समय छे ते ए चोथा असंख्याता प्रमाणे छे. ॥ ८१ ॥

बितिचउपंचमगुणणे, कमासगासंख पढम चउसत्ता-
णंता ते रूव जुया, मज्झा रूवूण गुरु पच्छा॥८२॥

अर्थ—हवे मतांतर कहे छे—जे मूल सातभेदनी अपेक्षाए द्वितीय तृतीय चतुर्थ ने पंचम राशीनो गुणणे—राशि अभ्यास करतां २१ उत्तरभेदनी अपेक्षाए सातमुं असंख्यातुं जघन्य असंख्यातासंख्यात, प्रथम अनंत ते जघन्य प्रत्येकानंत, चतुर्थ अनंत ते जघन्ययुक्तानंत, ने सप्तम अनंत ते जघन्य अनंतानंत अनुक्रमे थाय.

ए सर्व जघन्य कह्या. एहमा एकरुप भेळीजे तिवारे सर्व-मध्यय थाय, अने चोथे जघन्य अनतेसु एकउणो कीजे तिवारे पेहेलो परीत्तअनतो उत्कृष्टो थाय, तिवारे अने उत्कृष्टसु एकरुप कांढताइ पिण मध्यराशि कहीजे ॥ ८२ ॥

इअसुत्तुत्तं अन्ने, वग्गिअमिक्कसि चउत्थयमसंखं ।
होउ असंखाऽसंखं, लहुरूवजुयं तु तं मज्झं ॥८३॥

अर्थ—इय-इतले ए सूत्रोक्त पिण ए मान लघु थयो, तिणे पूर्वोक्तानुसारे मान कहे छे-जे चोथे जघन्ययुक्त असंख्याताने एकवार वर्गित कीजे, तिवारे सातमो जघन्य असंख्यातअसख्यातो थाय, इहा वर्गित कहेता जे राशि छे ते रासिने तेटला गुणो कीजे ते वर्ग कहीजे, जिम च्यारनो वर्ग १६, सोळ एम जाणवो ए जघन्य असख्यातअसंख्यातो कह्यो. ए जघन्य असंख्यातअसख्याता माहे एकरुप भेळीजे, तिवारे मध्यम असख्यातअसख्यातो थाय ॥८३॥

रूवूण माइमं गुरु, तिवग्गिउ तत्थिमे दसक्खेवे ।
लोगागासपएसा, धम्माऽधम्मेगजियदेसे ॥८४॥

अर्थ—जाताइ (ज्यांसुधी) पेहेलो अनंतो एकरुप उणो होवे, तिवारे उत्कृष्टो असख्यातअसख्यातो थाय जघन्य असंख्याताने तीन वर्ग कीजे, अने दश असख्याताना बोल भेळीजे, तिवारे पेहेलो जघन्य परित्तअनतो थाय नहीं, तिवारे लोकाकाशना प्रदेश १, धर्मास्तिकायना प्रदेश २, अधर्मास्तिकायना प्रदेश ३. अने एक जीवना प्रदेश ४, वळी ॥८४॥

ठिइबंधज्झवसाया, अणुभागा जोगछेयपलिभागा।
दुण्ह य समाण समया, पत्तेअ निगोअए खिवसु॥८५॥

अर्थ—स्थितिबंधना अध्यवसाय ५, रसबंधनां स्थानक ६, योगना सूक्ष्मछेद–जेहनो वळी भाग न थाय तेहवा ७, उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीना समय ८, प्रत्येक वनस्पतिना जीव ९, सूक्ष्मनिगोदिनां शरीर १०, ए दश १०, असंख्याता भेळीजे. ॥ ८५ ॥

पुणरवि तंमि तिवग्गिय, परित्तणंत लहु तस्स रासीणं।
अब्भासे लहुजुत्ता–,णंतं अभव्व जिअमाणं ॥८६॥

अर्थ—वळी तीनवार वर्ग कीजे तिवारे पेहेलो परित्त अनंतो जघन्य थाय. ए परित्तअनंतानी राशिनो अभ्यास कीजे, तिवारे जघन्ययुक्त अनंतो थाय, जेटली जघन्ययुक्त अनंतामे संख्या छे एतला अभव्य जीव छे. ॥ ८६ ॥.

तव्वग्गेपुणजायइ, णंताणंतलहु तं च तिक्खुत्तो ।
वग्गसु तहवि न तं हो–इणंत खेवे खिवसु छ इमे ८७

अर्थ—ए जघन्ययुक्त अनंताने वर्गित कीजे तिवारे जघन्य अनंतानंतो सातमो थाय. ए सातमो जघन्य अनंतानंतने तीनवार वर्गित कीजे, अने एमां छ अनंता बोल भेळीजे ते कहे छे. ॥८७॥

सिद्धा निगोयजीवा, वणस्सई काल पुग्गला चेव।
सव्वमलोगनहं पुण, तिवग्गिउं केवलदुगंमि ॥८८॥

अर्थ—सिद्धजीव १, सूक्ष्मनिगोदना सर्वजीव २, वनस्पति-

कायना सर्वजीव ३, तीनकालना सर्वसमय ४, पुद्गल परमाणुआ सर्व ५, सर्व अलोकना आकाश प्रदेश ६, ए छ बोल भेळीजे, वळी तीनवार वर्गितकीजे, अने केवलज्ञान केवलदर्शनना पर्याय भेळीजे. ॥ ८८ ॥

खित्तेणंताणंतं, हवेइ जिट्ठंतु ववहरइ मज्झं ।
इअ सुहुमत्थवियारो, लिहिओ देविंदसूरीहिं ॥८९॥

अर्थ—एटला मेळ्यां उत्कृष्ट अनतानंत नवमो थाय. उत्कृष्ट अनंताननो थाय छे, परं जगत्रयनी सर्व वस्तु मध्यम आठमा अनताइ छे (व्यवहारमा प्रवर्ते छे), नवामा अनंता प्रमाणे वस्तु काइ छे नहीं. (माटे निष्प्रयोजन छे) ए चोथो कर्मग्रंथ " सूक्ष्मार्थ विचार " नामे सपूर्ण थयो लिख्यो जोड्यो देवेन्द्रसूरि आचार्ये ज्ञान हेते. ॥ ८९ ॥

इति श्रीषडशीतिक (सूक्ष्मार्थ-विचार) चतुर्थो कर्म्मग्रन्थ टबार्थसमेतं सुसमासम् ॥४॥ छ ॥

ॐ नमः सिद्धम्. ।

अथ शतकनामा पञ्चम कर्म्मग्रंथः

नमियजिणं धुववंधो–दय[1] सत्ता[3] घाइ[4] पुन्न[5] परियत्ता[6]।
सेयर[12] चउह विवागा[16], वुच्छं वंधविहि[24] सामी[25] य[26] ॥१॥

टबाकार–मंगलम्

प्रणम्य वीरं सद्धारं ज्ञानामृतपयोधरं ।
टवार्थं शतकाख्यस्य, देवचंद्रः करोम्यहं ॥१॥

अर्थ—नमस्कार करीने जिनवीतराग प्रत्ये, निर्मोहीप्रत्ये, ध्रुवबंध हेतु सद्भावे च्यार ४ गतिमे नियमा बांधीये तेथी ध्रुवबंधी कहीये. १ जे हेतुहोते बंधाय अथवा न बंधाय ते अध्रुवबंधी कहीये. २ च्यार गतिमे मिथ्यात्व गुणठाणे थका सर्व जीवने उदय होवे ते ध्रुवोदय कहीजे. ३ च्यार गतिमे सामग्री योगे पिण उदय होवे अथवा न हुवे ते अध्रुवोदयी कहीजे. ४ च्यार ४ गतिना जीवने सदा सत्ता पांमीये ते ध्रुवसत्ता कहीये. ५ कोइ गतिमे सत्ता हुवे न हुवे ते अध्रुव सत्ता कहीये. ६ जे आत्माना गुण अनंता छे परं मुख्य गुण आठ छे ते मध्ये ४ च्यार गुण ते प्रगट थयां सिद्धता पांमीए, परं अन्य गुण ते प्रगट करवाना कारण थाय नहीं अने ज्ञान १, दर्शन २, चारित्र ३, वीर्य ४ ए च्यार ४ गुण अनंतगुण प्रगट करवाना कारण छे ते माटे ४ च्यार गुणने आवरे तेहने घातिकर्म कहीजे. ७ शेषकर्मने अघाति

कहीजे. ८ उदये आव्या जे कर्म शुभ मीठां आल्हादकारी होय ते पुन्य प्रकृति कहीजे ९ जे उदय आव्या कडुआ दु खकारी विपाक आवे ते पाप प्रकृति कहीजे १० जे प्रकृति परावर्तनपणे थाय ते परावर्तन कहीजे ११ अने जे न थाय ते अपरावर्त्तन १२ एम मूलमा कहेल ६ छ ने इतर पदे भेळता १२ द्वार थया च्यार ४ विपाक जे प्रकृतिओनो विपाक मुख्यताए जीवनेज प्रवर्ते ते जीवविपाकी १ जे प्रकृतिबंध बांधतां जे बांधी, ते उदय आवता नवा औदारिकादिक पुद्गल नवा लेइने उदय आवे ते पुद्गलविपाकी कहीजे २ गतिना अतरालमा उदय आवे ते क्षेत्र विपाकी कहीये ३ जे भव–नारकादिक मध्ये उदये आवे, ते भवविपाकी कहीजे ४ एव सोळ द्वार थया. बंधना विधिभेद ४ प्रकृतिबंध १, स्थितिबंध २, रसबंध ३, प्रदेशबंध ४, इतले २० द्वार थया स्वामी–प्रकृतिबंध स्वामि १, स्थितिबंध स्वामी २, रसबंध स्वामी ३, प्रदेशबंध स्वामी ४ च कहेतां उपशमश्रेणि १, क्षपकश्रेणि २, एव २६ छवीस द्वारें करी शतकनामे कर्मग्रंथ कहीशु १ तिहां प्रथम ध्रुवबंधि द्वार कहे छे ॥ १ ॥

वन्नचउतेयकम्मा, ऽगुरुलहु निमिणोवघाय भयकुच्छा।
मिच्छ कसाया वरणा, विग्धं धुवबंधि सगचत्ता ॥२॥

अर्थ—वर्णादिक ४ च्यार, वर्ण गंध २, रस ३, स्पर्श ४ ए समुदाये ध्रुवबंधी छे श्वेतादिक भिन्न वर्ण ते अध्रुवबंधी छे, पर एक वर्ण हरकोइ नियमा बंधाय. तैजस शरीर १, कार्मण शरीर २, अगुरुलघुनामकर्म ३, निर्माण नामकर्म ४, उपघात- नामकर्म ए नव नाम प्रकृति छे भयमोहनी १, दुगंछा

कहेतां दुगंच्छा मोहनी २, मिथ्यात्व मोहनी १, कषाय १६ अनंतानुबंधीक्रोध, मान, माया, लोभ, ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ पछी प्रत्याख्यानी ४ संज्वलन ४, ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ४, अंतराय ५, ए सर्व सडताळीस ४७ प्रकृति ध्रुवबंधि छे. ए मध्ये नव नामकर्मनी ९ ओगणीस मोहनीनी १९ पांच ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी च्यार ४, पांच अंतराय ५, एवं ४७ सुडताळीस ध्रुवबंधी जाणवी. द्वार १. ॥ २ ॥

तणुवंगागिइसंघयण, जाइ गइ खगइ पुंव्वि जिणसासं। उज्जोया यवं परघा, तसवीसा गोयं वेयणियं ॥३॥

अर्थ—हवे अध्रुवबंधि ७३ कहे छे, तिहां तणु कहेतां शरीर १, औदारिक १, वैक्रिय २, आहारक ३ तैजस, कार्मण ध्रुवबंधिमे गण्या छे माटे इहां न कह्या. उपांग ३, अने संस्थान ६ संघयण ६, जाति ५, गति ४, खगति कहेतां विहायोगति २, आनुपूर्वी ४, जिननाम १, उश्वास १, उद्योतनाम १, आतप १, पराघात १, त्रस दशक थावरनी दस एवं वीस गोत्र २, वेदनीयकर्म २, हास्य रतिनो जोडो १, अरति शोकनो जोडो एवं जुगल. ॥ ३ ॥

हासाइजुयलदुगं, वेयं आउं तेवुत्तरीअधुवबंधी ७३। दारं २। भंगा अणाइ साइ, अणंत संतुत्तरा चउरो ॥ ४ ॥

अर्थ—हास्यादि जुगल बे, वेद ३, आउखां ४ च्यार ए ७३ अध्रुवबंधि ते कोइवार बंधाय कोइवार न बंधाय, ए मध्ये ७ प्रकृति मोहनीनी, २ वेदनीयनी, २ गोत्रनी, ४ आ-

युनी, ५८ नामकर्मनी छे. एवं ७३ छे अने ध्रुवबंधि ४७ अध्रुवबंधी ७३ मिळ्या १२० एकसोवीस प्रकृति थइ, हवे चउ ४ भगी अणाइ कहेता अनादि १, साइ सादि २ तथा अनत तथा सात जोडीये, तिवारे अनादिअनत १, प्रथमभंग अनादि सान्त ए द्वितीयभग, सादि अनत ए त्रीजो भग सादिसान्त ए चोथो भग, ए चोभगी जाणवी ॥ ४ ॥

पढमवियाधुवउदइसु, धुवबंधिसु तइय वज्जभंग तिगं।
सिच्छंमि तिन्निभंगा, दुहावि अधुवा तुरिय भंगा॥५॥

अर्थ—तिहा ध्रुवउदयी प्रकृतिमध्ये प्रथम १, तथा २, बीजो ए बे भागा छे—अनादि सान्त भव्यमे २, ए बे भगा छे तथा ध्रुवबंधि प्रकृतिनेविषे त्रीजो वर्जीने तीन भग छे तिहा अभव्य आश्रयि अनादि अनत छे जे कारणे अनादि-काल बांधे छे, अने ते सदाकाल बांधे तिणे अनतबंध छे, भव्यजीवने अनादि सान्त छे, ए योग्यतानो सून छे सादि अनत ए भग कर्म स्वरुपे संभवे नहीं अने सादिसान्त भग जीव उपशम श्रेणिए चढी इग्यारमे गुणठाणे सर्व प्रकृतिनो अबंध थयो, ते वळी पाछो पडीने सर्व बंध करे ते सादि, अने ते जीव वळी कर्म क्षय करीने सिद्ध थाय तिवारे सान्त थाय, ए तीन भग छे, मिथ्यात्वने ध्रुवोदये तीन एहिज भग छे, तथा अध्रुवबंध तथा अध्रुवोदयनेविषे एक चोथो भागो सादिसान्त ए छे ॥ ५ ॥

निमिणं थिरं अथिरं अगुरुयं, सुहं असुहं तेअ कम्म चउवन्नां।
नाणं तरायं दंसण, मिच्छं धुवउदय सगवीसा ॥६॥

अर्थ—निर्माण नाम १, स्थिरनाम १, अगुरुलघु नाम १, शुभ नाम १, अशुभनाम १, तैजसशरीर १, कार्मणशरीर १, वर्णनाम १, गंधनाम १, रसनाम १, स्पर्शनाम १, एवं १२, बार नाम कर्मनी प्रकृति पांच ज्ञानावरणी ५, पांच अंतराय ५, च्यार दर्शनावरणी ४, एक मिथ्यात्व मोहनी १, ए सत्तावीस २७, प्रकृति ध्रुवउदयी जाणवी. ते मध्ये वर्ण गंध रस, स्पर्श, ४, नी ए रीत छे, जे पांच वर्ण मध्ये कोइक वर्ण नियमा मुख्यताए उदय होवे, तिणे ध्रुवउदयी. इम गंधादिकनो जाणवो. ए सत्तावीस मध्ये ज्ञानावरणी पांच, अंतराय पांच, दर्शनावरणी ४, मोहनी १, नाम कर्मनी १२, एवं २७ छे. ॥ ६ ॥

थिरे सुभिं अरं विणु अधुव–,बंधी मिच्छ विणुमोह धुवबंधी ।
निद्दो वघायं मीसं, सम्मं पण नवइ अधुवुदया ॥ ७ ॥

अर्थ—हवे अध्रुवोदयी कहे छे–जे अध्रुवबंधि प्रकृति ७३, ते मध्ये थिर १, अथिर २, शुभ ३, अशुभ ४, ए ४, च्यारविना ६९ लेवी, अने मोहनीनी १९ ध्रुवबंधि कही छे, तेमांथी मिथ्यात्व मोहनी वरजीने शेष १८, रहे ते. पिण अध्रुवोदयमे गणी छे. शरीर ३, उपांग ३, संस्थान ६, संघयण ६, जाति ४, गति ४, विहायोगति २, आनुपूर्वी ४, जिननाम १, श्वासोच्छ्वास १, उद्योत १, आतप १, पराघात १, थिर १, शुभविना त्रसादि ८, अथिर अशुभविना थावरादि ८, गोत्र २, वेदनीय २, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, वेद १, आउ ४, ए ६९, सोळ कसाय भय १,

दुगछा १, निद्रा ५, उपघात १, मिश्र १, सम्यक्त्वमोहनी १, ए ९५ अध्रुवउदयी सर्व गतिना जीवने सर्वकाले उदय न हुवे ते माटे अध्रुवकहीजे ए मध्ये दर्शनावरणी, ५, वेदनीय २, मोहनीय २७, आयु ४, नामकर्मनी ५५, गोत्र २, ए ९५, अध्रुवोदयि जाणवी ॥ ७ ॥

तसवन्नवीसं–सगतेयकम्मं धुववंधिसेसं वेयतिगं ।
आगिइतिगं वेयणियं, दुजुयलं सगउरलं सासचउ ८॥

अर्थ—हवे ध्रुवसत्ता–त्रसवीस कहेता त्रस १०, थावर १०, वर्ण २०–५, वर्ण २, गंध ५, रस ८, स्पर्श, एव २०, तैजसकार्मण ७. तैजसशरीर, तैजसबंधन २, तैजससंघातन ३, कार्मणशरीर ४, कार्मणबंधन, ५, कार्मणसंघातन ६, तैजसकार्मणबंधन ७, शेष ध्रुवबंधि ४१, ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी नव ९, मोहनीय १९, अगुरुलघु १, निर्माण १, उपघात १, अंतराय ५, एव ४१, वेद ३, आकृतित्रिक ३, तेहनी प्रकृति १७ संस्थान ६, संघयण ६, जाति ५, एवं १७, वेदनीय २, हास्य १, रति १, अरति १, शोक १, ए च्यार औदारिक सात–औदारिक शरीर १, औदारिकउपांग २, औदारिकबंधन ३, औदारिक तैजसबंधन ४, औदारिक तैजसकार्मणबंधन ५, औदारिक संघातन ६, औदारिककार्मणबंधन ए ७, एवं सात श्वासोच्छ्वासथी च्यार ४,–श्वासोश्वास १, उद्योत १, आतप १, पराघात १, ए च्यार ॥ ८ ॥

खगई तिरिदुगं नीयं, धुवसंता सम्ममीसमणुयदुगं ।
विउविक्कारजिणाऊ, हारसगुच्चा अधुवसंता ॥ ९ ॥

अर्थ—खगतिदुग–शुभविहायोगति १, अशुभविहायोगति २, तिरिदुग कहेतां तिर्यंचगति १, तिर्यंचानुपूर्वी २, नीचगोत्र १, एकसोत्रीस ध्रुवसत्ता जाणवी. ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ९, वेदनी २, मोहनीय २६, नामकर्मनी ८२, गोत्र १, अंतराय ५, एवं १३० ध्रुवसत्ता जाणवी. ध्रुव जे च्यार ४ गतिना जीवमां सदा छती पामीये ते ध्रुव कहीजे. हवे अध्रुवसत्ता २८ नां नाम कहे छे. समकीतमोहनी १, मिश्र मोहनी २, मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी २ वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय उपांग २, वैक्रिय बंधन ३, वैक्रियतैजसबंधन ४, वैक्रियकार्मणबंधन ५, वैक्रियतैजसकार्मणबंधन ६, वैक्रिय संघातन ७, नरकगति १, नरकानुपूर्वी २, देवगति १, देवानुपूर्वी २, एवं ११, जिननाम १२, आयु ४, आहारक ७, आहारक शरीर १, आहारक उपांग २, आहारक संघातन ३, आहारक बंधन ४, आहारकतैजसबंधन ५, आहारककार्मणबंधन ६, आहारकतैजसकार्मणबंधन एवं ७ मिळ्यां २८ अठ्ठावीस अध्रुवसत्ता. ए मध्ये २ मोहनी, २१ नामकर्मनी, ४ आउखो, १ गोत्र, एवं २८ अध्रुवसत्तानी प्रकृती जाणवी. ॥ ९ ॥

पढमतिगुणेसुमिच्छं, नियमा अजयाइ अट्ठगे भज्जं।
सासाणे खलु सम्मं, संतं मिच्छाइ दसगे वा ॥१०॥

अर्थ—हवे सत्तामें भांगा कहे छे–पढमतिगुणेसु–पेहेलां तीन गुणटाणा मध्ये मिथ्यात्व मोहनीनी सत्ता नियमा छे, एतले मिथ्यात्व गुणठाणे मिथ्यात्वनो उदय नियमा छे, तेहनी सत्तापिण नियमा छे, सास्वादन गुणठाणे २८ नी सत्ता नि-

यमा छे ने मिश्र गुणस्थाने २८, २७ ने २४ ए त्रण सत्तामा मिथ्यात्व अवश्य होय माटे, तथा अयन कहेता चोथा गुणठाणाथी ११ मा गुणठाणा लगे आठ गुणठाणे भजना जाणवी तिहा उपशम समकीतीने तथा क्षयोपशमकीतीने मिथ्यात्वनी सत्ता छे अने क्षायिक समकीतीने सप्तक क्षय गयो छे तेहने ए मिथ्यात्वनी सत्ता नथी सास्वादन गुणठाणे समकीत मोहनी नियमा सत्तायें होय हवे मिथ्यात्वथी मांडी उपशान्तमोह पर्यंत दस गुणठाणे समकीत मोहनी सत्तानी भजना जाणवी तिहा अनादि मिथ्यात्व तथा समकीत मोहनी उद्वेली हुवे ते जीवने मिथ्यात्व गुणठाणे वर्त्तते समकीत मोहनीनी सत्ता नथी, अने जे त्रिपुंजीकरण करीने मिथ्यात्वे आव्या छे तेहने छे सम्यक्त्वमोह उवेलीने जे मिश्र गुणठाणे आव्या छे, त्या तेहने समकीत मोहनीनी सत्ता नथी. उवेलया विना जे मिश्र गुणठाणे आव्या छे, तेहने सत्ता छे. अने चोथा गुणठाणाथी इग्यारमा पर्यंत, तथा उपशमीने समकीत मोहनीनी सत्ता छे. क्षायिकसमकीतीने त्रणे मोहनीनी सत्ता नथी ते माटे भजना जाणवी ॥ १० ॥

सासणमीसेसु धुवं, मीसं मिच्छाइ नवसु भय गाए।
आइदुगे अण नियमा, भइया मीसाइ नवगंमि ॥११॥

अर्थ—सास्वादन गुणठाणे, मिश्र गुणठाणे ध्रुव नीश्चयथी मिश्रमोहनीयनी सत्ता छे, जे कारणे कृतत्रिपुंजी जीव ए गुणठाणे आवे, अने मिथ्यात्व १, अविरति समकीतथी उपला ८ उपशान्तमोह सुधी एव ९ नव गुणठाणे भजना जाणवी. हवे न होवे. तिहां अनादि मिथ्यात्वी छवीस सत्तावत छे,

तेहने मिथ्यात्व गुणठाणे छतां मिश्रमोहनीनी सत्ता नथी, अने जे त्रिपुंजीकरण करीने पड्या जे मिथ्यात्व गुणठाणे आव्या छे. तेहने मिथ्यात्वनी सत्ता हुवे ए भजना, ए अविरति समकीतथी मांडी उपशान्तमोह पर्यंत ८ गुणठाणे उपशम समकीतीने मिश्रनी सत्ता होय. क्षायिक समकीतीने सप्तक क्षय थयो छे, ते माटे मिश्रमोहनीनी सत्ता नथी. ते माटे भजना जाणवी. आइदुगे–मिथ्यात्व, सास्वादन ए वे गुणठाणे अनंतानुबंधीनी सत्ता नियमा होवे. अने मिश्रादिक नव गुणठाणे भजना जाणवी. तिहां मोहनी कर्मनी २४ सत्तावाळो क्षयोपशमसमकीती जीव चोथाथी पडीने मिश्रे आव्यो, तेहने मिश्र गुणठाणे अनंतानुबंधीनी सत्ता नथी, अने जे २८ अट्ठावीस सत्तावंत क्षयोपशमसमकिती चोथाथी पडी मिश्रे आव्यो, ते अथवा २८ सत्तावंत मिथ्यात्वी मिथ्यात्व मुंकी मिश्रे आव्यो, तेहने अनंतानुबंधीनी सत्ता छे, तथा अविरतिथी उपशान्तमोह सुधी क्षायिकसमकीतीने नथी, तथा उपशमीने छे ए भजना जाणवी. ॥११॥

आहारगसत्तगंवा, सव्वगुणेबितिगुणे विणा तित्थं।
नोभयसंतेमिच्छो, अंतमुहुत्तं भवे तित्थे ॥ १२ ॥

अर्थ—आहारकसप्तकनी सत्ता सर्व गुणठाणे १४ गुणठाणानेविषे वा कहेतां भजना. होय अथवा न होय. जे जीव ७ तथा ८ गुणठाणे आहारक बांधीने ते पड्यो अथवा चड्यो, तेहने तो आहारकनी सत्ता होय, अने जे जीव आहारक बांध्याविना पडे अथवा चडे तेहने न होय. अथवा आहारक बांधीने उद्वलनाकरणे करी उवेली काढ्यो, तेहने

पण आहारक ७ नी सत्ता नथी तथा तित्थे–तीर्थंकर नामनी सत्ता बीजे सास्वादने त्रीजे मिश्र गुणठाणे सर्वथा नथी. मिथ्यात्व तथा अविरति समकीती प्रमुख अयोगी पर्यंत १२ बार गुणठाणे भजना जाणवी जिणे जीव ४, तथा ५, तथा ६, तथा ७ मेने ८ में गुणठाणे जिननाम बाधी ए १२ गुणठाणे आव्या होवे, तेहने जिननामनी सत्ता पामीजे जिणे बांध्यो न होय अथवा बाधीने उवेली आव्यो होय, तेहने जिननामनी सत्ता न होये तथा जिननाम, आहारकनी युगपत् सत्ता जेहने होय, ते उभय सत्तावत मिथ्यात्व गुणठाणे न आवे तथा जेहने तीर्थंकर नाम विपाकी सत्ता होय, ते जो मिथ्यात्व गुणठाणे (नरकायुना) निकाचित उदय माटे आवे, ते पिण अतर्मुहूर्तकाल मिथ्यात्वपणे रहे, पिण वधतो काल रहे नहीं इम जाणवो ॥ १२ ॥

केवलजुयलावरणा, पणनिद्दा बारसाइमकसाया ।

मिच्छं ति सवघाई, चउनाणं तिदंसणावरणा ॥१३॥

अर्थ—हवे घातीसत्ये २०, सर्व घाती कहे छे–केवलजुगल केहेतां, २, केवलज्ञान १, तथा केवलदर्शन २, तेहना आवरण–केवलज्ञानावरणी १, तथा केवलदर्शनावरणी २, पाच निद्रा ५, आदि धुरला १२, कषाय अनतानुबंधीः ४, अप्रत्याख्यानी ४, प्रत्याख्यानी ४, ए १२, मिथ्यात्व १, ए २०, वीस सर्वघाती जाणवी, तथा देशघाती २५, पचीस प्रकृति छे ते कहे छे, च्यार ४, ज्ञानावरणी ४, त्रण्य दर्शनावरणी. ॥१३॥

संजलण नोकसाया, विग्घं इअ देसघाइ्यँ अघाई ।
पत्तेय तणुट्ठाऊ, तसवीसा गोअदुग वण्णा ॥ १४ ॥

अर्थ—संजलणा ४, नोकषाय ९, अंतराय ५, एम पूर्वोक्त मेळवतां २५, पचीस ए देशघाती छे. तथा अघाती ७५, छे तिहां पराघात १, उश्वास १, आतप १, उद्योत १, निर्माण १, अगुरुलघु १, तीर्थंकर १, उपघात १, तणु आठनी प्रकृति ३५, शरीर ५, उपांग ३, संस्थान ६, संघयण ६, जाति ५, गति ४, खगति २, आनुपूर्वी ४, आउखां ४, त्रस १०, थावर दस १०, गोयदुग—बे गोत्र २, वेदनी बे २, वर्ण १, गंध, २, रस ३, स्पर्श ४, ए ७५, अघाती प्रकृति जाणवी, जे गुणनो घात न करे ते अघाती कहेवी. ॥ १४ ॥

सुरनरतिगुच्चसायं, तसदस तणुवंग वइर चउरंसं ।
परघासग तिरिआउ, वन्नचउ पणिंदि सुभखगई ॥ १५ ॥

अर्थ—हवे पुन्यप्रकृतिना ४२, भेद कहे छे—सुरत्रिक—देवगति १, देवायु २, देवानुपूर्वी ३, तथा मनुष्यगति १, मनुष्यानुपूर्वी २, मनुष्यायु ३, नरत्रिक मळी ६, उच्चैर्गोत्र ७, सातावेदनी ८, त्रसदशक, १८, शरीर पांच २३, उपांग त्रण २६, वज्ररुषभनाराच २७, समचोरस संस्थान २८, पराघात सप्तक पराघात २९, उश्वास ३०, आतप ३१, उद्योत ३२, अगुरुलघु ३३, निर्माण ३४, तीर्थंकरनामकर्म ३५, तिर्यंच-आयु ३६, शुभवर्ण ३७, गंध ३८, रस ३९, स्पर्श ४०, पंचेन्द्री जाति ४१, शुभविहायोगति ४२, ए ४२, बेताळीस पुण्यप्रकृति जाणवी. जेहना विपाक भोगवतां मीठा लागे ते पुन्यप्रकृति. ॥ १५ ॥

वायालपुन्नपगई[४२], अपढम संठाणं खगंइ संघयणा।
तिरिदुंग असायं नीओ-वंघायं इगं विगंल निरयंतिगं१६

अर्थ—४२, पुण्यप्रकृति थइ हवे ८२, पाप प्रकृति कहे छे, अपढम-पेहेलु सस्थान, पेहेली खगति-विहायोगति, सघयण ए ३ वर्जीने बीजी सर्व पाप प्रकृति छे न्यग्रोध सस्थान १, सादि, २, वामन, ३, कुब्ज, ४, हुड ५, ए पांच सस्थान, तथा अशुभविहायोगति ६, तथा रुषभनाराच सघयण ७, नाराच ८, अर्धनाराच ९, कीलिका १०, छेवट्ठो ११, तिरिदुग-तिर्यंचगति १२, तिर्यंचानुपूर्वी १३, असातावेदनी १४, नीचगोत्र १५, उपघात १६, एकेन्द्रीनी जाति १७, विगलतिग द्वीन्द्रिय १८, त्रीन्द्रिय १९, चौरेन्द्रीनी जाति २०, नरकत्रिक ते नरकगति २१, नरकानुपूर्वी २२, नरकायु २३, ॥ १६ ॥

थावर दसं वन्नचउक्क, घाइपणयालंसहिअ वासीई।
पावपयडित्ति[८२] दोसुवि वन्नाइगहा सुहा असुहा ॥१७॥

अर्थ—थावरनो दशक ३३, अशुभवर्ण ३४, रस ३५, गंध ३६, स्पर्श ३७, तथा घातीनी ४५, ते ज्ञानावरणी ५, मोहनी २६, अतराय ५, एव ४५, सहीत करीये, एटले ८२, प्रकृति पापनी जाणवी इहा पापना ८२, भेद, तथा पुण्यना ४२ भेद ते मेळता १२४, प्रकृति १२, ते वधने तो १२०, छे? तेहनो उत्तर–जे शुभवर्णादि ४, पुन्यमे गवेष्या, अशुभवर्णादि पापमे गवेष्या, ते माटे दुवारे (वेवार) गणतां १२४, थाय छे इमज. ॥ १७ ॥

नामधुववंधि[९] नवगं, दंसण[४] पणनाण[५] विग्घं[५] परघायं।
भय कुच्छ मिच्छ सासं, जिणगुणतीसा अपरिअत्ता १८

अर्थ—हवे अपरावर्त्तमान प्रकृति कहे छे-नामनी ध्रुवबंधी ९, वर्णादि ४, निर्माण १, अगुरुलघु १, उपघात १, तैजस १, कार्मण १, ए ९, तथा दर्शनावरणी ४, पणनाण-ज्ञानावरणी पांच, विग्घं-अंतराय पांच, पराघात १, भय, दुगंछा, मिथ्यात्व, उश्वास, जिननाम ए इगुणत्रीस २९, ए अपरावर्त्तमान जाणवी. अपरावर्त्तमान एटले जे प्रकृति कोनो बंध तथा उदय रोक्या विना पोताना हेतु सद्भावे बंधाय, तथा उदय आवे, ते अपरावर्त्तमान कहीये. ॥१८॥

तणु[३३]अट्ठ वे[३]अ दुजु[४]अल, कसा[१६]य उज्जो[२]अ गो[२]अ दुगनिद्दा[५]।
तस[२०]वीसा उ[४] परित्ता, खित्तविवागाणुपुव्वीओ ॥१९॥

अर्थ—परावर्त्तमान प्रकृति ९१, कहे छे, जे तणुअट्ठ-शरीर ३, उपांग ३, संस्थान ६, संघयण ६, जाति ५, गति ४, खगति २, आनुपूर्वी ४, एवं ३३, तथा वेद त्रण ३६, दुजुयल-हास्य रति, तथा शोक अरति ४०, कषाय सोळ ५६, उद्योत ५७, आतप ५८, गोत्र बे ६०, वेदनीय बे ६२, निद्रा पांच ६७, त्रस थावरना दसकानी मळी वीस ८७, चार आउखा ९१, ए एकाणुं परावर्त्तमान प्रकृति जाणवी. जे ए बंध तथा उदयमां एकने रोकीने बंधाय अथवा उदये आवे ते परावर्त्तमान कहीजे. हवे क्षेत्रविपाकी-क्षेत्र कहेतां आकाश तिहां जेहनो विपाक जे ते क्षेत्रविपाकी च्यार ४, आनुपूर्वी छे, जे एक भवथी बीजे भव जतां वाटे विपाके

उदय पामीये छीये, जो प्रदेशोदय न मानीयेतो एहनी स्थिति किहा भोगवाये ते माटे ॥ १९ ॥

घणघाई दु गोअ जिणा, तसिअरतिग सुभग दुभग चउ सासं।
जाइ तिग जियविवागा, आऊ चउरो भवविवागा ॥ २० ॥

अर्थ—हवे जीवविपाकीनी ७८, प्रकृति कहे छे. तिहां जे कार्मण वर्गणापणे जे बाध्यो कर्म, ते मुख्यपणे जीवनेज विपाक देखाडे, ते जीवविपाकी कहीये. तिहां घनघाती ४७, जे ज्ञानावरणी पाच, दर्शनावरणी नव, मोहनी अट्ठावीस, अंतराय पाच, ए ४७, दुगोय बे गोत्र, बे वेदनीय ४, जिननाम १, त्रसत्रिक त्रस १, बादर २, पर्याप्त ३, इअर–थावरत्रिक थावर १, सूक्ष्म २, अपर्याप्त ३, सुभगचउ–सुभग १, सुस्वर २, आदेय, जश ४, दुभगचउ–दुर्भग १, दुस्वर २, अनादेय ३, अजश ४, श्वासोश्वास १, जातित्रिक कहेता—जाति ५, गति ४, खगति २, ए ११ इग्यार ए सर्व मिळी ७८ प्रकृति जीवविपाकी जाणवी तथा आउखां च्यार ४ भवविपाकी जाणवा आउखा पोताना भवमेज उदये आवे, पण बीजे भवे संक्रमण तथा [illegible]पणे पिण उदय न आवे, ते माटे भवविपाकी कह्या ॥ २० ॥

नामधुवोदय चउतणु, वघाय साहारणियर जोयतिगं।
पुग्गलविवागि बंधो, पयइट्ठिइ रस पएसत्ति ॥२१॥

अर्थ—नामकर्मनी ध्रुवोदयी १२, वर्णादि ४, तैजस १, कार्मण १, निर्माण १, अगुरुलघु १, थिर १, अथिर १, अशुभ १, ए १२ चउतणु—शरीर ३, उपांग ३, संस्थान ६, संघयण ६, ए १८ तथा उपघात १, साधारण १, प्रत्येक १, उद्योतत्रिक—उद्योत १, आतप २, पराघात ३ एवं ३६ छत्रीस प्रकृति पुद्गलविपाकी जाणवी. पुद्गलविपाकी कहेतां जे बंधकाले कार्मण वर्गणापणे बांध्यां, ते उदयकाले शरीरप्रत्ये विपाक देखाडे, ते पुद्गलविपाकी कहीजे. इहां कोई पूछस्ये जे कार्मणनी तो वर्गणा नवि लेवाये, ते पिण सोलगुणी छे, तो उश्वासनीपरें जीवविपाकीमें कां गणता नथी? तेहने उत्तर जेः—कार्मणवर्गणा तो आहारपर्याप्तिने बले लेवाये, ते माटे पुद्गल विपाकी छे. श्वासोश्वास, सुस्वर, ते तो उश्वासपर्याप्ति तथा भाषापर्याप्तिने उदयबले ले छे ते माटे जीवविपाकी गणी छे. हवे बंधना भेद ४ च्यार कहे छे. प्रकृतिबंध १, स्थितिबंध, २, रसबंध ३, प्रदेशबंध ४ तिहां पेहेलां प्रकृतिबंधना भेद कहे छे. ॥ २१ ॥

मूलपयडीण अड सत्त, छेग बंधेसु तिन्निभूगारा ।
अप्पत्तरा तिअ चउरो, अवट्ठिआ न हु अवत्तव्वा ॥२२॥

अर्थ—मूळ कर्म आठ छे, तिहां मूळ आठ प्रकृति एक समे एक जीव बांधे. जे नवा भवनो आउखो बांधतो हुवे ते आठ बांधे, जे जीव आउखो न बांधतो हुवे ते सात बांधे, तथा दसमे गुणठाणे वर्त्तता मुनिने आउखो, मोहनी, न बांधे तिवारे छ ६ बंधाये, तथा इग्यारमे, बारमे, तेरमे गुणठाणे एक सातावेदनीय बांधे, ते माटे एकविध बंध छे.

एतले मूळ बंधनां थानक ४ च्यार छे इहां तीन ३ भूयस्कार जाणवा, इग्यारमे गुणठाणे एक बंधक हतो, ते इग्यारमाथी पडी दशमे आवी ६ छ बाधे, तिवारे १ भूयस्कार, वळी नवमे गुणठाणे आवे तिवारे ७ सात बाधे, ते बीजो भूयस्कार, तथा ते जीव जीवारे आठ बाधे तिवारे त्रीजो भूयस्कार जाणवो, अल्पतर तीन छे, ते जे आठनो बधक ते सात बांधे तिवारे एक अल्पतर, सातथी छ बांधे ते बीजो अल्पतर, अने छ थी एक बाधे तिवारे त्रीजो अल्पतर, ए तीन अल्पतर जाणवा. तथा आठनो १, अवस्थित सातनो बीजो अवस्थित, छनो त्रीजो अवस्थित, एकनो चोथो अवस्थित, ए ४ च्यार अवस्थित जाणवा. मूळ बंधे अवक्तव्य बध नथी, जे मूळथी अबंधक थइने पाछो बंधक थतो नथी. ॥ २२ ॥

एगादहिगे भूओ, एगाईऊणगम्मि अप्पतरो ।
तम्मत्तोऽवट्ठियओ, पढमे समये अवत्तवो ॥ २३ ॥

अर्थ—एकादिक अल्पबंधथी जे अधिको बंध बाधे ते भूयस्कार बध कहीये. जिम एक बध करतो तिणे वळी एक अधिको बाध्यो; तिणे पहेले समये भूयस्कार कहीये, अने जे पूर्व बंधथी एक तथा घणा पिण ऊणा बाधे ते अल्पतर जिम आठनोबध करतो ते सात बाधे ए अल्पतर जाणवो, अने जे थानक बाधतो हतो तेहिज बीजे समे बांधे, ते अवस्थित कहीये, ते मान ते ते प्रमाणेज बांधे ते अवस्थित बंध जाणवो, अने अबंध थइ प्रथम समये जे बाधे तेहने अवक्तव्य कहीये, जिम दसमे, इग्यारमे, गोहत्तो कर्मनो अबंधक हतो, ते पड़ना नवमे गुणठाणे आवे

एक बांधे एहने अवक्तव्यबंध कहीये, कोयथी अधिको नथी तिणे भूयस्कार नही, कोयथी ऊणो नथी, तिणे अल्पतर नथी, तेनो ते पण नथी ते माटे अवस्थितपण नथी ए अवक्तव्य कहीये. ॥ २३ ॥

नव छ चउ दंसे दु दु, ति दु मोहे दु इगवीस सत्तरस।
तेरस नव पण चउ ति दु, इक्को नव अट्ठ दस दुन्नि ॥२४

अर्थ--हवे दर्शनावरणी कर्मनां बंधस्थानक ३ तीन छे. पेहेलो नवनो स्थानक छे, ए मिथ्यात्व, सास्वादन गुणठाणे छे. पछे सास्वादनने अंते थीणद्धी तीन काढीजे तिवारे, मिश्रथी मांडी आठमा गुणठाणा सीम छनो बंध स्थानक छे, तथा आठमाना बीजा भागथी मांडी दसमा गुणठाणाना सीम च्यार ४ नो बंध इम थानक च्यार ४ नो छे, दर्शनावरणी कर्मने भूयस्कार बे छे. जे दसमे गुणठाणे च्यार ४ बांधतो हतो ते आठमे आव्ये ६ छ बांधे ते एक भूयस्कार, छथी सास्वादनमे आवी नव बांधे ते बीजो भूयस्कार, ए बे भूयस्कार जाणवा. अथवा नव बांधी छ बांधे ए पेहेलो अल्पतर, तथा ६ बांधी, ४ बांधे ते बीजो अल्पतर, तथा ९, तथा ६, तथा ४ ए तीन अवस्थित, तथा कोइ जीव इग्यारमे गुणठाणेथी पडी १० मे आवे ते अबंधक थइ च्यार ४ बांधे ते पेहेलो अवक्तव्य, अथवा इग्यारमे मरण पामीने चोथे आवी ६ बांधे ए बीजो अवक्तव्य जाणवो.

हवे मोहनीय कर्मनां बंधस्थानक १० छे ते प्रथम २२ नो बीजो २१ नो, त्रीजो १७ नो, चोथो १३ नो, पांचमो ९ नो,

छट्ठो ९ नो, सातमो ४ नो, आठमो ३ नो, नवमो २ नो, दसमो १ नो, ए दस बंधस्थानक जाणवा, इहा नव भूयस्कार बंध छे. तिहा एकथी बे बाधे ते पेहेलो भूयस्कार, बेथी तीन बांधे ते बीजो भूयस्कार, तीनथी च्यार ४ बाधे ते त्रीजो भूयस्कार, च्यारथी पांच बाधे ते चोथो भूयस्कार, पाचथी नवनो पांचमो, नवथी तेरनो छट्ठो, तेरथी सत्तरनो सातमो, सत्तरथी एकवीसनो आठमो, एकवीसथी २२ नो नवमो भूयस्कार जाणवो, अल्पतरमा बावीसथी २१ एकवीसनो बंध करे नही, जे माटे मिथ्यात्वथी सास्वादन गुणठाणे जीव न आवे, ते माटे बावीसथी सत्तरनो पेहेलो अल्पतर, सत्तरथी १३ नो बीजो, तेरथी ९ नो त्रीजो, नवथी पांचनो, पांचथी ४ नो, ४ थी ३ नो, ३ थी बेनो, बेथी एकनो, ए ८ अल्पतर जाणवा तेह दस स्थानक ते दस अवस्थित जाणवा ते जे मुनि इग्यारमें चढी मोहनीकर्मनो-अबंधक थयो, ते पडतो नवमे आवी पेहेले समये १ लोभ बांधे, ते माटे एकनो अवक्तव्य बाधे ते पेहेलो अवक्तव्य, एह कोयी अधिको नथी अल्प नथी अने अबंध थइ प्रथम बाध्यो ते माटे १ नो अवक्तव्य कहीये, तथा जे जीव इग्यारमें काल करे ते चोथे गुणठाणे आवी १७ सत्तर बांधे ए बीजो अवक्तव्य, इहा भूयस्कार, तथा अल्पतर, तथा अवक्तव्य बंधनो एक समय काल छे शेष सर्व अवस्थितनो काल छे. ॥ २४ ॥

तिं[23] पण[25] छ[26] अट्ठ[28] नवहिया[29], वीसा तीसे[30] गतीस[31] इग नामे
छस्सग अट्ठ तिं बंधा, सेसेसु य ठाण मिक्किक्कं ॥२५॥

पयडिबंधो समत्तो ॥

अर्थ—हवे नामकर्मनां स्थानक ८ आठ छे, तिहां पेहेलो त्रेवीसनो, बीजो २५ नो, त्रीजो २६ छवीसनो, चोथो अठ्ठावीस २८ नो, पांचमो २९ नो, छठ्ठो ३० नो, सातमो एकत्रीसनो ३१ नो, आठमो एक १ नो, ए भूयस्कार ६ छ जाणवा, तेवीसथी पचवीसनो पेहेलो भूयस्कार, पचवीसथी २६ नो बीजो, २६ थी २८ नो त्रीजो, २८ थी २९ नो चोथो, २९ थी ३० नो पांचमो, ३० थी ३१ नो छठ्ठो, भूयस्कार छे. अल्पतर ७ छे ते ३१ थी १ नो पेहेलो अल्पतर, ३१ थी ३० नो बीजो अल्पतर, इहां कोइक जीव ३० थी १ नो बंध करे, पिण ते एकना अल्पतर मध्येज गण्यो तिणे जुदो गणवो नथी, तथा ३० थी २९ नो त्रीजो, २९ थी २८ नो चोथो, २८ थी २६ नो पांचमो, २६ थी २५ नो छठ्ठो, २५ थी २३ नो सातमो अल्पतर जाणवो, बंधस्थानक वेहज ८ अवस्थित जाणवां. इहां अवक्तव्य ३ तीन छे—ते जे मुनि इग्यारमे गुणठाणे नामकर्मनो अबंधक छे, ते इग्यारमाथी पड्या १० मे आवी १ बांधे, ए पेहेलो अवक्तव्य, तथा जे इग्यारमें काल करे ते चोथे आवे ते देवप्रायोग्य २८ बांधे ए बीजो, अथवा कोइक जीव २९ जिननाम सहित बांधे ए त्रीजो अवक्तव्य, ३१ थी १ नो पहेलो, ३१ थी ३० नो बीजो, ३० थी २९ नो त्रीजो, ए नामकर्मना ३ अवक्तव्य जाणवा. शेष जे ज्ञानावरणी. आयु, वेदनीय, गोत्रकर्म अंतराय, ए पांच कर्मनो एकेक बंधस्थानक, वेदनीय विना ४ च्यार कर्मने अवस्थित तथा अवक्तव्य ए बे बंध छे, वेदनी कर्मने एक अवस्थित बंध छे, वेदनीयनो अबंधक थइ बंध करे नहीं, ते माटे अवक्तव्य नथी. ए प्रकृतिबंध अधिकार कह्यो, इति प्रकृतिबंध समाप्त. द्वा० १७.॥२५॥

वीसयरकोडिकोडी, नामे गोएय सत्तरी मोहे ।
तीसयरचउसुउदही, निरय सुराउंमि तित्तीसा॥२६॥

अर्थ—हवे मूळ कर्म आठ त्हेनी उत्कृष्ट स्थिति छे ते कहे छे—वीसयर—वीसकोडाकोडी सागर नामकर्म तथा गोत्रकर्मनी उत्कृष्टी स्थिति छे ते जाणवी, मोहनीकर्मनी ७० सीत्तेर कोडाकोडी सागरनी उत्कृष्टी स्थिति छे, चउसु—ज्ञानावरणी, १ दर्शनावरणी २, वेदनीय ३, अतराय ४, ए च्यार ४ कर्मनी ३० कोडाकोडी सागरनी उत्कृष्टी स्थिति जाणवी. नरकना आयु तथा, देवताना आउखानी उत्कृष्टी, स्थिति, तेत्रीस सागरोपमनी जाणवी. उत्कृष्ट स्थिति उत्तर प्रकृतिनी पिण इहांथी गणज्यो. हवे मूल कर्मनी जघन्य स्थिति कहे छे, मुत्तु—अकषायवेदनीयनी स्थिति, वर्जिने शेष सकषायीजीव, वेदनीयकर्मनी स्थिति जघन्यें अतमूहूर्त्तनी बाधे छे अथवा १२ मूहूर्तनी बाधे छे, ए दसमे गुणठाणे बाधे. इहा दसमा गुणठाणाना आदि-अध्यवसायें.॥२६

मुत्तुंअकसायठिइं, बारमुहुत्ता जहन्न वेअणिए ।
अट्ठट्ठनामगोए—सु सेसएसु मुहुत्तंतो ॥ २७ ॥

अर्थ—अकषायी ते ११ मुं, १२ मु, १३ मु, ए ३ गुणठाणामां काषायिक स्थिति जे छे तेने मुकीने एटले १० दसमे गुणठाणे जे जीव छे ते जीवने वेदनीयनी स्थिति १२ बार मुहूर्त्त जघन्यथी होय, दसमा गुणठाणाना पेहेले अध्यवसाये मुहूर्त्त मोटो लेवो, अत्यअध्यवसायें मुहूर्त्त न्हानो लेवो, तथा क्षपकथी उपशमश्रेणिमा बिमणो बध जाणवो, नामकर्म, गोत्रकर्मनी जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त्तनी छे. शेष जे ज्ञानावरणी तथा दर्शना-

वरणी, आउखो तथा मोहनी, तथा अंतरायनी जघन्य स्थिति १ एक अंतर्मुहूर्त्तनी जाणवी. ॥ २७ ॥

विग्घा वरण असाए, तीसं अट्ठार सुहुम विगलतिगे। पढमागिई संघयणे, दसदुसुचरिमेसु दुगवुड्ढी ॥२८॥

अर्थ—हवे उत्तर प्रकृतिनी उत्कृष्ट स्थिति जणावे छे. अंतराय पांच ५, ज्ञानावरणी पांच, दर्शनावरणी नव एवं आवरण १४ असातावेदनीय १ ए वीस प्रकृतिनी तीस कोडाकोडी सागर उत्कृष्ट स्थिति जाणवी. तथा सूक्ष्मत्रिक, विकलत्रिक, ए छ प्रकृतिनी अढार कोडाकोडी, प्रथम संघयण वज्रऋषभनाराच, प्रथम संस्थान समचउरंसनी उत्कृष्ट स्थिति दस कोडाकोडी सागर, पछी उपरले एक संघयणे एक संस्थाने दुग केहेतां बे कोडाकोडी सागरनी स्थिति वधारवी, एटले ऋषभनाराच संघयणे तथा न्यग्रोध संस्थाने बार कोडाकोडी सागरनी स्थिति, तथा नाराच संघयणे, सादि संस्थाने चउद १४ कोडाकोडी सागरनी स्थिति, अर्द्ध नाराचसंघयणे, वामनसंस्थाने १६ सोळ कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति, किलीकासंघयणे, कुब्ज संस्थाने अढार १८ कोडाकोडी सागरनी स्थिति, छेवट्ठ संघयण, हुंडक संस्थाननी स्थिति वीस कोडाकोडीनी जाणवी. ए गाथा मध्ये ३८ प्रकृतिनी स्थिति कही. ॥ २८ ॥

चालीसकसाएसु, मिउ लहु निद्धुण्ह सुरहि सिय महुरे। दस दोसड्ढ समहिया, ते हालिद्दंबिलाईणं ॥२९॥

अर्थ—सोळ १६ कषायनी स्थिति ४० चालीस कोडाकोडी

सागरनी स्थिति जाणवी, मिउ–मृदुस्पर्श सित–उजळो वर्ण, मधुर–मीठो रस, ए छ प्रकृतिनी दस कोडाकोडी सागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति जाणवी, तथा हवे एक वर्णे एक रसे अढी कोडाकोडी वधारवी एटले हालिद्द–पीळोवर्ण, अंबिल–खाटो रस तेहनी साडाबार १२॥ कोडाकोडी सागरनी स्थिति जाणवी, रातो वर्ण, कसायलो रस, तेनी पनर कोडाकोडि स्थिति, नीलोवर्ण, कडुवो रस तेहनी १७॥ साडासत्तर कोडाकोडी सागर स्थिति, काळोवर्ण, तीखोरस तेनी वीस कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति जाणवी ॥ २९ ॥

दससुहविहगइ उच्चे, सुरदुगथिरछक्कपुरिसरइहासे।
मिच्छे सत्तरि मणुदुग, इत्थीसाएसु पण्णरस ॥३०॥

अर्थ—शुभ विहायोगति १, उच्चगोत्र १, सुरदुग–देवगति, देवतानुपूर्वी २, थिरछक्क–थिर १, शुभ २, सुभग ३, सुस्वर ४, आदेय ५, यश ६, ए छ थिरछक्क पुरुषवेद १, रति १, हास्य १, ए १३, तेर प्रकृतिनी दस कोडाकोडी सागर उत्कृष्टी स्थिति छे मिथ्यात्व मोहनीनी सित्तेर ७०, कोडाकोडी सागरनी उत्कृष्टी स्थिति छे, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वी, स्त्रीवेद, सातावेदनी ए ४ नी पन्नर १५ सागर कोडाकोडी स्थिति छे ॥ ३० ॥

भयकुच्छ अरइ सोए, विउवि तिरि उरल निरयदुग नीए।
तेयपण अथिर छक्के, तस चउ थावर इगपणिंदि ३१

अर्थ—भयमोहनी १, कुच्छ–दुगंछा १, अरति १,

शोकमोहनी १, वैक्रिय शरीर, वैक्रिय उपांग, ए बे, तिर्यंचगति तिर्यंचानुपूर्वी, ए बे, औदारिक शरीर, औदारिक उपांग ए बे, नरकगति, नरकानुपूर्वी ए बे, नीचैर्गोत्र १. तैजस पांच-तैजस १, कार्मण २, अगुरुलघु ३, निर्माण ४, उपघात ५, ए पांच अथिरछक्क ते अथिर १, अशुभ २, दुर्भग ३, दुःस्वर ४, अनादेय ५, अजस ६, ए छ. त्रस ४, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक ए च्यार ४, थावर १, एकेन्द्री १, पंचेन्द्री १. ॥ ३१ ॥

नंपुकुखगइसासचउ, गुरु कक्खड रुक्खसीय दुग्गंधे।
वीसं कोडाकोडी, एवइआबाहवाससया ॥ ३२ ॥

अर्थ—नपुंसकवेद १, अशुभविहायोगति १, श्वासोश्वास चतुष्क-४, उश्वास १, उद्योत १, आतप १, पराघात १, गुरु-भारेफरस १, कर्कश फरस १, रुक्ष-लूखो फरस १, शीत-टाढो फरस १, दुर्गंध १, ए ४२ बेताळीस प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति वीस २० क्रोडाकोडी सागरनी जाणवी. एवइया एटलां वरस सय-सो वर्ष अबाधा जाणवी. एटले जे कर्मनी जेटली कोडाकोडी स्थिति तेटला सो वरसनी अबाधा. बांध्या पछी तेटला सो वरस सीम (सुधी) उदय न आवे ते अबाधा कहीये. ॥ ३२ ॥

गुरु कोडि कोडिअंतो, तित्थाहाराणभिन्नमुहुबाहा।
लहुठिइसंखगुणूणा, नरतिरियाणाउपल्लतिगं ॥३३॥

अर्थ—गुरु केहेतां उत्कृष्टी अंतो केहेतां मांही एटले कांइक उणी एक कोडाकोडी सागर तीर्थंकर नामनी तथा

आहारक दुगनी स्थिति उत्कृष्टी जाणवी तथा अबाधा प्रदेशोदयनी भिन्नमुहु–अंतर्मुहूर्त्तनी जाणवी. जघन्य स्थिति संख्यात गुण ऊंणी ते जे अंत कोडाकोडी स्थिति छे. तेहने संख्यातगुणी ऊणी करीये, जेटली थाय तेटली ऊणी जघन्य स्थिति जाणवी. एटले असंख्याता अध्यवसायनो फेर पडे छे. नर–मनुष्यनु आयु तथा तिर्यंचायुनी उत्कृष्टी स्थिति तीन ३ पल्योपमनी जाणवी ॥ ३३ ॥

इगविगलपुव्वकोडिं, पलियाऽसंखंस आउचउ अमणा।
निरुवकमाण छ मासा, अवाह सेसाण भवतंसो ३४

अर्थ—हवे जे जीवो आवता भवनो आयु जेटलो बांधे ते कहे छे. एकेन्द्रि तथा विकलेन्द्रिय आवता भवनु, आयु उत्कृष्ट बांधे तो पूर्वकोडि १ एकनो बांधे एथी अधिक न बांधे. तथा अमणा असंज्ञि पचेन्द्रितिर्यंच पर्याप्ता च्यार ४ गतिनो आउखो बांधे तो उत्कृष्टो पल्योपमने असंख्यातमे भाग प्रमाण बांधे, निरुपक्रम आउखावाळा देवता तथा नारकी तथा युगलिया एटला छ मास शेष थकी नवा भवनो आउखो बांधे. शेष जे सोपक्रमी तथा निरुपक्रमी मनुष्य तिर्यंचनु आयुष्य ते भवने त्रीजे भागे शेषे बांधे पिण पेहेला बे भाग मध्ये न बांधे, जो त्रीजे भागे न बंधाय तो नवमा भागे, अथवा २७ मे भागे इम त्रिभाग करता शेष अंतर्मुहूर्त्त पिण बांधे. वर्णादिक वीसनी जुदी स्थिति कही. तिणे एकसोछवीस प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थितिकही हवे जघन्य स्थितिकहे छे. ॥३४॥

लहु ठिइबंधो संजलण, लोहपणविग्घनाण-दंसेसु।
भिन्नमुहुत्तं ते अट्ठ, जसुच्चे बारस य साए॥३५॥

अर्थ—जे संज्वलन लोभ १, तथा पांच अंतराय ५, तथा पांच ज्ञानावरणी तथा दंसेस्सु च्यार ४, दर्शनावरणी १५ पंनर, प्रकृतिनी जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त्तनी जाणवी. तथा जसनामकर्म, उच्चैर्गोत्र १ नी आठ मुहूर्त्तनी जघन्य स्थिति जाणवी. सातावेदनीयनी जघन्य स्थिति बार मुहूर्त्तनी ते दसमे गुणठाणे बांधे, इग्यारसे, बारमे, तेरमे गुणठाणे साता बंधाय ते बे समयनी बंधाय. ॥ ३५ ॥

दो इग मासो पक्खो, संजलणतिगेपुमट्ठवरिसाणि। सेसाणुक्कोसाओ, मिच्छत्तठिईए जं लद्धं ॥ ३६ ॥

अर्थ—संज्वलनना क्रोधनी जघन्य स्थिति मास बेनी छे. संज्वलननामाननी १, एक मासनी छे, संज्वलन मायानी पक्ष १, ते पंदर दिवसनी छे, तिहां जे प्रकृति नवमे गुणठाणे वेहेली खपे तेहनी स्थिति जवन्यपणे कही हवे जे मोडी खपे तेहनी जवन्य स्थिति थोडी जाणवी. पुरुषवेद खपे तिहां सर्व प्रकृतिनी स्थिति एटलीज बंधाय छे, पुरुषवेदनी स्थिति जघन्य छे, हवे शेष जे एकसोएक प्रकृति वर्णादिक वीसनी उत्कृष्टी स्थितिने मिथ्यात्वनी उत्कृष्टी स्थितिथी भाग आपतां ज्यां जे आवे ते त्यां प्रकृतिनी जवन्य स्थिति जाणवी. तिहां निद्रा पांचनी जघन्य स्थिति सागर १ एकना जे सात भाग एहवा तीन भागनी जाणवी असातावेदनीय पिण सात इया तीन भागनी जाणवी, बार कषायना जघन्ये सातइया ४ च्यार भागनी जाणवी हास्य १, रतिनी सातइया बे भाग. भय, दुगंछा, अरति, शोक ए च्यार ४ प्रकृतिनी जवन्य स्थिति बे भाग, नपुंसकवेदनी स्थिति सातइया बे भाग,

स्त्रीवेदनी स्थिति सातइयो दोढ भाग, नामकर्ममध्ये देवगति देवानुपूर्वीनी एक हजार भाग नरकगति, नरकानुपूर्वीनी सातइया बे हजार भाग, मनुष्यगति, मनुष्यानुपूर्वीनी दोढ भाग एकेन्द्री जाति, पचेन्द्री जातिनी जघन्य स्थिति सातइया बे भाग, विकलत्रिकनी सातइया पोंणा बे भाग झाझेरा, औदारिक शरीर, औदारिक उपांगनी बे भाग, वैक्रिय शरीर वैक्रिय उपागनी बे हजार भाग, तैजसकार्मणना बे भाग, प्रथम सघयण प्रथम सस्थाननी सातइयो १, एक भाग, बीजो सघयण बीजा सस्थाननी स्थिति ३५ सीया छ ६ भाग, त्रीजो सघयण त्रीजो सस्थान ३५, सीया ७, भाग चोथे संवयणे चोथे सस्थाने पांत्रीसीया (३५ या) ८, भाग पांचमो सघयण, पाचमो सस्थानना पांत्रीसीया नव ९ भाग, छट्ठो संघयण, छट्ठो सस्थानना पात्रीसीया दस भाग, एटले सातइया बे भाग श्वेतवर्ण मधुररसनी १, भाग पीतवर्ण खाटारसनी सवा भाग रातावर्ण कसायला रसनी दोढ भाग नीलोवर्ण, कडुयो रस पोणाबे भाग, काळोवर्ण, तीखारसनी बे भाग सातइया, सुरभिगंध, मृदुस्पर्श, लघुस्पर्श, स्निग्धस्पर्श, उणस्पर्श, नो सातइयो १, भाग शुभविहायोगतिनो जवन्य सातइयो १, एक भाग अशुभविहायोगति, परावात, उश्वास, आतप, उद्योत, अगुरुलघु, निर्माण, उपवात, त्रस, अथिरछक, थावरनाम ए सर्वना सातइया बे भाग, आहारक शरीर, आहारक उपागनी, जिननामनी एक कोडाकोडी सागर केटलाएक सागरोपमना सेंकडा ओछा, सूक्ष्मत्रिकनी सातइया पोंणा बे भाग झाझेरा, थिर ५ नो सातइयो १, भाग जवन्य स्थिति जाणवी. ॥३६॥

अयमुक्कोसो गिंदिसु, पलिया ऽसंखंस हीणलहुबंधो ।
कमसो पणवीसाए, पन्ना सय सहस्स संगुणिओ॥३७॥

अर्थ—एक भाग छ भाग तीनभाग प्रमुख स्थिति कही ते एकेन्द्रीने उत्कृष्ट स्थिति जाणवी, बादर पर्याप्तो उत्कृष्टी बांधे, ए जे एकेन्द्रीयनी उत्कृष्ट स्थिति कही, ते मांहेथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग हीण कहेतां ओछो करीये, तिवारे एकेन्द्रीयनी जघन्य स्थिति जाणवी. कमसो अनुक्रमे पणवीसाए एकेन्द्रीथी बेन्द्री पचवीस गुणी स्थिति बांधे, तेन्द्री पचासगुणी स्थिति बांधे, चोरेन्द्री १०० सोगुणी बांधे, अने असंज्ञि पंचेन्द्री हजारगुणी स्थिति बांधे. ॥ ३७ ॥

विगलि असन्निसु जिट्ठो, कणिट्ठओ पल्लसंखभागूणो
सुर निरयाउ समादस, सहस्स सेसाउ खुड्ड भवं ॥३८॥

अर्थ—विकलेन्द्री (बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री) ने, असंज्ञिने ए स्थिति उत्कृष्टी जाणवी. कणिट्ठओ—जघन्य स्थिति पल्यनो संख्यातमो भाग ऊणी, करवी ते पल्यनो संख्यातमो भाग ऊणो कीजे तिवारे बेन्द्रीयादिकनी जघन्य स्थिति जाणवी. सुर देवतानो आउखो, नरय—नारकीना आउखानी जघन्य स्थिति हजार १० दस हजार वरसनी जाणवी. शेष जे मनुष्य तिर्यंचना आउखानी जघन्य स्थिति क्षुल्लक भव प्रमाण, क्षुल्लक भव २५६ आवलीनी छे ते जघन्य जाणवी. ॥३८॥

सव्वाणवि लहुबंधे, भिन्नमुहु अबाह आउजिट्ठेवि।
केइ सुराउसमंजिण, मंतमुहू बिंति आहारं ॥३९॥

अर्थ—सर्व प्रकृतिना जवन्य स्थितिबंधे जवन्य अबाधा अतर्मुहूर्त्तनी जाणवी एटले सर्वजवन्य स्थितिनी जवन्य अबाधा अतर्मुहूर्त्तनी ते उपर स्थिति कडक एक वधे एक समय अबाधा वधे इम उत्कृष्ट स्थितिमा उत्कृष्ट अबाधा जाणवी, अने आउखा च्यारनी उत्कृष्टी स्थिति जघन्य अबाधा हुवे, इहा चौभगी छे, आउखो उत्कृष्टे अबाधा उत्कृष्टी १, आउखे उत्कृष्टे अबाधा जवन्य २, आउखो जघन्य अबाधा उत्कृष्ट ३, आउखो जवन्य अबाधा जवन्य ४ जाणवी वळी वाचनान्तर कहे छे कोइक आचार्य जिन नामनो जघन्य स्थितिबंध देवताना आयु प्रमाण जाणवो, एटले आठमा गुणठाणाना छठ्ठा भागना चरम समये जीननामकर्मनो जवन्य स्थितिबंध १० हजार वर्ष प्रमाणनो होयछे. आहारक दुगनी विपाकनी जघन्य स्थितिबंध अतर्मुहूर्त्तनी छे, जे आठमा गुणठाणाना छठ्ठा भागना चरम समये—आहारकनो जवन्य स्थितिबंध अंतर्मुहूर्त होय छे ॥ ३९ ॥

सत्तरसमहियाकिर, इगाणुपाणुंमिहुंतिखुड्डभवा।
सगतीस सयतिहुत्तर, पाणू पुण इग मुहुत्तंमि ॥४०॥

अर्थ—हवे क्षुल्लकभवनो मान कहे छे एक आणपाण श्वासोश्वास मध्ये सत्तर भव पुरा अढारमा भवना १३९५ भाग अधिक एटले सत्तर भव झाझेरा एक श्वासोश्वास माहे थाय ए क्षुल्लक भव जाणवो, क्षुल्लक एटले सर्वथी न्हानो भव ए भाग उश्वासना ३७७३ भाग करीये तेहवा १३९५ भाग लेवा, सडत्रीससे तिहुत्तर ३७७३ पाणू, पुण कहेता श्वासोश्वास गये एक मुहूर्त्त थाय. ॥ ४० ॥

पणसठ्ठि सहसपणसय, छत्तीसाइगमुहुत्त खुड्डभवा ।
आवलियाणं दोसय, छप्पन्ना एग खुड्डभवे ॥ ४१ ॥

अर्थ—एक मुहूर्त ते बे घडी प्रमाणमे पेंसठहजार पांचसे छत्रीस भव थाये, सूक्ष्मनिगोदीयाथी मांडी समुर्छिम मनुष्य पर्यंत ए प्रमाण जाणवो, तथा क्षुल्लक भव मध्ये आवली, २५६ जाये एटले मुहूर्तमे एक कोडि सडसठ लाख सित्तोत्तर हजार दोयसेने सोळ आवली जाणवी. ॥ ४१ ॥

अविरयसम्मोतित्थं, आहारदुगामराउ अपमत्तो ।
मिच्छद्दिठ्ठि बंधइ, जिट्ठंठिइ सेस पयडीणं ॥ ४२ ॥

अर्थ—हवे उत्कृष्टी स्थितिबंधना स्वामी कहे छे. तीर्थंकर नामनी उत्कृष्टी स्थिति अविरति समकीतीबंधक, समकितथी मांडी अपूर्वकरणना छठ्ठा भाग पर्यंत छे, ते सर्व जीवथी अधिक कषायी अविरति समकीती छे, ते अधिक कषायी तेथी स्थिति ते उत्कृष्टी बांधे आहारकदुग—२ आहारक शरीर तथा उपांग ए बे अमर—देवतानो आउखो उत्कृष्ट स्थिति अप्रमत्त गुणठाणे बांधे, तिहां आहारक अप्रमत्त अति संक्लेशना अध्यवसाये बंधक उत्कृष्ट स्थिति बंधे देवायु अप्रमत्त विशुद्धाध्यवसाये उत्कृष्ट स्थिति बांधे, शेषप्रकृति वर्णादिक वीस भिन्नगवेखेतो, १३२, तथा वर्णादि ४, गवेखीयेतो ११६, नी उत्कृष्टी स्थिति संज्ञीपंचेन्द्री पर्याप्तो मिथ्यादृष्टि बांधे ॥ ४२ ॥

विगलसुहुमाउतिगं, तिरिमणुया सुरविउव्वि निरयदुगं
एगिंदिथावरायव, आईसाणा सुरुक्कोसं ॥ ४३ ॥

अर्थ—हवे मिथ्यात्वे च्यार ४ गतिना छे ते ते मध्ये जे वांधे ते लिखीये छे विगल ३ सूक्ष्म ३ तिर्यंचायु १, मनुष्यायु १, नरकायु १, ए ३ आउखा देवगति १ देवानुपूर्वी, १ ए देवद्विक, वैक्रिय शरीर, वैक्रिय उपाग, ए वे वैक्रियदुग, नरकगति, नरकानुपूर्वी, ए नरकद्विक, ए १५ प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति सज्ञिपचेन्द्रीपर्याप्तमिथ्यात्वी तिर्यंच मनुष्य वाधे एना वधक एज छे तथा एकेन्द्रीजाति, थावरनाम, आतपनाम, ए तीन प्रकृति आइसाणाः—भवनपति, व्यतर, ज्योतिषी, सुधर्म, इशान देवलोक पर्यंतना देव उत्कृष्टी स्थिति वाधे, आकरे तीव्र अशुद्धता ए परिणम्यो ए जीव एकेन्द्रीपणो उपार्जे. बीजी हीणी गतिमां एने जवु नथी ते माटे ॥ ४३ ॥

तिरिउरलदुगुज्जोअं, छिवट्ठ सुरनिरय सेसचउगइया।
आहारजिणमपुव्वो, अनियट्टि संजलण पुरिसलहुं।४४।

अर्थ—तिर्यंचदुग, औदारिकदुग, उद्योतनाम, छेवठोसघयण, ए ६ प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति मिथ्यात्वी देवता अथवा मिथ्यात्वी नारकी वाधे, शेष १०८ एकसो आठ, प्रकृतिनी उत्कृष्टी स्थिति च्यार गतिना मिथ्यात्वी वाधे, सज्ञिपर्याप्ता वाधे

अथ जघन्य स्थितिना स्वामी कहे छे आहारक तथा जिननामनी जघन्य स्थिति अपूर्वकरण गुणठाणे वाधे, ए प्रकृतिना वधक मध्ये अति निर्मल परिणाम अहिंज छे अनिवृत्ति गुणठाणे सजलना कषाय च्यार, पुरुषवेद, ए पांच प्रकृतिनी जघन्य स्थिति वाधे ॥ ४४ ॥

सांय जंसुच्चावरणा, विग्घं सुहुमो विउव्वि छ असन्नि।
सन्नीवि आउ बायर, पज्जेगिंदी उ सेसाणं ॥४५॥

अर्थ—सातावेदनीय १, जसनाम २, उच्चैर्गोत्र १, ज्ञानावरणी पांच ५, दर्शनावरणी ४, अंतराय पांच ५, ए १७ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति सूक्ष्मसंपराय दसमे गुणठाणे बांधे. देवद्विक २, नरकद्विक २, वैक्रियद्विक २, ए ६ छ प्रकृतिनी जघन्य स्थिति असंज्ञिपंचेन्द्री पर्यातो बांधे, जे कारणे एहनो प्रथमबंध एहिज छे, आउखा ४, नी जघन्य स्थितिनो बंधक संज्ञीपण छे असंज्ञीपिण छे. एहनो बंध परिणामनी तीव्रमंदताये छे, शेष १०१, अथवा ८५, प्रकृतियोनी जघन्य स्थितिना बंधक बादरपर्याप्ता एकेन्द्री जाणवा. स्थितिबंधमें सूक्ष्मसंपरायी साधुथी बीजे बोले स्थितिबंधक एकेन्द्री पर्याप्तो छे. ॥४५॥

उक्कोसजहण्णीयर, भंगासाई अणाइ धुवअधुवा।
चउहा सग अजहन्नो, सेसतिगे आउ चउसु दुहा॥४६॥

अर्थ—हवे स्थितिबंधना भांगा कहे छे–तिहां उत्कृष्ट १, जघन्य १, इतर अनुत्कृष्ट अजघन्य १, ए ४, च्यार भांगा छे. तिहां जे प्रकृतिनी जे उत्कृष्टि स्थिति छे ते बांधे ते उत्कृष्टबंध कहेवाय, उत्कृष्टबंध एक जीवने लागट रहे तो अंतर्मुहूर्त रहे ते माटे ए सादि अध्रुव छे, तथा जे प्रकृतिनी जघन्य स्थिति जे बांधे ते जघन्य बंधक कहीये. ते एकएक समयमांज बांधे, एहने पिण सादि अध्रुव भेदज लागे, तथा उत्कृष्टी नही ते अनुत्कृष्ट, ते इहां

उत्कृष्टोबंध सादि अध्रुव जे हुवे पर ए अर्थ इहां लीधो नथी (टबामा लीधो नथी एम छे) इहा तो जघन्य बंधकथी बीजो बंध ते सर्व अजघन्यमें गवेख्यो छे, अने प्रथम अर्थ करीये तो पिण अनादि सूक्ष्मनिगोदीया जीवने सदा अजघन्य बंध छे जे जघन्य बंध तो बादर एकेन्द्रीने छे, अथवा गुणाधिकने छे ते माटे ए भागे ४, भेद भासे छे, सातकर्म (आउखा विना) अजघन्य स्थिति बांधेतो सादि एक १, अनादि २, ध्रुव ३, अध्रुव ४, ए च्यारभेदे बांधे जे छ कर्मनो जघन्य बंध १०, मे गुणठाणे, मोहनी कर्मनो जघन्य बंध नवमे गुणठाणे अंत्य अध्यवसाय क्षपकश्रेणिने, अने उपशमश्रेणि ते क्षपकथी बमणी स्थितिबांधे, ते माटे अजघन्य बंधक छे, तेहने इग्यारमे आव्ये अबंध थयो, ते अध्रुव, पाछो पडी वळी बांधे ते सादि, ए गुणठाणे आव्यो नथी तेहने अनादि, अभव्यने ध्रुव भव्यने अध्रुव ए रीते जाणज्यो १, सर्व जीवने अजघन्य बंध ते ए गुणठाणे चढ्या पड्याने सादी, चडस्ये तेहने अध्रुव, तथा अभव्यने अनादि ध्रुव छे, तेथी एज सातकर्म उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य ए तीन भागे सादि अध्रुव बंध छे, ए ३, ना बंधनो काल अल्प छे, तथा आउखो कर्म उत्कृष्ट जघन्य, अजघन्य, ए ४, च्यारे भागे स्थिति बांधे तो सादि अध्रुवकालना बांधे, जे कारणे भवमें आयु एकवार तथा अंतर्मुहूर्त सीम बंधाय ते माटे बे भेदज छे, शेष तीन उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट जघन्य १, अनुत्कृष्ट भागे बांधे तो सादि अध्रुवकालसीम बांधे, जे कारणे जघन्यबंधनो एक समय काल छे, उत्कृष्टबंधनो १, समयकाल छे, अनुत्कृष्ट ते उत्कृष्ट पछी थाय ते माटे सादि अध्रुव छे, उत्कृष्टथी एक समये ऊणबांधे ते अनुत्कृष्ट बंध,

कहीये ए पिण उत्कृष्ट बंधक थया पछी बांधे ते माटे सादि अध्रुव लाभे, तथा जघन्यबंधक थइने एक समय अधिक अधिक बंधाय ते अजघन्य गणीये तो ॥ ४६ ॥

चउभेओ अजहन्नो, संजलणावरणनवगविग्घाणं।
सेस तिगिसाइ अधुवो, तहचउहा सेसपयडीणं ॥४७॥

अर्थ—अजघन्यबंध च्यार भेदे पामीये, संजलण च्यार ४, ज्ञानावरणी पांच, दर्शनावरणी ४, ए नव, अंतराय पांच, ए १८ प्रकृतिनी अजघन्य स्थिति च्यार ४, भेदे छे, जे ए १८ प्रकृतिनो जघन्यबंध नवमे, दसमे, गुणठाणे छे तेहथी बीजा जीव सर्व अजघन्यबंधक छे, तेहमां जे ए गुणठाणे चढी पड्या छे तेहने सादि अध्रुव छे, अभव्यने अनादि ध्रुव छे एहिज अढार प्रकृतिना, शेष तिग-शेष ३ भांगा सादि १, अध्रुव २, भेदे छे, भावना पूर्ववत्. शेष १०२ प्रकृतिनी, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य, ए च्यार ४ प्रकारनी स्थिति सादि अध्रुव भांगे बंधाय, तिहां ७३ प्रकृति तो अध्रुव बंधिज छे. ते माटे किवारे बंधाये किवारे न बंधाये ते माटे सादि अध्रुव छे, २९ ध्रुवबंधिमांहेली छे ते सदा बंधाय, पिण ए २९ नो जघन्यबंधक पिण एकेन्द्रीय छे, ते एकेन्द्रीयपणामे जघन्यबंध करे ते माटे जघन्य कर्या पछी अज घन्यबंध ते पिण सादि अध्रुव छे, ते माटे ए २९ प्रकृतिने सादि अध्रुव छे. ॥ ४७ ॥

साणाई अपुव्वंते, अयरंतो कोडि कोडिओ नहिगो,
बंधो न हु हीणो नय, मिच्छे भवियर सन्निम्मि ॥४८॥

अर्थ—हवे गुणठाणे स्थिति कहे छे. सास्वादन गुणठाणाथी मांडी अपूर्वकरण पर्यंत अयर—सागरोपम अंतो—कोडाकोडी एक काइक ऊणी स्थिति बाधे, एटले ए ७ गुणठाणे १ कोडाकोडी देशे ऊणी स्थिति बाधे, पिण नहिगो—अधिकी न बाधे, समकीतीथी देश विरति नवपल्य ओछी बांधे, तेथी सर्वविरति केटला सागर ओछी बाधे, तेथी अपूर्वकरण सख्याता सागरना सेकडा ओछी बाधे, तथा मिथ्यात्व गुणठाणे अत कोडाकोडीथी ओछी न बाधे, अनादि मिथ्यात्वी जघन्य अत. कोडाकोडी, उत्कृष्ट ७० कोडाकोडी बाधे ए मिथ्यात्वी भव्य तथा अभव्य सज्ञी आश्रयि कह्यो छे ॥ ४८ ॥

जइ लहुवंधो बायर, पज्जअसंखगुण सुहुम पजहिगो।
एसिं अपज्जाण लहू, सुहुमेअर अपजपजगुरु ॥४९॥

अर्थ—हवे ३६ बोलना स्थितिनो अल्पबहुत्व कहे छे. सर्वथी यती लहु—जघन्य स्थिति बधके सूक्ष्मसपराय चरमसमयी सर्वथी थोडी १ बांधे १ अतर्मुहूर्त्त बाधे छे. तेहथी बादर पर्याप्तो जघन्य स्थितिबधक असख्यातगुणी बांधे, ए सागरना भागनो बधक छे ते असख्यातो काल छे ते माटे. तेहथी सूक्ष्म एकेन्द्री पर्याप्तो जघन्यबधक कांइक अधिकी बाधे, एहने थोडो काल वधे छे, एहज बे अपर्याप्ता लहु—जघन्यबधकना बे बोल कहेवा. तेहथी बादर पर्याप्तो जघन्यबधक स्थिति अधिकी बाधे ४, तेहथी सूक्ष्मअपर्याप्तो जघन्यबधक अधिकी बाधे ५, तेहथी सूक्ष्म अपर्याप्तो उत्कृष्टबधक अधिकी बाधे ६, तेहथी बादर अपर्याप्तो उत्कृष्ट स्थितिबंधक अधिकी बांधे ७, तेहथी सूक्ष्म अपर्याप्तो उत्कृष्टबंधक अधिकी बाधे ८,

तेहथी बादर पर्यासो उत्कृष्टबंधक स्थिति अधिकी बांधे. एकेन्द्रीपणामे एज उत्कृष्टबंधक छे ९. ॥ ४९ ॥

लहु बिअ पज्ज अपज्जे, अपज्जेयर बिअ गुरु हिगो एवं।
तिचउ असन्निसु नवरं, संखगुणो बिअ अमणपत्ते ५०

अर्थ—लहु–जघन्यबंधक बेन्द्री पर्यासो संख्यातगुणी बांधे १० तेहथी बेन्द्री अपर्यासो जघन्यबंधक अधिकी बांधे, ११ तेहथी बेन्द्री अपर्यासो उत्कृष्टबंधक अधिकी बांधे. १२ तेहथी बेन्द्री पर्यासो उत्कृष्टबंधक अधिकी बांधे. १३ इहां एकेन्द्रीथी बेन्द्रीने २५ गुणो बंध, ते माटे पेहेले बोले संख्यातगुणो कह्या पछी ते पल्यना असंख्यातमे भागे वृद्धि छे, ते माटे अधिकी बांधे. एवं–ए रीते च्यार ४ बोल कहेवा. तिहां १४ मे बोले तेन्द्री पर्यासो जघन्यबंधक स्थिति अधिकी बांधे, तेहथी १५ मे बोले तेन्द्री अपर्यासो जघन्यबंधक स्थिति अधिकी बांधे, तेहथी तेन्द्री अपर्यासो उत्कृष्टबंधक अधिकी बांधे. १६ तेहथी तेन्द्री अपर्यासो उत्कृष्टबंधक ते अधिकी बांधे. १७ तेहथी चौरेन्द्री पर्यासो जघन्यबंधक अधिकी बांधे. १८ तेहथी चोरेन्द्री अपर्यासो जघन्यबंधक अधिकी बांधे, १९ तेहथी चोरेन्द्री अपर्यासो उत्कृष्टबंधक अधिकी बांधे. २० तेहथी चोरेन्द्री पर्यासो उत्कृष्टबंधक अधिकी बांधे, २१ तेहथी असंज्ञि पंचेन्द्री पर्यासो जघन्य बे० संख्यात गुणबंधक छे. तें २२. ए हजारगुणी बांधे ते चोरेन्द्रीथी नवगुणी साधिक थइ छे ते माटे तेहथी असंज्ञि पंचेन्द्री अपर्यासो जघन्यबंधक अधिकी बांधे. २३ तेहथी असंज्ञि पंचेन्द्री अपर्यासो उत्कृष्टबंधक अधिकी बांधे. २४ तेहथी असंज्ञि पंचेन्द्री पर्यासो उत्कृष्टी

बधक अधिकी बाधे २५ नवरं-विशेष एटलो फेर छे जे बेन्द्री तथा असज्ञि पर्याप्तो तेनो पाठ ते सख्यातगुणो कहेवो.॥५०॥

तोजइ जिट्ठो बंधो, संखगुणो देसविरयहस्सिअरो ।
सम्मचउ सन्निचउरो, ठिइबंधाऽणुकम संखगुणा ५१

अर्थ—तेहथी प्रमत्त गुणठाणे वर्त्तमान ते मुनिपणामे उत्कृष्ट बधक छे सख्यात गुणी स्थितिबाधे २६ ॥ केटलाएक सागर उणी एक कोडाकोडीना बधक छे, तेहथी देशविरति जघन्यबधकनी सख्यातगुणी स्थिति वृद्धि तो थोडी छे ते पर स्थितिस्थानक कषायनी चोकडीना बध्या, माटे असख्यातगुणा बधे छे ते माटे असख्यातगुणपणे लीधी छे २७। तेहथी देशविरति उत्कृष्ट बधक असख्यात गुणीबाधे २८। तेहथी समकीतीना च्यार बोल कहेवा, तिहा समकिति पर्याप्तो जघन्य बधक सख्यातगुणी बाधे २९। तेहथी समकिती अपर्याप्त जघन्यबधकने सख्यातगुणी बधाय ३०। तेहथी समकिती अपर्याप्तो उत्कृष्ट बधक सख्यातगुणी बांधे ३१। तेहथी समकिती अपर्याप्तो उत्कृष्टबधक सख्यातगुणी ३२। तेहथी समकिती पर्याप्तो उत्कृष्टबधक अधिकी बाधे, तेहथी सज्ञी पर्याप्तो जघन्यबधक सख्यातगुणी बाधे ३३। तेहथी सज्ञी अपर्याप्तो जघन्यबधक सख्यातगुणी बाधे ३४। तेहथी सज्ञी अपर्याप्तो उत्कृष्टबधक सख्यातगुणी बाधे ३५। तेहथी सज्ञी पर्याप्तो उत्कृष्टबधक सख्यातगुणी बाधे ३६। एम स्थितिबध सख्यातगुणा छे ।५१।

सवाणवि जिट्ठठिई, असुहा जं साइ संकिलेसेणं ।
इअरा विसोहिओ पुण, मुत्तुं नरअमर तिरिआउं ५२

पर्याप्तानो उत्कृष्ट योग असंख्यातगुणो २८. ए रीते स्थिति स्थानकनो अल्पबहुत्व २८ बोलनो जाणवो, वीर्यनी वृद्धिए स्थितिनी तीव्रमंदताना भेद पडे ते इहां लेज्यो. अपर्याप्ताथी इअर-पर्याप्तानां स्थितिस्थानक असंख्यातगुण छे, इहां जीव भेद एकें स्थिति जघन्य मिथ्यात्वनी एकसागर पल्यने असंख्या-तमे भागें ऊणी बांधे, पिण कोइक तीव्र बांधे, कोइक जीव मंद तथा मंदतर रीतें एक स्थितिस्थानकमें ते स्थिति बांधवा-ना अध्यवसाय स्थानक असंख्यात थाये. एहवा एक जीवभेद सूक्ष्म अपर्याप्ताने बांधवानां अध्यवसाय स्थानक असंख्यात छे तेहथी सूक्ष्मपर्याप्ताना बंधाध्यवसाय संख्यातगुणा छे, तेथी बादर अपर्याप्ताना संख्यातगुणा छे, तेथी बेइन्द्रि अपर्याप्ताना बंधा-ध्यवसाय असंख्यातगुणा छे, तेथी बेन्द्रिपर्याप्ताना बंधाध्यवसाय संख्यातगुणा छे. इम १४ जीवभेदें कहेतां पण एटलो भेद जे बेइन्द्रि अपर्याप्तानां असंख्यातगुणांज. त्रसपणानो वीर्य तेहने वाध्यो ते माटे. तथा इहां स्थिति अपेक्षाए पहेला (?) ॥५४॥

पइ खण मसंखगुणविरिय, अपज्जपइठिइमसंखलोग-
समा ।

अज्झवसाया अहिया, सत्तसु आउसु असंखगुणा ५५॥

अर्थ—हवे जीवने क्षयोपशमी वीर्य जे उपजवाने प्रथम समये छे ते असंख्यातो छे. ते पछी पइखण-प्रतिसमये एटले समय समयमे असंख्यातगुणो वीर्य वधे. पण अपर्या-प्तावस्थासीम इम वीर्यवृद्धि जाणवी. एटले पेहेला समयथी बीजे असंख्यातगुणो वीर्य वधे, त्रीजे समये असंख्यातगुणो

वीर्य वधे, अने वळी पट्ठिड–प्रतिस्थितिए (स्थितें) अध्यवसाय असंख्याता छे, ते अलोकमध्ये लोक जेहवा असंख्याता खड कल्पीये तेहना प्रदेश जेटला एकस्थितिस्थानक स्थितिवधना अध्यवसाय छे, ते ए सर्व जीवभेदें जाणज्यो कषायना तरतमयोगें अध्यवसायना भेद जाणवा, ए अध्यवसाय अनतजीवमा पण पामीये अने कोइक वेळा असख्याता अध्यवसाय जीव रहित पिण पामीये हवे सातकर्मनी जघन्य स्थिति बाधे तेहना अध्यवसाय असख्याता छे, अने एक समयाधिक बाधे तेहना पुठ्ळी स्थितिना अध्यवसायथी काइक अधिक जाणवा. इम तृतिय समयाधिकना अध्यवसाय अधिका इम वधारवे २ उत्कृष्ट स्थितिस्थानकसीम अधिकाधिक कहेवा, आउखाकर्मना जघन्य स्थितिस्थानकथी समयाधिकनो जे स्थितिस्थानक तेहना अध्यवसाय असख्यातगुणा कहेवा, सर्व वर्त्ततो आउखो बांधे पिण आउखानी स्थिति थोडी तिणे स्थितिस्थानक थोडा अने कषायस्थानकने वहेंचता असख्यातगुणा आवे, इम सात कर्मने पण स्थितिस्थानके करी कषायस्थानकनो अल्प बहुत्व कहेवो, हवे जे प्रकृति जेटला काल अवध रहे ते प्रकृतिनो अबधकाल कहे छे तिहा ४७ प्रकृति तो ध्रुवबधि छे ते निरतर बंधाये छे, तेथी बीजानी भावना करीये छे. ॥५५॥

तिरिनिरय ति जोयाणं, नरभव जुअ स चउ पल्ल तेसट्ठं।
थावर चउ इग विगलाय–,वेसु पणसीइ सयमथरा ५६

अर्थ—तिहा तिर्यंच ३, नरक ३, उद्योतनामकर्म ए ७ सात प्रकृतिनो उत्कृष्ट मनुष्यभवयुक्त पल्योपम च्यार अने एकसो तेसठ सागरोपम पर्यन्त बाधे नहीं, तिहा भावना—कोइ

युगलपणे तीन पल्योपम रही सौधर्म देवलोके एक पल्यने आउखे उपनो, तिहां समकित रहीत, ते माटे ए प्रकृति ७ न बांधी तिहांथी मनुष्यपणे समकित सहित विरतिपणे रही अच्युतनो २२, सागरनो आउखो बांधी देवलोक गयो, तिहांथी मनुष्य, वळी बारमे देवलोक, तिहांथी मनुष्य, वळी ३१ सागरने आउखे नवमे ग्रैवेयके, तिहांथी मनुष्य, ३३ सागरने आउखे अनुत्तर विमाने, इम एकसोत्रेसठ १६३ सागर पल्य ४ च्यार केटलाएक मनुष्यभव अधिककालसीम ए ७ सात प्रकृति न बांधे. तथा थावर ४, एकेन्द्रि जाति १ विगल ३ आतपनाम ए नव प्रकृति एकसो पंच्यासी १८५ सागर पल्य ४ केटलाएक मनुष्यभव अधिककालसीम न बांधे. तिहां भावना— जे छट्ठी नरकें नारकीपणे २२, सागरने आउखे समकितीपणे रही त्यांथी चवी मनुष्य थयो ते युगलीयो पल्य ३ ने आउखे, तिहांथी पल्य १ ने आउखे देवता, तिहांथी मनुष्य, तिहांथी अच्युत, एम एकांतरे ३ वार मनुष्य ३ वार अच्युतें जइ मनुष्य थइ ३१ सागरने आउखे नवमाग्रैवेयके जाय. तिहांथी मनुष्य थइ ३३ सागरने आउखे विजयादिविमाने, तिहांथी मनुष्य थइ ३३ सागरने आउखे विजयादिविमाने जाय. इम सर्व भवें १८५ एकसो पंच्यासी सागर, पल्य ४ नरभव अधिककाल सीम ए नव प्रकृति जाणवी. ॥ ५६ ॥

अपढमसंघयणागिइ, खगई अण मिच्छ दुभगथीण तिगं ।
नियनपु इत्थि दुतीसं, पणिंदिसु अबंध ठिइ परमा ५७

अर्थ—पेहेला संघयण विना पांच संघयण, पेहेला संस्थान-

विना पांच सस्थान, अशुभविहायोगति १; अनतानुबंधी ४, मिथ्यात्वमोहिनी १, दुर्भग ३, थीणद्धी ३, नीचगोत्र १, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, ए पचीस प्रकृति १३२ सागर, पल्य ४ नरभव अधिककालसीम न बांधे तिहा कोइक युगलिओ पल्य ३ आयुवाळो ते देवता पल्य १ ने आउखे उपजे, ते मनुष्य थइ, तीनवार बारमे देवलोके २२ सागरने आउखे जाय, ए ६६ सागर थाय, वळी मनुष्यभव करी विजयादिविमाने जाय. इम सर्व भवे एकसोबत्रीस सागर पल्य ४ मनुष्यभव प्रमाण अधिककाल थाय. ए सर्व पचेन्द्रीपणे रहे ते जीवनें ए प्रकृति ४१ नी अबंध स्थिति परम्मा—उत्कृष्टी कही जघन्यें सर्वनो अबधकाल-एक समय १ नो छे, शेष प्रकृतिनो उत्कृष्ट काल गवेख्यो नथी ते नीयमित नथी ते माटे इम धारवो ॥५७॥

विजयाइसुगेविज्जे, तमाइ दहिसय दुतीस तेसट्ठं। पणसीइ सयय बंधो, पल्लतिग सुरविउवि दुगे ॥५८॥

अर्थ—विजयाइसु—बे भवे विजयादिविमाननी, आदि शब्दथी तीन भव अच्युतना भेळा करीये तो १३२ सागर कालमान थाय, ते बारमाना ३ भव कर्या पछी १ भव नवमा ग्रैवेयकनो थाय तो एकसोत्रेसठ सागरनो मान थाय, अथवा तमाइ—तमा ६ छट्ठी नरकथी आदि भव मांडी अच्युतना ३ भव, ग्रैवेयकनो १ भव विजयादिकना बे-भव, इम गनेखायतो १८५ एकसोपच्यासी सागरमान काल थाय ए रीते सर्व भावज्यो. हवे ७३ अध्रुवबंधीनो सतत—निरतर बंधकाळनो मान कहे छे—तिहां सुर—देवदुग, वैक्रियदुग, ए ४ प्रकृतिनो पल्य ३ तीन सीम निरतर बंधाये, जे ३ पल्यने

आउखे युगलिया तेहने बीजी गति जावो नथी ते माटे निरंतर ए ४ प्रकृति बांधे. ॥ ५८ ॥

समयादसंखकालं, तिरिदुगनीएसुआउअंतमुहू।
उरलि असंखपरट्टा, सायट्ठिइ पूव्वकोडूणा ॥५९॥

अर्थ—**समया**-जघन्ये १ समय उत्कृष्ट असंख्यातोकाल, तिरिदुग २, नीचगोत्र, ए ३ तीन प्रकृति निरंतर बंधाय, जे कारणे सातमी नरकनो नारकी ३३ सागर सीम ए प्रकृति निरंतर बांधे, जे मिथ्यात्वी होय तेहने बीजी गति, ऊंचगोत्रनो बंध नथी, आउखो जघन्ये तथा उत्कृष्टे अंतर्मुहूर्त्त सीम निरंतर बांधे, जघन्य मुहूर्त्तथी उत्कृष्ट मुहूर्त्त मोटो जाणवो, औदारिक शरीर, असंख्याता पुद्गलपरावर्त्त सुधी निरंतर बांधे, सूक्ष्म, बादर, निगोद, प्रत्येक, एकेन्द्रि मळीने गवेखी जोज्यो. जांसीम (ज्यां सुधी) वेदनीयनो बंध तांसीम अंतर्मुहूर्त्तथी अधिककाल ए बे मांहेली प्रकृति बंधाय नहीं परावर्त्तन छे ते माटे, सातावेदनी देशेऊणी पूर्वकोडि सीम निरंतर बांधे ए सयोगी केवळी गुणठाणानी अपेक्षाए छे. ॥ ५९ ॥

जलहिसयं पणसीयं, परघुस्सासे पणिंदितसचउगे।
बत्तीसं सुहविहगइ, पुम सुभगतिगुच्च चउरंसे ॥६०॥

अर्थ—पूर्व रीते १८५ एकसोपंच्यासी सागर, पल्य ४ नरभव अधिक कालमान सीम, पराघात, उश्वासनाम, पंचेन्द्रि जाति, त्रसच्यार ४, (त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक) एम ए ७ प्रकृति निरंतर बंधाये. तथा आगळ कहेशे ते प्रकृति एकसोबत्रीस कालमान निरंतर बांधे. १३२ सागरोपम पूर्वोक्त रीते

निरंतर बाधे शुभविहायोगति १, पुरुषवेद १, सुभगत्रिक ३, उंचगोत्र १, समचौरस १ ॥ ६० ॥

असुहखगइ जाइ आगिइ, संघयणाहारनिरयुजोयदुगं।
थिरसुभजसथावरदस, नपुइत्थीदुजुअलमसायं ॥६१॥

अर्थ—अशुभविहायोगति १, एकेन्द्रि, विकलत्रिक, ए जाति ४ अशुभ सस्थान पाच, अशुभ सघयण पांच, आहारकद्विक, नरकद्विक, २ उद्योत, आतप, २, स्थिरनाम १, शुभनाम १, जसनाम १, थावरदसक १०, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, दुजुयल–हास्य, रति, २ अरति, शोक, २ ए ४ असातावेदनीय १ ॥६१॥

समयादंतमुहुत्त, मणदुगजिणवइरउरलुवंगेसु,
तेत्तीसयरा परमो, अंतमुहू लहु वि आउ जिणे ॥६२॥

अर्थ—ए सुडतार्ळ स (टबामा ४१ लखी छे) प्रकृति जघन्य एक समय बाधे, उत्कृष्ट अतर्मुहूर्त्तमान काल बाधे, मनुष्य दुग–मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी २, जिननाम १, वज्रऋषभनाराच सघयण १, औदारिक उपाग १, ए पाच प्रकृति तेत्रीस सागरोपम सीम निरतर बाधे, समकिती सर्वार्थसिद्ध विमाने रह्यो निरतर बाधे ते अपेक्षाए उत्कृष्ट काल जाणवो, जघन्य बधकाल, आउखा ४, जिननाम १, ए पाच प्रकृति, जघन्य पण एक अतर्मुहूर्त्त कालमान जाणवो शेष प्रकृति ६८ नो जघन्य बधकाल एक समय जाणवो ॥ ६२ ॥

ए स्थितिबध अधिकार पूरो थयो. हवे रसबध अधिकार कहे छे. इति सतनबध. द्वा० १८

तिव्वो असुहसुहाणं, संकेसविसोहिओविवज्जयओ ।
मंदरसो गिरि महिरय, जलरेहा सरिसकसाएहिं॥६३॥

अर्थ—तिव्वो-तिव्र उत्कृष्टो अशुभनो तीव्ररस संक्लेश परिणामे बांधे, शुभनो तीव्ररस विशुद्ध परिणामे बांधे, विपर्ययपणे मंदरस बांधे, जिहां अशुभनो तीव्ररस बांधे तिहां शुभनो मंदरस बांधे, जिहां शुभनो तीव्र बांधे तिहां अशुभनो मंदरस बांधे, इहां दृष्टांत जे अनंतानुबंधि कषाय गिरिरेखा समान तेथी चोठाणीयो रस, तथा अप्रत्याख्यान कषाय महीरेखा समान एथी त्रिठाणीयो रस, प्रत्याख्यानी रजरेखा समान एथी बेठाणीयो रस, संज्वलनो जलरेखा समान तेथी एकठाणीयो रस जाणवो. ए दृष्टान्ते जाणवो. ॥ ६३ ॥

चउठाणाई असुहो, सुहन्नहा विग्घ देसघाइआवरणा।
पुम संजलणिग दुति-चउट्ठाणरसासेस दुगमाई ६४

अर्थ—चउट्ठाणी-चोठाणीयादि (प्रमुख) रस अशुभनो तेथी अन्यथा बीजी रीते शुभ, एटले जिहां अशुभनो चोठाणीयो तिहां शुभनो बेठाणीयो, जिहां अशुभनो त्रिठाणीयो तिहां शुभनो बेठाणीयो, जिहां अशुभनो बेठाणीयो तिहां शुभनो त्रिठाणीयो, जिहां अशुभनो एकठाणीयो तिहां शुभनो चोठाणीयो एम भाववुं.

तिहां विग्ध—पांच अंतराय, तथा देशघाती आवरण ज्ञानावरणी ४, दर्शनावरणी ३, ए सात, पुरुषवेद १, संजलणा-कषाय ४ ए १७ प्रकृति तेनो एकठाणियो रस बांधे, तथा बेठाणीयो बांधे, तथा त्रिठाणीयो बांधे, चोठाणीयो बांधे,

शेप-बाकी रही जे १०२ प्रकृति, तेहनो दुगमाइ-बे ठाणीयो, तिठाणीयो, चोठाणीयो, ए ३ जातिनो रस बावे ॥ ६४ ॥

निंबुइच्छुरसो सहजो, दु तिचउ भाग कढिइक्क भागंतो ।
इगठाणाई असुहो, असुहाण सुहो सुहाणं तु ॥६५॥

अर्थ—अशुभ प्रकृतिनो रस लींबडाना रससमान जाणवो तथा शुभ प्रकृतिनो रस इक्षु सेलडीना रससमान जाणवो, तिहां सहज मूलगो रस ते इकठाणीयो जाणवो, ते मध्ये बे भाग कढीय-उकाळ्यो एटले अर्द्ध उकाळ्यो, अर्द्ध रह्यो ते बेठाणीयो रस जाणवो तथा तिठाणीयो रस ते तीन भाग कढी उकाळ्यो ने १ भाग रह्यो ते तिठाणीयो रस, अने चउभाग-जे मध्ये च्यार ४ भाग उकाळ्यो अने एक भाग रह्यो ते चोठाणीयो रस जाणवो, ए अशुभ कर्मनो जेम रस वधे तेम अशुभ थाय, शुभ कर्मनो रस शुभ थाय, ए सर्व अशुभ कषाये अशुभ रस बांधे, शुभ कषाये शुभ रस बांधे ॥ ६५ ॥

तिव्वमिग थावरायव, सुरमिच्छा विगल सुहुम निरयतिगं ।
तिरि मणुआउ तिरि नरा, तिरि दुग छेवट्ठ सुरनिरया ॥ ६६ ॥

अर्थ—हवे उत्कृष्ट रसबंध स्वामी कहे छे—तीव्र उत्कृष्ट रस एकेन्द्री जाति १, थावर नाम २, आतप नाम, ए तीन

प्रकृतिनो सुरमिच्छा—मिथ्यात्वी देवता उत्कृष्ट रस बांधे, तथा विगल ३, सूक्ष्म ३, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण ए ३, नरकगति १, नरकानुपूर्वी २, नरकायु ३, ए नरकत्रिक तथा तिरिआयु १, मनुष्यायु १, ए ११ प्रकृतिनो उत्कृष्टो रस तिर्यंच तथा मनुष्य मिथ्यात्वी बांधे, तथा तिर्यंच दुग—तिर्यंच गति १, तिर्यंचानुपूर्वी ए बे अने छेवठो संघयण ए ३ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस देवता, नारकी मिथ्यात्वी बांधे. ॥ ६६ ॥

विउवि सुराहारग दुग, सुखगइ वन्न चउ तेय जिण सायं
समचउपरघा तसदस, पणिंदि सासुच्च खवगा उ ॥६७

अर्थ—वैक्रिय दुग—वैक्रिय शरीर १, वैक्रिय उपांग २, देवद्विक २, आहारकद्विक २, शुभ विहायोगति १, वर्णादि ४, तैजस शरीर १, कार्मण १, अगुरुलघु १, निर्माण १, जिननाम १, सातावेदनीय १, समचौरस संस्थान १, पराघात १, त्रसनो दशको १०, पंचेन्द्री जाति १, श्वासोश्वास १, उच्चगोत्र १, ए बत्रीस ३२ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस खवगाउ—क्षपकश्रेणिमां बांधे तिहां साता वेदनीय १, उच्चगोत्र १, यशनाम १, ए ३ तीन प्रकृतिनो सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे उत्कृष्ट रस बांधे, शेष २९ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस अपूर्वकरण गुणठाणे बांधे.॥ ६७

तमतमगा उज्जोयं, सम्मसुरा मणुय उरलदुग वइरं।
अपमत्तो अमराउं, चउगइमिच्छा उ सेसाणं ॥६८॥

अर्थ उद्योतनामकर्मनो उत्कृष्ट रस तमतमगा—तमतमा नरकना नारकी बांधे, मनुष्यदुग २, औदारिकदुग २, वज्र ऋषभनाराचसंघयण १, ए पांच प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस सम-

किती सुरा-देवता उत्कृष्ट रस बांधे, तथा अमराउ-देवतानो आउखो उत्कृष्टरसे अप्रमत्त गुणठाणे बांधे, शेष ६४ प्रकृतिनो उत्कृष्ट रस च्यार ४ गतिना मिथ्यात्वी तीव्रकषायी बांधे. ए उत्कृष्ट रसना स्वामी कह्या ॥ ६८ ॥

थीणतिगं अण मिच्छं, मंदरसं संजमुम्मुहो मिच्छो।
बियतियकसाय अविरय, देसपमत्तो अरइ सोए॥६९॥

अर्थ—हवे जघन्य रसना स्वामी कहे छे—थिणद्धी तीन निद्रानिद्रा १, प्रचलाप्रचला २, थिणद्धी ३, ए तीन, अनन्तानुबंधी ४, मिथ्यात्वमोहनी १, ए आठ प्रकृति मंदरसे संयमने सन्मुख मिथ्यात्वी बांधे, एह प्रकृतिना बंधकमें विशुद्ध परिणामी एहिज जीव छे, बियकषाय-बीजो कषाय अविरय-अविरति समकीती बांधे, त्रीजो कषाय जघन्य रसे देशविरति बांधे, अरति, शोक, ए बे प्रकृति प्रमत्त गुणठाणे मुनि जघन्यरसे बांधे ॥ ६९ ॥

अपमाइ हारगदुगं, दुनिद असुवन्न हास रइ कुच्छा।
भयमुवघायमपुवो, अनियट्टी पुरिससंजलणे॥७०॥

अर्थ-अप्रमत्त गुणठाणाना आदि समये आहारकदुग जघन्यरसे बांधे, बे निद्रा, निद्रा १, तथा प्रचला २, अशुभवर्णादि ४, हास्य, रति, दुगंछा, भय, उपघात, ए इग्यार ११ प्रकृतिनो अपूर्वकरण गुणठाणे जघन्यरस बांधे, पुरुषवेद, संजलणा ४, ए पांच प्रकृति अनिवृत्तिबादर गुणठाणे जघन्यरसे बांधे. ॥ ७० ॥

विग्घावरणे सुहुमो, मणुतिरिआ सुहुम विगलतिगआऊ
वेउव्वि छक्कममरा, निरया उज्जोय उरलदुगं ॥ ७१ ॥

अर्थ——विग्ध–अंतराय पांच, आवरण–ज्ञानावरणी पांच, दर्शनावरणी ४, ए ९, एम वधी मळी १४, चौद प्रकृतिनो सुहुमो–सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे जवन्य रस बांधे, तथा सूक्ष्मत्रिक ३, विकलत्रिक ३, आउखां ४, वैक्रियछक–देवद्विक २, नरकद्विक २, वैंक्रियद्विक २, ए ६, छ मली सर्व १६, प्रकृति मणुतिरिय–मनुष्य ने तिर्यंच जवन्यरसे बांधे, उद्योतनाम, औदारिक २, अमरा–देवता निरया–नारकी जवन्य रसे बांधे॥७१

तिरिदुग निर्यं तमतमा, जिण मविरय निरयविणिग थावरयं।
आसुहु मायव सम्मो, वसाय थिर सुह जसा सियरा७२

अर्थ——तिर्यंचद्विक २, नीचगोत्र १, ए ३ प्रकृतिनो जवन्य रस तमतमानारक ७ मीना नारकी बांधे. जिननामकर्मनो जवन्य रस अविरति समकिती बांधे, एकेन्द्री जाति थावरनामकर्म, नरकगतिविना तीन गतिना जीव जवन्य रसे बांधे, आतपनामकर्म आसुहुमा–सौधर्म देवलोक पर्यंतना देवता, जवन्य रसे बांधे, सौधर्म कहेवाथी इशान पिण ग्रहवो, सम्मोवसाय–सातावेदनी १. थिरनाम १, सुभनाम १, जश १, ए ४, प्रकृति समकिती [illegible] जवन्यरसे बांधे सि[illegible]–एहथी इतर असाता, अथिर, असुभ, अजश, ए ४, प्रकृति समकिती चढतो होय त्यारे जवन्यरसे बांधे ॥ ७२ ॥

तस वन्न तेअ चउ मणु,खगइ दुग पणिंदि सास परघुच्चं।
संघयणा गिइ नपु थी, सुभगिअर ति मिच्छचउ गइआ ॥७३॥

अर्थ—त्रस, बादर, प्रत्येक, ए ४, तथा वर्णादि ४, तैजस, कार्मण, अगुरुलघु, निर्माण, ४ मणुअदुग–मनुष्यद्विक २, खगईदुग–शुभ, तथा अशुभविहायोगति, पचेन्द्रीनीजाति, श्वासोश्वास, पराघात, उच्चैर्गोत्र, संघयण ६, सस्थान ६, नपुसकवेद १, स्त्रीवेद १, सुभगत्रिक ३, इअर–दुर्भगत्रिक ३, एव ४० चालीस प्रकृति मिच्छ–मिथ्यात्वी च्यार गतिना जघन्य रसे बाधे इहां भावना कहीये छीये–शुभ प्रकृति जिहा प्रथमथी बंधाय तिहा उत्कृष्टरसे बांधे, अने अशुभप्रकृति प्रथम बधाये तिहा उत्कृष्टरसे बाधे अने जिहा खपे तिहा जघन्यरसे बाधे, ए रीते विचारवो. ॥ ७३ ॥

चउ तेय वन्न वेअणि, अनामणुक्कोस सेस धुवबंधी।
घाईणं अजहन्नो, गोए दुविहो इमो चउहा ॥७४॥

अर्थ—हवे उत्कृष्ट रसबंधना भागा कहे छे–चउतेय तैजस च्यार ४ तैजस, कार्मण, अगुरुलघु, निर्माण, ए ४, तथा वर्णादि ४, च्यार ४, वेदनीय शब्दे साता वेदनीय, नाम कहेता जसनाम अणुक्कोस–अनुत्कृष्ट बांधेतो चउहा–च्यारभेदे–सादि १, अनादि २, ध्रुव ३, अध्रुव ४, ए च्यार भेदे बाधे. तिहा ए प्रकृतिनो उत्कृष्टरस क्षपकश्रेणि ए चढतो जीव बाधे, तथा बीजा जीव सर्व अनुत्कृष्टरस बाधे. ते अभव्यने अनादि ध्रुव छे. भव्यने बोल्ना परिणामे सादि छे,

अने अबंध थशे ते माटे अध्रुव छे, ने घाती ध्रुवबंधी जे १९ ओगणीस अने मोहनी पांच, ज्ञानावरणी पांच, दर्शनावरणी ९, अंतराय पांच ए ३० नो, अजघन्यरस ४, च्यारेभेदे बंधाय, इहां पण जघन्यथी बीजो ते सर्व अजघन्य, ते ए ३८ प्रकृतिनो जघन्य बंध जिवारे प्रकृतिनो बंध टळे तेहथी प्रथम समये छे, तेतो एक समये बंध छे, तेहथी पेहेलां अजघन्यरस बंध छे, ते अभव्यने अनादि ध्रुव छे, भव्यने घोलना परिणामे सादि छे, अने अबंध थये अध्रुव छे, तथा गोत्रकर्ममध्ये उच्चगोत्रनो अनुत्कृष्टरस सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, पूर्वनीपेरे जाणवो, नीचगोत्र अजघन्यरसे सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, ए च्यार ४ भेदे छे, घातीनीपेरे भावना करवी. तथा इहां पयडीने आशये अर्थ लिखीये छीये–जे वेदनीय नामकर्म ए मूळकर्मनी अपेक्षाये अनुत्कृष्ट रस च्यार ४, प्रकारे कहेवो. पण–उत्तर प्रकृतिमां वर्णादि ४, तैजस च्यार ४, ए आठनो अनुत्कृष्टरस सादि, अनादि, ध्रुव, अध्रुव, कहेवो, ध्रुवबंधी छे ते माटे पण जशनाम सातावेदनीयना कोईभांगे च्यार ४, प्रकार न कहेवा अध्रुव बंधी छे ते माटे. बे सादि, अध्रुवपणोज पामीये, इम गोत्रकर्मनो पिण मूळकर्मनी अपेक्षाये च्यार ४, भेद कहेवा पिण उच्चगोत्र, नीचगोत्र, ए बे अध्रुव बंधी छे ते माटे सादि अध्रुव बे भेदे पामीये इम जाणवो, एटले सात मूळकर्ममां च्यार भेद कह्या इम जाणज्यो. ॥७४॥

सेसम्मि दुहा (अनुभाग बंधो समत्तो) इग दुग,

णुगाइजाअभवणंत गुणिआणू ।

खंधा उरलोचिअवग्गणाउ, तह अगहणंतरिया ॥७५

अर्थ—सेसम्मि-तैजसादि १०, प्रकृतिनो उत्कृष्ट, जघन्य, ए तीन ३, भागे रस बांधे, ते दुहा सादि, अध्रुव, ए बे भेदे बांधे, जे एहनो बंधकाल अल्प छे ते माटे, तथा घाती ३८ नो उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्यरस, सादि, अध्रुव बे भेदे बंधाये. तथा उच्चगोत्रनो, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, जघन्य, अजघन्य-रस सादि अध्रुव बे प्रकारे बंधाय छे, तथा नीचगोत्रनो उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट, जघन्य ए तीन भागे रस बांधे ते सादि अध्रुव बांधे तथा शेष प्रकृति ७२ नो जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट ए च्यारे ४, प्रकारनोरस ते सादि, अध्रुवभेदे बांधे, इहा पयडीने आशये शेषप्रकृति ७४ ग्रहे छे, गोत्रनी प्रकृति पिण अध्रुव बंधी छे ते माटे. तथा उपघात १, ध्रुवबंधी छे, पर ए प्रकृतिबंधे ध्रुवबंधी छे ते माटे ए अनुभाग रसबंधनो अधिकार कह्यो

हवे प्रदेशबंध अधिकार कहे छे—तिहा प्रथम वर्गणानु स्वरुप कहे छे—ईग—एकपरमाणु दुग—बे परमाणुआनो स्कंध, इम त्र्यणुक, इम संख्याताणुक, असख्याताणुक, अनतापरमाणु मिळे ते अभव्यथी अनतगुणा मिळे जे खंध नीपजे तिवारे उरलोचिअ—औदारिकने उचित कहेता ग्रहेवा योग्य वर्गणा जघन्य थाय, तह—तिमहीज अतरित—एथी पाछळी ते सर्व अग्रहण जाणवी. ए औदारिक वर्गणा बादर वीसगुणी छे ॥ ७५ ॥

एमेव विउव्वा हार, तेय भासा णुपाण मण कम्मे ।
सुहुमा कमावगाहो, ऊणूणंगुल असंखंसो ॥७६॥

अर्थ—एमेव—इमही विउव्व-वैक्रिय वर्गणा, बीजी २, अने त्रीजी. आहारक [illegible]णा ३, तेजस वर्गणा ४, भा

एगपएसागाढं, निअसव्वपएसओ गहेइ जिओ ।
थोवो आउ तदंसो, नामे गोए समो अहिओ ॥७९॥

अर्थ—एक प्रदेश अवगाह्यो जे कर्मदल तेने आत्मा सर्व प्रदेशने बले करीने ग्रहण करे, एटले एक प्रदेशे ले तो असंख्याते लेवराय, अने एक प्रदेशनो कर्म ले तो वीर्य चलनानो कंपन सर्व प्रदेशनो थाय, ते माटे सर्व प्रदेशे ग्रहे इम कह्यो छे. ते जे आकाशप्रदेशे कर्मदल ते प्रदेशे जे आत्मप्रदेश हुवे (होये) ते आत्मप्रदेशे ग्रहे, भिन्न प्रदेशी दल न ग्रहे, हवे ते जीव एक समये आठ कर्म बांधे, ते कर्मदलिकनो वेहेचण कहे छे. जे सर्वथी थोडा दल आउखाने भागे आवे, तेथी नाम कर्म तथा गोत्रकर्मने अधिका दल आवे पिण बेने मांहोमांहे समान आवे. ॥ ७९ ॥

विग्घावरणे मोहे, सव्वोवरिवेअणीइ जेणप्पे ।
तस्स फुडत्तं न हवइ, ठिई विसेसेण सेसाणं ॥८०॥

अर्थ—नाम गोत्रथी विग्घ—अंतराय तथा ज्ञानावरण, दर्शनावरणीने अधिक आवे, ए तीनने परस्पर समान आवे, एहथी मोहनीकर्मने दल अधिक आवे. सर्व सात कर्मथी उपरि कहेतां अधिका दल वेदनीय कर्मने आवे, जे कारणे तस्स—ते वेदनीय कर्मनो फुड—प्रगट उदयपणो थोडे पुद्गले थाय नहीं, जे बीजा कर्मथी वेदनीनो विपाक—व्यक्त छे, शेष जे सात कर्म तेहने जे दलनो भाग आव्यो ते स्थितिने विशेषे एटले आउखानी स्थिति थोडी तिणे सर्वथी थोडा दल आवे, तेथी

नांम गोत्रनी स्थिति घणी ते माटे घणा दल आवे, इहा कोई पूछस्ये जे आउखाथी नामनी स्थिति सख्यातगुणी छे तो ते सख्यातगुणो भाग का न कह्यो ? इहा उत्तर जे ए दलिक भोगवता काल वधतो लागे, आउखाना दलिक भोगवता काल थोडो लागे ते माटे, तथा सक्रम्या दल ७ मध्ये घणा छे, घणी स्थिति सीम पहोचे पर दलिक अधिका लेवे पर सख्यातगुणा न लेवे एम सर्वत्र भावज्यो ए अर्थ. ॥ ८० ॥

निअजाइलद्धदलिआ–णंतंसो होइ सवघाईणं ।
वज्झंतीण विभज्जइ, सेसं सेसाण पइसमयं ॥८१॥

अर्थ—हवे उत्तरप्रकृतिनो वहेंचवो कहे छे तिहा निय–पोतानी जे जाति ज्ञानावरणी आदिक तेहने भाग प्रमाण लीधा जे दल तेहनो अनतमो भाग ते सर्वघातीने आवे, शेष रहे ते थाकती प्रकृतिने आवे, तिहा जे ज्ञानावरणीने भागे आव्या जे दल तेहनो अनतमो भाग अति रसवत ते केवलज्ञानावरणीपणे परिणमे, शेष रह्या जे दल ते च्यार ४ भागे मतिज्ञानावरणी प्रमुखने आवे, तथा दर्शनावरणीने ६ भागे आवे, शेष रह्यो ते चक्षुदर्शनावरणी प्रमुखने ३ भागे आवे. मोहनीने जे भाग आव्यो तेहना बे भाग थाय, तेमाथी एक भागनो तेने मले तथा मोहनीनु अर्ध दल मिथ्यात्वने मळे छे, ए प्रमाणे तेमाहे जे स्थानके जेटला बधाता हुवे तेटले भागे आवे, शेष रही जे ते जेटली देशघाती बधाती हुवे तेटला भाग पडे, अतरायने सर्वघाती नथी, तिणे एहना ५ भाग पडे. नामकर्मनो भाग जे काले २३ थी ३१

सुधीना बंधस्थानमां जेटली प्रकृतिनुं बंधस्थान वर्ते तेटला भाग पडे, तेमां बंधन संघातनने शरीर नामकर्ममांथी भाग मले, तथा वर्णादि मूल प्रकृतिना भागमां आवेलां दलिक ते पोतानी उत्तर प्रकृतिमांज वहेंचाय. कारणके एक समये सर्व वर्णगंधादि बंधाय छे. तथा गत्यादि पींड प्रकृतिओना भागमां आवेलुं दलिक ते सर्व एकेक प्रकृतिनुंज होय, कारणके एक समयमां गत्यादि एकज प्रकृति बंधाय छे. तथा गोत्र वेदनीय ने आयुष्य ए त्रण मूलकर्मनो भाग बंधाती एकेक प्रकृतिनेज मले. ए सर्व वहेंचण जे समये बांधे तेज समये करे छे एटले बंधसमयेज वहेंचे छे ते सर्व कार्य एक समये थाय छे.

सम्म देस (दर) सव्वविरई, उअणविसंजोअ दंस खवगेअ ।
मोह सम संत खवगे, खीण सजोगीअर गुणसेढी ८२

अर्थ—हवे ११ श्रेणि कहे छे–तिहां प्रथम सम्म–समकितनी श्रेणि १, बीजी देशविरतिनी श्रेणि २, त्रीजी सव्वविरइ–सर्व विरतिनी श्रेणि ३, चोथी अण–अनंतानुबंधी सत्तामांथी काढवा खपाववानी ते श्रेणि ४, पांचमी दंस–दर्शनमोहनी ३ खपाववा रूप श्रेणि ५, तथा छठ्ठी ते मोहनीनी २१ प्रकृति शमाववा रुप आठमागुणठाणाथी दसमाना अंतलगें मोहशमरुप श्रेणि ६, सातमी सर्व मोह उपशमी रह्यो एहवी ११ गुणठाणा रूप श्रेणि ७, आठमी खवग–मोहनीनी २१ प्रकृति खपाववारुप आठमाथी दशमापर्यंत श्रेणि ८, नवमी सर्वमोह खप्यो ते रुप क्षीणमोह गुणठाणारुप श्रेणि ९, दशमी सयो-

गीकेवळी तेरमागुणठाणा रुप श्रेणि १०, इग्यारमी अयोगीकेवळीयें चौदमा गुणठाणारुप श्रेणि ११ ए इग्यारे श्रेणि जाणवी ॥ ८२ ॥

गुणसेढी दलरयणा, णुसमयमुदया दसंखगुणणाए।
एअगुणा पुण कमसो, असंखगुण निज्जरा जीवा ॥८३॥

अर्थ—गुणसेढी-गुणश्रेणि ते दलरचना कहीये, दलनो वेंहचवो एटले दलसंबंधपणें हतो ते चल करी जुदा जावा योग्य करवा ते दलरचना कहीजे, तथा श्रेणिमध्ये जे दल उदय आवे ते प्रथम समयथी बीजे समयें असंख्यातगुणा दल उदय करे अने श्रेणि वर्त्तते जीवने ज्ञानादिकने असख्यात गुणा वधारे निरावरण थाये. वळी श्रेणि चढ्यो जीव प्रतिसमयें असख्यातगुण निर्जरा करे, इम श्रेणि पेहेलीथी बीजीए असख्यातगुणी निर्जरा थाय, इम सर्वश्रेणिमा जाणज्यो हवें गुणठाणानो अतर कहे छे—१४ चौद गुणठाणामे बारमो, तेरमो, चौदमो गुणठाणो जीव एकवार पामे, बीजीवार कोइ जीवने स्पर्शवो न पडे, तिणे तेहने अतर न कहेवाये, अने ११ गुणठाणा एक जीव अनेकवार पामे ते माटे ते इग्यार गुणठाणानो अतर कहुछु ॥ ८३ ॥

पलियासंखंसमुहू, सासणइअरगुणअंतरंहस्सं।
गुरुमिच्छि बे छसट्ठी, इयरगुणे पुग्गलद्धंतो ॥८४॥

अर्थ—पलियासखंस-पल्योपमनो असख्यातमो भाग सासाणि-सास्वादन गुणठाणानो अतर हरस-जघन्य आतरो छे जे कारणे सास्वादनथी मिथ्यात्वे आवेला जीवने सम्यक-

त्व ने मिश्रपुंज अवश्य सत्तामां होय, ते बन्ने पुंजने मिथ्यात्वे प्रथम समयथी उवेलवा मांडे ते यावत् पल्योमना असंख्यातमे भागे उवेली रहे, ने ज्यांसुधी ए वे पुंज सत्तामां होय त्यां सुधी पुनः उपशम पामे नहि, ने सास्वादने पण न आवी शके, ते माटे जघन्य अंतर पण पल्योपमनो असंख्यातमो भाग पडे, तथा इयरगुण–बीजां जे गुणठाणां–मिथ्यात्व १, मिश्रादिक उपशान्तमोह पर्यंत नव १० गुणठाणे जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त्तनो पडे, जे कारणे ए गुणठाणे चढतो तथा पडतो पिण आवे ते माटे तथा गुरु–उत्कृष्टो अंतर मिथ्यात्व गुणठाणानो बे छसट्ठी–१३२ एकसोबत्रीस सागरोपमनो उत्कृष्टो अंतर पडे, जे कारणे छासठ सागर क्षयोपशम समकितपणे रहे, पछी अंतर्मुहूर्त्त मिश्रपणे रही वळी छासठ सागरोपम क्षयोपशम समकितपणे रहे तिवारे मनुष्यभव साधिक १३२ सागर काल पर्यंत मिथ्यात्व स्पर्श्यो नही, ते मिथ्यात्वनो अंतर इयर–सास्वादनादिक दश गुणठाणानो उत्कृष्ट अंतर अर्द्ध पुद्गल परावर्त्तकाल देश ऊणो जे एटलो काल समकीतथी पड्यो मिथ्यात्वमें रही पछी पाछो समकित पामी मोक्षे जाय ते माटे अंतर कह्यो. ॥ ८४ ॥

उद्धार अद्ध खित्तं, पलिय तिहा समयवाससयसमए। केस वहारो दीवो, दहि आउतसाइ परिमाणं ॥८५॥

अर्थ—हवे पुद्गल परावर्त्तननो मान कहेवा माटे पल्योपमनो स्वरुप कहे छे. पल्योपमना ३ त्रण भेद छे. उद्धारपल्योपम १, अद्धापल्योपम २, क्षेत्रपल्योपम ३ ए पल्योपमना ३ तीन भेद छे, तिहां उद्धार पल्योपमनो मान समये

समये एक केश-वालाग्र अवहारो-(काढतां) योजननो कुवो खाली थये उद्धार (पल्योपम) थाय, तथा सो वरसे एक वालाग्र काढीये तो कुवो खाली थये अद्धा पल्योपम थाय, तथा एक समये योजन प्रमाण कुवानो एक आकाश प्रदेश काढीये कुवो खाली थये क्षेत्र पल्योपम थाय. तिहा द्वीप समुद्रनो गिणवो ते उद्धार पल्योपमे करवो पचवीस कोडाकोडी पल्योपमना जेटला समय थाय तेटला द्वीप समुद्र छे. आउखो ते अद्धा पल्योपमे गिणवो, त्रस जीवनो मान ते क्षेत्रपल्योपमे गिणवो, जिम पल्योपमना ३ तीन भेद तिम सागरोपमना तीन भेद जाणवा. ॥ ८५ ॥

हवे पुद्गल परावर्त्तनो स्वरूप कहे छे

दव्वे खित्ते काले, भावे चउह दुह वायरो सुहुमो।
होइ अणंतुस्सप्पिणि, परिमाणो पुग्गलपरट्टो ॥८६॥

अर्थ—ते पुद्गल परावर्त्तनना भेद आठ छे तिहां द्रव्य पुद्गल परावर्त्तन १, क्षेत्र पुद्गल परावर्त्तन २, काल पुद्गल परावर्त्तन ३, भाव पुद्गल परावर्त्तन ४, ए च्यार ४ भेद ते एकेकना वे भेद छे–द्रव्य पुद्गल परावर्त्तन वादर १, द्रव्य पुद्गल परावर्त्तन सूक्ष्म २ ए वे, इम क्षेत्र पुद्गल परावर्त्तन वादर १, क्षेत्र पुद्गल परावर्त्तन सूक्ष्म २, काल पुद्गल परावर्त्तन वादर १, काल पुद्गल परावर्त्तन सूक्ष्म २, भाव पुद्गल परावर्त्तन वादर १, भाव पुद्गल परावर्त्तन सूक्ष्म २, ए आठ [illegible] जाणवा, वादर पुद्गल परावर्त्तन ते न्हानो छे, सूक्ष्म [illegible] वर्त्तन ते मोटो छे. अनंत उत्सर्प्पिणी, अवसर्प्पिणी [illegible] रावर्त्तनतु मान थाये. ८६॥

उरलाइ सत्तगेणं, एग जिओ मुअइ फुसिय सव्वअणु।
जित्तिअ कालि स थूलो। दव्वे सुहुमो सगऽन्नयरा॥८७॥

अर्थ—हवे द्रव्य पुद्गल परावर्त्तननो मान कहे छे. उरलाइ—औदारिकादिक सात वर्गणा, आहारक विना, ते एक विना ते एक जीव सर्व पुद्गल ए ७ सात वर्गणाए फुसीय—स्पर्शीनें मुइय—मूकया जे सर्व परमाणु पिण अनुक्रमे नहीं जिवारें जे फरसे ते तिवारे गणीये तेहनो जे काल लागे ते द्रव्यें बादर पुद्गल परावर्त्तन थाये. तथा सर्व परमाणु सगन्नयरा—सात वर्गणापणे अन्यतर एक एक वर्गणापणे फरसे ते विचें बीजी वर्गणापणे फरसे ते स्पर्शना गणवी नही, इम अनुक्रमें एक एक वर्गणापणे सर्व पुद्गल फरसी मुके तिवारे द्रव्यथी सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्तन थाये. ॥ ८७ ॥

लोगपएसोसप्पिणि, समयाअणुभागबंधट्ठाणा य।
जह तह कममरणेणं, पुट्ठाखित्ताइथूलियरा ॥८८॥

अर्थ—लोकप्रदेश सर्व स्पर्शे क्षेत्रपुद्गलपरावर्त्त, उत्सर्पिणी अवसर्प्पिणीना समय स्पर्शे ते काल पुद्गल परावर्त्त, अनुभाग बंधनां स्थानक स्पर्शे भावपुद्गलपरावर्त्त, ते जहतह—जेम तेम स्पर्शे तो ए ३ तीने थूल—बादर पुद्गलपरावर्त्त, अने अनुक्रमे स्पर्शे तो सूक्ष्म थाये ते देखाडे छे. जे लोकना प्रदेशमां लोकना अंतप्रदेशे मरण पामे, इम जेम तेम आगल पाछल करीने बधो लोक मरणे करी स्पर्शे तिवारें क्षेत्रथी थूल—बादर पुद्गलपरावर्त्तन थाये, तेहज जे लोकने अंत्यप्रदेशे मरण करी वली ते प्रदेशथी लगते प्रदेशे मरण करे ते भव गणवो, इम

अनुक्रमे वधो लोक मरणे स्पर्शे ते आवा पाछा प्रदेशे जे मरण थाये ते न गणीये, इम सपूर्ण लोक स्पर्शे त्यारे क्षेत्रथी सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्त थाय तथा एहनो जघन्य अंतर २५६, आवलीनो उत्कृष्ट अंतर अनतकालनो तथा उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीने प्रथम समये जन्म पाम्यो, तेहिज वळी किहाक मरण पाम्यो, इम जे क्षेत्रे जे प्रदेशमे मरण पाम्यो, इम अनुक्रम विना जे हरकोइ स्थानकनो प्रदेश स्पर्श्यो, तिम उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीना समय मरणे स्पर्शे तिवारे कालथी बादर पुद्गल परावर्त्त थाये तेहज कोइ उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीना प्रथम समये मरे पछी जघन्ये वीस कोडाकोडी सागर जाय तिवारे वळी बीजा कालचक्रनो बीजो समय आवे तिवारे मरण पामे अथवा अनतेकाले अनतमा कालचक्रने बीजे समये मरण, वळी जघन्ये वीस कोडाकोडी सागर पछी अथवा अनताकाल पछी त्रीजे समये मरण, इम अनुक्रमे मरण करतां उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणीना समयो मरणे करी स्पर्शे अनुक्रमे, तिवारे कालथी सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्तन थाये, इम रसबंधना स्थानक जे मरणे करी जेम तेम स्पर्शे ते भावथी बादर पुद्गलपरावर्त्त थाये, तेहिज रसबंधना स्थानक अनुक्रमे, मरणे स्पर्शे त्यारे भावथी सूक्ष्म पुद्गल परावर्तन थाये. ते भाव पुद्गल परावर्त्त कोइ जीवने थयो नथी इम आठ भेद जाणवा ॥ ८८ ॥

अप्परपयडिबंधी, उक्कडजोगी अ सन्निपजत्तो ।
कुणइ पएसुक्कोसं, जहन्नयं तस्स वच्चासे ॥ ८९ ॥

अर्थ—जे जीव अप्पयर—अल्पतर थोडी प्रकृति बांधे, उक्कडयोगी—योगे उत्कृष्ट योगी हुवे अ कहेता च शब्दें संज्ञि

पर्याप्तो कुणई-करे, प्रदेशबंध उत्कृष्टपणे बांधे, एटले थोडी प्रकृति बांधे तेहने भाग थोडा. उत्कृष्ट योगबलवंत प्रदेश लेवे, घणा ते माटे, उत्कृष्टयोग वाला जे जीव ते अने अतिशये अल्प प्रकृति बंध करे, जहन्नयं-तेहथी विपर्यासे जघन्य प्रदेश बांधे, जे प्रकृति घणी बांधतो हुवे, योग मंद हुवे, असंज्ञि पर्याप्तो हुवे ते प्रदेशबंध जघन्य बांधे इम भाववो. ॥८९॥

मिच्छ अजय चउ आऊ, बि ति गुणविणु मोहि सत्त मिच्छाइ ।
छण्हं सतरस सुहुमो, अजया देसा वि ति कसाए॥९०॥

अर्थ--हवे प्रदेसबंध उत्कृष्टना स्वामी कहे छे-मिथ्यात्व गुणठाणे अजयचउ-चोथा गुणठाणाथी मांडी ४ च्यार गुणठाणा एटले मिथ्यात्व १, अविरति १, देशविरति १, प्रमत्त १, अप्रमत्त १, ए पांच गुणठाणे आउखा कर्मनो उत्कृष्ट प्रदेश बांधे, बीजा त्रीजा गुणठाणाविना मिथ्यात्व १, अविरति १, देशविरति १, प्रमत्त १, अप्रमत्त १, अपूर्व १, अनिवृत्ति १, ए ७ सात गुणठाणे मोहनीकर्मना उत्कृष्ट प्रदेश बांधे. मूल कर्म छनो, तथा उत्तर प्रकृति ज्ञानावरणी पांच, दर्शनावरणी ४ च्यार, अंतराय पांच, सातावेदनी १, उच्चगोत्र १, यशनाम १, ए १७ सत्तर प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध सूक्ष्म संपराय गुणठाणे बांधे, तथा अविरति गुणठाणे बीजी चोकडीनो उत्कृष्ट प्रदेश बांधे, देशविरतित्रीजी चोकडीनो उत्कृष्ट प्रदेश बांधे. ॥ ९० ॥

पणअनिअट्टी सुखगइ, नराउ सुर सुभगतिग विउविदुगं
समचउरंस मसायं, वइरं मिच्छो व सम्मो वा ॥९१॥

अर्थ—संजलणा ४, पुरुषवेद १, ए पाच प्रकृति अनिवृत्ति गुणठाणे उत्कृष्ट प्रदेशे बाधे, शुभविहायोगति १, मनुष्यायु १, सुरत्रिक ३, सुभगत्रिक ३, वैक्रियदुग २, समचौरस संस्थान १, असातावेदनीय १, वज्रऋषभनाराच संघयण १, ए १३ प्रकृतिनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध मिथ्यात्वी बाधे अथवा समकिती बाधे ॥ ९१ ॥

निद्दा पयला दुजुअल, भयकुच्छातित्थ संमगो सुजई।
आहारदुगं सेसा, उक्कोस पएसगा मिच्छो ॥९२॥

अर्थ—निद्रा १, प्रचला १, दुजुअल—हास्य १, रति २, अरति १, शोक २, भय १, दुगछा १, तीर्थंकर नाम १, ए नव प्रकृति समकिती उत्कृष्ट प्रदेशबंधे बाधे, सुजई—जे अपूर्वकरणी अथवा अप्रमत्त, आहारक दुगनो उत्कृष्ट प्रदेशबंध बाधे, शेष ६६ छासठ प्रकृतिना उत्कृष्ट प्रदेश सज्ञि मिथ्यात्वी बाधे. ॥ ९२ ॥

सुमुणी दुन्नि असन्नी, नरयतिग सुराउ सुरविउव्वि दुगं।
सम्मो जिणे जहन्नं, सुहुमनिगोआइखणि सेसा ॥९३॥

अर्थ—हवे जघन्य प्रदेशबंध बाधे ते कहे छे सुमुणी—भलो मुनि अप्रमादी, दुन्नी—आहारक दुगनो जघन्यबंध बाधे, असंज्ञी बाधे, नरकत्रिक ३, देवत्रिक ३, वैक्रियदुग (टबामां सुराउनो अर्थ नथी लख्यो माटे देवत्रिकने ठेकाणे देवायु पछी देवद्विक अने वैक्रियद्विक, एम बेसे छे, तत्त्व बहुश्रुत जाणे.) ए ६ प्रकृतिनो जघन्य प्रदेशबंध असंज्ञी पर्याप्तो बांधे, जिन नामनो जघन्य प्रदेशबंध समकिती बाधे, शेषा—शेष १०९

प्रकृतिनो जघन्य प्रदेशबंध सूक्ष्म निगोदियो अपर्याप्तो बांधे गुहने बंध स्यासीत्वे पण १०९ नो बंधज, शेषनो बंध नथी, जघन्ययोगी माटे जघन्य प्रदेश बांधे. ॥ ९३ ॥

दंसणछग भय कुच्छा, वि ति तुरिअ कसाय विग्घ-
नाणाणं।
मूलछगे ऽणुक्कोसो, चउह दुहा सेसि सव्वत्थ ॥९४॥

अर्थ—दर्शनावरणी ६–चक्षु दर्शनावरणी १, अचक्षु दर्शनावरणी २, अवधि दर्शनावरणी ३, केवल दर्शनावरणी ४, निद्रा ५, प्रचला ६, ए छ भय १, दुगंछा २, बीजी चोकडी ४, त्रीजी चोकडी ४, चोथी चोकडी ४, पांच अंतराय ५, पांच ज्ञानावरणी ५, ए उत्तर ३० त्रीस मूळ ६ छ कर्मनो अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध चउहा–सादि १, अनादि २, ध्रुव ३, अध्रुव ४, ए ४ च्यार भेदे जाणवो. एहीज ३० त्रीस प्रकृतिनो जघन्यबंध, अजघन्यबंध, उत्कृष्ट प्रदेशबंध, सादि, अध्रुव, ए बे भेदे जाणवो, तथा शेष ९० नेउने प्रकृतिनो, जघन्य, अजघन्य, उत्कृष्ट, अनुत्कृष्ट, ए ४ च्यार प्रकारनो प्रदेशबंध सादि, अध्रुव, भेदे पामीये, तिहां ७३ तो अध्रुवबंधी छे ते माटे बे बे पामीये, अने मिथ्यात्व १, अनंतानुबंधी ४, थीणद्धी ३, नामनी ध्रुवबंधी नव ९ ए १७ प्रकृति ध्रुवबंधी छे पिण प्रदेशबंध उत्कृष्टादिक कोइ ध्रुव नथी. ३० त्रीस प्रकृतिनो अनुत्कृष्ट प्रदेशबंध, गुणठाणे चढ्या विना जीवने ध्रुवबंध छे ते माटे. ॥ ९४ ॥

सेढिअसंखिज्जंसे, जोगट्ठाणाणिपयडिठिइभेआ।
ठिइबंधज्झवसाया, णुभागठाणा असंखगुणा ॥९५॥

अर्थ—घनीकृत लोकनी सातराजनी एकप्रदेशी श्रेणि तेहने असंख्यातमे भागे जेटला आकाश प्रदेश तेटला योग स्थानक छे, तेथी प्रकृतिना स्थानक तीव्र मदता रुप असख्यात गुणां छे, तेथी स्थितिभेद स्थितिना स्थानक असख्यातगुणा छे, तेथी स्थितिबंधना अध्यवसाय जीवभेदें तीव्र मदतारुप ते असख्यातगुणा छे, जे एकेके स्थितिस्थानके स्थितिबंधना अध्यवसाय असख्यात छे, ते माटे ४ तेथी रसबंधना स्थानक असख्यातगुणा छे, जे छठाणवृद्धिरुप रसबंधना स्थानक अग्निकायनीं सुइ छ दिशा फरतीना आकाशप्रदेश प्रमाण छे. ॥ ९५ ॥

तत्तो कम्मपएसा, अनंतगुणियातओरसच्छेआ(या)।
जोगापयडिपएसं, ठिइ अणुभागं कसायाओ ॥ ९६ ॥

अर्थ—ते माटे तेहथी कर्मवर्गणाना एकसमयगृहीत परमाणुआ अनंतगुणा छे, ६ तेहथी कर्मबंधपणे जे परमाणुआ बधाणा तेमा जे एक परमाणु तेमाहे कषायप्रत्ययी रसना छेद ते अनंतगुणा छे, जे कारणे सर्व जीवथी अनतगुणो रस हुवे (होय) तेहिज कर्मपणे बधाय ७, ते माटे, तथा प्रकृतिबंध, १ ते योगथी बंधाय, स्थितिबंध तथा रसबंध ते कषायथी बांधे, मिथ्यात्व, अविरत ते टबीकरणनो हेतु छे ॥ ९६ ॥

चउदसरज्जूलोगो, बुद्धिकओ होइ सत्तरज्जु घणो।
तद्दीहेग पएसा, सेढी पयरो अ तव्वग्गो ॥ ९७ ॥

अर्थ--हवे श्रेणिनो स्वरुप कहे छे-चौदराज प्रमाण लोक छे, बुद्धियें करीये तिवारें सातराज प्रमाण घन थाय. तेहनी दीर्घ लांबी एकप्रदेशनी श्रेणिने सेढी कहीये, ते सेढीनो वर्ग एटले तद्गुणो-गुणाकार करीये ते प्रतर थाय, तेहने वर्ग करे घन थाय. ॥ ९७ ॥

अणदंस नपुंसि त्थी, वेअ छक्कं च पुरिसवेअं च ।
दो दो एगंतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेइ ॥९८॥

अर्थ--हवे उपशम श्रेणि कहे छे-इहां उपशम श्रेणें उपशम समकिती लीधो छे, ते कहे छे-प्रथमथी चोथाथी मांडी सातमा गुणठाणा सीम अनंतानुबंधी ४ उपशमावे, पछे दर्शन मोहनी ३ तीन उपशमावे, पछी आठमे गुणठाणे आवी स्थिति घातादिक पांच ५ करण करीने नवमे गुणठाणे आवी नपुंसकवेद उपशमावे, १ पछी स्त्रीवेद उपशमावे १, पछी हास्यछक ६ उपशमावे, पछी पुरुषवेद उपशमावे, पछे बे बे कषाय उपशमावे, पछे एक उपशमावे (१) आंतरे अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी क्रोध २, उपशमावे, पछे संजलणो क्रोध, १ उपशमावे पछे अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी मान उपशमाव्या पछी संजलणमान उपशमावे पछी अप्रत्याख्यानी, प्रत्याखानी माया उपशमावे, पछी संजलणनी माया उपशमावे, पछी प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी लोभ उपशमावी, संजलना लोभनी किट्टी करे, तेहनो अनंतमो भाग संजलना लोभनो ते दसमे गुणठाणे उपशमावे ए रीते सरखुं सरखुं उपशमावे पछी उपशांतमोही थाय. हवे क्षपकश्रेणिनो क्रम कहे छे. ॥ ९८ ॥

अणमिच्छ मीससम्मं, तिआउ इग विगल थीण तिगुजोअं।
तिरि निरय थावर दुगं, साहारायव अड नपुं स्थी ॥९९॥

अर्थ—जे कोइ जीव लावे स्वकृत्त्व रसे ससारोद्विग्न आत्मालंवी थको चोथे तथा पाचमे, छट्ठे, सातमे गुणठाणे क्षयोपशम, अनतानुबधी ४ खपावे, पछी मिथ्यात्वमोहिनी खपावे, पछी मिश्रमोहिनी खपावे, पछी समकितमोहनी खपावे, पछी देवता १, नारकी १, तिर्यंच १, ना आउखा खपावे, खपावीने नवमे गुणठाणे चढे पछी नवमाने बीजे भागे इग–एकेन्द्रीजाति, विगल ३, थीणद्धी ३, उद्योत १, तिर्यंचद्विक २, नरकद्विक २, थावर, सूक्ष्मद्विक २, सावारण १, आतप १, ए १० सोळ प्रकृति नवमाने बीजे भागे खपे, अड–आठ कषाय खपावे, त्रीजे भागे, तेथी पछी चोथे भागे नपुसकवेद खपावे, पाचमे भागे स्त्रीवेद खपावे ॥ ९९ ॥

छग पुं संजलणा दो, निद्दाविग्घावरण खए नाणी।
देविंदसूरि लिहिअं, सयगमिणं आय सरणट्ठा ॥१००

इति शतकनामा पंचमकर्मग्रंथः समाप्तः ॥ ५ ॥

अर्थ—पछे छट्ठे भागे हास्य ६ छ खपावे, पछी पुरुषवेद खपावे, पछी आठमे भागे सज्वलन क्रोध खपावे, नवमे भागे संज्वलन मान खपावे, नवमा गुणठाणाने अते सज्वलननी माया खपावी दसमे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे आवी सज्वलननो लोभ खपावी वारमे गुणठाणे आवे तिहा वे निद्रा

खपावे, पछी बारमाने अंते अंतराय पांच, ५, ज्ञानावरणी, ५, दर्शनावरणी च्यार, ४, ए १४ चौदने खपे आत्मा नाणी–केवलज्ञानी थाये–लोकालोक प्रत्यक्ष देखे, ए देवेन्द्रसूरि आचार्य महाराजे लिख्यो शतक नामे कर्मग्रंथ पिण आप्य–पोताने सरणठ्ठा–संभारवाने अर्थे. इति पंचम कर्मग्रंथ टबार्थः समाप्तः १००

अथ टबाकार प्रशस्तिकार काव्यम्.

श्रीमत् पाठक राजसारकृतिनां शिष्या जिनाज्ञापराः।
श्रीमत् पाठक ज्ञानधर्मप्रवरां श्रीदीपचन्द्राह्वयाः।
अर्हन् मार्गसुपाठका गुणलया तद्वाक्यसेवानुगः।
सत्रार्थं गणिदेवचन्द्रमतिमान् संदर्शयन् शोभते॥१॥ इति॥५॥

संवत् १८६८ श्रावण शुक्लाष्टम्यां (श्रावण सुदि ८) रविवासरे लिपिकृते सकल पंडित सिरोमणि भट्टारक तपागच्छाधिराज पुरंदरप्रभु भट्टारक श्रीश्रीश्री १०८ श्रीश्रीश्रीश्रीश्रीश्री कीर्तिरत्नसूरीश्वरान् चिरंजीवी तत्शिष्य पं० बुद्धिरत्नेन लिपिकृते तत् शिष्य मुनि कान्तिरत्न पठनार्थं पठितः श्रीसूर्यपुरवरे श्री शान्तिनाथचरणप्रसादात् श्रीकल्याणमस्तु. (ए जे उपरथी प्रेसकॉपी थइ ते प्रति लिख्यानी शाल विगेरे तेमांथी लीधेल छे.)

इतिश्रीपंचम शतकाख्य कर्मग्रंथस्यटबार्थः समाप्तः॥

श्रीमद् देवचंद्रजी कृत

विचार रत्नसार.

प्रणम्य श्रीमहावीरं, शंकरं परमेश्वरं ।
विचाररत्नसारस्य, क्रियते बालबोधकं ॥ १ ॥

श्री जीनवाणीमहिमा वर्णन.

श्रीवीतरागनी वाणी भववेलकृपाणी, ससारसमुद्र तारिणी, महामोहान्धकार दिनकरानुकारिणी, क्रोधदावानलोपशमिनी, मुक्तिमार्गप्रकाशिनी, कलिमलप्रलयिनी, मिथ्यात्वछेदिनी, त्रिभुवनपालिनी, पापविशोधिनी, मन्मथस्तमिनी, अमृतरस आस्वादिनी, हृदय आल्हादिनी, आगमोद्गारिणी, चतुर्विध सघमनोहारिणी, भव्यजनकर्णामृतश्राविणी, सकळ कुमतिनिवारिणी, सर्वसशय निवारिणी, योजनप्रमाण विस्तारिणी, एहवी श्रीवीतरागनी वाणी महा प्रभाविक अतिशयवत जाणवी

ते वाणी भव्य प्राणीओए अवश्य सद्गुरु पासे साभळवी, केमके १ जीव, २ अजीव, ३ पुण्य, ४ पाप, ५ आस्रव, ६ संवर, ७ निर्जरा, ८ बध, ९ मोक्ष, १० धर्म, ११ अधर्म, १२ हेय, १३ ज्ञेय, १४ उपादेय, १५ निश्चय, १६ व्यवहार, १७ उत्सर्ग, १८ अपवाद, १९ आस्रव, २० परिस्रव, २१ अतिचार, २२ अनाचार, २३ अतिक्रम, २४ व्यतिक्रम, इत्यादि साभळ्या विना शास्त्रना भेद न जणाय,

परंतु पुण्यानुबंधी पुण्य विना श्रीजिनवाणी सांभळवानी रुचि जीवने थती नथी, केम जे सुठाम, सुगाम, सुजात, सुभ्रात, सुतात, सुमात, सुवात, सुकुल, सुबल, सुस्त्री, सुपुत्र, सुपात्र, सुक्षेत्र, सुदान, सुमान, सुरुप, सुविद्या, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, सुवेश, सुदेश, ए बावीश प्रकारनी उत्तम जोगवाइ सुपुण्य विना न पमाय, अने ते पुण्यबंध तो सत्संगसेवन तथा कुसंगना त्यागवडेज थाय छे; माटे सुमति, शीलवंत, संतोषी, स्वजन, साचाबोला, सत्पुरुष, सुमेला, सुलक्षण, सुकुलीन, गंभीर, गुणवंत, गुणज्ञ, एहवा पुरुषोनो संग करीए तो धर्म पामीए; तथा चुगल, चोर, छलग्राही, अधर्मी, अधम, अविनीत, अधिकबोला, अनाचारी, अन्यायी, अधीर, अधुरा, निःस्नेही, कुलक्षणा, कुबोला, कुपात्र, कूडाबोला, कुशीलिया, कुशासनी, कुलखंपण, मूंडा, मूंछ एहवा पुरुषोनो संग न कीजे.

प्रश्नोत्तर रत्नसार.

१ प्र०—जीव धर्म केम पामे ?

उ०—जीव त्रण प्रकारे धर्म पामेः—१ गुरुना उपदेशथी, २ पूर्वभवना अभ्यासथी, ३ सहज स्वभावे वैराग्यादि संयोगे पामे एम उपदेशसार नंदीपच्चीशीमां कह्युं छे.

२ प्र०—अभ्यास केटला प्रकारना छे ?

उ०—चार प्रकारनाः—१ सूत्रअभ्यास, २ अर्थ अभ्यास, ३ वस्तु अभ्यास, ४ अनुभव अभ्यास.

३ प्र०—जीवने पुण्य, पाप, अने वैर केवी रीते बधाय छे, अने ते केवा फळरूपे परिणमे छे ?

उ०—जीवने दयावडे पुण्य उपजे छे, अने हिंसावडे पाप निपजे छे, छकायना जीवने हणवाना परिणाम थाय, त्या पाप निपजे, ते छकायना जीवने त्रिकरण योगे हणता, वैर अने पाप बे निपजे, त्या पापना उदये अशाता, आकुळता, उद्वेगता, अस्थिरता उपजे, तथा वैरना योगे ते जीव आवी यथायोगे पीडे

४ प्र०—धर्म, पुण्य, अने पाप कर्म शाथी उपजे ?

उ०—त्रण प्रकारे—१ दर्शनमोहनीय कर्मना क्षयोपशमथी धर्म उपजे, २ चारित्रमोहनीयना उदयथी पुण्य पाप उपजे, तेमा अविरतिनो उदय मद थाय तथा क्षयो-पशम थाय त्यारे विरतिनो उदय थाय, ते वारे षट्कायना जीव उपर दया परिणाम उपजे, तेथी पुण्य उपजे, ३ अविरतिना तीव्र उदये पाप निपजे

हवे जे पुण्य पाप छे, ते चारित्रमोहनीयना उदयना मदपणाए तीव्रपणाए होय, अने धर्म, दर्शनमोहनीय कर्मना क्षयोपशम के क्षयथी होय, तथा पुण्य पापना फळ भोगवावे, ते वेदनीय कर्म तेना उदय वेदावे (फळ देखाडे), तथा पुण्य पापनो बंध पडे ते मोहनीय कर्मनी मुझवणे, पुण्य पाप परिणमे ते अतराय कर्मने क्षयोपशमे

ज्या राजा न्यायी अने सम्यग्दृष्टि होय, अने आचार्य निस्पृही होय, त्या जैन धर्म विशेष प्रकारे प्रवर्त्ते छे

५ प्र०—देशना कोने कहिये ?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

... भावार्थ छे.

८ प्र०—काउसग्गनुं विशेष स्वरूप कहो ?

उ०—काउस्सग्ग द्रव्य अने भाव बे प्रकारे कह्यो छे. उववाइ सूत्रमा द्रव्य काउस्सग्ग चार प्रकारना छे.—शरीर काउस्सग्ग, २ उपधि काउस्सग्ग, ३ भत्तपाण काउस्सग्ग, अने क्रोधादि चार कषायना त्याग रूप काउस्सग्ग (कषायकायोत्सर्ग)

भाव काउस्सग्ग त्रण प्रकारे छे·—१ कषाय काउस्सग्ग, २ ससार काउस्सग्ग, ३ कर्म काउस्सग्ग, ते मध्ये कषाय काउस्सग्ग क्रोधादि चार प्रकारना छे, ससार काउस्सग्गने (देव, मनुष्य, तिर्यंच, अने नरक ए गतिनी इच्छा रहितपणा रुप) चार प्रकारनो जाणवो, कर्म काउस्सग्ग आठ प्रकारनो, ते ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मना भेदे आठ प्रकारनो जाणवो.

९ प्र०—विधि अने अविधिए करेली क्रिया यथाक्रमे केवा फळ रूपे परिणमे ?

उ०—शुभ क्रिया जे विधिनी छे ते स्वभावरुपे परिणमे, त्या निर्जरा निपजे, तथा शुभ क्रिया जे अविधिनी छे ते बधरुपे परिणमे, ते लौकिक यश सौभाग्यादि फळरुप परिणमे, तथा पुण्यरुप परिणमे ते बधरुप थाय, अने तेथी ससार भ्रमण विशेष निपजे.

१० प्र०—जीवने खेद उपन्यो केम टळे ?

उ०—जीवने खेद निवारवाने अर्थे पूर्वकृत कर्म सभारीए. जेवा जीवे पूर्वे कर्म बांध्या छे, तेवां उदये आवे छे, ते मध्ये केटलांएक कर्म प्रदेशथी वेदीने खेरवे छे, केटलाएक निविड कर्म बाध्यां ते विपाके (रसो-

दये) वेदीने खेरवे; पण दृष्टिमान् ज्ञानी तो, ते कर्मोने समभावे भोगवतां थकां उदयने निष्फळ करे छे; आलोइ, निंदी, पश्चात्ताप करे, तेवारे अल्पबंध थाय, बहु निर्जरा करे; ते माटे बंध निवारवाने अर्थे उदय निष्फळ करे, एटले कर्मनो विपाक समभावे भोगवे; अने शुद्धोपयोगे स्वरूप विचारे त्यारे बंध अल्प करे.

११ प्र०—धर्म कथा केटला प्रकारनी ?

उ०—चार प्रकारनी:—१ आक्षेपिणी, २ विक्षेपिणी, ३ निर्वेदिनी ४ संवेदिनी; त्यां सत्य मार्गने विषे जीवने जोडावे ते आक्षेपिणी, अने मिथ्यात्व मार्गथी निवर्तावे ते विक्षेपिणी, तथा निर्वेदिनी ते वैराग्य उपजावे एटले संसार जे विषयकषायनी मलीनपरिणति ते थकी जीवने उद्विग्न रखावे, अने संवेदिनी ते मोक्षाभिलाष उत्पन्न करावे.

१२ प्र०—भावथकी नव निधान कयां ?

उ०—केवळीआश्रिने नव क्षायिक लब्धि उपजे ते नव निधान जाणवां; अने मुनिआश्रि पांच इंद्रियना विषयना विकारथकी, तथा क्रोधादिक चार कषाय थकी जे निवर्त्या ते महाभागने भाव थकीअखुट नव निधान प्रगट्यां जाणवां.

१३ प्र०—पांच इंद्रियोना विकार मटे त्यारे कया गुण निर्मळ थाय ?

उ०—चक्षु इंद्रियनो विकार मटे त्यारे हृदयने विषे निर्मळ

ज्ञानचक्षु प्रगटवारुप गुण निपजे, श्रोत्रेन्द्रियनो विकार मटतां जिन वचन श्रवण प्रीतिसहित प्रतीति पूर्वक थाय, जीव्हा इंद्रिय विकार मटता आत्मिक अनुभव रसस्वाद प्रगटे, घ्राणेन्द्रिय विकार मटता आत्मिक गुण सुवासना प्रगटे, स्पर्शेंद्रिय विकार गये आत्मप्रदेशे स्वभाव परिणति स्पर्शन गुण प्रगटे

१४ प्र०—क्रोध, मान, माया, लोभ गये कया गुण प्रगटे ?

उ०—क्रोध गये समता गुण प्रगटे, मान गये मार्दव गुण प्रगटे, माया गये आर्जव गुण प्रगटे, लोभ गये संतोष गुण नीपजे

१५ प्र०—चार प्रकारे मिथ्यात्व छे ते केवी रीते ?

उ०—१ प्रदेश मिथ्यात्व, २ परिणाम मिथ्यात्व, ३ प्ररूपणा मिथ्यात्व, ४ प्रवर्तन मिथ्यात्व, ते मध्ये जीव व्यवहार समकित पामे त्यारे प्ररुपणा तथा प्रवंर्तन मिथ्यात्व टळे, अने ग्रंथिभेद थई उपशम, क्षयोपशम, समकित पामे त्यारे परिणाममिथ्यात्व टळे, अने क्षायिक समकित पामे त्यारे प्रदेश मिथ्यात्व टळे

१६ प्र०—देशना केटला प्रकारनी छे ?

उ०—१ धर्म देशना, २ गति देशना, ३ बंध देशना, ४ मोक्ष देशना, ते मध्ये धर्म एटले जीवनी शुद्धात्मपरिणति तेनी सन्मुख जीव जेथी थाय, तत्त्वाभिलाष जेथी प्रगटे, एवो उपदेश ते धर्म देशना, जे थकी जीवने विषय कषायनी मलीन परि-

णति वधे, चतुर्गति भ्रमण विस्तार पामे एवी सावद्य देशना ते गति देशना, जे उपदेशथकी जीवने नाना प्रकारनां कर्मोनो बंध पडे एवी प्रवृति करवानुं मन थाय ते बंध देशना, जे सांभळवाथी जीव वैराग्य परमरस पामी, यथार्थ बोध लही पोतानुं शुद्ध आतमस्वरूप जे सकळ कर्मथी रहित मोक्षरुप छे, ते निपजाववानी तीव्र रुचि प्रगटे ते मोक्ष देशना कहिए.

१७ प्र०—अनर्थ दंडना चार प्रकार कया ?

उ०—१ अपध्यान एटले आर्त अने रौद्र ध्यान, २ प्रमादाचरण, ३ हिंसकशस्त्रप्रदान, अनर्थ दंड एटले जीव हिंसानां साधनो शस्त्रादि पूरां पाडवां ते, ४ पापनो उपदेश देवो.

१८ प्र०—आठ प्रकारना वचन परिसह कया ?

उ०—१, हीलणा परिसह ते मुनिनी पूर्व गृहस्थाश्रम अवस्था हीन जात्यादि दूषणो काढी कठोर मर्म वचने साधुने हीले निंदे ते; २ खिंसणा परिसह ते साधुना पूर्व कृत कर्म (जनित) अवगुण उघाडा पाडी निंदे, ३ निंदण परिसह ते साधुपुरुषनो निरादर करे दुगंछादि दर्शावे, ४ गर्हणा परिसह ते साधुओना समक्ष छता अछता अवगुणो बोले, ५ ताडणा परिसह ते साधुने मारे, कुटे, ६ तर्जना परिसह ते साधु प्रत्ये अतिशय आक्रोश करी अत्यंत कठोर वचन कहे, भयंकरता दर्शावे, ७ पराभव

परिसह ते साधुना वस्त्र पात्रादिक सजम उपकरणो हरे, भागे, तोडे, फोडे. ८ एषणा परिसह ते साधुने भातपाणी प्रमुखनो अतराय पाडवानो भय देखाडी त्रास उपजावे, ए आठ वचन परिसह, साधु पुरुषे सम्यक् प्रकारे सहन करवां, पण धर्मथी चलायमान थवु नहि

१९ प्र०–१ सिज्झइ, २ बुज्झइ, ३ मुच्चइ, ४ परिनिव्वाइ एटले शु ?

उ०–१ सिज्झइ एटले परिणामनी निर्मळतावडे कर्मनु ओछु करवु, आत्मप्रदेशथकी कर्मांश पुद्गलो घटाडवा ते. २ बुज्झइ एटले वस्तु स्वरूपनु तदनंतर ज्ञान थवु ते ३ मुच्चइ एटले कर्मपुद्गलोनु आत्मप्रदेशथी क्षय थवु, कर्म सत्तानो नाश थवो, फरी तेवो बध कदी न पडे तेवा परिणाम ते. ४ परिनिव्वाइ एटले आत्मा ठरणपणाने पाम्यो, निजस्वरुप आलवि समाधिष्ट थयो ते.

२० प्र०–बुद्धे, मुत्ते, पडिनिव्वुडे, अडगडे शब्दोनो भावार्थ कहो ?

उ०–१ बुद्धे एटले आत्मा सपूर्ण ज्ञानस्वरूपी थयो ते. २ मुत्ते एटले सर्व कर्मथी मुकाणो माटे मुत्ते ३ पडिनिव्वुडे एटले सर्व कर्म शिथिलभूत एटले जरजरित थया ते ४ अडगडे एटले अतकृते कहेता ससारनो अत कर्यो भवे स्थिति सदंतर नाश करी ते.

२१ प्र०—चार प्रकारे धर्म केवी रीते छे ? ते तेना फळ परिणाम सहित यथार्थ समजावो.

उ०—१ आचार धर्म ते रुडा आचारनुं सेवन करवुं जेथी अनाचारनो त्याग थाय. २ दया धर्म ते सर्व प्राणीमात्रने आत्मवत् जाणी सर्व प्रत्ये समान मैत्रीभाव दर्शावी, यथाशक्ति उपकारादि करी, तेमनुं निरंतर भलुं चिंतववुं, पण अंतर्मां कदापिकाळे अपराधी उपर पण बुरु चिंतववाना द्वेषिपरिणाम न राखे, तेम बेपरवाइ प्रवृत्ति पण न दाखवे. ३ क्रिया धर्म ते सामायिक, पोसह, प्रतिक्रमण, पूजादि शुभ करणी विधिए आदर सहित करे, जेथी कर्मनो काट उतरे, भवसंतति घटे, परंपराये मुक्ति मार्गे जोडाय अने ४ वस्तुधर्म ते जे थकी वस्तु एटले आत्म स्वरूपानुगत पूर्ण बोध उपजे, स्वरूपाचरण स्वरूपरमण थाय अने शुभाशुभ समस्त कर्म निर्जरे तेवो सर्वोत्तम धर्म, एम ए धर्मना चार प्रकार वस्तुगते परमात्माए प्रकाश्या छे, अने तेना कारणरुप चार व्यवहार धर्म ते दान, शियळ, तप अने भाव धर्मो छे, आ चार धर्मवडे अनाचार दूर थाय, लौकिकयश प्रतिष्ठा पामे, अन्य तीर्थिओ पण जैनधर्मनी प्रशंशा करे, जैनाचार अनुमोदे; माटे आचारः प्रथमो धर्मः इति वचनात्; दयाधर्मवडे हिंसक कर्म प्रवृत्ति टळे, शुभ पुण्य पुष्ट करी परंपराये जीव मुक्तिने योग्य थाय; ए रीते फळ परिणाम पूर्वक धर्मना

चार प्रकारने यथाशक्ति सविनय सेवम करी कोइ परस्पर दुहवाय नहि, एम जे उत्तम प्राणी यथार्थ स्याद्वाद रीते जाणीने पाळे ते सुलभबोधी थइ वहेलो सिद्धि वरे, एवीज रीते जे प्राणी क्रियाविधि आदरे, ध्यानपूर्वक उपयोग शुद्ध राखे, ते प्राणीना सर्व मनोवाछित पूर्ण थवा साथे शीघ्र परमात्मस्वरूपने पामे.

२२ प्र०—त्रण प्रकारना कर्मनुं स्वरूप समजावो ?

उ०—द्रव्य कर्म ते ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मोनी पुद्गल-दलिक वर्गणा, २ नोकर्म ते औदारिकादि पाच शरीर ३ भावकर्म ते आत्मानी अनादि काळनी प्रदेशे लागेली रागद्वेषनी अशुद्ध परिणति, ते मध्ये द्रव्यकर्म तथा नोकर्म पुद्गलाश्रित छे, भावकर्म आत्माश्रित छे, पहेला बे कर्म विनाशी छे केमजे अनादि अनत अभव्याश्रि अने भव्याश्रि अनादि तथा सादि सात भागे आत्मप्रवृत्तिरुप होवाथी छे, तथा हर्षोल्लास ते भावकर्म आश्रित छे अहिं दृष्टतथकी आ वात विशेष स्पष्ट थशे तेथी कहीए छीए.—के जेम एक चोखा नामना धान्यनी कोठी छे, तेमा धान्य जे छे ते द्रव्य कर्म, अने कोठी ते नोकर्म, अने चोखाने लागेलो जे मिणो ते समान भावकर्म चीकासरुप आत्मानी अशुद्ध परि-णति जाणवी

२३ प्र०—अरिहतादि नव पदनो भावार्थ तथा ते प्रत्येकनु

तन्मय ध्यान करतां थकां शुं? शुं ? गुण निपजे ते भिन्न भिन्न कहो ?

उ०–अरिहंतादि पंचपरमेष्टिमहाराजनुं स्मरण करतां उदयकर्मनुं निवारण थाय; अरिहंतादिनुं द्रव्यथी शरण करे तो द्रव्यथी उदय आवतां सर्व पाप निष्फळ थाय, विपाक वेदना पण अल्प थाय, इत्यादि घणो गुण निपजे, सर्व द्रव्यपापनो नाश थाय, एम आत्मा आत्मानुं स्मरण करे, ध्यानगत् वज्रपिंजरवत् पोताने स्वरूपे परिणमे, त्यारे सर्व कर्मनो नाश करे, एम आत्मस्मरण तथा निमित्तस्मरणनुं स्वरूप जाणवुं; हवे अरिहंतने संभारतां, समरतां, परिणमतां आत्माने जे गुण निपजे ते कहिए छीए, १, अरि एटले रागद्वेषरूप भावशत्रु तेनो नाश थाय, अने वीतराग स्वरूप प्राप्त थाय, २ तेम सिद्धपदनुं तन्मय ध्यान धरतां आत्मा निष्पन्न अरुपि परमात्मभावने पामे, ३ तेम आचार्यपदनुं ध्यान धरतां शुद्ध पंचाचार प्रवर्तन शुलभ उदय आवे, भवांतरे आचार्य गणधरादिपद पामे, ४ उपाध्यायपदनुं ध्यान धरतां शास्त्रार्थ सूत्रार्थ सुलभ थाय, अध्यापक शक्ति भवांतरे प्रगटे, साधुपदनुं ध्यान धरतां मुक्तिमार्गनी साधना सुगम थाय, सुलभबोधिपणुं प्रगटे, वळी चारित्र सुकर थाय, गजसुकुमालनी पेठे शीघ्र मुक्तिपद पामे; ६, दर्शनपद आराधतां सम्यक्त्व निर्मळ करे, वस्तु प्रतीति दृढ थाय, परमात्मस्वरूपनो

अवगाढ पुष्ट परिचय निपजे, ७ ज्ञानपद आराधतां बोधशुद्धि थाय, तत्त्वभासन प्रकाश विस्तरे, ८ चारित्रपद आराधता निरतिचारपणे पच महाव्रतनी शुद्ध प्रतिपालना पूर्वक सामायकादि पाच भावचारित्र परिणति थाय, स्वरूप रमणता सुलभ थाय, ९ तपपद आराधता इच्छा निरोध थाय, समस्त पौद्गलिक पीपासा टळे, तृष्णा दाह उपशमे, अने ममत्वभाव मळ गळी जाय इति भाव

२४ प्र०—कर्मनो उदय तथा बध जीवने केवी रीते थाय छे ? ते स्पष्ट समजावो

उ०—बांध्यां कर्म उदय आवे छे, जेवे रसे बाध्या होय, तेवेज रसे तथाविध द्रव्य क्षेत्र काळ भाव पामीने, प्रदेशे तथा विपाके भोगवे, ते भोगवतां जेवा नवा बधाय पण समभावे वेदेतो निर्जरा थाय, अने विषम भावे एटले रागद्वेषादि मलीनभावे वेदे तो नवां बधाय तथा विषमभावे भोगवीने पछी पश्चात्ताप करे तो कर्मबधनो रसवात करी चीकास मटाडे, ते उदयकाळे सुगमतायी खरी जाय, अने जो कर्म विषमभावे भोगवे, दुर्ध्यान करे तो, उदयकाळे अत्यत दोहिला भोगवीने खपावे, वळी वेदता थका नवां कर्मनो गाढ बध करे.

२५ प्र०—बोध अने समाधिनु स्वरूप समजावो.

उ०—सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रत्नत्रयी सुगम प्राप्ति ते बोध, अने अहिं तेम भवान्तरने विषे निर्वेदन-

पणे तेनी सुलभता ते समाधि, एटले चित्तनी स्थिरता विश्रांतिभाव जाणवो.

२६ प्र०—वैराग्य अने संवेगमां शो फेर ?

उ०—संसार एटले विषय कषायादि महा मलीनताना कारणरुप शरीर, स्वजन परिवार, भोग वैभवादिथकी विरक्त बुद्धि एटले रागनो त्याग तेने वैराग्य कहीए. अने एकांत मोक्षनीज अभिलाषा, शास्वत स्वाभाविक चिदानंदघनमय परमात्मप्राप्तिनीज इच्छा तेने संवेग कहीए; अने एवा संवेगे करीने सहित होय तेज खरासंवेगी जाणवा.

२७ प्र०—दान, शील, तप अने भाव ए चार कया साधनना बळवडे प्राप्त थाय ?

उ०—दान, धनबळथी। शील, मनबळथी। तप, तनबळ वडे। अने भाव, सुज्ञान बळे.

२८ प्र०—कइ वस्तुनी प्राप्ति खरा भाग्योदयवडे थाय ?

उ०—१ सद्गुरुनी देशना, २ सुदेवनी सेवना, ३ अने सुधर्मनी आराधना.

२९ प्र०—तिर्यक् परिचय अने ऊर्ध्व परिचय कोने कहिए ?

उ०—धर्मास्तिकायादि पांच द्रव्यो जे सप्रदेशी छे, तेनी तिर्यक् परिचय संज्ञा छे; अने अप्रदेशी एक काळद्रव्यने ऊर्ध्व परिचय संज्ञा छे.

३० प्र०—धर्मनुं स्वरूप चतुर्विध कहुं छे ते केवी रीते ?

उ०—१ वस्तुनो मूळ स्वभाव ते धर्म, २ क्षमादि दशविध

यति धर्म, ३ दर्शन ज्ञान चारित्ररुप रत्नत्रयीधर्म, ४ छकाय जीवनी रक्षारुप धर्म.

३१ प्र०—मुनिने चतुर्विध सयम छे ते शी रीते ?

उ०—१ प्राण सयम, ते षट्कायजीववधनी अविरति टळी माटे, २ इन्द्रिय सयम ते पांच इन्द्रियोना विषय विकारोने टाळे माटे, ३ कषाय सयम ते त्रण कषायनी चोकडीना उदय मट्या माटे, ४ मन सयम ते द्रव्य तथा भाव मनना विकल्प सवर्या माटे.

३२ प्र०—द्रव्य मन अने भावमननो अर्थ समजावो

उ०—द्रव्य मन ते पांच इन्द्रियोना विषयरुप, मनोवर्गणा दलिकने अवलम्बन मनन शक्ति, मनोयोगद्वाराए चिंतन परिणाम, निर्विकारी निर्विकल्पी शक्ति विशेष ते केवळीने पण होय. भावमन ते व्यक्ताव्यक्त सकल्प विकल्परुप विकारी मोहजनित, शुभाशुभ परिणामरूप छे.

३३ प्र०—स्वभावे तथा विभावे आत्मानु परिणमन थाय त्यां शु शु फळ निपजे ?

उ०—आत्मा स्वभावे परिणमे तिहा सम्यक्त्व गुण निपजे, तेना फळ ज्ञान अने आनद ए बे उपजे, अने ज्यारे आत्मा देहगेहादि परभावे परिणमे तिहां मिथ्यात्व निपजे, तेना फळ विषय कषायरूप मलीन परिणति, चतुर्गति भ्रमणरूप ससार सतति छे. सुख दु खरूप छे, एम जाणी उत्तम जीवोए विभावदशानो त्याग करी जेम बने तेम सत्समे रही स्व-

आलंबन, स्वभाव परिणमन, शुद्धोपयोगे करवा प्रयत्न करवो.

३४ प्र०—जीवना द्रव्य गुण पर्यायना घातक कोण छे ?

उ०—१ अज्ञानपणुं ते आत्मद्रव्य घातक छे; २ मिथ्यात्व ते आत्मगुण घातक छे, ३ अविरति ते आत्मिक सुख पर्याय घातक छे, ४ तथा अज्ञान अने मिथ्यात्व ते आत्मानुं जीवपणुं दाबे छे, आत्मस्वभाव परिणति रुंधे छे, अने अविरति दोष, आत्मिक सुख रुंधे छे.

३५ प्र०—जीव द्रव्यनिर्जरा अने भावनिर्जरा केवी रीते करे ?

उ०—जीव शुद्ध ज्ञानोपयोगे भावनिर्जरा करे छे, अने वैराग्यभाव उदासीनताए द्रव्यनिर्जरा करे छे.

३६ प्र०—पौद्गलिक इच्छा तथा मूर्च्छाभावे करी जीव शुं पुष्ट करे ?

उ०—इच्छाए अज्ञानपणुं, अने मूर्च्छाए मिथ्यात्व पुष्ट करे.

३७ प्र०—गुण पर्यायना घातक कोण ? तेनुं स्वरूप कहो.

उ०—आत्माना गुणपर्यायना घातकः—१ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ मोहनीय, ४ अंतराय ए चार घनघाती कर्म छे अने शेष वेदनीय आदि मूळ तो अघाती छे, पण मोहमिश्रित थये ते पण घातकपणे परिणमे छे, ते मध्ये अतिप्रबळ मोह कर्म छे, तेनी अठ्ठावीस प्रकृतियो छे ते मोह, राग अने द्वेष ए त्रण भागे वहेंचीए त्यां मोहशब्दे मिथ्यात्व मोहनीय जाणवी, राग, द्वेष शब्दे चारित्र मोहनीय जाणवी.

प्रथमनी मिथ्यात्वमोहनीयनी त्रण प्रकृति छे, ते निर्मळ सम्यक्त्व गुणनी घातक छे, अने बीजी चारित्रमोहनीय कर्मनी पचीस प्रकृतियो छे, ते मध्ये क्रोध मान ए बे चार चोकडीनी लेता आठ थाय, अने नव नोकषायमांथी अरति, शोक, भय अने दुगछा ए चार गणता सर्वे मळी ए बार प्रकृति द्वेषना घरनी वा अथवा रागद्वेष जनित छे, अने शेष माया लोभादि आठ कषाय अने हास्य, रति, अने त्रण वेद ए पाच मळीने तेर प्रकृतिओ रागना घरनी छे

३८ प्र०—शरीरगति, परिणामगति, श्रद्धागति, जे रीते परिणमे छे ते रीते कहो ?

उ०—१ शरीरनीगति औदयिकभावे वेदनीय मध्ये छे, २ परिणामगति, विषय कषायनी प्रवृत्ति मध्ये इष्टानिष्टरूपे छे, श्रद्धानी गति, तत्त्व अतत्त्व विवेचन कर्णरुपे छे

३९ प्र०—जीवना द्रव्य, गुण, अने पर्याय शाथी समरे एटले सुधरे ?

उ०—दर्शन, ज्ञान, अने चारित्र गुणे करी अनुक्रमे समरे

४० प्र०—ते शी रीते छे, ते विस्तारथी स्पष्ट समजावो ?

उ०—आत्मा द्रव्य असख्यात प्रदेशी छे, तेनो जिन वचन प्रतीते तथा अनुमाने करी अनुभव करे ते दर्शन, तथा परोक्ष अने प्रत्यक्षे जे प्रतीतात्मक धर्म भासन थयो, जे आत्मद्रव्य दर्शन द्वाराए

भास्यो दिठो ते ज्ञान; ते सम्यक्दर्शन गुणे करी आत्मद्रव्य समरे; सम्यक्दर्शन गुण हेतु ते द्रव्य दर्शन; तथा ते प्रतीतात्मक धर्मरूप अनंत गुणनुं जाणपणुं थयुं ते गुण हेतु सम्यक्ज्ञान जाणवुं; तथा द्रव्य अने गुणरूपे जे उपयोगना पलटणपणा रूप परिणमन थाय तेने पर्याय कहिये; ते पर्यायनो हेतु स्वरूपाचरण चारित्र गुण हेतु छे; अर्थात् जीवना पर्याय चारित्र गुणे करी समरे, अने ज्ञान गुणे जीवना गुण समरे, तथा दर्शनगुणे आत्म द्रव्य समरे, सुधरे ए भाव जाणवो.

४१ प्र०—जन्म, जरा, अने मरणनुं दुःख केम टळे ?

उ०—शुद्ध रत्नत्रयीनी प्राप्तिए; ते आवी रीते के जीवे पूर्वे सम्यक्त्व पाम्या पहेलां अनंत पुद्गल परावर्तन काळ सुधी जन्म कर्या ते हवे सम्यक्दर्शन पाम्यो; माटे उत्कृष्ट कदाच जन्म करे तोपण अर्ध पुद्गल परावर्तन काळ उपरांत जन्म न करे, माटे दर्शन-गुणे जन्मनी पीडा टळे; तथा जरा जे शुभाशुभ कर्म उदयागते आवे छे ते सुखदुःखरूप वेदावे, वेदनीय विपाक, सम्यक्ज्ञान गुणे टळे; अने स्वरूपाचरण एटले शुद्ध व्रताचरण रूपे चारित्र गुणे मरण पर्याय, गत्यंतर जवुं टळे. एटले चारित्रगुणे मरण वेदना टळे सारांश जे सम्यक्दर्शने जन्मनी, ज्ञान गुणे जरावस्थानी, अने चारित्र गुणे मरणनी वेदना टळे छे, ए भाव जाणवो.

४१ प्र०—योगप्रत्ययिक सत्तागत, मिथ्यात्वप्रत्ययिक अने अविरतिप्रत्ययिक ववकृतकर्मो शी रीते टळे ?

उ०—अशुभ योगे बाधेला कर्म तप सजमादि शुभ क्रिया व्यापारवडे, सत्तागत कर्मो शुद्धोपयोगे, स्वद्रव्य पर्याय परिणाम वडे, स्वभावाचरण शुद्ध ध्यानालंबनवडे निर्जरे, सम्यक्‌दर्शनवडे मिथ्यात्व प्रत्यइया टळे, अने अविरति प्रत्यइया, विरति परिणामे टळे, ते विषे कह्यु छे जे —

दुहा.

आगमे अध्यातमतणा, कह्या घणा प्रबंध,
द्रव्यगुणपोगे परिणमे, तो सोतु अने सुगंध

४३ प्र०—कषाय, प्रमाद, इद्रियविषयराग, अने योग प्रत्यइयां बाधेला कर्म टाळवाना उपाय कया ?

उ०—कषाय प्रत्यइया, उपशमादि समताभावे टळे, प्रमादे बाधेलां अप्रमाद दशावडे टळे, विषय राग प्रत्यइयां तपस्यावडे टळे, अने योग प्रत्यइया अयोगी दशाए शैलेशीकरणे प्रवर्तता टळे.

४४ प्र०—निश्चयनय अने व्यवहारनय जीवने शु गुणकारी छे ?

उ०—सम्यक्‌दृष्टि जीव श्री जिणप्रणीत स्याद्वादना जाण, जैनशैलिना उपयोगी बोधवान भव्यमार्गीओने निश्चयनय दृढता, आस्तिकना कारणहेतु छे, अने व्यवहारनय ते जीवना पर्याय शुभाशुभ कर्मरूपे जे थया छे, तेने समजवाना हेतुरूप छे, व्यवहारनय केडे उद्यम छे, अने निश्चयनय केडे चित्तनी स्थि-

रता, दृढता छे; एम ए बे नयो आत्मद्रव्यने समाखामां समकाळे गौणता मुख्यताए गुणकारी छे; माटे एमांथी एकपण नयने उत्थापे के एकांते निषेधे तो जीव एकांतवादी मिथ्यात्वी जाणवो, एम श्री जिनेश्वर भगवंतनी वाणी छे, ते यथार्थ सद्दहवी.

४५ प्र०—निश्चय अने व्यवहारनुं सम्यक् स्वरूप स्पष्ट समजावो?

उ०—श्री जिनवाणी प्रतीते ग्रहिने षट् द्रव्यना यथार्थपणे गुणपर्याय धारे, अनुभव प्रत्यक्षे स्वरूपने वेदे, तथा गुणपर्यायनुं विलेखन करे, तथा पुद्गलादिक कर्म पर्यायमां तदाकार न परिणमे, पांच इंद्रियना भोग विषयो इष्टानिष्टरूप न वेदे, पोताना स्वरूपने भेद रत्नत्रयीरूपे आराधे, तेने व्यवहार सम्यक्त्वी कहिये; तथा पोताना गुण गुणी पर्याय अभेदरूपे रत्नत्रयरूपे, निर्विकल्प समाधि परिणमे तेहने निश्चयसम्यक्त्वी कहीए; त्यां व्यवहार सम्यक्त्व ते निश्चय सम्यक्त्वनुं कारण छे; अने निश्चय सम्यक्त्व ते केवळज्ञाननुं कारण छे.

४६ प्र०—पूर्वोक्त उभय सम्यक्त्वीने व्यवहार प्रवृत्तिए शुं लाभ थाय?

उ०—नवतत्त्व, षड्द्रव्यादिकनुं आस्तिकभावे दृढ श्रद्धान, देव गुरु धर्मनुं यथार्थ श्रद्धान, तत्त्व बुद्धिना विशेष प्रकाशे करी तत्त्वातत्त्वनुं नयभंगादिके, अनेकांत मार्ग विशेष रीते अवलंबन थतां आगळ परंपराए

वस्तु व्यवहारसम्यक्त्व जे पूर्वे कह्यु छे, ते रूपने मेळवी आपे

४७ प्र०–धर्म, कर्म, पुण्य अने पाप केवी रीते थाय छे, अने तेना भिन्न भिन्न फळ शा शा छे ? ते बराबर कहो.

उ०–जीव शुद्धोपयोगे वर्ततां एटले पोताना द्रव्यगुण पर्यायथी तन्मयपणे परिणमे त्यां ते धर्म करे, अने रागद्वेषमय अशुद्धोपयोगे वर्तता कर्म बांधे, एम शुद्धोपयोगे धर्म अने अशुद्धोपयोगे कर्म निपजे छे, तथा शुद्धोपयोगे शुभयोगे पुन्य बांधे, अर्थात् मन वचन कायाना योग प्रशस्तभावे तथाविध गुणानुरागे पूजा, सामायक, प्रतिक्रमण, पोसह, सिद्धांत श्रवण, अभ्यास, मनन, दानादि शुभ योगे प्रवर्ततां जीव पुण्यानुबंधी पुण्यनो रस ढाळे तेमज वळी अशुभ मन वचन कायाना योगे विषयादि प्रवृत्तिए, अप्रशस्तभावे, तदाकार अभिरूपे परिणमतां जीव निविड पापबंध करे, हवे तेना फळ कहिये छीए–पुन्यथी शुभ गति, शुभ सामग्री, शाता, अनुकुळतादि शुभ संयोग जीव पामे, तथा शुद्धोपयोगी धर्मवडे कर्मनी निर्जरा करी मुक्तिपद पामे; तथा अशुद्धोपयोगे वर्तता पाप बांधे, तेथी जीव संसारमां घणो काळ रहे, घणा भव करे, अशुभोपयोगे कठीन पापबंध करीने जीव ज्यां त्यां घणी अशाता पामे, साराश जे पापे अशाता, पुण्ये शाता, कर्मे संसार अने धर्मे मोक्ष थाय छे.

४८ प्र०—अल्प पापबंध अने अल्प कर्मबंध शी रीते थाय? ते तेनी चौभंगी सहित कहो.

उ०—पांच इंद्रिय अने त्रण योगना अशुभ व्यापारमां तदाकारपणे न परिणमे, सखेद प्रवर्ते तो अल्प पापबंध थाय; ते आलोयणे निंदागर्हा करतां छूटे; तथा शुद्धोपयोगे जे कर्म बंध नीपजे ते भोगवे छुटे; पाप प्रवृत्ति करतां तीव्र मलीन परिणामे तन्मय थतां तीव्ररसे घणां निविड कर्म बांधे; अने घणी अशुभ योगनी हलचले पाप पुद्गल घणां मेळवे, पण तदाकारपणे तीव्र कषाय अनुबंध न होय तो शिथिल बंध करे; एम कोइ जीवने पाप घणुं अने कर्मबंध अल्प, कोइने कर्मबंध बहु अने पाप अल्प, कोइने पाप घणुं अने कर्मबंध पण घणो, अने कोइने पापबंध कर्मबंध एके नहि; एम कर्मबंध अने पापबंध आश्री चौभंगी जाणवी.

४९ प्र०—धर्म, कर्म अने भर्म शाथी नीपजे?

उ०—शुद्धोपयोगे धर्म अने क्रियाए कर्म अने मिथ्यात्वे भर्म निपजे.

५० प्र०—पाप, पुण्य अने धर्म ए एक वस्तु छे के जुदी?

उ०—धर्म, पुण्य अने पाप ए त्रणे वस्तुभिन्न, गतिभिन्न, उपयोगे भिन्न अने फळपणे भिन्न भिन्न छे; धर्म क्षमादि दशविध यति धर्मरूप छे, शुद्धोपयोग परिणाति ए संवररूप छे, अने तेनुं फळ मोक्ष छे; पुण्य नव प्रकारे बंधाय छे शुभ परिणामे करी, ते

बेंतालीश भेदे अनुकुळपणे शाताफळरूपे भोगवाय छे, पुण्य पौद्गलिक जड वस्तु सोनानी बेडी रूप विनाशी ससार हेतुरूप होवाथी मुनिने निश्चयनय त्याज्य छे, पाप अशुभ परिणामे अढार प्रकारे बधाय छे, बीयासी प्रकारे प्रतिकुळपणे अशाता फळरूपे दु खदायिपणे लोढानी बेडी समान भोगवाय छे, ते तो सर्वथा प्रकारे हेय छे एम धर्म स्वभाव जनित आत्मिक छे, अने पुण्य पाप कर्म जनित पौद्गलिक छे, धर्म उपादेय छे सर्वथा प्रकारे, शुभ कर्म व्यवहारे, अपवादे उपादेय छे, निश्चय स्वरूपे हेय छे, अने अशुभ कर्म तो सर्वथा प्रकारे बने नये हेय एटले त्यागवा योग्य छे.

९१ प्र०—धर्म जीवने शाथी निपजे ?

उ०—ज्या सुधी जीवना परिणाम सकल्प विकल्पमा वर्ते छे, त्या सुधी शुभाशुभ कर्मबंध निपजे, अने ज्यारे निर्विकल्प दशामा परिणमे, प्रवर्ते त्यारे शुद्ध धर्म प्रगटे, एम विकल्पे कर्म लाभ अने निर्विकल्पे धर्मलाभ जाणवो

९२ प्र०—स्वाभाविक रत्नत्रयी गुणनु लक्षण स्वरूप कहो ?

उ०—बोधप्रकाश अने विलक्षण विचक्षणताए ज्ञानतुं स्वाभाविक लक्षण जाणवु, दृढ आस्तिकता, प्रतीतात्मक श्रद्धानगुण ते स्वाभाविक दर्शन लक्षण जाणवु, तथा चित्तनी स्थिरता, अनुकुळता, स्वरूप रमणता ते स्वाभाविक चारित्र लक्षण जाणवुं, एम

ए सामान्यपणे रत्नत्रयीनुं वस्तुगते लक्षण जाणवुं, विशेष प्रकारे तो, वस्तु अनंत धर्मात्मक सामान्य अने विशेष स्वभाववंत समकाळे छे, तेमां जे विशेषात्मक धर्म एटले वस्तुने जाति क्रियादि अनेक विशेषणोयुक्त यथार्थ जाणवी ते ज्ञानगुण; अने वस्तुगते सामान्यावबोध ते दर्शन गुण; तथा स्वपर वहेंचण भेदज्ञानरूप जे विवेक, सदाचरण, अपि तु, स्वरूपाचरण ज ज्ञानना फलरूप विरति परिणति गुण छे ते चारित्र लक्षण जाणवुं.

५३ प्र०—धर्म सांभळवो, जाणवो, अने आदरवो ते केवी रीते ?

उ०—वीतरागनी वाणी स्याद्वादरूपे छे तेने आत्मस्वरूप प्ररुपणानी मुख्यताए, जे धर्मनो सद्गुरु महाराज उपदेश करे छे, ते धर्मने अत्यादर सहित सांभळवो, स्वसमय एटले स्वशास्त्रानुसार अने परसमय एटले परशास्त्रावबोध एम स्वपरज्ञान परीक्षापूर्वक जेम शुद्धाशुद्ध धर्मनो प्रकाश भासन थाय, तेम ते शुद्ध रत्नत्रयी आराधनरूप धर्मने विवेक बुद्धिए जाणवो, तथा जेने पोताना द्रव्यगुण पर्याय पोतानाज शुद्धात्म द्रव्य गुण पर्यायपरिणतिरूपे परिणम्या छे, तेनो प्ररुपेलो धर्म आदरवो इतिभाव.

५४ प्र०—चेतना एटले शुं ?

उ०—ज्ञान दर्शने स्वभावरूप आत्मलक्षण एटले सुखदुःखनुं जे भान थवुं, चेतवुं एटले सुखे दुःखे जे चेते तेने चेतना कहिये ते [illegible] छे. हवे ते चेतनाना

मूळ बे भेद छे—१ ज्ञानचेतना, २ अज्ञान-चेतना, ते मध्ये अज्ञानचेतना बे प्रकारे छे ते १ कर्मचेतना, २ कर्मफळ चेतना, तेमा कर्मचेतना ते रागद्वेषादिने विषे जीवनु परिणमन जाणवु, अने शुभाशुभ कर्मफळनुं वेदवु ते कर्मफळ चेतना जाणवी, ज्ञानचेतनानो कोइ भेद छे नहि, ते आत्माना शुद्धोपयोगरुप शुद्ध परिणति स्पर्शन ज्ञानरूप छे, ते सम्यगदृष्टि आत्माने होय छे, अने अज्ञान-चेतना अशुद्धोपयोगना घरनी विभाविकपरिणतिरूप मोहितमिथ्यादृष्टि जीवने होय छे, ज्ञानचेतना जीवने प्रगटे त्यारे ते कर्मचेतना तथा कर्मफळ चेतनारुप अज्ञानचेतना टळे

५५ प्र०—त्रणे काळे जीव जे पापकर्मनो बध करे छे तेना निवारण हेतु कया ?

उ०—गया काळना पापकर्म ते प्रतिक्रमणे मटे, अने वर्तमानकाळना पापकर्म ते आलोयणे मटे, अने अनागतकाळना पापकर्म पच्चख्खाणे टळे

५६ प्र०—चार प्रकारे व्यवहार छे ते कया ?

उ०—१ अनुपचरित सद्भूतव्यवहार ते अनत ज्ञान, अनत दर्शन, अनत सुख, अनंत वीर्य आदे दइने आत्मानी अनत गुणात्मक शुद्धतारूप जाणवो, २ उपचरित सद्भूत व्यवहार ते क्षयोपशमिकज्ञान-दर्शन, चारित्रादिरूप जाणवो, ३ अनुपचरित्त असद्भूत व्यवहार ते जीवना अनादि कर्मसंबंध ए-

टले ज्ञानावरणीयादि अष्ट कर्मपुद्गलोनुं आत्मप्रदेशे अवस्थान छे ते जाणवो, ४ उपचरित असद्भूत व्यवहार ते लौकिक मान्यतारूप देशाचार रुढिरूप, ज्ञाति, पंच विगेरेना कल्पित कायदा, नियमरूप, तथा अनादिकाळथी जीवने लागेली परवस्तुनेविषे मारापणानी बुद्धिरूप स्त्री, पुत्र, बंधु, माता, पिता, स्वजनपरिवार, मित्र, शत्रु, घर, हाट, वस्त्रादि सर्व परिग्रह ममतानी मिथ्या कल्पनारूप उपचरित असद्भूतव्यवहार जाणवो.

५७ प्र०—त्रिविध कर्मनुं स्वरूप समजावो ?

उ०—१ द्रव्यकर्म ते ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मपुद्गलो जे आत्मप्रदेशे लागेलां छे ते, २ भावकर्म ते रागद्वेषादि आत्मानी अशुद्धविभाविक परिणति, ३ नोकर्म ते औदारिकादि पांच शरीररूप जाणवां.

५८ प्र०—चतुर्विध दयानुं स्वरूप कहो ?

उ०—१ द्रव्यदया ते मिथ्यादृष्टि अज्ञानी जीवने होय ते परपौद्गलिकभावरूप परहस्ते वेचाणी, रागद्वेषे हणाइ ते नथी जाणतो एवी जे अनुपयोगरूप नाम मात्र दयास्वरूप ते द्रव्यदया एक रीते परदयामां पण अंतर्भवे छे, २ परदया ते छकाय जीवरक्षारूप विरतिवंत जीवने होय ते सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टि बंनेने संभवे छे, ३ भावदया ते शुद्धात्मोपयोगरूप सम्यग्दृष्टिने ज होय, केम जे पोतानो आत्मा दयारूपज छे एम जाणीने ते प्रवर्ते छे, ४ स्वदया ते सम्यग्दृष्टि मुनि, क्षपकश्रेणि आरुढने होय छे.

५९ प्र०–त्रिविध मोक्षभेद समजावो ?

उ०–१ भावमोक्ष सम्यग्दृष्टिने होय, २ द्रव्य मोक्ष साधुने होय, ३ गुणमोक्ष ते तेरमा चौदमा गुणस्थानि केवली भगवतने होय

६० प्र०–त्रिविध चेतना केवी रीते कोने होय ? ते कहो

उ०–१ कर्मचेतना त्रसजीवने, २ कर्मफळ चेतना एकेंद्रियादिकने, ३ ज्ञान चेतना सम्यग्दृष्टिनेज होय

६१ प्र०–त्रिविध ससारी जीवनु स्वरूप समजावो ?

उ०–१ भवाभिनदी जीव ते जेने ससारने विषे देह, गेह, स्त्री, पुत्र, धनादि परिग्रह उपर तन्मय राग आनद वर्तवारूप ससाराभिमुखपणु मस्तपणे होय, विषय कषायादिमलीनपरिणतिमा ऐक्यता वर्ते, अने धर्मध्यानादि साधनमा भेदभाव रहे एवु भवाभिनदीपणु मिथ्यादृष्टि मोहमूढ जीवोने होय छे, तेना नाम –लोभि, कृपण, दयामणो, कपटी, मत्सरी एटले अदेखो, विकण एटले सदा भयवान, अज्ञानि जेना सवळा आरभ कामो निष्फळ थाय छे एवो ते कठोर जाणवो, २ पुद्गलानंदि जीव ते सम्यक्त्विने कहिये, केम जे तेने शुभाशुभ कर्मोदयो पुद्गलनेविषे रति वेदावे एटले उपरथी सारा लागे, पण अतर्मा सुखरूप वेदवापणु न होय, खेद थाय, केम जे ससारमा तेने काइपण खरेखरा आनदरूप नथी, एम एणे जिनवचनानुसार अतरग प्रतीतिपूर्वक जाण्यु छे माटे तेने संसार प्रवृत्ति करता अनादि भववा-

सना आवी जवारुप पुद्गलानंद होय पण भवाभि-
नंदिपणुं टळ्युं छे. माटे सम्यगदृष्टि जीवने पुद्गला-
नंदि कहिये, ३ आत्मानंदि जीव ते जेने केवळ
आत्मिक आनंद, शुद्ध रत्नत्रय धर्म, तन्मयपणे, स्वरूप
लीनताए, समस्त व्याकुळता रहित, सहजस्वभाव विला-
सिपणारूप मुनि महात्माओने–योगीश्वरोने होय छे.

६२ प्र०–सद्गति अने दुर्गति ते शाथी थाय छे ? ते विरता-
रथी स्पष्ट समजावो.

उ०–शुभोपयोगे सद्गति, अने अशुभोपयोगे दुर्गति,
अशुभोपयोगे संसार लाभ अने शुद्धोपयोगे एटले
स्वभाव परिणतिए तन्मयपणे परिमणतां मुक्ति थाय,
कारण के शुभ प्रकृतिने उदये जीवना योग शुभ
वर्ते, तेथी धर्म हेतु शुभ क्रिया साधना करे, तेथी
पुण्य बांधे अने तेथी सद्गति थाय छे; तथा अ-
शुभोपयोगे अशुभ कर्मनो उदय थतां योग अशुभ
वर्ते, तेथी अशुभ क्रिया विषयादि सेवे तेथी पाप
बंधाय छे, अने तेथी दुर्गति थाय छे; ते माटे पुण्य
पाप शुभाशुभयोगने आयत छे, अने धर्माधर्म ते
शुद्धाशुद्ध उपयोगने आयत छे, अर्थात् राग, द्वेष,
मोहजनित अशुद्धोपयोगे अधर्म छे, तेज मिथ्यात्व
छे; अने अशुद्धोपयोग ते रत्नत्रयरूप शुद्धात्म
परिणति, वीतरागभाव तेज धर्म छे, अने तेज
सम्यक्त्व छे.

६३ प्र०–रोगातंक ते शुं ? अथवा रोग अने आतंक एटले शुं ?

उ०—घणो काळ रहे ते रोग कहिए, अने तत्काळ प्राणघात करे ते आतंक

६४ प्र०—बळ, वीर्य, अने पराक्रममा शुं फेर ?

उ०—शारीरिक शक्ति ते बळ, अने आत्मिक शक्ति ते वीर्य अने शुभाशुभ कर्मोदयानुसार पराक्रम जाणवुं.

६५ प्र०—सम्यक्त्वी अने मिथ्यात्वीने मोहादिकर्मबंध स्थितिमा शो फेर छे ?

उ०—सम्यक्त्व ते जीवनी सत्तारुप स्वद्रव्य तत्त्वभूत छे, ते ज्यारे पोतानो समय पामीने पडे तोपण तेने मिथ्यात्व पर्याय, द्रव्यगुणरुपे न परिणमे तेथी तेने मोहादिकर्मनी उत्कृष्ट स्थिति बंधाती नथी, माटे तेने मिथ्यात्व पर्याय परिणमता तीव्रकषायोदये पण सम्यक्त्व प्राप्तने एक कोडाकोड सागरोपम माठेरो स्थितिबंध थाय छे, एम समजाएल छे, पछीतो ज्ञानवंत बहुश्रुत कहे ते सत्य, अने अनादि गाढ मिथ्याद्दष्टिने तो तिव्रकषायोदये उत्कृष्ट सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनो मोहनीयबंध पडे छे

६६ प्र०—हवे पुद्गल ते कर्म छे, अने जीव ते पण कर्म छे, ते शीं रीते ?

उ०—पुद्गल परमाणु विभागरुपे परिणमे त्यारे द्वयणुकादि स्कंधकर्म निपजे, अने जीवपण पोतानो स्वभाव म्हेंलीने विभावरूपे परिणमे त्यारे ते पण कर्मरूप थइ पुद्गल कर्मवर्गणाने ग्रहे, तेथी जीव पण परमार्थे

कर्मरूप जड अजीवज कहेवाय; ते ज्यारे सम्यक्त्व पामे त्यारे पोतापणुं ओळखे, परथी पोताने न्यारो लखे अने तेथी ते परंपराये अकर्मरूप थाय छे, माटे तेने पुद्गलकर्म पुद्गल प्रत्यइयां उदयआश्रि रह्यां पण आत्मप्रतइयां गयां ए भाव जाणवो.

६७ प्र०—चार प्रकारे नव तत्त्वनुं स्वरुप विस्तारथी कहो ?

उ०—१ नामथी एटले जीव अजीव पुण्य पापादि नव तत्त्वनां नाम सूत्रथी गाथानुसार जाणे, २ गुणथी एटले जीवाजीवादि नव तत्त्वना गुण भेदादिक अर्थेथी जाणे; लक्षण, स्वरूप लक्षणथी एटले जीवनुं लक्षण चेतना, अजीवनुं लक्षण अचेतनपणुं इत्यादि लक्षण स्वरूपे नव तत्त्व ओळखे; ४ परिणामथी एटले जीव जीवरूपे परिणमे, अजीव अजीवरूपे परिणमे इत्यादि नवे तत्त्व आप आपरूपे परिणमे ते परिणामथी चोथो भेद जाणवो.

६८ प्र०—नवे तत्त्वोनुं टुंक लक्षण स्वरूप कहो.

उ०—१ जीव असंख्यात प्रदेशी, अनंत गुणमय ते शुद्ध चेतनागुण ते जीवनुं लक्षण जाणवुं, २ वर्णादि पांच अजीवना गुण ते जेम धर्मास्तिकायनो गुण चलण सहायकता, आकाशास्तिकायनो गुण अवगाहन दान समर्थता, काळनो गुण समयवर्तना लक्षण अने पुद्गलास्तिकायनो सडण, पडण, नाश, मिलण, विखरणादि वर्ण गंध रसादिरूप जाणवो, ३ तथा उर्ध्वगति, इंद्रियसुख, शाता आपे ते पुण्यनो

गुण, ४ अधोगति, सक्लेशरूप अशातादि दुःख आपे ते पापनो गुण, ५ शुभाशुभ कर्मनु आववु ते आस्रवनो गुण, ६ शुद्धोपयोगे शुभाशुभ कर्म आश्रवनो निरोध ते सवरनो गुण, ७ नवां कर्म पूर्व कर्मनी साथे मळीने बधाय ते बधनो गुण, ८ शुभाशुभकर्म, आत्मप्रदेशथी साडन थाय, देशथकी ते निर्जरे ते निर्जरानो गुण, ९ आत्मप्रदेशथी सर्वांशे कर्म पुद्गलोनो क्षय ते मोक्षनो गुण जाणवो

६९ प्र०—केवा श्रावकने स्वसमय परसमयना जाण कहिये ?

उ०—जीवाजीवादिक नवतत्त्वने यथार्थ जाणे एटले जीव निर्जरा, सवर अने मोक्षने उपादेयरूपे जाणी आदरे, अने अजीव पुण्य, पाप, आस्रव, अने बधने हेयरूपे जाणी तेनो त्याग करे तथा नव तत्त्वने चार प्रमाणे, साते नये, चार निक्षेप, द्रव्य-भाव भेदे, स्याद्वादशैलिए षद् द्रव्यादि तेना गुण पर्यायना यथार्थ स्वरूप भासन पूर्वक जेणे भले प्रकारे जाण्या छे तेने ज्ञानी श्रावक कहिये

७० प्र०—कर्ताए कर्म अने क्रियाए बध ते शी रीते ?

उ०—जेवो कर्त्ता होय तेवु कर्म निपजे, तथा ज्या जेवा हेतु त्या तेवी क्रिया थाय, अने ते शुभाशुभ क्रियाए शुभाशुभ कर्म बध नीपजे, कह्यु छे के.—

दुहो

कर्ता परिणामी द्रव्य, कर्मरूप परिणाम,
क्रिया परजायकी फरे, वस्तु एक त्रय नाम,

माटे श्री जैन दर्शन, उपयोगे तथा अक्रियभावे छे. जैन दर्शन श्रद्धान शुद्धोपयोगे छे, अने शुद्धोपयोग आत्मभावे छे, अक्रियभावे छे, अने बीजा योगे क्रिया धर्म छे, एम स्याद्वाद शैली पूर्णतारूप सर्वोत्कृष्ट सर्वोत्तम रीते महा कल्याणदायक श्री जिनशासन जयवंतुं वर्ते छे, तेने हे चेतन !!! तुं अत्यंत आदरपूर्वक स्विकार !

७१ प्र०—संवरतत्त्वनुं स्वरूप द्रव्यथी अने भावथी कहो ?

उ०—योग प्रत्ययिक कर्मने मुनि तप संजमादिके करी निर्जरावे छे, अने बीजां आवतां कर्मनो रोध करे छे; तथा अशुद्धोपयोग प्रत्ययिक कर्मने रत्नत्रयीरूप आत्मिकधर्मने विषे प्रणमावी शुद्धोपयोगे करी आत्मसत्ताने शुद्ध करी कर्म मळथी मुक्त थाय छे. एम योगसंवर आराधक मुनि, उदय आवतां कर्मने निष्फळ करे, रोके ते द्रव्यसंवर; अने उपयोग संवरे करी मुनि आत्मसत्ता शोधे एटले प्रदेशथी कर्म क्षय करे ते भावसंवर, अर्थात् योग संवर ते द्रव्य अने उपयोग संवर ते भाव.

७२ प्र०—छद्मस्थ सम्यक्दृष्टि, प्रत्यक्ष स्वरूप केम देखे ?

उ०—परोक्ष प्रत्यक्ष अनुभवगोचर अनुमान प्रमाण प्रतीते प्रत्यक्ष वस्तु स्वरूप देखे एटले माने, ते आवी रीतेः—पोताना परिणाम जे शुभाशुभ कर्म जनित छे ते रागद्वेषद्वारे, सम्यक् बुद्धिमार्गे ते परिणामने पोते यथार्थ लखे; ते प्रत्यक्ष देखवुं कहिये ते परिणाम आत्मद्रव्यथी शाथी उठे छे ? तो के

जीव परिणामे द्रव्य छे, तेने सगे जीवने बुद्धि-पूर्वक निज परिणाम देखाया—वादळे ढाकेलो सूर्य मेघ घटाए आच्छादित छे, तोपण सूर्यप्रभा प्रगट अनुमाने करी जाणी लोको दिवस अने रात्रिनो विभाग समजी शके छे, तेथी सूर्य दीठो जेम कहिए तेम आत्मा पण जिन वचन प्रतीतरूप अनुमान परिणामद्वाराए निर्मळ बुद्धिगम्य दीठो कहिए, वळी जेम धूम्र दिठे अग्नि दिठो कहीए तेम परोक्ष प्रत्यक्ष आत्मा, सम्यग्दृष्टि, वीतराग वचननी प्रतीते यथार्थ अनुभवरूपे देखे छे, तेनी शुद्धि, प्रतीति, श्रद्धान छे, एवीज रीते आत्मानु जे यथार्थ भासन जाणपणु थाय तेने सम्यग्ज्ञान कहिये, अने जेवो निज स्वरूपे एकाते वस्तुगते जीव द्रव्य निष्कलक जाण्यो, तेवोज रागद्वेष विकल्प रहित परिणमे तेवारे स्वरूपाचरण चारित्र प्रगटे,

पूआइसु वयसहिय पूण्ण जिणेहिं निद्दिट्ठ,
मोहकोहविहीणो, परिणामो अप्पणोधम्मो ॥ १ ॥

ए स्वरूप चोथा गुणठाणेथी माडीने आगळ विशुद्ध, विशुद्धतर, विशुद्धतम यथायोग्य पामीये पाठान्तरे (६३ प्रश्न)

७३ प्र०—निर्जरानु स्वरूप, द्रव्यथी तथा भावथी सम्यग्दृष्टि अने मिथ्यादृष्टिने जेम होय तेम कहो

उ०—निर्जरा एटले कर्मनु साटन करवु, खपाववु, ते मध्ये मिथ्यादृष्टिने निर्जरा, आस्रवभवपूर्वक होय, सम्यग-

दृष्टिने संवरपूर्वक द्रव्यभावनिर्जरा होय; केमजे तेने ज्ञानशक्ति अने वैराग्यनुं बळ छे तेथी, त्यां ज्ञानशक्ति ते शुद्ध स्वरूपनो अनुभव, अने वैराग्यबळ ते अशुद्धोपयोगनुं निवारण; हवे ज्ञानोपयोगे भाव निर्जरा शी रीते थाय ? ते देखाडे छेः—राग, द्वेष मोहादि मलीनपरिणातिने घटाडवी ते भाव निर्जरा अने कर्मवर्गणानुं घटाडवुं थाय त्यां द्रव्य निर्जरा जाणवी, एटले जे उदय आवे ते निर्जरे, तेवां पाछां न बंधाय, बंध अल्प अने निर्जरा घणी; एवी रीते ज्ञानशक्तिये वैराग्यबळे सम्यग्दृष्टि, द्रव्य भाव निर्जरा करे छे; मिथ्यादृष्टिने कर्म निर्जरा अल्प अने फरी बंध घणो थाय छे. मार्गानुसारी सन्मुखभावी पण कर्म निर्जरा अवसरे अल्प बंध करे, तोपण वस्तुगते सत्ता एटले कर्म शक्तिनी निर्जरा तो सम्यग्दृष्टिने ज थाय छे. (प्रश्न पा. ६४)

७४ प्र०—आत्मप्रदेशे गुण पर्यायनी घटना शी रीते छे ?

उ०—आत्माना असंख्यात प्रदेश छे; एकेक प्रदेशे अनंता ज्ञानादि गुणो, अनंत शक्ति छे, वळी एकेक प्रदेशे उपयोग पलटणरूप ज्ञानादि गुणोना अनंत पर्यायो छे, आवी शुद्धात्मप्रदेशे घटना जाणवी; अने अशुद्ध आत्मप्रदेशे पूर्वोक्त गुण पर्यायो एकेक प्रदेशे रहेली अनंत कर्म वर्गणायुक्त छे; तेथी अशुद्ध संसारीपणे वर्ते छे. (पा. प्र. ६९)

७५ प्र०—दर्शन, ज्ञान, चारित्रनी प्राप्ति, आत्माना द्रव्य गुण पर्यायथकी सिद्ध करो.

उ०–आत्मद्रव्यमा द्रव्यनी शक्ति ते सम्यग्दर्शन, गुणनो प्रकाश ते सम्यग्ज्ञान, अने पर्यायनु ठरणपणुं अर्थात् स्थिरता ते सम्यक्चारित्र जाणवु, एमज दर्शन गुणे द्रव्य शक्ति प्रगटे, ज्ञानगुणे गुणो प्रकाशे अने चारित्रगुणे स्थिरता गुण एटले स्वरूप रमणता प्रगटे, वधे

७६ प्र०–उपयोग एटले शु ? ते केटला छे, वगेरे फळ भेद स्वरूप स्पष्ट कहो

उ०–चेतनानु शुद्धाशुद्ध परिणमन, तेने उपयोग कहिये ते वे प्रकारे छे, एक शुद्ध अने वीजो अशुद्ध, शुद्धोपयोगे सिद्धिगति एटले मोक्ष थाय, अने अशुद्धोपयोगना वे भेद छे, एक शुभ अने वीजो अशुभ, त्या दान पूजादि परिणाम ते शुभोपयोग कहिये, तेणे करी पुण्यबंध थाय, अने तेथी सद्‌गति पामे, अने हिंसादि पापपरिणाम ते अशुभोपयोग कहिये, तेथी पापबंध थाय, अने तेथी जीव दुर्गति पामे (प्र. ६८)

७७ प्र०–पूर्वोक्त शुद्धाशुद्धोपयोग सम्यग्दृष्टि तथा मिथ्यादृष्टि आश्रि केवी रीते होय ? ते समजावो

उ०–शुद्धोपयोग सम्यक्त्व पाम्या पछी होय छे, माटे ते सम्यक्‌दृष्टिने जाणवो, ते चोथा गुणठाणाथी वारमा सुधी शुभोपयोग मिश्रित होय छे, पछी तेरमे पूर्ण पद थाय छे, अशुद्धोपयोग सर्वे ससारी मिथ्यादृष्टि जीवोने होय छे, ते मध्ये मिथ्यादृष्टिने

शुभ क्रिया होय पण शुभोपयोग नहि; केमजे शुभो-
पयोग तो शुद्धना घरनो छे, ते तो सम्यग्दृष्टिने
अणइच्छकरूपे निर्वंछकभावे होय छे, अने मिथ्या-
त्वीने शुभोपयोग शुभ क्रियारूप, शुभाचाररूप होय
पण नियाणारूप एटले पौद्गलिक सुख वांछारूप होय,
ते माटे अशुभ जाणवो. (प्रत्यन्तरमां प्र. ६९)

७८ प्र०—सम्यग्दर्शननुं स्वरूप अनुमाने तथा लक्षणे सिद्ध
करो.

उ०—श्री वीतराग देवना वचननी दृढ प्रतीति एटले श्री
जिने भाख्युं तेज सत्य. ते कदापि काळे अन्यथा
न होय, भले मारी बुद्धिमां नथी आवतुं तोपण
वीतराग देवने मिथ्या कथन करवानुं कंइ पण प्रयो-
जन दिसतुं नथी, जेवुं पोते केवळज्ञाने दीठुं छे,
तेवुंज योग्य प्राणियोने केवळ हित बुद्धिए परम-
करुणाभावे प्रकाश्युं छे, माटे सुइनी अणी जेटला
प्रदेशमां अनंता जीवो पण तेज वचन प्रतीतिरूप
आगम अने अनुमान प्रमाणे सम्यक्त्वी माने छे,
तेवीज रीते आत्मा पण साक्षात् दीठो माने छे,
वळी जीव चेतना लक्षणवंत छे, चेतना ते सुख
दुःखनुं भान, अने सुख दुःखनो अनुभव वेदनीय
कर्म द्वारे प्रत्यक्ष छे, तेथी ते लक्षणे सुख दुःखनो
जाणनार आत्मा छे, एम प्रतीति करे छे. एम अंश
प्रत्यक्षे सर्व प्रत्यक्ष थयो; जेम एक मोटा टोपमां
एक खांडी भात रंधायेल तैयार थयो छे, ते काचो

छे के चढी गयो छे, ते जाणवा माटे ते टोपमाथी एक चोखो तपासी जोता सर्वेनी खात्री थाय छे, तेम लक्षणेलक्षित सम्यग्दर्शनतु स्वरूप जाणवु

७९ (पा. प्र ७०) प्र०—सम्यग्दृष्टि देशविरति तथा सर्वविरति महात्माओ सम्यग्दर्शनवडे आत्मानो अनुभव केवी रीते करे ?

उ०—जेम वस्तु विचारता, ध्यान धरता मन विश्राम पामे छे, रस स्वाद सुख उपजे छे, परिणाम ठरे छे, ते अनुभव प्रत्यक्ष जाणवु, जेम साकरना एक गांगडाने चाखी जोता हजार मण साकरनो अनुभव थाय छे, तेम सम्यग्दृष्टि जीव असे आत्माने वळी केवळी सदृश प्रत्यक्ष अनुभवे तेथीज कह्यु छे जे –

अंसे होय इहा अविनाशी पुद्गल तमासीरे,
चिदानद घन सुजश विलासी, केम होय जगनो आसीरे.
ए गुण वीरतणो न विसारु, सभारुं दिन रातरे,
पशु टाळी सुररूप करे जे, समकितने अवदातरे १

८० (पा प्र ७०)प्र०—मुनिने सम्यगदर्शनना बळे आत्मा स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभवगोचर केवी रीते होय ?

उ०—ज्या द्रव्य गुण पर्याय एकीभूत अभेद रत्नत्रयरूपे मुनि प्रणमे, त्या स्वरूप निजपद कद प्रत्यक्ष देखे, स्वरूप रमण सुखास्वादन अनुभवे

८१ प्र०—दर्शन अने ज्ञानमा मूळ शु फेर छे ? तथा छद्मस्थ सम्यग्दर्शनी अने केवळदर्शनी ए बेना देखावामां शो फेर ?

उ०–छद्मस्थने प्रथम देखवुं एटले दर्शन उपयोग अने पछी जाणवुं एटले ज्ञानोपयोग होय; छउमथ्थाणं दंसणपुव्व-नाणं ॥ दर्शन ते सामान्यवबोध, अने ज्ञान ते विशेषावबोध जाणवो; दर्शन ते सामान्यावबोध छे. झात्काररूप प्रतिभास थाय थोडो काल रहि पछे ज्ञान मांहे मले. ज्ञान विशेषावबोध छे घणो काल रहे ते माटे. आत्मदर्शन जेणे कर्युं "तेणे मुंद्यो भवभय कूपरे" एम श्रीयशोविजयजीए पण कह्युं छे. तथा "प्रवचन अंजन जो सद्गुरु करे तो देखे परमनिधान जिनेशर. एवुं श्री लाभानंदजीए पण कह्युं छे. छद्मस्थ सम्यग्दृष्टि आत्मस्वरूपने देखे, पण साक्षात् करामलकवत् एटले हाथनी हथेळीमां रहेला पाणीमांजे हथेळीनी रेखाओ स्पष्ट देखाय तेम साक्षात् असंख्यात प्रदेशी, अरूपी आत्माने केवळदर्शनी ज देखे, पण छद्मस्थ तो प्रतीते, अनुमाने अनुभवे, स्वरूपे देखे एटले जिनवचनप्रतीते आत्मद्रव्य स्वरूप दिठुं, अनुमाने चेतनालक्षणगुणे प्रत्यक्ष दिठो, अनुभवे ते परिणमनपर्यायरूपे अने स्वरूपे ते अभेद-रत्नात्रयात्मकनिजपदकंद दिठो. ए रीते आत्मस्वरूपनुं दर्शन छद्मस्थ सम्यग्दृष्टिने संभवे छे.

८२ प्र०–मुनिने त्रणयोग रत्नत्रयरूपे केवी रीते परिणमे छे ?

उ०–मनयोगे दर्शन श्रद्धानरूपे छे, जे वस्तुना निर्धारथी चळे नहि; वचनयोगे ज्ञान भणवुं, यथार्थ उपदेश करे छे, सत्य प्ररूपणा ज्ञानरूप परिणमन होय;

तथा काययोगे षट्कायनी दयारूपे जयणापूर्वक प्रवर्तन छे. जयचरेजयचिट्ठे, इत्यादि

८३ प्र०—मुनि, रत्नत्रयना शुद्धाराधनथी जन्म जरा अने मरणना भय शी रीते टळे ?

उ०—सम्यग्दर्शनथी घणा जन्म मटे, सम्यग्ज्ञानथी जरा दुःख जे वेदना ते मटे, तथा सम्यग्चारित्र गुणे मरण भय टळे, एम त्रण गुणे जन्म जरा मरणना भय मटे.

८४ (७१) प्र०—आगमप्रमाण, अनुमानप्रमाण, उपमाप्रमाण, अने प्रत्यक्षप्रमाणे, आत्मानी सिद्धि दाखवो, अने ते प्रत्येक प्रमाण मानता जे फळ थाय ते कहो.

उ०—१ आगमप्रमाणे, षड्द्रव्य, षट्कायस्वरूपे जे वीतरागे भाख्या छे ते वचनोने तहत्ति करी मानवां, पण संदेह के युक्तायुक्तपणु न करवुं, ते मानतां आत्माने प्रतीतिरूप सम्यक्दर्शन धर्मनी पुष्टि थाय, २ अनुमानप्रमाणे लक्ष्य लक्षणे निर्धार थाय, जेम सुख दुःख वेदता आत्मानु चेतना लक्षण जणाय छे, तथा जेम धूम दिठे अग्नि होयानी प्रतीति थाय छे, आहिं आत्माने वस्तुगते अनुभवीने वस्तुना गुणनो अंशे प्रत्यक्ष अनुभव थाय, ३ उपमा कहेवी ते, जेम " आजने काळे सम्यक्त्व पाम्यो ते जाणे केवलज्ञान पाम्यो " एम; ए मानता आत्माने विनयगुणनी पुष्टि थाय, ४ प्रत्यक्ष प्रमाणे जेवा परमात्माए कह्यां छे, तेवाज अत्रे पुण्य पापनां

प्रत्यक्ष फळ देखीए छीए; इत्यादि जाणवुं, ए मानतां आत्माने भववैराग्यता गुणनी पुष्टि थाय, विषय कषायथकी निवर्ते. एणी रीते चार प्रमाणे आत्माने गुण नीपजे.

८५ प्र०—त्रिविध कर्मरोग कयो ?

उ०—१ द्रव्यकर्म ते आठ कर्मनी वर्गणा, २ भावकर्म ते अशुद्धोपयोग एटले आत्मानी रागद्वेषादि अशुद्ध परिणति; ३ नोकर्म ते औदारिकादि पांच शरीर, द्रव्यकर्मनी समीपे कारण कार्यभावे रह्यां माटे तेने नोकर्म कहिये; ते त्रण कर्मरोगना वैद्य श्री परमात्मा तथा गणधरादि महात्माओ छे; तेओ पण त्रिविध औषधरूप त्रण प्रकारनी देशना आपे छे— १ यथार्थवाद, २ विधिवाद, ३ चरितानुवाद; तेनो अर्थः—१ यथार्थवाद देशनामध्ये जीवाजीवादिक स्वरूप धार्यां, परिणम्यां तेथी वस्तु तत्त्वनो प्रकाश थाय, तेणे करी, भावकर्म रोग मटे, रागद्वेषादि विपर्यासपणुं टळे, अज्ञाननो उच्छेद थाय, २ विधिवाद देशना मध्ये देशविरतिपणुं, सर्वविरतिपणुं इत्यादि क्रियानो आदर, शुभोपयोगे आचरतो, प्राणीनो द्रव्यकर्म रोग नाबुद थाय, अनादि कर्मकाट उतरे, आत्मप्रदेश निर्मळता निपजे, तेथी जीवने घणी शांति प्रवर्ते, ३ तथा चरितानुवाद देशना मध्ये शरीर संबंधी काम भोग विषयकषायादि मलिनतानुं निवर्तन थाय, जेम जंबुस्वामी, सुदर्शन

शेठ, मेतार्यजी आदि महात्माओना चारित्र साभळे थके परम वैराग्य शात रस प्रगटे, तेथी नोकर्मनो रोग टळे

८६ प्र०—दर्शनादि अनत चतुष्क प्राप्तिना कारण तथा स्थान कहो.

उ०—१ धर्म रूचियी साभळवो, तथा ज्ञानाभ्यासमा उद्यम रूचि होय तेटलायी सम्यग्दर्शन गुण प्रगटे, २ तत्त्वातत्त्वगवेषक बुद्धि होय तेथी सम्यग् ज्ञानगुण प्रगटे, ३ पाच इद्रिय विषय विकार, क्रोधादि कषाय, पाच प्रमाद इत्यादिनी जे त्याग बुद्धि होय तेथी चारित्रगुण निपजे, ४ वस्तुगते, स्वरूपानुभव लग्नता, तल्लीनता होय तेथी वीर्यगुण प्रगटे, हवे ते चारेना स्थान कहे छे—दर्शनगुणनु स्थान चक्षु, ज्ञानगुणनु स्थान हृदय, चारित्रगुणनु स्थान चरण, अने उत्साह इच्छादिरूप वीर्यगुणनु स्थान बाहु छे

८७ प्र०—अहिंसानु स्वरूप तथा तेना विविधमेदो दृष्टात सहित समजावो उ० मूल जूनी हस्तलिखित प्रतिमा हिंसाना मेदो सबधी प्रश्न छे स्वरूप हिंसा, अनुबध हिंसा, द्रव्य हिंसा, भाव हिंसा, बाह्य हिंसा, परिणाम हिंसा, योग हिंसा, इत्यादि हिंसाना घणा भेद छे साधुजी नदी उतरे छे पण मोक्षवर्ति (मुख्यताए) हिंसाना परिणाम नथी तेथी ते स्वरूप हिंसा जाणवी तथा सम्यगदृष्टिने देव पूजा, गुरुवदना, साधुने आहारदान इत्यादि कार्य हिंसा अल्पस्वरूप छे ते माटे ते स्वरूप हिंसा कहेवी.

रागद्वेष परिणामे जे मंदबुद्धिथी छकाय जीवोने हणे ते तरतमअध्यवसाये महाकर्मबंध करे तेना अशुभ विपाक उदये आवे ते अनुबंध हिंसा जाणवी. अनुपयोगे द्रव्यहिंसा अने तीव्र परिणामे भाव हिंसा थाय. स्वरूप हिंसामांहे बाह्य हिंसा तथा योग हिंसा भळे छे. तथा एक जीवमे हिंसा अल्प पण उदयकाले दुःख विशेष पामशे ते शेणे ? दुष्ट अध्यवसायना अभावे उदय आव्यां कर्म निष्फल करे छे. द्रढ प्रहारीनी पेठे. इत्यादि चोभंगीओ अहिंसा अष्टक ग्रन्थमध्ये विस्तारे छे. यथा एकस्याल्पाहिंसा ददाति काले तथा फलमनल्पं अन्यस्यमहाहिंसा स्वल्पफला भवतिपरिपाके इत्यादि ॥

उ०—१ स्वरूप अहिंसा, ते जीववध न करवो, तेनुं बीजुं नाम बाह्य अहिंसा के योग अहिंसा पण छे, २ हेतु अहिंसा ते जयणाए प्रवर्तन, छकाय जीवनी रक्षा प्रवृत्ति, ३ अनुबंध अहिंसा ते रागद्वेषादि मलिन अध्यवसाय, तीव्र विषय कषायना परिणामे हिंसानो त्याग जेथी फळ विपाकरूपे आकरो कर्मबंध न पडे ते, ४ द्रव्यअहिंसा एटले अनुपयोग हिंसानो त्याग, ५ परिणाम अहिंसा के भाव अहिंसा ते उपयोग पूर्वक परिणमीने इरादाथी जे हिंसा करवी तेनो त्याग इत्यादि अनेक भेद जाणवा, हवे क्रिया फळ भेदरूप चौभंगी देखाडे छेः—१ हिंसा अल्प, फळ विपाक अल्प, २ हिंसा अल्प, फळ विपाक तीव्र, ३ हिंसा तीव्र, फळ विपाक अल्प,

४ हिंसा तीव्र, अने फळ विपाक तीव्र, ए भेद जीवना अध्यवसाय भेद विषेशे, विपाक फळनो पण भेद जाणवो, अहिं जमाली, द्रढप्रहारी, चिलाती पुत्र कुरगडुजी इत्यादि दृष्टांतो यथासंभवे भाववा

८८ प्र०—इच्छादिक त्रण योगनु स्वरूप समजावो

उ०—१ इच्छायोग ते शुभ करणी व्रतादि आदरवानी उत्साह इच्छा, दश प्रकारे यतिधर्म आदरवानी इच्छा २ शास्त्रयोग ते हेय, ज्ञेय अने उपादेय मध्येथी उपादेय ते अंगीकार करवु ते प्रमाणे शास्त्रानुसार विधिपूर्वक व्रतादि पाळवु ते, ३ सामर्थ्ययोग ते कोइ आत्मा, ज्ञान अने वैराग्यनी प्रबळ शक्तिये अनंत काळ भोगववा योग्य जे कर्म तेने थोडा काळमां भोगवी क्षय करे, योगदृष्टिसमुच्चय ग्रन्थे त्रण योगनी व्याख्या करी छे श्री गजसुकुमालजीनी पेठे, कह्यु छे जे —

दुहा.

क्रियायोग अभ्यास है, फळ है ज्ञान अबंध,
दोनुकु ज्ञानी भजे, एकमति मतिअंध. १
इच्छा शास्त्र समर्थता, त्रिविध योग है सार,
इच्छा निज शक्ति करी, विकल योग व्यवहार. २
शास्त्रयोग गुणठाणको, पूरण विधि आचार,
पद अतीत अनुभव कह्यो, योग तृतीय विचार ३
रहे यथाबळ योगमें, ग्रही सकळ नय सार,
भावजनता सो लहे, चहे न मिथ्याचार. ४

८९ प्र०—द्रव्य, गुण, पर्याय, शाथी बगड्या छे ?

उ०—द्रव्य, ज्ञानावरणीदि कर्मना आवरणे, तथा गुण, रागद्वेष विभावपरिणतिए, अने पर्याय, मनोयोग कल्पनाए विकारभावने पाम्या छे.

९० प्र०— मति तथा श्रुतज्ञानी अने अज्ञानी जे जिनवाणी सांभळे तेने शी रीते परिणमे ?

उ०—मति अज्ञानीने विकल्परूपे तथा डामाडोळपणे परिणमे, तथा मतिज्ञानीने निर्विकल्पपणे तथा निर्धारतारूपे परिणमे, श्रुत ज्ञानीने वैराग्यरूपे तथा आस्तिकपणे परिणमे, श्रुत अज्ञानीने विषयरूप तथा नास्तिकरूपे परिणमे, एटले (माटे) सम्यग्दृष्टि जीवो जिनवाणी सांभळवाना अधिकारी जाणवा.

९१ प्र०—जीव कर्म साथे केवी रीते मळेल छे ? ते दृष्टांत सहित समजावो.

उ०—द्रव्यार्थिकनये जीव, तुंबीमृत्तिका न्याये कर्म संगाथे मळेल छे, एटले जेम तुंबडी उपर माटीनो थर लाग्यो होय पण तुंबडीनी अंदर कंई बगाड न होय तेम आत्माने कर्मनो संबंध जाणवो, तथा पर्यायार्थिकनये आत्मा, कर्म संगाथे खीरनीरपरे, एकरूपे लोलिभूत थयो थको चतुर्गति भ्रमण करे छे.

९२ प्र०—सोळ संज्ञा ते कइ अने तेमांथी कया जीवने केटली होय ते कहो ?

उ०—१ आहार, २ भय, ३ मैथुन, ४ परिग्रह, ५ क्रोध, ६ मान, ७ माया, ८ लोभ, ९ ओघ, १० लोक,

११ सुख, १२ दु.ख, १३ मोह, १४ वितिगिच्छा, १५ शोक, १६ धर्म, ए सोळ सज्ञाओमांथी पेहेली दस सज्ञा एकेन्द्रियने, तथा ओघ सिवाय बाकीनी पंदर बेन्द्रियादिकने होय अने पचेन्द्रियने सोळे सज्ञा होय

९३ प्र०—क्रोधादि दोषोनी मुख्यता जीवभेद विशेपताए कहो

उ०—चारगतिमां, क्रोध, नरकमा, मान मनुष्यमां, माया तिर्यँचमा अने लोभ देवगतिमा मुख्य होय छे, हवे मनुष्य जातिमा क्रोध रजपुतने, मान क्षत्रियादि कुळवानने, माया गणिका तथा वणिकने, लोभ ब्राह्मणने, राग स्नेही मित्रादिने, खेद तथा द्वेष ते कायर क्लेशी, अदेखा, तथा दीनदु खीआ सोगीने होय, शोक जुंगारीने, चिन्ता चोरनी माताने, भय ते कायरने तथा कृपणादिने विशेष होय

९४ प्र०—धर्म अने कर्म विषे यथायोग्य खुलासो करो.

उ०—धर्म ते आत्मभावे शुद्धोपयोगे होय, अने कर्म ते अशुद्धोपयोगे करणी क्रियाए तथा शुभाशुभभावे भवितव्यताए थाय, कर्म ते क्रियाए अने धर्म ते अक्रियारूपे होय. जेवी शुद्धोपयोगनी तीव्रता तेवी धर्मनी वृद्धि जाणवी

९५ प्र०—जिनना चार निक्षेपाना स्थान शरीरमां क्या छे?

उ०—नाम जिननु स्थान जीभमा छे, स्थापना जिननुं चक्षुमां, द्रव्यजिननु मनोयोगमा, केम जे श्रद्धा मनमव्ये छे तेथी, अने भावजिननुं स्थानक हृदयमां छे.

९६ प्र०—द्रव्येंद्रिय तथा भावेंद्रियनो भेद समजावो तथा ते शाथी भरेल छे ? ते कहो.

उ०—द्रव्येंद्रिय ते आकार विशेष जाणवी ते मळ, मूत्र, रुधिर, मांसादि अशुभ पुद्गलथी भरी छे; भावेंद्रिय ते इंद्रियद्वाराए उपलब्ध विकारी ज्ञान ते रागद्वेषादि विकारोथी भर्युं छे.

९७ प्र०—आहारादि चार संज्ञानुं स्वरूप सविस्तर कहो.

उ०—१ आहारसंज्ञाथकी जीव अनादिकाळनो पुद्गल खानपानादि वासनाथी निरंतर भरेलो अतृप्त वर्ते छे, २ भयसंज्ञाए चारे गतिमां सदा कंपतो रहे छे, ३ मैथुनसंज्ञाए इंद्रिय विषयसिलाषिपणे भमतो फरे छे, ४ परिग्रहसंज्ञाए धन, स्त्री, पुत्रादिनी निरंतर ममताए मेळवुं मेळवुं करी रह्यो छे, तेणे करीनेज सदा कषायतापे तपेलो, संसारमां ढोकळांनी पेठे सीजाय छे, छतां सुख मानी रह्यो छे, ए चार संज्ञामध्येथी पहेली आहारसंज्ञा ते वेदनीय कर्मजनित छे, शेष त्रण मोहनीयजनित छे, वळी आहारसंज्ञाए शरीरपरत्वे हिंसादि अनेक पापकर्म हेतु प्रवर्ते छे, हिंसाथी कर्मो वणां थाय छे, एथी पापबंध वधे छे, अने तेथीज अशाता वेदनीय प्रबळ पामे छे; तथा भयसंज्ञाए कल्पना कर्मयोगे व्यक्ताव्यक्तकर्म बंधाय छे; तथा मैथुनसंज्ञाए विषयना अने परिग्रहसंज्ञाए कषाय वृद्धिना घणा तीव्र कर्म बंधाय छे; एम चारने जोरे जीव अधोगतिए

जाय छे, ससार परिभ्रमण घणो थाय छे, वळी
बीजी रीते विचारीए तो आहारसज्ञाए शरीरपुष्टि
तेणे करी हिंसक प्रवृत्ति, तेणे करी दु ख प्राप्ति,
तेथी आर्तध्याननी वृद्धि तेथी दुर्गतिमा अनतोकाळ
जीव भमे छे, माटे उत्तम जीवोने आहार अने
निद्रा अल्पज होय छे, एमज भयसज्ञाए कल्पना-
जाळ वधे छे, तेथी रागद्वेषादि मलिनपरिणति वधे
छे, तेथी अष्टकर्मनो निविडबंध थाय छे, चतुर्गति-
भ्रमण वारवार थाय छे, तेमज मैथुनसज्ञाए विषय
सेवे, तेथी पोताना रत्नत्रयी गुणने आवरे, तेथी
जीव ससारमा सर्वत्र हीणअकल, मूढ, दरिद्री थयो
थको घणी अशाता सर्वत्र पामे, एवी रीते
परिग्रह सज्ञाए कषायबंध घणो थाय, तेथी ससार
दीर्घ थाय, एम आ ससारना मूळ हेतुरूप जीवने
आ महा बाधककारी अनादिकाळनी लागेली भव-
वासना डाकणोरूप चार संज्ञाओ छे, तेने जेम बने
तेम उत्तम जीवे ज्ञान ने वैराग्य शक्तिये, परमात्मा-
ना शरणे जइने वश करवानो प्रयत्न करवो, ए
चारमाथी पहेली बे आहार अने भय सज्ञा साधुने
छट्टा सातमा गुणठाणाथी निवर्तेछे मैथुनसज्ञा नवमे
गुणठाणे निवर्ते छे, अने परिग्रह, लोभ, ममतादि
दसमे गुणठाणे निवर्ते छे, माटे गुणठाणानी विशुद्ध
परिणति पामवा माटे ए चार सज्ञानी मदता थवी
जोइए, तेनी तीव्रताए जीव निगोद सुधी जाय छे,
अने मदताए उर्ध्वगतिए चढे छे, केम जे जीवने

मूळ ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए मुख्य गुण छे; तेमां दर्शन तो सामान्य अवबोधरूप होवाथी ते विशेष अवबोधरूप ज्ञानगुणमां समाय छे, तेथी ज्ञान अने चारित्र बे रह्यां, तेमां ते निमित्त कारण, अने चारित्र ते उपादान कारणरूप छे; ते उपादान कारण सेवनरूपे चार संज्ञानी मंदताए जीव उंचो चढे छे.

९८ प्र०—सिद्धना जीवने अनंता गुण छे, ते समपणे छे के विषमपणे छे ?

उ०—निरावरणआश्रयी समगुणे छे, पण आप आपणे ग गुणना पर्याय धर्माश्रयीविषमपणे छे.

९९ प्र०—प्राणेकरी जे जीवे तेने जीव कहिए तो सिद्धने जीव केम कहेवामां आवे छे ?

उ०—सिद्धने द्रव्यप्राण नथी, पण भावप्राण चार छे, तेनां नामः—१ अनंतज्ञान, २ अनंतदर्शन, ३ अनंतसुख, अने ४ अनंत वीर्य; ए चार भावप्राणे सिद्ध जीवे छे, तेथी सिद्धने जीव कहीए, ए भावप्राण आवरणे द्रव्यप्राण सांपडे छे, ते कर्मजनित छे. केम जे स्वाभाविक अनंतदर्शनरूप भावप्राणने आवरणे इंद्रियप्राण थया, तेमज स्वज्ञानरूप भावप्राणने आवरणे श्वासोश्वास प्राण उपज्यो, स्वाभाविकसुखरूप भावप्राणने आवरणे आयुप्राण उपज्यो; स्वाभाविक अनंतबळ. वीर्यप्राणने आवरणे मनोबळ, वचनबळ, कायबळ, ए विभाविक प्राण उपज्या. ए अधिकार अध्यात्मसार ग्रन्थ मध्ये कह्यो छे.

१०० प्र०—लेश्या कया कर्मयोगे छे ?

उ०—लेश्या, योग प्रत्ययिक नामकर्मजनित छे, अने शुभाशुभ परिणामरूप लेश्या भावकर्मजनित छे

१०१ प्र०—वीस विहरमान तीर्थंकरो संबंधी जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट, समकाळे जन्म दीक्षा, ज्ञानादि हकीकत सविस्तर समजावो

उ०—महाविदेहक्षेत्रमा श्री विहरमान तीर्थंकरो केवळीपणे विचरे छे, वळी कोइ बाळकपणे, कोइ राज्यावस्थाए, कोइ गर्भमा होय, त्यारे जघन्यकाळे अढीद्वीपमा १६० विजयमा १६८० होय, हवे हाल वीस प्रभु छे, ते जेवारे जन्मथकी एक लाख पूर्व आयुना थाय त्यारे बीजा प्रभु जन्मे, वळी गर्भमां पण होय, एम गर्भना तीर्थंकर प्रभु न गणाय, तेथी चोरासी लाख पूर्वायुमा तीर्थंकरना जीवो बाल्यावस्थामा, युवास्थामा, राज्यावस्थामा तथा श्रमणावस्थामा तथा केवळी अवस्थामा सर्वे मळी ८३ तीर्थंकरो होय, ते सख्याने वीसगुणा करीए त्यारे १६६० थाय, ते मध्ये वीस विचरता मेळीए त्यारे १६८० थाय, अने ज्यारे उत्कृष्टपणे अढी द्वीपमा १७० प्रभु केवलिपणे विचरे छे, त्यारे एकएकना अवतारमाहे ८३ तीर्थंकर उपजे, तेने १६० गुणा करिए त्यारे १३२८० थाय तेमा १७० वर्तता मेळीए त्यारे १३४५० थाय. एटलु अचलगच्छ नायके कह्यु छे, जिम साभळ्यु तिम लख्यु छे, पछे तो जेम केवळज्ञानीए प्रकाश्युं तेम सत्य.

गाथा–सत्तरिसयमुक्कोसं, जहन्नयं वीस विहरमाण जिणा;
समयखित्ते दस वा, जम्मपइ वीसदसगं वा ॥ ए प्रवचन सारोद्धार ग्रन्थनी गाथा जाणवी. तथा दोहरायी गाथानो भाव जाणवो.

विहरमान जिन चैत्यवंदन.

विवरो ए गाथातणो, कवि लेज्यो संभाल;
सित्तरिसो जिनवर हुवे, कहे के अइ काल. १
चढते काळ उत्सर्पिणी, वारे अष्टम जिन;
एकसो सित्तर जिनवर हुवे, एणीपरे सुणो सज्जन. २
पांच विदेहे मेळवी; साटसो विजय उप्पन;
भरतैरवत दस मीळे, सित्तेरसो होय जिन. ३
पडते काळे अवसर्पिणी, सोलम जिन लगे हुंत;
भरतैवरते जिन हुवे, साठसो विदेह लहंत. ४
केवळी कइ बाळ परण्या, वयणे एहज सोय;
आठमा जिनथी सोलम लगे, विरह विदेह न होय. ५
सोलमा जिन साथे सहु, मुक्ते जाय जिन भाण;
विरहसमे सहु क्षेत्रमां, अक्षर एह पिछाण. ६
सत्तरमा जिन होय भरह, पंच अैरवत मली दश;
समयक्षेत्र दश कह्या, लेहवा एह अवश्य. ७
सत्तर अढारह जिन वचे, जन्मे वीश विदेह;
वीस एकवीसमा वचे, संयम केवळ देह. ८
भरतैरवत दश मळे, मध्यम सांप्रत त्रीश;
चोवीशमा जिन शिव गये, विदेह विचरे वीश. ९
अनागत चोवीशी सातमा, आठमा वच्चे निर्वाण;
विरह पडे सहु क्षेत्रमां, अष्टमे न होय जिनभाण. १०

आठमायकी नथी वळी, एम सित्तेरादि थाय,
परपरा पूर्वे जेम कही, लेवी एम सदाय ११
दशवीशना एत्रण समे, जिनवर जन्म कहात,
भरतैरवते दिन हुए, पाच विदेहे रात १२
आगमे एणिपरे भाखिसु, च्यवन जन्म अधरात,
भरतैरवत रजनि होय, दिवस विदेह विख्यात १३
त्रीश सिहासन सहु, दोय मेरु पंच लाध,
दो दो पूर्व पश्चिमे, एक दक्षिण उत्तर साध १४
चार जन्म एक विदेह मत्ये, पाचे मळीने वीश,
भरतैरवते दश हुए, एक समये जन्म लहीश १५
वीश वीश जन्मे विदेहे सही, साठसो विजय पुराय,
लाख चोराशी पूर्वायु तस, धनुष्य पाचशें काय १६
चढते दोय पडते त्रणे, आरे धर्म कहाय,
भरतैरवत ते सही, विदेहे धर्म सहाय १७
परावर्तन काळ भरहेरवय, लेखो डहायी लेय,
चोथो नित्य विदेहमा, आणंदरुचि भणेय १८
जिनवर ए नित्य समरता, लहिये सपद कोड,
पंडित पुण्यरुचि गुरु, शिष्य कहे करजोड १९

१०२ प्र०–चक्रवर्तिना १४ रत्न कया अने ते क्या उपजे ?

उ०–१ चक्र, २ असि, ३ छत्र, अने ४ दंड ए चार रत्नो आयुधशाळामा उपजे; ५ मणि रत्न, ६ कागणी रत्न, ७ चर्म रत्न, ए त्रण निधानमा निपजे ८ पुरोहित ९ सेनापति, १० गाथापति, ११ वार्धिक, ए चार रत्नो पोताने नगरे उपजे. १२ स्त्री

रत्न ते राजकुळे उपजे, गजरत्न अने अश्वरत्न ए वे वैताढ्य पर्वत उपर उपजे.

१०३ प्र०—नव निधान ते कया अने ते क्यां प्रगटे ?

उ०—गंगानदीने तटे नवनिधाननी नव पेटी प्रगटे छे, ते प्रत्येक पेटी १२ योजन लांबी, नव योजन पहोळी, अर्ध योजन उंची, ते योजन आत्मांगुल प्रमाण जाणवा, अने नवनिधि मंजुसने आकारे छे, वैडुर्यमणिरत्नमय कमाड छे, तेना तथा तेमांनी वस्तुनां नाम कहे छेः—१ नैसर्पिक, तेमां नगर निवेस ग्रामादि उत्पादक विधि छे; २ पांडुक, तेमां धान्य बीजादिकनी सर्व संपत्ति छे; ३ पिंगळ, तेमां नर नारी हय गयनां विविध आभरणो छे; ४ महापद्म, तेमां चउदे जातिनां रत्नो छे; ५ मह्हि, तेमां विविध प्रकारनी सुगंधि पुष्पादि विगेरे वस्तुओ छे; ६ काळ, तेमां त्रिकाळ ज्ञाननां पुस्तको छे; ७ महाकाळ, तेमां सोनुं, रुपुं, झवेरात, लोह विगेरे सर्व द्रव्य अखूट छे; ८ माणक नामे तेमां राजनीति, युद्धनीति अने सर्व हथीयार युद्धनी नीति छे; ९ सुखनिधि, तेमां चतुर्विध नाटकादि संगीत शास्त्रादिना ग्रंथो छे; ते प्रत्येक निधाने एक हजार व्यंतर देवो अधिष्ठायक छे, तेनुं आयु एक पल्योपमनुं छे.

१०४ प्र०—प्रभु ज्यां पारणुं करे त्यां धनवृष्टि देवताओ केटली करेछे ?

उ०—जघन्यथी साडाबार लाख अने उत्कृष्टथी साडीबार क्रोड सोनैया वरसावे

अद्धतेरस कोडी, उक्कोसा तत्थ होई वसुधारा ।
अद्धतेरस लक्खा, जहन्निया होई वसुधारा ॥ १ ॥

१०५ प्र०—चउद मोटी विद्याना नाम कहो ?

उ०—१ नभोगामिनी, एटले आकाशमा गमन करवानी विद्या, २ परशरीर प्रवेशिनी, ३ रूप परावर्तिनी, ४ स्तंभिनी, ५ मोहिनी ६ सुवर्ण सिद्धि, एटले सोनु बनाववानी विद्या, ७ रजत सिद्धि, एटले रुपु बनाववानी विद्या, ८ रससिद्धि, एटले रसकूपिकादि रस करवानी विद्या, ९ बंध मोक्षिणी, एटले गमे तेवा बंधनमांथी मुक्त करवानी विद्या, १० शत्रु पराभविनी, ११ वश्य करणी, १२ भूतादि दमिनी, एटले सर्व अग्निना उपद्रवने समावनारी विद्या, १३ सर्व संपत्करी, १४ शिवपद प्रापिणी.

१०६ प्र०—आचार्य महाराज आत्मस्वरूप पंच प्रस्थानने ध्यावे एटले शु ?

उ०—ध्याननी पांच अवस्था साधवामां सावधान आचार्य भगवंत, पंचपद आराधे छे, तेना नाम १ अभय, ते अरिहंतनु ध्यान, २ अकरण, ते सिद्धनु ध्यान, ३ अहमिंद्र, ते आचार्यनु ध्यान, ४ तुल्य एटले उपाध्यायनु ध्यान, ५ कल्प एटले साधुनु ध्यान, ते समान अवस्थाए पंच प्रस्थानमय आचार्यजी छे

१०७ प्र०—जीवने मिश्रगुणठाणुं चढतां के पडतां कोने केवी रीते आवे ते कहो.

उ०—अनादि मिथ्यात्वी होय तेने चडतां न आवे. केमजे ते प्रथम उपशम सम्यक्त्व पामे, ग्रंथिभेद करी चोथे आवे; माटे अनादि मिथ्यात्वी पहेलेथी चोथे आवे, माटे तेने त्रीजुं मिश्र चढतां न आवे, अने सादि मिथ्यात्वी जीव सम्यक्त्व पामीने पडयो होय ते पाछो क्षयोपशम सम्यक्त्व पामे, तेने त्रीजुं चढतां पडतां आवे.

१०८ प्र०—समोहिया, असमोहिया, मरण ते कोने कहीए ?

उ०—समोहिया मरण ते जीव अहिंथी नीकळे त्यारे समकाळे सर्व प्रदेशे नीकळी परभवे जाय, जेम सीधो दडो फेंकतां दडाना प्रदेश एक वखते दडा साथेज जाय छे तेम जाणवुं; अने असमोहियामरण ते जीवना प्रदेश श्रेणिबद्ध आगळथी जाय, एटले अहिं तथा परभवे आत्म प्रदेशनी मरणावसरे श्रेणि मंडाय ते जेम पतंगनी दोरी हाथने अने पतंगने लागेली छे तेनी पेठे जीव प्रदेश नीकळे ते.

१०९ प्र०—जीवनो शुद्धोपयोग गुण जे सम्यक्त्व, तथा ठरण गुण ते चारित्र तेने आवरवाने कोण बळवत्तर छे ?

उ०—आत्मोपयोग गुण, आतमवस्तु जीवन गुण जे सम्यक्त्व छे, तेने आवरवाने मिथ्यात्व समर्थ छे; अने एनुं परिणमनसुख एटले स्थिरता गुण आवरवाने अविरति समर्थ छे; माटे मिथ्यात्वोदये समकित न

पामे, अने अविरति उदये चारित्र गुणस्थान न पामे, पण ज्यारे जीवने तथाविध परिणमन उपयोग एकाग्रता थाय, त्यारे ते सुखरूप ज्ञानचारित्रमय सपूर्ण धर्मने पामे

११० प्र०—द्वादशागीना केटला पदो छे ?

उ०—" कोटीशत द्वादशश्चे व कोट्यो लक्षाण्यशीति अधिकानिचैव पञ्चशडश्चे च सहस्र सख्यामेतत्श्रुत पञ्चपदननामि " ॥ १ ॥ एटला पद छे,

" एकावन्न कोडीओ, लक्खा अट्ठे व सहस्स चुल- सिही। सयछक्क साढा, एकवीस पयगथा ॥ १ ॥' एटला एक पदना श्लोकनी सख्या जाणवी.

१११ प्र०—चौद पूर्वना नाम तथा ते प्रत्येकना पदनी सख्या कहो ?

उ०—१ उत्पाद पूर्व, पदसख्या ११ क्रोड, २ अग्रायणीय पूर्व, तेमा ९६ लाख पद छे, ३ वीर्यप्रवाद पूर्व तेमा ७० लाख पद छे, ४ आस्ति नास्ति प्रवाद पूर्व, तेमां ६० लाख पद छे, ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व, तेमां २६ क्रोड पद छे, ६ सत्य प्रवाद पूर्व, तेमां एक क्रोड अने ६० लाख पद छे, ७ आत्म प्रवाद पूर्व, तेमा २६ क्रोड पद छे, ८ कर्मप्रवाद पूर्व, तेमा एक क्रोड आठ लाख पद छे, ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व तेमां ८४ लाख पद छे, १० विद्या प्रवाद पूर्व तेमां ११००१५००० पद छे, ११ कल्याण प्रवाद पूर्व, तेमा ६२ क्रोड पद छे, १२ प्राणवाद पूर्व, तेमा एक क्रोड ५६ लाख पद छे, १३ क्रियाविशाल

पूर्व तेना नव क्रोड पद छे, १४ लोक बिंदुसार तेमां साडातेर क्रोड पद छे, त्यां एक पदमां ५१८८८४० अक्षर छे.

११२ प्र०–बीजे गुणठाणेजिननामकर्मसत्तावंत जीव केम न आवे ?

उ०–क्षयोपशम समकिती, जिननाम बांधी पडतां पहेले आवेछे, तेने सत्ताए १४८ प्रकृति होय छे, कर्मग्रंथनी अवचूर्णिमध्ये कह्युं छे. संतेअडयालसयं जाउवसमविजिणु बियतइय.–अस्यार्थ. सत्ता ए कर्मनी प्रकृति. १४८ मिथ्यात्व गुणठाणामांडी यावत ११ अगियारमा सुधी होय, पण बीजे त्रीजे. गुणठाणे जिन नामकर्म विना १४७ प्रकृति सत्ताए होय ते केम ? तेनो अभिप्राय कहे छे. चोथे गुणठाणे क्षयोपशम समकित छे ते जिन नामकर्म बांधे ते बांधीने पाछो पडे. समकितथी पडेतो ते मिथ्यात्वे आवे पण बीजे त्रीजे गुणठाणे नावे. तेमाटे मिथ्यात्व गुणठाणे १४८ प्रकृति होय अने सासादन गुणठाणुं ते उपशम भाव आश्रयी छे, अने उपशम समकित छतां जिन नामकर्म न बांधे. चोथे गुणठाणे ज्यां सुधी उपशम समकित होय त्यां सुधी जिन नामकर्म न बांधे. स्तोतकाल माटे, क्षयोपशम तथा क्षायिकसमकित छते जिननाम बांधे ते पाछो वमे ते क्षयोपशम समकितथी पडतो जिन नामकर्मवाळो प्रथम गुणस्थानके आवे पण बीजे त्रीजे नावे. तिहां १४८ प्रकृति सत्ताए होय तेथी

ते तेमज क्षायिकसमकितीने तथा क्षयोपशमसमकितीने बीजु त्रीजु न होय पण उपशमसमकिती पडना बीजे त्रीजे आवे तेने जिननामनो बंध नथी, बीजे त्रीजे सत्ताए १४७ प्रकृति होय, उपशम समकित आखा भवमा पाच वखत आवे छे, तेमा चारवार श्रेणिगत अने पाचमीवार पडना आठमे गुणठाणे अटकी क्षपकश्रेणि मांडीने केवळज्ञान पामे

११३ प्र०–क्षयोपशम, उपशम अने क्षायिक सम्यक्त्वनु स्वरूप तेना भेद सहित टुकमा कहो

उ०–क्रोधादि चार अनन्तानुबंधी चारित्रमोहनी प्रकृति अने मिथ्यात्वमोहनीनी त्रण प्रकृति, ए सातने उपसमावे त्यारे उपशमसमकित अने सातेनो क्षय करे त्यारे क्षायिक अने सात प्रकृतिना उदयनो क्षय करे अने उदयमा न आवेला उपशमावे तेने क्षयोपशम सम्यक्त्व कहे छे. हवे ते विषे जे काइ विशेष जाणवा योग्य छे ते कहे छे —

दुहो

चार खपे त्रण उपशमे, पच क्षय उपशम होय,
षट् उपशम एक एम, क्षयोपशम त्रिक होय

अथवा

क्षयोपशम वर्ते त्रिविध. वेदक चार प्रकार,
क्षायिक उपशम युगल एम, नवधा समकित धार.

दुहानो खुलासो:—

सात प्रकृति मध्ये चार चारित्रमोहनीनी छे. त्रण प्रकृति

समपणुं थयुं, परिणति मध्यस्थ थइ तथा निमित्त-पणे पुण्य पापना उदय काळे हर्ष के खेद न करे, मध्यस्थ साक्षिरूप रहे.

११६ प्र०—जिननी चार निक्षेपे भक्ति शी रीते करवी ?

उ०—पवित्रताथी एकाग्रचित्तेआशातना टाळी, जिननुं नाम जपीए ते नाम निक्षेपे जिनभक्ति, २ स्थापना निक्षेपे जिनप्रतिमाजीनी अष्ट प्रकारी, सत्तर भेदी आदि पूजा भक्ति विधिथी करतां भावपूजा तन्मय थइ परिणमे ते, ३ तथा द्रव्यनिक्षेपे जिनभक्ति ते, जिनना जीव तेना गुणे भावे जिनना जीव जाणी तेमनी भावथकी वंदनादि करवुं ते, ४ तथा भाव निक्षेपे जिनभक्ति ते, त्रिगडे बेठा समोसरणे अनेक भव्यजीवोने प्रतिबोध आपता एवा जेम हाल श्री सीमंधरादि स्वामी छे तेमने वंदना नमस्कार गुण स्तुति इत्यादि करवी ते.

११७ प्र०—जीवने कर्म संबंधी करज तथा कर्म जनित भाव-दरिद्रपणुं केम टळे ?

उ०—जीव अनादि काळनो राग द्वेष मोहे परिणमे छे, तेने देवुं तथा दरिद्रपणुं बेउ वधे छे; ते टाळवानो उपाय ए छे जे समकित गुणनी प्राप्ति थए, शुद्ध रत्नत्रय धर्म प्रगटवाथी टळे; ते आवी रीते के दर्शनगुण थए द्वेषभाव टळे समभाव प्रगटे, तेथी ज्ञान गुण प्रगटे माटे, तेथी पुद्गलादि परवस्तु उपर मोह टळे, वैराग्य प्रगटे, तेथी चारित्रगुण प्रगटे, तेथी

मोहनु दरिद्रपणु जाय, चरण ठरण गुण प्रगटे. तथा कर्मनु देवु एटले करज टळे ते आवी रीते के- दर्शनगुणे जन्म करवा रूप भवपरपरा मटे, ज्ञा- नगुणे जरानी वेदना मटे, चारित्रगुणे मरण भय मटे, तेथी अमरपद पामी सिद्धिवरे, एम दर्शनगुणे ज्ञान चारित्र बेउ अनुक्रमे प्रगटे अने ए रत्नत्र- यना लाभे जन्मजरामरणादि भय टळे, जेम कोइ निर्धनने लक्ष्मी घणी मळे, त्यारे तेनु देवु अने दरिद्रपणु बने टळे छे, रत्नत्रय प्राप्तिथी आत्मधर्म- रूप धन प्रगटे, रागद्वेष मोहरूप दरिद्रपणु जाय, अने जन्म जरा मरणरूप करजना भय टळे

११८ प्र०–मोहराजानो मूळ मत्र कयो ? अने तेथी जीव छ प्रकारे घणा कर्मो बाधे छे ते केवी रीते ?

उ०–रागद्वेष ते जीवना परिणाममा वर्ते छे, तेथी कर्म बाघे, ते उदय आवे त्यारे आर्त्त अने रौद्र ध्यान थाय, तेथी विषय कषाय सेवे, तेथी तेने घणा कर्म बधाय, तेथी भव परपरा जीवने टळे नहि, ए मो- हनो मूळमत्रबीज जाणवो

प्र०–सम्यग्दृष्टिनो शब्दार्थ तथा लक्षण कहो

उ०–सम्यक् कहेता यथार्थ, दृष्टि कहेता श्रद्धान, सम्यग् ज्ञान ते यथार्थ जाणवु, सम्यक् चारित्र ते यथार्थ आचरवु, तथा उदयकाळे सम्यक् प्रकारे सहन करे अने स्वरूपे जोवु ए लक्षण. सम्यग्दृष्टि श्रावक साधुना जाणवा.

१२० प्र०–गुणग्राही, गुणगवेषी, सहजकारी (सहायकारी) ते शुं ?

उ०–१ गुणग्राही एटले जे जीव सद्गुरू पासे सूत्र सिद्धांन्त सांभळीने घणी प्रशंसा करे, कीर्ति करे, गर्वादिकना कोइ कर्म औदयिक अवगुण देखीने तेने द्वेष न उपजे, केमके जो खेद के अरूचि थाय तो भक्ति विनयादि रूचिकर मन भग्न थइ जाए, तेथी आगळ गुण थतो अटके, अने होय ते पण कदाच वमी नांखे; २ गुणगवेषी एटले गुर्वादिमांहे कोइपण उपकारादि गुण होय ते संभारीने आक्रोशादिकने लीधे खेदाय नहि; कदाच माठुं लागे पण पाछुं तेमथी हित बुद्धि, प्रीति, विश्वास, कृपादि अनेक निस्पृहिपणे करेला उपकारने संभारी मन निर्मळ थाय, अवगुण, दृष्टिमां न आवे, तेथी विनयादि भक्ति चूके नहि; ३ सहायकारि ते गुर्वादिकने अन्न, पाणी, वस्त्र; औषधादिथी घणी सहाय करे; पोते गांठथी, खरचे, गांठे न होय तो कोइ योग्य जीव पासेथी लावीने गुरुनी सहाय करे; तथा सेवा, भक्ति, वैयावच्च, पोते जाते त्रिकरण शुद्धिए करी महा शाता उपजावे, प्रसन्नता करावे, जेने परिणामे पोताने अनंत पापनी निर्जरा अने ज्ञानादिकनी परम शुद्धि तथा वृद्धि थाय; जेम शिष्योमां गुर्वादि उपर अंतरंग प्रेम, भक्ति, रुचि, विशेष रसिकता सहित दीप्तिमान् दिन प्रतिदिन अधिकने अधिक थतां जाय. तेम उत्तम

परमारथी, शुभमति, एकात निस्पृही, निर्ममत्वी, निरभिमानी, सपूर्ण रीते सरळ, प्रौढपणे गभीर, परमसमान, दृष्टिमत, दयाळु, कृपाळु, पोताना आश्रितोने विषे पूर्ण विश्वासी, सर्वमिथ्याभ्रम रहित थया थका सदानदपणे प्रवर्तमान होय पण हा । इति खेदे आ विषम काळना प्रभावे उपर कह्या तेवा सुशिष्यो तथा सुगुरुओ मळवा दुर्लभ छे, अने ज्यां होय त्या तेओ निश्चय कल्पवृक्ष समान जाणवा.

१२१ प्र०–शाता, अशाता, सुख, दुःख विषे निमित्त तथा उपादान कारण समजावो

उ०–शाताऽशातासुखदुःखयोश्चाय विशेषः शाताऽशाताऽनुक्रमेण उदयमाप्ताना वेदनीयकर्मपुद्गलानां अनुभवरूप तथा सुखदुःखेन परोदीर्यमाणवेदनीय अनुभवरूप शातादि पूर्वोक्त चारे अनुक्रमे उदयप्राप्त शातादि वेदनीय कर्मना पुद्गलोनो शाता, अशाता, सुख, दुःखरूप अनुभव छे, तथा सुख दुःखने उदयमा लावनारा उदीरणारूप जे मूळ हेतु ते वेदनीयकर्म अनुभवरूप शातादि उपादान कारण छे, अने शाता अशाता उदय आव्या जे कर्मपुद्गलो तेनुं वेदवु, भोगववुं ते अशुद्ध उपादानरूप छे, अने सुख, दुःख वेदना फळ छे, ते फळ पाक्यां एटले उदय, आव्यां ते वेदनीयकर्मनु भोगववु ते भोगववो निमित्तरूप थयो, अर्थात् सुख दुःखने भोगवता थकां जो, हर्ष शोक, करे, मदोन्मतता के झूर्णा

करे तो फरी तेवांज शाता अशातारूप वेदनीकर्म बांधे, ते बंध उपादान कारण जाणवुं, अने पूर्वोक्त हर्ष शोकादि प्रवृत्ति ते निमित्त थयुं जाणवुं, एम कारण कार्ये निमित्तथी उपादान अने उपादानथी निमित्त एम जेवां वृक्ष तेवां फळ तथा जेम बीजमांथी वृक्ष अने वृक्षमांथी बीज नीपजे छे तेम कर्मथी शाता अशातादि जीव पामे छे, अने फरी अज्ञानपणे समभावे न रहेवाथी एवांज बांधी संसार परंपरामां भमे छे; शाता अशाता आत्माश्रित जीवविपाकी प्रकृति छे, अने सुख दुःख पुद्गलाश्रित होवाथी पुद्गलविपाकी प्रकृति छे.

१२२ प्र०—वेदना केटला प्रकारनी; कइ, तेनुं स्वरूप दृष्टांतथी समजावो.

उ०—१ वेयणादुविहा, अभ्भोपगमिया उवक्कमिया; स्वयमभ्युपगम्यते वेद्यते यथा साधवः केशलुञ्चनातापनादिभिः वेदयन्तीति अभ्युपगमिकी वेदना, उपक्रामिकी तु स्वयमुदीर्णस्योदीरणाकरणेन च उदयं उपनीतस्य वेद्यस्य अनुभव इत्यर्थः, जे वेदनीयकर्म काळ परिपाके स्वयमेव सहज उदय आवे ते समभावे वेदीने खपावे ते उपक्रामिकी, अने २ जेम साधुमहाराजा केशलोच आतापनादि परिषह वेदनाने पोते उदीरणाए उदीरी समभावे वेदी कर्मनी निर्जरा करे छे ते वेदनाने अभ्युपगामिकी कहिये. तथा पाठान्तरे जूनी प्रतिमा नीचे प्रमाणे छे—एक वेदनीकर्मकाले पाकीस्वभावे उदय आपे ते समभावे वेदीने खपावे

ते अभ्युपगामिनी वेदना अने एक उदीरणाइ करी उदय लावीने वेद कर्मना पुद्गल समभावे वेदी खपावे ते उपक्रामिकी वेदना जाणवी ए भाव,

१२३ प्र०—देशना शुद्ध स्याद्वादे जैनधर्मनी छे एम क्यारे कहेवाय ?

उ०—जिनवचनानुसार देशना चतुर्विध छे—१ कारण कार्यरूप, २ निमित्त उपादान सहित, ३ द्रव्य भाव युक्त, ४ निश्चय व्यवहारनययुक्त.

१२४ प्र०—बावीस परिषहमा शीत केटला अने उष्ण केटला ? शीत अने उष्ण ते शु ? अनुकुळ अने प्रतिकुळ केटला, अष्ट कर्मना विभागे कया कर्मना कया कया परिषहो छे ?

उ०—स्त्री अने सत्कार ए बे शीत एटले मनने शाताकारी माटे अनुकुळपरिषहो छे, बाकीना उष्ण एटले मनने संतापकारी माटे प्रतिकुळ छे, एम आचारांगे तृतीयाध्ययनेचुरेटीकामध्ये कह्युं छे. तथा उत्तराध्ययनसूत्रमा कह्यु छे. हवे ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमे प्रज्ञा अने ज्ञानावरणना उदये अज्ञान ए बे छे, वेदनीयना उदये—१ क्षुधा, २ पिपासा, ३ शीत, ४ उष्ण, ५ डंस, ६ चर्या, ७ मळ, ८ सज्जा, ९ वध, १० रोग, ११ तृण स्पर्श, मोहनीयना उदयेः—१ अचेलक, २ स्त्री, ३ अरति; ४ आक्रोश, ५ याचना, ६ निसिहिया, ७ सत्कार अने ८ सम्यक्त्व परिषह ते मिथ्यात्वमोह्नना उदये

होय; तथा अलाभ ते अंतरायना उदये होय ते सर्व मुनिमहाराजा शुद्धात्मोपयोगस्वरूप विचारी महा वैराग्यभावने भावतांथकां सम्यक्प्रकारे सहे पण अस्थिरता के खेदादि कांई न करे; त्यां परिषह एटले समस्त प्रकारे समभावे सहवुं, जे कर्मोदये आवे ते; अने उपसर्ग ते स्वकृत या परकृत पीडा जे प्रगटे ते समभावे सहेवी, अथवा मतांतरे उप एटले समीपे अने सर्ग एटले आवीने उपजे जे ते उपसर्ग स्वाश्रित छे अने पराश्रित परिषह छे.

१२५ प्र०–बंध, उदय, उदीरणा अने सत्ता ए चारमां केटली आत्मिक अने केटली पौद्गलिक छे ?

उ०–उदय अने सत्ता पौद्गलिक; बंध अने उदीरणा आत्माश्रित छे.

१२६ प्र०–अष्ट पुद्गल वर्गणानुं अल्प बहुत्व कहो.

उ०–आठ वर्गणामांहे औदारिकना थोडा; तेथी अनंतगुणा वैक्रिय, तेथी घणा आहारक, तेथी घणा तैजस, तेथी घणा भाषाना, तेथी घणा श्वासोच्छ्वासना, तेथी घणा मनना अने तेथी घणा कार्मणनी वर्गणाना पुद्गलो जाणवा.

१२७ प्र०–बावीश परिषह पैकी कया कया परिषहो कया कया कर्मथी उपजे छे ?

उ०–ज्ञानावरणीथी २, मोहनीना ८, वेदनीना ११, अंतरायनो १, ए कर्मथी उपजे. अत्र गाथा

दंसणमोहेदंसण परिसहोपनाणनाणं पढमंमि ।
चरिमेअलाभ परिसहसत्तेव चरित्तमोहंमि ॥ १ ॥

अक्कोसेअरईइत्थी, निसिहिआचेव जायणाचेव,
सक्कारपुररसक्कारो, इंक्कारसवेयणिज्जम्मि ॥ २ ॥
पचेवअणुपुव्वी, चरियासिज्जातहेवजल्लेय ।
वहरोगतणुफासा, सेसेसुनत्थिविचारो ॥३॥ इति भाव.

१२८ प्र०—उपसर्ग अने परिषहमा शो फेर छे ?

उ०—उपसर्ग ते आत्मकर्मजनित छे, उपसमीपे स्त्रष्टुं उपसर्ग ते माटे, तथा परिषह ते परजनित छे परना निमित्तथी कह्या ते सहेवु ' परिसमन्तात्सह्यते इति परिषह ' इति उपसर्ग परिषहनो अर्थ विचारवो इति भाव.

१२९ प्र०—चार प्रमाणे करी वीर परमात्मा मळ्या क्यारे गणाय ? ते सिद्ध करो.

उ०—जूनी प्रतिमा नीचे प्रमाणे पाठ छे. " तद्यथा अथ प्रमाण च्यार अनुयोगसूत्रे कह्या छे, अनुमान प्रमाण १, उपमान प्रमाण २, आगम प्रमाण ३, प्रत्यक्ष प्रमाण ४, ते मध्ये आज श्री वीर स्वामी प्रत्यक्ष प्रमाणे किम मळे ? ते थापना निक्षेपाथी मळे ते किम ? समभाव शात मुद्रापर्यंकासननो उत्पादे अने रागद्वेषनो विनाश एहवी असलनी नकल (थापना) जिनप्रतिमा ते देखीने भावथी श्रीवीरस्वामी प्रत्यक्ष प्रमाणे मिले. जिन प्रतिमा ते जिन सरिखी ते जिनप्रतिमानी भक्ति जिनभावे कीधाना फल श्रावकने महानिसियसूत्रे कह्यु छे ' अयकएसड्ढो, इति वचनात्, तिहवारे जिन प्रतिमानी भक्ति कीधी

ते जिननी कीधी इम 'कारणे कार्योपचारात्' इम जिननी स्थापनाथी आज प्रत्यक्ष प्रमाणे श्री वीर मल्या कहीए 'अत्र संदेहोनास्ति' इति भाव." तथा छापेली प्रतिमां नीचे प्रमाणे पाठ छे.

अविरोध, अस्खलित, अविसंवादि, निःस्वार्थ, एकांत, दयामय, संपूर्ण सत्य, मधुर, प्रिय, गंभीर, अमर्म प्रकाशक, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शिपणाना लक्षणोए पूर्ण, तथा मुद्राकारे शांत सुधारसमय रागद्वेषादि चिन्ह रहित इत्यादि अनेकशास्त्रवचन गोचर वीरपरमात्मा आगमपणे सिद्ध करीए. २ अनुमान प्रमाणे जेम धूम्र दिठे अग्निनो निश्चय थाय तेम पूर्वापर महात्माओना ऐतिहासिक संबंध तेना विधविध उत्कृष्ट सदाचार प्रवर्त्तक पुरूषोना प्रमाणोए ज्यारे ऐंसी नेवुं वातो अनुभवथी सत्य सिद्ध थाय तो तेनी शेष दस वातो पण सत्यज मानी लेवाय छे, अने होय छे पण तेमज एवीज रीते श्री वीर परमात्माना अनेक वचनो अत्यारे बीजा अन्य दर्शनिना वचनो करतां सत्य, अविरोधी, अने प्रमाणभूत थाय छे, तो कोइक सूक्ष्म, अगम, अगोचर वात छद्मस्थ मंदबुद्धिना ग्राह्यमां न आवी शके, तोपण बीजी घणी वात मळे छे तेने अनुमाने ते पण सत्यज होवी जोइए; एम वीरप्रभुना वचनो पण युक्ति तथा न्याय सिद्ध सत्य होवाथी वीरपरमात्मा अनुमानपणे पण सिद्ध थया; ३ उपमा प्रमाणे पुरिसासिहाणं एटले तप तेजे तथा

परिषह उपसर्ग सहन करवामां निर्भय, साहसिक, केसरि सिंहसमान पराक्रमी, वीरपरमात्मा उपमा प्रमाणे पण सिद्ध थया जाणवा, ४ प्रत्यक्ष प्रमाणे जिनप्रतिमा जिन सरखी होवाथी वीरपरमात्मा-स्थापना निक्षेपे सिद्ध थया, कारण जे समभाव, शांत मुद्रा, विशुद्ध पर्यंकासन इत्यादिनो उत्पाद, रागद्वेषनो व्यय, अने मूळस्वरूपे ध्रुव, सच्चिदानद घनमय एवी असलनी नकल श्री जिन प्रतिमाजी छे ते देखी भावथी श्री वीरपरमात्मा प्रत्यक्ष सिद्ध थया जाणवा, स्थापनाजीनी भक्ति ते साक्षात्‌नी बराबरज छे, कारणे कार्य उपचारे सत्य छे.

१३० प्र०—जीव अष्टकर्मवर्गणादलिक केवी रीते वहेंची आठे कर्मने आपे छे ?

उ०—समय समय जीव कर्मवर्गणा ग्रहे छे, ते आठे कर्मने वहेंची आपे छे ते आवी रीते—सर्वथी थोडा आयुकर्मने, तेथी विशेषाधिक नाम अने गोत्रने, ते बेउमा मांहोमाहे सरखां, तेथी १ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ तथा अतराय ए त्रणने विशेषाधिक पण माहोमाहे सरखां दळ आपे, तेथी मोहनीयने संख्यातगुणाधिक, तेथी वेदनीयने अधिक, एम वेदनीयकर्मने सर्वथी अधिक दळ मळे छे, केम जे वेदनीय विपाक जीवने थोडा दळे प्रगटपणे जणाय नहि तेथी. इति भगवतीसूत्रे कह्युं छे.

१३१ प्र०—जीव विग्रहगति करे तो तेनो उत्कृष्ट काळ केटलो ?

उ०–त्रसनाडी बहार एकेंद्रियथावरकायजीव विदिशीए उपजनारने पांच समय लागे छे.

१३२ प्र०–अभिसंधिवीर्य अने अनभिसंधिवीर्य ते शुं ?

उ०–अभिसंधि वीर्य ते उपयोग पूर्वक आत्मवीर्य; अने अनुपयोग आत्मवीर्य ते अनभिसंधिवीर्य.

१३३ प्र०–समकिती श्रावकने गृहस्थपणे छठुं गुणठाणुं स्पर्शे के नही ?

उ०–सम्यग्दृष्टिए देशविरति गृहस्थावास छतां कोइ जाणस्ये जे ते चोथा पांचमां गुणठाणावालाने निर्मल अध्यवसाए ध्यानदशाए शुभयोगे शुभ धर्मध्याने छठ्ठा सातमा गुणठाणाना परिणाम आवे पछे ते कालान्तरे अंतर्मुहूर्तमात्र रहीने पछे मटी जाय. पोताना गुणठाणा माफक परिणाम रहे एवुं कहे ते असत्य स्वमति कल्पना पण कोइ ग्रन्थोक्त नहीं. तत्रोत्तरं चोथा पांचमाथी भावचारित्र गुण आवे चढते १३ मा १४ सुधी चढीने मरुदेव्यादिनीपरे पुण्याढ्यराजानीपरे सिद्धिवरे पाछो ते गुणठाणा फरसीने पडे नहि. गृहस्थवासी गमे तेवो उत्कृष्ट श्रावक होय, तोपण तेने गुणठाणुं पांचमुंज होय छे; पण छठुं सातमुं न कहेवाय; केमजे गुणठाणानी प्राप्ति कषायना क्षयोपशमने आधीन छे, अने अध्यवसायनी निर्मळता ते निज परिणतिने आधीन छे, ते परिणति पोताना अध्यवसायनी निर्मळताए कषायनो क्षयोपशम करीने अधिक उंचा गुणठाणानी परिणतिरूप

करे तो अधिक गुणठाणी कहेवाय, नहि तो भावनी शुद्धाशुद्ध तारतम्यता कहेवाय

१३४ प्र०—सम्यक्त्व मोहनीयने कोण वेदे, अने क्यां सुधी वेदे, अने तेनु स्वरूप शु ?

उ०—क्षयोपशम समकितीने समकित मोहनीनो उदय होय अने उपशमिक अने क्षायिकने ते न होय, तेमज वेदकने एक समयनोज अतिसूक्ष्म काळ होवाथी गणत्रीमा लीधु नथी, सम्यक्त्व मोहिनी ते क्षयोपशमीने होय तथा उपशमीने सत्ताए होय, तेथी प्रदेशे अने रसे अनुक्रमे, ते सकाकखादि सहज विभ्रमता वेदे, कोइक जिनप्रणीत सूक्ष्म अर्थभाव मध्ये मुझाय ते सम्यक्त्वमोहनीयनु स्वरूप जाणवु

१३५ प्र०—उत्सर्ग अने अपवादनु शु स्वरूप छे ?

उ०—उत्सर्ग ते व्यवहारमार्ग अपवाद ते निश्चयमार्ग यथा साधुने पृथ्वीकायादि षट्कायनी विराधना निषेधी छे कदाचित् कारणे नदी उतरवी पडे तथा आहारादिकने अर्थे गुरुदेव वदनाने अर्थे चालता विराधना थाय ते उत्सर्ग ते माटे अपवावादे पञ्चक्खाण महाव्रतना होई अने कांइक अण कारण पडे उत्सर्गमार्ग होय, तथा वाचानान्तरे कोइक ग्रन्थे उत्सर्ग ते उत्कृष्टो निश्चयमार्ग कह्यो छे. अने अपवाद ते कोमलमार्ग माटे व्यवहारमार्ग कह्यो छे, तेहनो स्वरूप आगे लख्यो छे ए भाव. उत्सर्ग मार्गनी चर्चा घणी छे, पण इहा तो अल्पबुद्धिए जेहवुं जाण्यु तेहवु लख्युं छे. इति भाव.

१२६ प्र०—दीवा प्रमुख ज्योतिमय पदार्थोना प्रकाश पडे छे, ते दीवामध्ये रहेला अग्निकाय जीवना पर्याय छे ?

उ०—दीवा मध्ये जे अग्निना जीव छे, ते मांहेज परिणमी रह्या छे, पण दाहकरूप पर्याय छे ते बाहेर नीकळे नहि, तथा दीवाना प्रकाशरूप पुद्गल जे बाहेर दीसे छे, तेतो विस्रसा पुद्गलनी पर्याय छाया छे. तथा दीवानी बाहेर जे प्रकाशरूप पुद्गल दीसे छे ते, तथा प्रकाशरूप पुद्गलना निमित्ते, अपर विस्रसा पुद्गल श्रेणिबद्ध जमाव थाय छे ते अचित्त दीसे छे. पण ते अग्निकाय जीवना पर्याय नहि, तेना (अग्निना) गुण पर्याय तो दाहक रूपे छे, ते ज्यां व्यापे त्यां बाळी भस्म करे; माटे बाहिर पडतो प्रकाश विस्रसा पुद्गल पर्याय (अचित) जाणवा; जेम आरसीमां मुख जोतां आपणा शरीर समान सर्व प्रतिबिंबित पुद्गल दीसे छे, ते कांइ आपणा शरीरना पर्याय, आरसीमां जतां नथी, पण ते आरसीनुं निमित्त पामीने त्यां शरीर मुखादि जेवा विस्रसा पुद्गल, तत्काल श्रेणिबद्ध तद्रूप परिणमिने जमाव थाय छे, पण ते जीवना पर्याय न जाणवा; एवीज रीते शरीरनी छाया विगेरे विस्रसा पुद्गलजमाव जाणवो, तेम दीवा प्रमुखना प्रकाशादिमां पण जाणवुं. *

* श्रीमद् देवचन्द्रजीए दीवाना प्रकाशने विस्रसा पुद्गल मानी अचित कह्यो छे. आ बाबतमां बे मत छे. केटलाक मुनियो श्रीमद देवचन्द्रजीनी पेठे दीपकना प्रकाशने विस्रसा पुद्गल मानी अचित गणे छे

१३७ प्र०—वक्ता तथा श्रोताना चौद चौद गुण कया कया छे ते कहो

उ०—वक्ताना चौद गुणो :—१ आगमोक्त सोळबोलना जाण, २ शास्त्रार्थ विस्तारवत, ३ वाणीमा मीठाश, ४ प्रास्ताविक अवसर ओळखे, ५ सत्य बोले, ६ साभळनारना संदेह छेदे, ७ बहु शास्त्रवेत्ता गीतार्थ उपयोगी होय, ८ अर्थ विस्तारी सवरी जाणे, ९ व्याकरण रहित कठिनभाषा के अपशब्द न बोले, १० वाणीए सभाने रीझावे, ११ वाणी साभळीने श्रोता रसस्वाद पामे, १२ प्रश्नार्थवंत, १३ अहकार रहित, १४ संतोषादिधर्मवत श्रोताना चौद गुणो — १ भक्तिवत, २ प्रियभाषी, ३ निरभिमानी, ४ साभ-

अने रात्रे उपाश्रयमा दीपकना प्रकाशमा पुस्तको वाचे छे शरीरपर प्रकाश पडे छे ते अदाहकविस्रसा पुद्गलरूप छे एम माने छे अनन्त परमाणुओनो स्कंध बने छे तेनी अवश्य छाया होय छे अग्निकायना पुद्गलोनी, मणिनी छायानी पेठे छाया पडे छे दीवानी चारे तरफ प्रकाश मय विस्रसा पुद्गलो छे, तेज अग्निना छाया—प्रतिबिंब पुद्गलो छे माटे छाया प्रतिबिंब पुद्गलो छे ते विस्रसारूप होई अचित्त छे अन्य सचित्त मनुष्य वगेरे छकायना प्रतिबिंब छाया पुद्गलोनी पेठे—ए प्रमाणे आगमोक्तयुक्तियो अनेक जणावे छे श्रीमद् देवचन्द्रजी बहुश्रुत गीतार्थ द्रव्यानुयोगी हता तेमना गुरुओना परपरापण ए मान्यतावाळी होवी जोईए तपागच्छमा पण केटलाक मुनियोनी तेवी मान्यता तथा प्रवृत्ति सभळाय छे बीजा पक्षवाळाओ दीवाना पुद्गलोने उजेही माने छे तेओ ग्रन्थना पाठनी साक्षी आपे छे (तत्त्व केवलिगम्यम्) शो बु. सू

ळवा उपर रुचिवंत, ५ चपळता रहित एकाग्र चित्ते सांभळीने धारे, ६ जेवा सांभळ्या तेवा प्रगट अक्षर कही देखाडे तेवो स्मरण शक्तिवंत, ७ प्रश्ननो जाण, ८ विस्तारित शास्त्रार्थ रहस्य समजे, ९ धर्म कार्यें आळसु न होय, १० धर्म सांभळतां निद्रारहित होय, ११ तात्त्विक बुद्धिवंत होय, १२ दातार होय, १३ धर्म सांभळनारा उपर प्रेम होय तथा तेनी पछवाडे तेना गुण प्रशंसे, १४ निंदा, विकथा, वाद, विवाद, कदाग्रह, ममतादि रहित विनयी सुशील होय.

१३८ प्र०—पुराणो केटलां छे ते जणावो.

उ०—पुराण अढार छे तेना नाम. १ ब्रह्मपुराण, २ पद्मपुराण, ३ विष्णुपुराण, ४ शिवपुराण, ५ भागवतपुराण, ६ नारदपुराण, ७ मार्कंडपुराण, ८ अग्निपुराण ९ भारतपुराण, १० ब्रह्मावर्त्तपुराण, ११ लिङ्गपुराण, १२ वराहपुराण, १३ स्कंधपुराण, १४ वामनपुराण १५ कर्मपुराण, १६ मत्स्यपुराण, १७ गरुडपुराण, १८ ब्रह्मांडपुराण. ए पुराणना नाम जाणवा.

१३९ प्र०—पुद्गल परमाणुमां वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, शब्दादि गुणो छे; तेमां शब्दगुण ते क्यांथी आव्यो, शक्ति होय तेनी व्यक्ति संभवे छे पण अहिं शक्तिरूपेज परमाणुमां शब्दगुण देखातो नथी, छतां शब्दवडेज काने सांभळीए छीये ते जीवनो गुण छे के पुद्गलनो ?

उ०—परमाणुमां बे स्पर्श छे, कर्मवर्गणामां चार स्पर्श छे

ते शीत, उष्ण, स्निग्ध, अने लुखो, अने औदारिकादिशरीरमा आठे स्पर्श छे तो बीजा चार स्पर्श हलको, भारी, सुवाळो अने खरबचडो ए क्याथी आव्या ? तेनो उत्तर जे सबध बे प्रकारना छे.— १ समवायसंबध अने सयोगसबध, त्यां समवाय सबध ते सहचारी वस्तु गुणपर्यायादि जेम षट् द्रव्यमा छे तेम जाणवो, अने सयोगसबध ते घणा भिन्न भिन्न पुद्गलो मळे थके प्रयोगे अपर नवीन गुण के भाव प्रगटे ते, जेम खारानी साथे हळ्दरनो सयोग थये रताशगुण नीपजे तेम जाणवु, एवीज रीते आत्मा अने पुद्गलने सयोगे शब्दनामा गुण प्रगट्यो तेम वर्णादिगुणवत कर्म परमाणुमा चार स्पर्श समवायसबधे पुद्गलाश्रित हताज, अने पछी जीवशरीरादि सयोगसंबधे आठ नीपज्या

१४० प्र०—जीव परभव आयु केवा परिणामे बाधे ?

उ०—योग, कषाय, ध्यान अने लेश्या ए चारना शुभाशुभ यथायोग्य एकत्र सयोगे, जीवने परभवायु बधाय छे

१४१ प्र०—षड्द्रव्यना क्षेत्रकाळभावादि त्रीस भेद कया, तथा प्रकारातरे पण द्रव्यादिक चार भेदनु स्वरूप कहो.

उ०—षड्द्रव्य मांहेला प्रत्येकना पाच पाच गुण छे ते आ प्रमाणे—

१. धर्मास्तिकाय—१ द्रव्यथी एक, २ क्षेत्रथी लोकम-

माण, ३ काळथी अनादिअनंत, ४ भावथी अरूपी (अवर्णादि), ५ गुण चलणसहायक.

२. अधर्मास्तिकायः—१ द्रव्यथी एक, २ क्षेत्रथी लोकप्रमाण, ३ कालथी अनादिअनंत, ४ भावथी अरूपी (अवर्णादि), ५ गुण स्थिरतासहायक.

३. आकाशास्तिकायः—१ द्रव्यथी एक, २ क्षेत्रथी लोकालोकप्रमाण, ३ कालथी अनादिअनंत, ४ भावथी अरूपी (अवर्णादि), ५ गुण अवकाशदानसमर्थ.

४. काळः—१ द्रव्यथी अनेक एटले अनंताअनंत, २ क्षेत्रथी मनुष्य लोक मध्ये, ३ कालथी अनादिअनंत, ४ भावथी अरूपी (अवर्णादि), ५ गुण नवा, पुराणा, वर्तना लक्षण.

५. पुद्गलास्तिकायः—१ द्रव्यथी अनेक एटले अनंता, २ क्षेत्रथी लोक मध्ये, ३ काळथी अनादिअनंत, ४ भावथी रूपी एटले वर्णादियुक्त, ५ गुण पुरण, गलण, मिलण, विखरण, सडण, पडण, विध्वंसन, धर्मलक्षण.

६. जीवास्तिकायः—१ द्रव्यथी अनेक एटले अनंत, २ क्षेत्रथी लोक मध्ये, ३ कालथी अनादिअनंत, ४ भावथी अरूपी (अवर्णादि), ५ गुण चेतनाउपयोगवंत.

एवी रीते षद्द्रव्यना द्रव्यादि अपेक्षाए, त्रीश भेद दर्शाव्या प्रकारांतरे, प्रकारांतरे निश्चयव्यवहारनये द्रव्य क्षेत्र काल भावे कथंचित् सप्रदेशी, कथंचित् अप्रदेशी, एम भजनाए विध विध अपेक्षाए अनेक भेद स्वरूप विस्तारित ग्रंथांतरथी गुरुगम्य जाणी लेवुं. जूनी प्रत्यन्तरे नीचे मुजब छे.

पुनरपि द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी भावथी स्यु ? ते कहे छे १ द्रव्यथी अप्रदेशी, बीजु क्षेत्रथी अप्रदेशी २, त्रीजे कालथी अप्रदेशी ३, चोथे भावथी अप्रदेशी ४, हवे क्षेत्रथी ते नियमा अप्रदेशी ते द्रव्यथी स्यात् सप्रदेशी अप्रदेशी ४ हवे कालथी स्यात् सप्रदेशी अप्रदेशी. कालथी पण भजना, क्षेत्रथी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी, हवे भावथी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी एणी रीते लेजो ए भाव, हवे जे द्रव्यथी सप्रदेशी ते क्षेत्रथी सप्रदेशी छे, जे कालथी सप्रदेशी छे ते भावथी सप्रदेशी छे ४. हवे सप्रदेशी ते क्षेत्रथी स्यात् सप्रदेशी, अप्रदेशी ते द्रव्यथी सप्रदेशी नियमा ते द्रव्यथी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी ते द्रव्यथी सप्रदेशी होइने अप्रदेशी पण छे. हवे अप्रदेशी कालथी स्यात् सप्रदेशी, सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी, कालथी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी, ते क्षेत्रथी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी, हवे भावथी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी भावथकी भजना भावथकी स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी ने कालथी पण स्यात् सप्रदेशी स्यात् अप्रदेशी इति भाव.

१४२. प्र०—षट्द्रव्यना गुणपर्यायनु शुद्धाशुद्ध स्वरूप यथार्थ विस्तारे समजावो.

उ०—षट्द्रव्यमध्ये प्रथम जीवद्रव्य लइए, ए जीव बे प्रकारे छे, एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, द्रव्यकर्म, भावकर्म अने नोकर्मादि सर्व कर्मकलंके रहित शुद्ध निष्पन्न, स्वरूपी सिद्धालये अनादि तथा सादि अनंत भागे, लोकाग्रे विराजता सिद्धपरमात्माओना

जीवद्रव्य शुद्ध जाणवा; तथा कर्मावरणे सहित म-
लिन आत्मप्रदेशी, रागद्वेषादि भाव मलिन परिण-
तिवंत चतुर्गति भ्रमण लक्षणरूप अशुद्ध जीवद्रव्य
जाणवा; हवे तेना गुण अने पर्याय विषे लखीए
छीए:—जीवना गुण पण बे प्रकारे छे. १ शुद्ध,
२ अशुद्ध, त्यां शुद्धगुण ते केवळज्ञानादि अ-
नंतगुणलक्ष्मीरूप परमशुद्धक्षायिक भावना गुण
ते तथा मतिज्ञानादि दश भेद शुद्धाशुद्ध क्षायो-
पशमिक भावना गुण ते अशुद्ध जाणवा. हवे
जीवना पर्याय पण बे भेदे छे, एक व्यंजनपर्याय
अने बीजा अर्थ पर्याय, वळी व्यंजन पर्याय पण
बे भेदे छे, एक शुद्ध अने बीजा अशुद्ध; त्यां
शुद्ध व्यंजन पर्याय ते चरम शरीर प्रमाण किंचित्
उणी अवगाहनावंत, सिद्धावस्थावंत ते शुद्ध व्यंजन
पर्यायवंत जीव जाणवा; तथा नरनारकादि चतु-
र्गतिरूप अशुद्ध व्यंजनपर्याय जाणवा, अर्थ पर्याय
पण बे भेदे छे:—एक शुद्ध अने बीजा अशुद्ध
त्यां आपणी गुणश्रेणि मध्ये षड्गुणहानिवृद्धिरूप-
अगुरुलघुपर्याय ते शुद्धअर्थपर्याय, अने मति-
ज्ञानादि अवलोकन अवस्थिति एक अक्षरने अनं-
तमे भागे पर्यायरूप जे ज्ञानादि चेतन उपयोग
स्थिति ते अशुद्ध पर्याय जाणवो, तथा उत्पाद
व्ययध्रुवरूप जीवना शुद्धाशुद्ध द्रव्यगुणपर्याय
जाणवा, जेम मतिज्ञान उपयोगनो व्यय, श्रुतज्ञानो-
पयोगनो उत्पाद अने ज्ञानगुण ध्रुव ते शुद्ध भेद;

तथा मनुष्यगतिनो व्यय, देवगतिनो उत्पाद अने जीवद्रव्य तो शाश्वत ध्रुवरूपे छे, ते अशुद्धभेद जाणवो. हवे पुद्गलद्रव्यना गुणपर्याय विचारीए, त्या ते पुद्गलद्रव्य पण बे भेदे छे, एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, आकाशप्रदेशे रहेल शुद्ध अविभागी अच्छेद अभेदरूप परमाणुओ ते शुद्ध पुद्गलद्रव्य, अने द्वयणुक त्र्यणुकादि परमाणुओना बनेला जे स्कंधो ते अशुद्ध पुद्गलद्रव्य, हवे पौद्गलिक गुण पण बे भेदे छे, एक शुद्ध अने बीजो अशुद्ध, त्या शुद्ध ते निर्विभागी वीसगुणयुक्त पुद्गलद्रव्यगुण जाणवा वीसगुणादि सहित अनत गुणमिश्रित द्वयणुकादि स्कंधरूप मुख्य गमन रूपान्तर गुणनी गौणता अने सत्तागुणनी मुख्यता तेने अशुद्धपुद्गल गुण कहीए, वळी पुद्गलपर्याय पण शुद्ध अने अशुद्ध एम बे भेदे छे, ते पण व्यजन अने अर्थना भेदे द्विविध छे, त्या शुद्ध आकाशप्रदेशे अविभागी षड्गुणहानिवृद्धिरूप शुद्ध परमाणु पर्याय ते अने अशुद्धव्यजनपर्याय ते स्थूल सूक्ष्म परिणामरूप द्वयणुकादि स्कध पर्याय ते, वळी शुद्धअर्थपर्याय ते पोतानी गुणश्रेणि मध्ये षड्गुणहानिवृद्धिरूप परिणमन पर्याय ते, तथा अशुद्धअर्थपर्याय ते द्वयणुकादि स्कंधरूप गुणविगति, तीव्र मन्द तारतम्यभेद परिणमन पर्याय ते; जेम पूर्व स्कंधनो व्यय, वर्तमानना उत्पाद

अने पुद्गल द्रव्य तो शाश्वत छे, एटले जेम सोनानो कंदोरो भांगीने सोनाना बाजुबंध कराव्या त्यां कंदोरानो व्यय, बाजुबंधनो उत्पाद अने सोनुं ते ध्रुव. हवे धर्मास्तिकायना द्रव्य गुण पर्याय विचारे छे. धर्मास्तिकाय शुद्धद्रव्य लोकप्रमाण, असंख्यात प्रदेशी, अखंड, एक आकृतिरूप अरूपि शुद्धव्यंजन पर्यायरूप धर्मास्तिकायद्रव्य जाणवुं, तथा पोतानी गुणश्रेणि मध्ये षट्गुणहानिवृद्धिरूप परिणमन करे त्यां शुद्ध अर्थपर्याय धर्मास्तिकायना कहिये; गुण ते जीव पुद्गलने गतिसहायकरूप, तथा उत्पादव्ययध्रुवपणे षट्गुणहानिवृद्धिरूप पर्याय जाणवाः—जेम चलणगतिनो उत्पाद, स्थितिनो व्यय अने द्रव्यसत्ता ध्रुव शाश्वत जाणवी, एवीज रीते अधर्मादि बीजा त्रण द्रव्योनुं पण किंचित् स्वरूप लखीए छीएः—अधर्मनो गुण जे पुद्गलने स्थितिसहायक, असंख्यातप्रदेशी, लोकप्रमाण, अखंड, षट्गुणहानिवृद्धिरूप परिणाम, ते शुद्ध पर्याय, त्यां अखंडआकृतिरूप शुद्ध व्यंजनपर्याय जाणवो अने ज्यां षट्गुणहानिवृद्धि करे त्यां शुद्ध अर्थपर्याय जाणवो, जेम स्थितिनो उत्पाद, गतिनो व्यय, अने द्रव्यसत्ता ध्रुव जाणवी, काळ द्रव्यनो गुण वर्तना लक्षण, पंचद्रव्यनो वर्तना पर्याय सर्व द्रव्यनो पर्याय, असंख्यात लोकप्रमाण शुद्ध पर्याय कहीए. वर्तमान समयनो व्यय, अनागत समयनो

उत्पाद, द्रव्य सत्ता ध्रुव, उपचारे एक कालद्रव्य आकृति ते शुद्ध व्यजनपर्याय, हवे आकाशद्रव्यनो गुण अवकाशदानलक्षण, लोकालोकप्रमाण, अनतप्रदेशी, घटाकाशनो उत्पाद, पूर्वघटाकाशनो व्यय अने द्रव्य सत्ता ध्रुव जाणवी तथा लोकालोक प्रमाण अखंडआकृतिरूप शुद्धव्यजनपर्याय कहीये, एम षद्द्रव्यनु पर्यायादि किंचित् स्वरूप कहिने तेमां जे कांइ विशेष जाणवा योग्य छे ते कहे छे —

गाथा—परिणामी जीवमुत्ता, सपएसा एगखित्तकिरियाय.
णिच्चकारणकत्ता, सव्वगय इयर अप्पवेसे (१)

१ जीव अने पुद्गल परिणामी, शेष चार अपरिणामी, २ जीवद्रव्य ते जीव चेतनरूप अने शेष पाच अजीव अचेतन जडरूप छे, ३ पुद्गल रूपी मूर्तिमत छे, शेष पांच अरूपी छे, ४ काल, अप्रदेशी छे, शेष पाच सप्रदेशी छे, धर्म, अधर्म अने आकाश ए त्रण एक अने शेष त्रण अनेक, ६ आकाश क्षेत्र छे, अने शेष पाच क्षेत्री छे, ७ जीव अने पुद्गल वे सक्रिय छे, शेष चार अक्रिय छे, ८ जीव अने पुद्गल वे व्यवहारथी अनित्य शेष चार नित्य छे, ९ जीव अकारणरूप अने शेष पाच कारणरूप छे, १० जीव कर्ता अने शेष पाच अकर्ता छे, ११ आकाश सर्वगत छे, अने शेष पाच असर्वगत छे.

१४३ प्र०—वेदना संबंधी चौभंगी कहो.

उ०—१ अल्पवेदना अल्पनिर्जरा ते देवताओने, २ महावेदना अल्पनिर्जरा ते नारकीने, ३ महावेदना महानिर्जरा ते अप्रमत्त साधुने, गजसुकुमालनीपरे; ४. अल्पवेदना महानिर्जरा ते शैलेशीकारकमहात्मा चौदमा गुणठाणी परमात्मस्वरूप सन्मुखी जाणवा.

१४४ प्र०—सम्यक्त्व अने मिथ्यात्वनी चौभंगी भिन्न भिन्न जीवाश्रित कहो.

उ०—अनादिअनंतमिथ्यात्व अभव्यने; २. अनादिसांत मिथ्यात्व भव्यने; ३. सादिसांतमिथ्यात्व प्राप्त सम्यक्त्ववमनारने; ४. सादि अनंत भांगो शून्य छे.

१४५ प्र०—व्रतअंगीकार तथा पालनमां सिंहपणा तथा शियाळपणानी चौभंगी दृष्टांत सहित कहो.

उ०—१. सिंहपरे व्रत ग्रहे अने सिंहनी परे पाळे ते जंबुस्वामी स्थूलभद्रादिनी परे; २. सिंहपरे ग्रहे अने शियाळनीपरे पाळे, ते मरिचादिवत्; ३. शियाळपरे ग्रहे अने सिंहनी परे पाळे, ते मेतार्यमुनिआदिवत्; ४. शियाळपरे ग्रहे अने शियाळपरे पाळे ते अंगारमर्दकाचार्य, कुलवाल्लुकादिवत् जाणवा.

१४६ प्र०—चार अनुयोग ते कया.

उ०—१. द्रव्यानुयोग ते षद्द्रव्य विषयक गुणपर्याय स्वरूप कथनयुक्त आत्मद्रव्य विवेचनमुख्याधिकार; २ धर्मकथानुयोग, ते सता, सती महात्माओनां चरित्रोनुं

कथन स्वरूप, ३ गणितानुयोग ते द्वीप, समुद्र, क्षेत्रादिनु, क्षेत्रफळादिमापनु गणित कथन स्वरूप, ४. चरणकरणानुयोग ते क्रियानुष्ठान चारित्रादि व्रत पच्चखाण नियमादि विधि कथनस्वरूप

१४७ प्र०—जीव दुर्लभबोधिपणु केटला कारणे पामे ?

उ०—छहिठाणेहिंदुल्लभबोहिमाणकम्मपकरति अरिहंताणअवन्नवयमाणे ॥१॥ अरिहंतपन्नत्तस्सधम्मस्सअवन्नवयमाणे ॥२॥ आयरियाण अवन्नवयमाणे ॥३॥ उवज्झायाण अवन्नवयमाणे ॥४॥ चाउवन्नस्ससंघस्स अवन्नवयमाणे ॥५॥ समद्दीठीदेवाण अवन्नवयमाणे ॥ ६ ॥

१ श्रीअरिहंत, २ तथा तेमनो भाखेलो जे धर्म तथा तेमनी प्रतिमाजी तथा तेमना वचनरूप जे सिद्धांत इत्यादिक अरिहंत संबंधी अवर्णवाद निंदा, द्वेषादि करवारूप अविनयादि कारण थकी, ३ जिन आज्ञाकारी, जिनशासनस्थंभरूप श्रीआचार्यभगवतनो अवर्णवाद करवा थकी, ४ श्रीसूत्रसिद्धांतना पारगामी आचार्यपदने योग्य, अनेक शिष्योने सारणावारणादि हित शिक्षा, सूत्रसिद्धांतार्थ अभ्यासना दाता श्रीउपाध्यायजी भगवतनो अवर्णवाद करवा थकी, ५ ज्ञाने करीने एकांत मोक्षमार्गनाज साधक श्रीसाधु मुनिमहाराजानो अवर्णवाद करवा थकी, ६ जिन आज्ञाकारी सुशील श्रीअरिहंतादिकने पण पूजनिक एवो श्रीचतुर्विधसंघ तेनो अवर्णवाद करवा थकी, जीव दुर्लभबोधिपणुं पामे, अर्थात्

अनंतकाळ संसारपरिभ्रमण करतां थकां पण धर्म सामग्रीनी जोगवाइ पामवी महादुर्लभ थइ पडे, तो पछी धर्म प्राप्तिनी दुर्लभतानी वातनुं तो कहेवुंज शुं ?

१४८ प्र०—आठ प्रकारना आत्मा ते कया ?

उ०—१. द्रव्यात्मा एटले असंख्यातप्रदेशी शुद्धजीवद्रव्य स्वगुणपर्यायसहित सत्ताए छे ते शुद्ध द्रव्यात्मा, अने तेना ज्ञानदर्शनादि उपयोगे रहित ते अशुद्धद्रव्यात्मा कहीये; २ कषायात्मा, सोळ कषाय तथा नव नोकषाय प्रवर्तमान जीव ते कषायात्मा; ३ मनवचनादि योगप्रवर्तमान आत्मा ते योगात्मा; ४ ज्ञान अज्ञानादि उपयोगी आत्मा ते उपयोगात्मा; ५ ज्ञानात्मा एटले जीवाश्रित सच्चिदानंदघन ज्ञानस्वरूपे प्रवर्तमान आत्मा ते; ६ दर्शनात्मा ते सम्यग्दृष्टिजीव ते; ७ चारित्रात्मा ते सत्तागत स्वरूपरमणरूपस्थिरतागुणे प्रवर्तमान जे जीव ते; ८ वीर्यात्मा, मन वचन कायादिना बळ पराक्रमरूप अशुद्ध वीर्यात्मा कहीए, पण आत्मसत्तागत रहेल अनंतशक्तिनी स्फुरतिए शुद्धात्मोपयोगे प्रवृत्ति करी अनादि अनंतकाळना कर्म मळने निकंदन करणरूपशक्तिनी व्यक्ति ते शुद्धवीर्यात्मा कहीए.

१४९ प्र०—पूर्वोक्त अष्टविध आत्माओमांथी कइ गतिमां केटला होय ते कहो.

उ०—नारकी तथा देवताओ मध्ये सात आत्मा होय, पण चारित्रात्मा न होय; तथा एकेंद्रिय मध्ये छ आत्मा

संभवे पण ज्ञानात्मा अने चारित्रात्मा नहि, तथा तिर्यंचपचेंद्रिय अने मनुष्यगतिमध्ये आठे आत्मा होय, तथा पचमगतिमध्ये एटले श्रीसिद्धपरमात्माने अनंतगुणभाजनरूप शुद्ध जीवद्रव्य ते श्रीसिद्ध भगवतनुं छे, तेने विषे चतुर्विधआत्मा छे, ते ज्ञानात्मा, दर्शनात्मा, उपयोगात्मा तथा शुद्ध द्रव्यात्मा

१५० प्र०—अष्टविध त्रसजीवो छे ते कया ? ते दृष्टांत सहित कहो.

उ०—१ अडजा ते पक्षीआदि, २ पोतजा ते गजादि, जरादि ते गवादि, ४ रसजा ते कीटकादि, ५ स्वेदजा ते यूकादि, ६ समूर्च्छिम ते पतगादिक, ७ उद्भिज ते गिंगोडादि, ८ उत्पादिका ते देव नरकादि

१५१ प्र०—जीवना दस प्रकारना परिणाम ते कया ?

उ०—१ गति, २ इद्रिय, ३ कषाय, ४ लेश्या, ५ योग, ६ उपयोग, ७ ज्ञान, ८ अज्ञान, ९ दर्शन, १० चारित्र. इति पन्नवणा सूत्रना १३ मां पद मध्ये छे।

१५२ प्र०—जीवपरिणमन केटला प्रकारे छे ?

उ०—" वंधण १ गई २ सठाणा ३ मेय ४ वन्न ५ गध ६ रस ७ फास ८ अगुरुलघु १० परिणामा ए दसहुतिअजीवा ॥ १ ॥

१ बंधन, २ गति, ३ सस्थान एटले आकृति, ४ जाति, ५ वर्ण, ६ गध, ७ रस, ८ स्पर्श, ९ अगुरु लघु, १० शब्द, ए दस रीते परिणमे छे.

१५३ प्र०—अतर्मुहूर्त कोने कहीए ?

उ०—" जीवेणकहविफासियं, अंतमुहुत्तंपिजेणसमत्तं । नियमाअवड्ढपुग्गल, परियट्टोचेवसंसारो " ॥ १ ॥ पुद्गलानांपरावर्त्तः पुद्गलपरावर्त्तः, अपकृष्टः किञ्चिन्न्यूनोऽर्द्धपुद्गलः परावर्त्तः अर्द्धपुद्गलपरावर्त्तः अथ अन्तर्मुहूर्त्तनुं प्रमाण. अन्तर्मुहूर्त्तं अष्टसमयोर्द्धंघटिद्वयं यावदित्यर्थः तच्चसम्यक्त्वोपशमिकं अत्रक्षेत्रपुद्गलपरावर्त्तनाधिकारः न द्रव्यादि पुद्गलपरावर्त्तेत्युपदेशकम् ।

एक चपटी वगाडीए अथवा आंख मींचीने उघाडीए तेटला वखतमां असंख्याता समय थाय तेवा नव समयथी मांडीने एक मुहूर्त जे एक सामायिकनो काल बेघडी प्रमाण छे, तेमां एक समय ओछो, तेटला कालने अंतर्मुहूर्त कहीए, अर्थात् जघन्यथी नवसमय, उत्कृष्ट बे घडीमां एक समय ओछो, अने ए बेनी वचमां जेटला समयनी संख्या ते सर्वे मध्यमअंतर्मुहूर्त जाणवा; एवी रीते अंतर्मुहूर्तना असंख्याता भेद थाय छे.

१५४ प्र०—जातिस्मरण ते शुं ? तेना केटला भेद अने तेमां केटला भवनुं ज्ञान थाय ?

उ०—अत्रगाथा " पुव्वभवासोपिछइ, एकदोतिन्निजावनवगंवा उवरितस्सअविसओ, सभावओजाईससरणस्स ॥ १ ॥

कोइपण वस्तु शब्दरूपादि जे पूर्वे भवांतरमां गाढ परिचितअभ्यास सहवासरूप थएल होय एवा घर, हाट, वाडी, वस्त्र, भूषणादि आकृति मात्र देखतां, शब्द मात्र सांभळतां थकां, पूर्वभवसंबंधि जे

अचानक सर्व साभरी आवे, अने तेथी पोते पूर्वे कोण हतो तथा क्या एवीरीते वगेरे समस्त निजपणानु भान थइ आवे तेने जातिस्मरण कहे छे, ते बे प्रकारे छे, एक शुद्धक्षयोपशमानुसार ते पूर्वभवना सम्यग्दृष्टि गाढ धर्माभ्यासी महात्मा-ओने थाय ते, जेम श्रीवज्रस्वामी प्रमुखने, अने बीजु अशुद्धक्षयोपशमानुसार ते पूर्वभवना मोहादि विषय कषायादि चेष्टादि स्मरण रागद्वेषजनित निरर्थक जाणवु, जातिस्मरणमा जघन्यथी एक बे त्रण भव देखे, मध्यम चार पाच छ आदि अने उत्कृष्ट नव भव सुधी देखे (इति पन्नवणादि वचनात्). *

१५५ प्र०—पुण्य अने धर्ममा शु फेर ?

उ०—पुण्य ते शुभकर्मपुद्गल प्रकृति छे, ते जीवना शुभ परिणामे एटले सुपात्रने अन्नपानादि भक्ति नमस्कारादि करवे करीने नव प्रकारे बधाय छे, तेना नाम अन्नपुण्णे १ पाणपुण्णे २ लेहणपुण्णे ३ सयणपुण्णे ४ वत्थपुण्णे ५ मनपुण्णे ६ वयणपुण्णे ७ कायपुण्णे ८ नमोक्कारपुण्णे ९ ए नव भेद पुण्यना कह्या अने बेंतालीस प्रकारे शातादिरूपे भोगवाय छे,

* जूनी प्रतिमा चउद रत्ननो प्रश्न छे तेना उत्तरमां

गाथा—" चक्कअसिछत्तदंडा, आयुहसालाइहुतिचत्तारि ।
चम्ममणिकागणीनिहि, सिरिगेहेचक्कीणोहुंति ॥१॥
सेणावईगाहावई, पुरोहियवड्ढईनीययनगरे ।
थीरयणरायकुले, वेअड्ढतटेगयतुरया ॥ २ ॥

ज्यारे धर्मतो शुद्धात्मपरिणतिरूप चित्तनी निर्मळता, विषयकषायादिरहित शुद्धज्ञानानंदीआत्मारामरूप छे.

१५६ प्र०—बारउपयोगमां रूपी केटला अने अरूपी केटला, अने ते शा माटे ?

उ०—केवलज्ञान अने केवलदर्शन ए बे आत्मगुणरूप होवाथी अरूपी छे; अने शेष दस आत्मपुद्गलाश्रित मिश्रित होवाथी रूपी छे.

१५७ प्र०—पांच समकितमां, रूपी केटला अने अरूपी केटला? ते कारण सहित कहो.

उ०—पांच मध्ये एक क्षायिक ते शुद्धात्मगुण प्राप्ति भणी अरूपी छे, अने शेषचार पुद्गल उपष्टंभी अल्पकालिक किंचित् पराधीनता भणी रूपी छे.

१५८ प्र०—छआवश्यकमध्ये केटला रूपी अने केटला अरूपी ? तथा तेमां संवरमां केटला अने निर्जरमां केटला ?

उ०—सामायिकादि पांचआत्मगुण भणी अरूपी छे, अने एक प्रतिक्रमण आवश्यक पापनिंदा, गर्हारूप आत्म सन्मुखी पण मंदता भणी रूपी छे; तथा सामायिक चउवीसत्थो तथा वांदणा ते त्रण संवरतत्त्वमां छे; अने शेष त्रण निर्जरातत्त्वमां छे.

१५९ प्र०—सर्वार्थसिद्ध विमानना देवताओ अने विजयविमानना देवताओ केटला भवमां सिद्धि पामे.

उ०—" सव्वट्ठाओनियमाएगंसिभवंमिसिज्झईअवस्सं । विजयादिविमाणेट्ठियं, संखिज्जभवाओनायव्वा ॥ १ ॥

अर्थ—सर्वार्थसिद्धविमानवासि देवताओ निश्चयथी एक भवमा सिद्धि पामे छे ,अने विजयादि विमान वासि देओनी स्थिति सख्याताभवनी होय छे

१६० प्र०—श्रावक जघन्य पदे केटला लाभे ?

उ०—क्षेत्रपल्योपमने असख्यातमे भागे इति आवश्यक-निर्युक्तौ जम्बूद्वीपमध्ये ' कोटिकाबहुत्व अथवा नरा-बहुत्व तनोत्तर यदासमूर्च्छिमाणां विरह तदाकोटिका-स्तोकानराबहुत्व

१६१ प्र०—चार सामायिक ते कया, अने ते प्रत्येकमा कयु समकित तथा गुणठाणु होय ते कहो

उ०—१ श्रुतसामायिकमा दीपकसमकित अने पहेलु गुणठाणु होय, ते अभव्यने पण होय, कारण जे जिनवचनानुसार प्ररूपणा करे तेथी परने मार्ग दीपावे, धर्म पमाडे पण पोताने अवारु होय, अ-पितु श्रद्धा, पाप, त्रासादि न होय तेथी, २ दर्शन सामायिक सम्यग्दृष्टि चोथागुणठाणीने होय, ३ देशविरतिसामायिक पाचमे गुणठाणे श्रावकने होय, ४ सर्वविरतिसामायिक ते छट्टसातमेगुणठाणे वर्तता मुनिमहाराजने होय, ए सर्व गुणठाणानी परिणतिरूप कषायना क्षयोपशमने लीधे होय छे.

१६२ प्र०—छकाय जीवोनी महाविराधनारूप पाच स्थान कया कह्या छे ?

उ०—१ घट्टी स्थान, २ चूला स्थान ते रसोड, ३ पाणी-आरु, ४ वासिदु, ५ उखण मूसळादि खाडण

पीसण स्थान, ए पांच छकाय हिंसानां स्थान, त्यां उत्तमजीवो निःशूकपणे न वर्ततां अतियतनाए वर्ते छे, तेथी आकरो कर्मबंध पडतो नथी.

१६३ प्र०—आत्मस्वरूप सूचक केटलांएक अन्वय अने व्यतिरेकभावे विशेषणो कहो.

उ०—असंख्यातप्रदेशी, अनंतज्ञानमयी, अनंतदर्शनमयी, अनंतचारित्रमयी, अनंतदानमयी, अनंतवीर्यमयि, अनंतलाभमयी, अनंतभोगमयी, अनंतउपभोगमयी, अरूपी, अखंड, अगुरूलघुमयी, अक्षय, अजर, अमर, अशरीरी, अत्येन्द्री, अणाहारी, अलेशी, अनुपाधिक, अरागी, अद्वेषि, अक्रोधी, अमानी, अमायी, अलोभी मिथ्यात्वरहित, अविरतिरहित, कषायरहित, योगरहित, अयोगी, सिद्धस्वरूपी, संसाररहित, स्वात्मसत्तावंत, परसत्तारहित, परभाव अकर्ता, स्वभाव कर्ता, परभाव अभोक्ता, स्वभाव भोक्ता, क्षायिक वेत्ता, स्वक्षेत्रावगाहि, परक्षेत्र अनावगाहि, लोकप्रमाण अवगाहनवंत, धर्मास्तिकायथी भिन्न, अधर्मास्तिकायथी भिन्न, आकाशास्तिकायथी भिन्न, पुद्गलथी भिन्न, परकालथी भिन्न, स्वद्रव्यवंत, स्वक्षेत्रवंत, स्वकालवंत, स्वभाववंत, अवस्थानपणे स्वगुणथी अभिन्न, कार्यभेदे भिन्न, अवस्थितसत्तावंत, परिणमनसत्तावंत, द्रव्यास्तिकपणे नित्य, पर्यायास्तिकपणे नित्यानित्य, द्रव्यपणे एक, गुण पर्यायपणे अनेक, अनंतद्रव्यास्तिकधर्मवंत, अनंत पर्यायास्तिकधर्मवंत इत्यादि स्वसंपदामयी, चेतन

लक्षणे लक्षित, स्वसंपदाए पूर्ण, परसगे परिणम्यो थको संसार उभो कर्यो, स्वज्ञानादिगुणे परिणम्यो थको सिद्धता करे, एवा आत्मद्रव्यथी ओळखाण अनंतनये, अनतनिक्षेपे थाय. ए रीते जे आत्मप्रतीति करे तेने जैनमार्गी जैनमार्गमा गणे छे, एवो आत्मा अनेकातपणे जैनमार्गी छे, एनी जे प्रतीति ते सम्यग्दर्शन, एनु जे ज्ञान ते सम्यग्ज्ञान, एमां जे रमवु ते सम्यक्चारित्र कहीए.

१६४ प्र०–द्रव्यास्तिकनयना छ सामान्य स्वभाव कहो.

उ०–१ अस्तित्व, २ वस्तुत्व, ३ द्रव्यत्व, ४ प्रमेयत्व, ५ प्रदेशत्व, ६ अगुरुलघुत्व

१६५ प्र०–वस्तुना अग्यार विशेष स्वभाव कहो

उ०–१ नित्य, २ अनित्य, ३ एक, ४ अनेक, ५ सत्व, ६ असत्य, ७ वक्तव्य, ८ अवक्तव्य, ९ भेद, १० अभेद, ११ परम स्वभाव

१६६ प्र०–प्रकारातरे बीजा नव आत्मवस्तुस्वभाव कहो.

उ०–१ स्वप्रदेश, २ अप्रदेश, ३ चेतन, ४ अचेतन, ५ मूर्तिमत, ६ अमूर्तिमत, ७ कर्तृत्व, ८ भोक्तृत्व, ९ परिणामिक.

१६७ प्र०–षड्द्रव्यमध्ये प्रत्येकना चार चार गुण छे ते कहो.

उ०–१ धर्मास्तिकायना–अरूपी, अचेतन, अक्रिय अने गतिसहायक.

२ अधर्मास्तिकायना–अरूपी, अचेतन, अक्रिय, अने स्थिरसहायक.

३ आकास्तिकायना—अरूपी, अचेतन, अक्रिय, अने अवकाशदानवंत.

४ पुद्गलास्तिकायना—रूपी, अचेतन, सक्रिय, अने पूरणगलण.

५ कालना—अरूपी, अचेतन, अक्रिय, अने वर्तना.

६ जीवना—अरूपी, चेतन, सक्रिय, चेतनालक्षणवंत.

१६८ प्र०—पर्यायास्तिकनयना छ भेद कहो, तथा तेनुं किंचित् विशेषकथन गुणपर्यायस्वरूप कहो.

उ०—१ पर्यायत्वं, २ भव्यत्वं, ३ सिद्धत्वं, ४ अभव्यत्वं, ५ कारणत्वं, ६ कार्यत्वं.

वळी प्रकारांतरे गुणपर्याय स्वरूप कहे छेः—

द्रव्यव्यंजनपर्याय असंख्यप्रदेशत्वं, गुणपर्याय गुणांतरभेद क्षांत्यादिभेद, गुणव्यंजनपर्याय, एक गुणना अनंतपर्याय, स्वभाव पर्याय, ते षट्गुणहानि वृद्धिरूप, अने विभावपर्याय ते नर नरकादिपर्यायास्तिक सामान्य पारिणामिक, अखंड, अलख, असहायी, सक्रियना अनंतगुणपर्याय समुदायनो बादर द्रव्यभेद कहीए.

१६९ प्र०—द्रव्य अभेदी ते शुं ?

उ०—द्रव्यना बे भाग न थाय माटे.

१७० प्र०—भेद द्रव्य ते केम ?

उ०—गुण गुणना करनार जुजुवा भणी भेदस्वरूपी कहीए. जेम केः—ज्ञान गुण, दर्शन गुण, चारित्र गुण, सुख

गुण, दान गुण, लाभ गुण, भोग गुण, वीर्य गुण, इत्यादि अनंतगुणभेदे भेदस्वरूपी कहीए

१७१ प्र०–सम्यक्त्वना पर्यायनामो कहो.

उ०–आस्ता, श्रद्धा, प्रतीति, निर्धार, रूचि, अभिलाष, बहुमान, अर्थिपणुं, तत्त्वइहा, गुण अद्भुतता, गुण गुणी आश्चर्यता, तद्विरहाकारकता, वस्तु प्रेम, तत्त्वार्थ सद्दहणा, इत्यादि

१७२ प्र०–सम्यग्ज्ञानना पर्यायनामो कहो.

उ०–अवलोकन, भासन, परिच्छेदन, विवेचन, अमूर्त्तिचेतनत्व, सर्ववेत्ता, अप्रतिपातित्व निरावरणत्वं, ज्ञायकता, स्वरुपओळखाण, स्वरूपानुभव इत्यादि.

१७३ प्र०–सम्यक्चारित्रनां पर्याय नामो कहो.

उ०–स्थिरता, तत्त्वरमण, निश्चयत्वानुभूति, परमक्षमा, परममार्दव, परमआर्जव, परमनिर्लोभता, अकामता, अनासगता, सुख, स्वरूपविलास, ठरणता, संतोष, समता, स्वरूपस्वादता, स्वरुपानंद, सहजता, स्वाधीनता, इत्यादि

१७४ प्र०–सम्यक्त्वनी दशरुचि कहो.

उ०–१ निसर्ग रुचि, २ उपदेश रुचि, ३ ज्ञान रुचि, ४ सूत्र रुचि, ५ बीज रुचि, ६ अभिगम रुचि, ७ विस्तार रुचि, ८ क्रिया रुचि, ९ संक्षेप रुचि, १० धर्म रुचि.

१७५ प्र०–सम्यक्त्वना पांच लक्षण कहो.

भिन्न छुं. किवारे कुलाभ पामे तिवारे जाणे जे ए वस्तुथी संबंध टळ्यो छे. वेदनादिक दृष्टि आवें समभावे राखें. परभव पुद्गलादिक आत्माथी भिन्न जाणवो. छंडवानीरवपकरी परमात्मानी वांछा करे. ध्यान सज्झाय विशेष करे. भावना खीणखीण भावे. संवर आदरे. निज स्वभावे जे ज्ञान तेहने विशेषे इम मन रहे ते अंतरात्मा ध्यान करवा. परमात्माने जोग्य चोथा गुणठाणाथी बारमा गुणठाणा सुधि अंतरात्मा जाणवो, एहवो जे अंतरात्मा ओलखे तिवारे परमात्मा पामे, परमात्मानो स्वरूप लखिए छीए. साक्षात् पोतानो स्वरूप देखे कर्मनी उपाधि रहित ते परमात्मा तेरमे तथा चौदमे गुणठाणे होय. तथा सिद्ध जाणवा ए परमात्मा ध्यान योग्य, अंतरात्मा ध्याववा योग्य तां ध्येय ते परमात्मा ध्यान ते एकाग्रता एम त्रणआत्माना स्वरूप जाणवा इति भाव.

१७८ प्र०-सद्दहणा, फरसणा अने प्ररूपणा, संबंधी अष्टभंगी दृष्टांत सहित कहो.

उ०-सद्दहणा, फरसणा अने प्ररूपणा, एटले जाणे आदरे अने पाळे, ते भांगे श्री गौतमादि महात्मा जाणवा, २ सद्दहणा, फरसणा, पण प्ररुपणाए असमर्थ ते जे सामान्य साधु उपदेश देवाने असमर्थ छे, पण पोते पाळे छे तेने जाणवो; ३ सद्दहणा पण फरसणा, प्ररुपणा नहि, ते अनुत्तर विमानवासी देवने, जाणे न आदरे पण पाळे ते भांगे जाणवुं; ४ सद्दहणा

तथा प्ररुपणा पण फरसणा नहि ते सवेगपाक्षिकने. जाणे, आदरे पण पाळवा असमर्थ ते भागे जाणवु ५ फरसणा पण सद्दहणा ने प्ररुपणा नहि, ते बाळ तपस्वी प्रमुखने=न जाणे पण आदरे अने पाळे ते भागे जाणवु, ६ प्ररुपणा होय पण सद्दहणा अने फरसणा नहि, ते आदरे पण न जाणे अने न पाळे ए भागो असजयति सन्यासी आदिने; ७ फरसणा तथा प्ररुपणा होय पण सद्दहणा नहि, ते न जाणे पण आदरे पाळे ते भागो पासत्यादिकने तथा अभव्यदीपकसमकितीने पण होय, ८ असद्दहणा, अप्ररुपणा ते अनादिमिथ्यात्विने, न जाणे न आदरे न पाळे ए भागो जाणवो, ते निगोदिया प्रमुख एकेंद्रियादिकने होय

१७९ प्र०–श्रीतीर्थंकर प्रभुना दानाधिकार सबधी छ अतिशयो वर्णवो

उ०–प्रतिदिन एकक्रोड अने आठलाख सोनैया आपे, ते सोनैयो आठरति के मतातरे ऐंसीरतिनो पण कह्यो छे, छ घडी दहाडो चढतां आपवा माडे ते पोणाबेपहोर सुधी जमवानी वेळा पर्यंत मनवाछित दान सौने भाग्यप्रमाणे प्रभु आपे, सोनैयामा प्रभुनु तथा प्रभुना मातपिताना नाम होय, ते एक दिवसना दानना सोनैया नवहजार मण थाय, चालीस मणनु एक गाडु भरता कुल २२५ गाडा भराय, ते गाडा तथा मण वगेरे सर्व

माए जे जे समयमां प्रभु थया होय ते ते समय तथा ते ते देशना जाणवा; संवत्सरी दानना सोनैया सर्व इंद्रोना आदेशे वैश्रमण देवता आठसमयमां निपजावी प्रभुना गृहभंडारमां भरे, हवे ते दानना छ अतिशय कहे छेः—१ तीर्थंकरना हाथने विषे सौधर्मेंद्र एवी स्थिति करे के जेथी प्रभु दान देतां थाके नहि, जोके प्रभुतो अनंत शक्तिना धणी छे, तोपण आ उत्सव अवसरे ए प्रथमइंद्रनो अधिकार लहावो लेवारूप छे, ते अनादिनी एवी मर्यादा जाणवी; इशानेंद्र सुवर्णमय रत्नजडित छडी, दंड लइ उभो रहे अने चोसठइंद्र सिवाय बीजा सामानिक प्रमुख देवोने दान लेतां निवारे, अने याचकना भाग्यानुसार इशानेंद्र तेना मुखे बोलावे अने २ चमरेंद्र तथा बळीन्द्र प्रभुनी मुठीमां वधारे होय तो पाडी नांखे, अने ओछुं होय तो पूरुं करी आपे, सामानी प्राप्तिने अनुसारे मळे, ३ भुवनपतिदेवता भरतक्षेत्रना मनुष्यने तेडी आवे, ४ अने वाणव्यंतर देवो तेमने पाछा मूकी आवे, ५ ज्योतिषी देवो विद्याधरोने प्रभुना दाननी खबर आपे, ६ तथा प्रभुना पिता त्रण मोटी दानशाळा करावे, एकमां भरतक्षेत्रना मनुष्यने अन्नपानादि खाद्य वस्तु आपे, बीजीए वस्त्र आपे, अने त्रीजीए आभरण आपे.

१८० प्र०—हवे साधु सज्झाय करे छे. शुभयोगे व्रतादिकनी शुभक्रिया करे छे तथा शुद्धोपयोगे, शुद्ध स्वभावे

' अप्पाणभावेमाणेविहरई ' इम आत्मध्यान करे छे ते सर्व कर्म खपाववाने अर्थे ते किहा कर्म खपावे, खपाववाना तो त्रण कर्म छे, उदयकर्म अने बंधकर्म ने सत्ताकर्म. उदीरणाकर्म तो उदयना पेटा मध्ये गवेरवीए, तथा कर्म ते मध्ये उदय सेणे खपावे छे, तथा सत्ताकर्म सेणे शोधे छे, इति बंधकर्म किम मटे ?

उ०–शुभयोगे पाच महाव्रत संवररूपक्रियाए नवा बंध पडे ते कर्मनिवारे ते माटे बंधकर्म निवारे ते व्रतादिक शुभक्रियाए तथा पांच प्रकारना सज्झाय ध्याने उदयकर्म खपावे छे, ते निष्फल करे छे, तथा शुद्धोपयोगे आत्मध्याने सत्ताए जे कर्म छे ते सोधे खपावे. इम मुनि आत्मगुणे निर्मल करी सिद्धि वरे ए भाव.

१८१ प्र०–ज्ञानीने आस्रव ते संवररूपे केवी रीते परिणमे छे.

उ०–ज्ञानीने शुद्धोपयोगे आत्मपरिणामे आस्रवना कारण ते संवररूपे थाय छे आचाराग सूत्रना चोथा अध्ययने द्वितीयोद्देशके समकितना अध्ययन मध्ये " आसवा ते परिसवा " एवी गाथा छे.

१८२ प्र०–हवे श्रीजीवाभिगमसूत्र मध्ये निर्लेपपदे श्रीगौतमे पुछ्यु के स्वामिन् ? पांच स्थावरना जीव हमणा वर्तमानमां जेटला छे ते निर्लेप थाशे गत्यन्तरे जाशे ?

उ०–एक वनस्पतिकायविना पांचकायना जीव निर्लेप थाशे. पृथ्वीआपतेउवाउत्रसकायना जीव सर्वेस्या-

नान्तरे निर्लेप थाशे, पण वनस्पतिकायनिगोदगोलकना जीव निर्लेप " नत्थितत्थअत्थिअणंता जीवा जेहिंनपत्तोतसाई परिणामो। उवयन्तियचयंतियपुणोवितत्थेवतत्थेव ॥ १ ॥ एणे न्याये वनस्पतिकायना जीव निर्लेप न थाय ए भाव.

१८३ प्र०—बादरअप्पकाय उपरदेवलोकमां क्यां सुधी छे? तथा तेउकाय केटले सुधी छे?

उ०—बादरअप्पकाय बारमादेवलोक सुधी अने बादरतेउकाय तीर्छा मनुष्यलोकरूपअढीद्वीपमांहे, उंची मेरुपर्वतनी चुलिका सुधी.

१८४ प्र०—सातमी तथा छट्ठी नरकमां, कुंभिमां उपजवानुं थाय छे के आलियामां थाय छे.

उ०—सातमी तथा छट्ठी नरके आलीया छे. जेम नदीनी भेखडे बील होय छे एटले सूलां छे ते उपर शरीर विंधाय तिवारे पडे एम सांभळ्युं छे ए भाव.

१८५ प्र०—साधुनां १४ उपगरणो ते कया कया.

उ०—पत्तंपत्ताबंधो, पायठवणंचपायकेसरिया।
पडलाईरयत्ताणं, गोच्छओपायनिज्जोगो ॥ १ ॥
तिन्नेवयपत्च्छागा, रयहरणंचेवहोइमुहपत्ती।
एसोदुवालसविहो, उवहीजिणकप्पियाणंतु ॥ २ ॥
एएचेवदुवालस, मत्तगअइरेगचोलपट्टोउ।
एसोचउदसरुवो, उवहिपुणत्थेरकप्पंमि ॥ ३ ॥

पत्तं कहेतां पात्रुं, २ पत्ताबंध ते झोळी, ३ पायठवणं ते कांबळीनो कडको, ४ पायकेसरीया ते

चरवळो, ५ पडलाइ ते गोचरीए जाता पात्रा उपर कपड राखे ते, ६ रयत्ताण ते पात्रवींटवानु लूगडु, ७ गुछओ ते कंबलमयखंड पात्राउपर वींटेछे ते, ए सात पात्राना उपगरणो जाणवा, तथा ८, ९, १० बे सुतराउ कपडां, अने एक उननु मळी त्रण कपडा राखे, ११ ओवो, १२ मुहपत्ति, ए बार जिन कल्पिने होय, तथा १३ मातरीउ, १४ चोलपटो. एव चउदस्थविरकल्पने जाणवा

१८६ प्र०—श्री युगप्रधानआचार्यना विहार शोभा लक्षण कहो.

उ०—काव्य. येषाहिवस्त्रे न पतति यूका,
न राष्ट्रभङ्गो न च देशचिन्ता ।
गदा प्रणश्यतिपदोदकेन,
युगप्रधाना (मुनिवृन्दपूज्या) ॥ १ ॥

उत्तम शारीरिकसौंदर्यबळयुक्त, आचार्यना छत्रीस गुणे सहित, तथा ज्या विचरे त्या अढीयोजन प्रमाण मरकीप्रमुखनो उपद्रव न थाय, उत्कृष्टपणे दशविध यतिधर्म पाळता पळावता, निजकाळने विषे सर्वथी श्रेष्ठपुरुष एकावतारी महात्मा युग प्रधान आचार्यभगवंत जाणवा

१८७ प्र०—नीचे जणावेला शब्दोनो अर्थ कहो.

भावना, अध्यात्म, मुनि, मैत्री, कारुण्य, मध्यस्थ, अने प्रमोद भावनाओ

उ०—मुनि प्रतिमा नीचे प्रमाणे लखेल छे
दुर्गतीप्रपतज्जन्तून्धारयतीतिधर्मः,
सयमादिदशविधसर्वज्ञोक्तोभवति ॥ १ ॥

हवे—आत्मानंभावयतीतिभावना, आत्मानंअधिकृत्यकरोतीति अध्यात्मं, मन्यतेजगतः तत्त्वं, स मुनिःप्रकीर्तितः सम्यक्त्वमेवतन्मौनं, सम्यक्त्वतत्त्वमेव ॥ १ ॥ इतियोगबिन्दुग्रन्थे हरिभद्रसूरिणा अध्यात्मभावनाचतुर्धाकथिता यथा ॥

परहितचिंतामैत्री, परदुःखविनाशिनीतथाकरुणा ।
परसुखतुष्टिर्मुदिता, परदोषोपेक्षणमुपेक्षा ॥ १ ॥ ए भाव, हवे छद्मस्थजीवानांध्यानंकथितं, अंतमुहुत्तमित्तं, चिंतावत्थाणमेगवत्थुमि, च्छछउमत्थाणंज्झाणं, योगनिरोहोजिणाणंतु इतिध्यानम् ।

आत्माप्रत्ये भाववुं अने आत्मचिंत्वन करवुं ते भावना, आत्माने अधिकारीपणे कार्य करनार ते अध्यात्मपंचास्तिकायरूपजगत्तत्त्वने जे यथार्थ माने तेने मुनि कहीए, परहित चिंता ते मैत्री भावना; परदुःख विनाशनी इच्छा ते कारूण्य भावना, परसुखदिठे संतोष तथा प्रमोद आणे ते प्रमोद भावना, पर दोषनी उपेक्षा ते मध्यस्थ भावना.

१८८ प्र०—वर्तमानचोवीसजिनना मातपितानी गति कहो.

उ०—उसभपियानागेसु, सेसाणंसत्तहुंतिईसाणे ।
अठ्ठय सणंकुमारे, माहिंदे अठ्ठ बोधव्वा ॥ १ ॥
अठ्ठणं जणणीओ, तित्थयराणं हुंति सिद्धिओ ।
अठ्ठय सणंकुमारे, माहिंदेअठ्ठबोधव्वा ॥ २ ॥

प्रथमतीर्थंकरना पिता श्री नाभिराजा ते नागकुमार मध्ये, बीजाथी आठमा सुधीना प्रभुना पिताओ बीजा

इशान देवलोके, अने नवथी सोळ सुधीना प्रभुना पिता त्रीजा सनत्कुमारदेवलोके, अने सत्तरथी चोवीस सुधीना पिता चोथा महेंद्रदेवलोके प्राप्त थया छे प्रथमना आठजिननी माताओ मोक्षे, नवथी सोळसुधीना जिननी माताओ त्रीजा सनत्कुमार देवलोके, अने शेष सत्तरथी चोवीस सुधीना आठ जिननी माताओ चोथा महेंद्रदेवलोकने प्राप्त थएल छे.

१८९ प्र०—श्रीजिनवाणीश्रवण, चारघातीकर्मना क्षयोपशमे केवी रीते थाय?

उ०—१ अंतरायकर्म तथा दर्शनावरणीयकर्मना क्षयोपशमे जिनवाणी सांभळवानी रुचि थाय, २ दर्शनावरणीय तथा ज्ञानावरणीयकर्मना क्षयोपशमे वाणी काने सांभळे तथा समजे, अने ३ मिथ्यात्वमोहनीयना क्षयोपशमे जिनवचन आत्मस्वरूप ज्ञानरूप यथार्थसद्दहणामां आवे

१९० प्र०—श्री जिनवाणीनुं ध्यानरूप एकाग्रप्रणमन महाफल दायक क्यारे थाय?

उ०—वर्मान्तरायना क्षयोपशमे संयमफलपामीने एकाग्रतारूपध्यानमांहि सिद्धि वरे, तथा चारकर्म क्षायिक भावे थये थके केवळज्ञान अने केवळदर्शनादि अनंतलक्ष्मी प्रगट करी महानंदपद पामे

१९१ प्र०—चारप्रकारनी बुद्धिनुं स्वरूप टुंकमां दृष्टांत सहित समजावो

उ०—१ औत्पातिकी बुद्धि ते मतिज्ञानावरणीयकर्मना क्षयो-

तोपण आयुवर्जित सातकर्मनो स्थितिबंध नवसागरे ऊणा एककोडाकोडीसागरोपमनो उत्कृष्ट बंध करे तथा उपशमश्रेणिथी पडीने मिथ्यात्वे जाय तेपण आयुवर्जित सातकर्मनी उत्कृष्टि स्थिति बांधे तो नव हजारसागरोपममें ऊंणी एककोडाकोडीसागरनो उत्कृष्टो बंध करे इति भुवनभानुचरित्रे कह्युं छे.

१९७ प्र०—जीव मार्गाभिमुखथइ समकित क्यारे पामे ?

उ०—भवितव्यताने योगे अकामनिर्जराए कर्मखपावतां बे पुद्गलपरावर्तकाल संसार रहे, त्यारे जीव आस्तिकपणे जिनमार्गसन्मुखी थाय, पछी त्यांथी संसारपरिभ्रमण करतो जीव उंचो आवे त्यारे ते मार्गपतित दोढ- पुद्गलपरावर्तसंसार रहे त्यारे जिनोक्त मार्गे रुचिवंत थाय; वळी कर्मयोगे त्यांथी पडी संसारभ्रमण करतो ज्यारे एकपुद्गलपरावर्तकालसंसार रहे, त्यारे जीव मार्गानुसारीपणुं पामे, त्यां मित्रादिकदृष्टि प्रगटे, न्यायसंपन्नविभवादि पांत्रीशगुणयुक्त थाय, त्यां जि- नोक्त मार्गे चाली मिथ्यात्व मंद करतो करतो नदी गोळपाषाण न्याये घंचना घोळ परिणामे (एटले जेम नदी कांठेथी छुटो पड्यो एक पत्थर, ते जेम पाणीनी छोळमां अथडातो कुटातो पोतानी मेळे गोळ थइ जाए एम) ज्यारे जीव अर्धपुद्गलपरावर्तकाल मांहे आवे त्यारे आर्यदेश, संज्ञीपंचेन्द्रियमनुष्य उत्तम जैनकुल संपन्न थइ सद्गुरु उपदेशे के सहजस्वभावे कोइ निमित्तपामीने यथाप्रवृत्तिकरण लही उज्वल आत्म-

वीर्योल्लास थकी अपूर्वकरणे रागद्वेषनी ग्रंथि भेदी मिथ्यात्वमोहनीयनी सातप्रकृतिने उपशमावतो अंतरकरणमां थइ अनिवृत्तिकरणे आवी सम्यग्दृष्टि थाय, त्यारे जीवने मार्गप्राप्त कहीए, वस्तु सत्ता धर्म अंशे प्रगट कर्यो त्या तेनी केवी दृष्टि वर्ते तो कहु छे के—

काव्य.

अंशे होय इहा अविनाशी, पुद्गल जाल तमाशी,
चिदानंदघन स्वरूप विलासी, केम होय जगनो आसी,
ए गुण वीरतणो न वीसारु संभारु दिन रातरे,
पशु टाळी सुररूप करे जे, समकितने अवदातरे १

१९८ प्र०—साधुने जे त्रणयोग छे ते रत्नत्रयगुणे प्रणम्या छे ते केवी रीते ?

उ०—मनोयोग ते सम्यग्दर्शनगुणे दृढासक्तिकरूपे परिणमे छे, तथा वचनयोग ते जिनवाणीमांहे ज्ञानगुणे प्रणम्यो छे, तथा काययोग ते चारित्रगुणे "जयचरे जयचिठ्ठे जयमासे जयसये " इत्यादिकरूप प्रगट्यो छे तेथी यावज्जीवसुधि सावद्ययोगथी निवर्त्तीने मुनि संयमयोगे परिणमे छे. इतिभाव

१९९ प्र०—संसारमां जीव भव्यअभव्यादि त्रणप्रकारना छे ते कया ? तेनु स्वरूप दृष्टांतसहित स्पष्ट समजावो

उ०—१ भव्य, २ अभव्य, ३ भव्याभव्य अथवा जातिभव्य; त्या भव्य त्रणप्रकारे छे—निकटभवी, मध्यमभवी, अने दुर्भवी, निकटभवी सोहागण स्त्री समान, ते जेम सोहागणी स्त्री पतिसमागमे छ मासमां गर्भ

कषाय उपने पूर्वकोडिनुं पाल्युंचारित्र क्षय करे ते उपर गाथा. आचारंगनी दीपिका मध्ये छे यतः " सामणमणुंचरंतस्स, कसायजस्सउक्कडाहुंति, मन्नासि-इंल्लुपुप्फव, निप्फलंतस्ससामणणम्॥ १ ॥ जंअजियंचरितं, देसूणएविपूव्वकोडीए तंपिकसायमित्तोहारेईनरोमुहु-त्तेण ॥ २ ॥ "

२०६ प्र०—आंबिल एटले शुं ?

उ०—आवश्यकनी टीका मध्ये कह्युं छे के आय कहेतां ओसामण काढयुं होय ते मध्येथी जेम अन्न काढीए ते रीते काढीने आहार करवो, अने जे आम्ल जे खाटोरस षट्विगय ए बे वर्जिने ते आंबिल कहिए.

२०७ प्र०—नियाणानो प्रश्न.

उ०—नियाणानव प्रकारे दशाश्रुतस्कंध मध्ये कह्या छे, तथा जे नियाणुं समकितनुं छे, अने बीजुं अव्रतनुं छे ए बे मध्ये जे समकितनो घात करी नियाणुं बांधे ते समकित पामवो दुर्लभ करे, तथा अविर-तनुं भोगप्रतिंयुंनियाणुं बांधे ते भोग पूरा थये व्रत उदये आवे जेम द्रौपदीना जीवे भोगप्रतियुं नियाणुं बांध्युं ते पांच भर्त्तारी थइ. भोग पुरा थया पछी व्रत उदये आव्युं ते माटे अविरतिआसरीनियाणुं कहीये. पण ते समकितनो नथी. इत्यर्थः

२०८ प्र०—चार प्रकारना सामायिक कया ?

उ०—१ श्रुतसामायिक, २ समकितसामायिक, ३ देशविरति-सामायिक, ४ सर्वविरतिसामायिक.ते मध्ये श्रुतसामायिकनो

लाभ ते भव्यमिथ्यात्विने होय अभव्यने पण द्रव्यथी श्रुतनो लाभ थाय, तथा समकितसामायिक ते सम्यग्दृष्टिने होय पाचमे गुणठाणे देशविरतिसामायिकनो लाभ होय, सर्वविरतिसामायिक ते छट्ठा गुणठाणाथी मुनिने होय

२०९ प्र०—व्यवहार अने निश्चय समकितीनु टुक स्वरूप कहो

उ०—जिनवाणी प्रतीतेग्रहीने प्रत्यक्षस्वरूपने वेदे, गुण पर्यायनो विलछन करे, भेदरूप रत्नत्रयने आरावे, तेने व्यवहारसमकिती कहीए, तथा जेने जिनवाणी गुण पर्यायअभेदरूपरत्नत्रये द्रव्य द्रव्यरूपे निर्विकल्प समाधिपणे परिणमे तेने निश्चयसमकिती कहीए, ते आगळ जता व्यवहारे प्रवर्तता वस्तुधर्मरूप शुद्धात्मनिश्चयपरिणतिरूप समकितने मेळवे

२१० प्र०—कया ज्ञानथी अने कइक्रियाथी मोक्ष थाय ?

उ०—क्रिया बेप्रकारनी छे—१ योगक्रिया ते शुभाशुभ बधरूप छे, अने उपयोगक्रिया ते पोताने स्वरूपे परिणमे, त्या कर्म निर्जरा थाय, योगक्रिया जाते आस्रवरूप होइ कर्मबंध निपजावे, अने उपयोग क्रिया ते स्वरूप प्रकटावे, एटले योगक्रिया कर्म ग्रहण त्यागरूप गुल्ट पुल्ट छे, परतु सर्वथा मोक्षार्थे नथी, केम जे सर्वथा मोक्षरूप धर्म ते शुद्धोपयोगे छे, माटे उपयोगशून्यक्रिया आस्रवरूप मोक्षनी एटले आत्मस्वरूपनी कत्तरणी एटले आच्छादन कर-नारी छे. (नाश करनारी छे)

२११ प्र०—नवअनंताए जे जे पदार्थों छे ते कहो.

उ०—प्रथमना त्रणअनंते कोइ पदार्थ न होवाथी शून्य छे, अने चोथेअनंते अभव्यजीवराशि छे, पांचमे अनंते मध्यम भांगे सम्यक्त्व पडवाइ छे, वळी तेहज पांचमे अनंते शुद्ध सिद्धना जीवो छे, पण ते पूर्वोक्त पडवाइओथी अनंतगुणा जाणवा, पछी छठ्ठो अनंतो शून्य, सातमुं शून्य पछी आठमे अनंते सर्व निगोदीयाजीवो, तथा तेथी अनंता अनंतगुणा पुद्गलपरमाणु, तेथी काळ, तेथी सर्व आकाश प्रदेश, तेथी केवळज्ञान तथा केवळदर्शनना पर्याय, ए सर्व एक एकथी अनंतगुणा पण आठमे अनंते छे, नवमेअनंते कोइ वस्तु विशेष नथी, माटे शून्य जाणवो.

२१२ प्र०—सर्व समकितमां पहेलुं कयुं समकित उत्पन्न थाय छे ?

उ०—सिद्धान्त आगममांहि प्रथम क्षयोपशम सम्यक्त्य पामे, उपशमनो तंत नहि ते श्री जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणनी कीधेली समकिन पचवीसी मध्ये कह्युं छे, जे पहिलो क्षयोपशम सम्यक्त्व पामे उपशमनो तंत नहि तथा कर्मग्रन्थमध्ये पहिलो उपशम समकित पामे त्यारपछी क्षयोपसमकित पामे. उपशमनो तंत नहि एहवो आचार्यनो मत छे. अथ त्यारपछी कालसित्तरी ग्रन्थमध्ये कालिकाचार्ये त्रण जुदा कह्या छे. तथा कल्की थारये ए अधिकार पण कालसित्तरी मध्ये छे.

२१३ प्र०—स्थावर पर्याप्तानी निश्राए अपर्याप्त जीव केटला होय?

उ०—पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति प्रत्येक एटले स्थानके एकेका पर्याप्तानी निश्राए असख्याता अपर्याप्त होइ पण सूक्ष्म निगोदीया पर्याप्तानी निश्राये अनता अपर्याप्ता न होइ, ते अनता अपर्याप्ताना शरीर जूदा तेहनो पण आयु बसेछपन आवलिनु होय पण अपर्याप्तो मरे इम नहोय सर्वे क्षुल्लक भविया छे ते माटे तथा पर्याप्तानु आयु एटलु पण तेटला माहे पर्याप्ति पुरीने मरे एहवु थायु छे. इति तत्त्वम्

२१४ प्र०—व्यवहारराशियोजीव निगोदमा जाय तो त्या उत्कृष्ट केटलो काळ रहे?

उ०—ते क्षेत्रयकी अढीपुद्गलपरावर्तनकालप्रमाण पछी सूक्ष्मबादरनिगोदमा आवी वळी जाय तो उत्कृष्ट अढीपुद्‌गलपरावर्तन, वळी त्यायी नीकळी एकेंद्रियादि चक्रमा भ्रमण करी पाछो जायतो वळी उत्कृष्ट एटलो काळ रहे एम आव जा करता सर्व काळ तिर्यंचगति आश्रिने गणीए तो उत्कृष्ट असख्याता पुद्गलपरावर्तन काळ रहे, ते केटला? स्तोके एक आवलीना असख्यातमे भागे जेटला समय थाय तेटला असख्याता प्रमाण पुद्‌गल परावर्तन जाणवा एम पन्नवणा मध्ये तथा कायस्थितिस्तोत्रनी टीका मध्ये कह्यु छे

२१५ प्र०—दर्शननी क्षपक श्रेणि कया गुणठाणाथी मांडे अने चारित्रनी क्षपक श्रेणि कया गुणठाणाथी मांडे ?

उ०—दर्शननी क्षपक श्रेणि ते चोथा गुणठाणाथी मांडे, चारित्रनी क्षपक श्रेणि आटमांथी मांडे.

२१६ प्र०—ज्ञानावरणीय कर्मनो जघन्य अने उत्कृष्टबंध केटलो?

उ०—कर्मनोबंध जघन्यथी एक समयनो, जघन्य स्थिति ते अंतर्मुहूर्ताइ भोगवे, उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय कर्मनी वीस कोडाकोडी इम ए रीते छे.

२१७ प्र०—सर्व जीवोनी मूळ भूमिका कइ ?

उ०—भव्य, अभव्य, सर्व जीव सूक्ष्म निगोदथी नीकल्या छे. मूल भूमिका ते जाणवी.

२१८ प्र०—जघन्य अने उत्कृष्ट योगनो काल केटलो छे ?

उ०—मनोयोगनो जघन्यकाल एक समयनो, उत्कृष्टो अंतर्मुहूर्त्तनो काल एम वचनयोगनो पण काल ए रीते छे एम धार्युं छे.

२१९ प्र०—वस्तुने विषे षड्गुण हानि वृद्धिनुं स्वरूप टुंकामां कहो.

उ०—गुण पर्याय सहित जे वस्तु तेने द्रव्य कहीए, ते उत्पाद, व्यय अने ध्रुवरूप त्रण अवस्थाए सहित छे, परिणामी छे, ते परिणमन उत्पाद व्ययरूप पर्यायरूपे परिणमन, जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट स्वरूपे छे, तेने लइने वस्तुमां षड्गुण हानि वृद्धिरूप अगुरुलघु पर्याय जे दरेक वस्तु मात्रमां निरंतर वर्ते छे, ते निपजे छे, ते आवी रीतेः—

सख्यातगुण वृद्धि, २ असख्यातगुण वृद्धि, ३ अनत गुण वृद्धि, ४ अनत भाग हानि, ५ असंख्यात भाग हानि, ६ सख्यात भाग हानि, एम द्रव्यथी द्रव्य परिणमन षड्गुण हानि वृद्धि रूप अगुरूलघु पर्याय सिद्धमा पण छे

२२० प्र०—आठ कर्मनी वर्गणा अने कार्मण शरीरमा शो फेर छे?

उ०—कार्मण शरीर ते नामकर्मनी प्रकृति ते नामकर्मनी वर्गणारूपे कार्मण शरीर जाणीए, बाकी बीजा सात कर्मनी वर्गणा ते एहने विषे छे इम आधाराधेय भावे छे जेम कणनी गाठडी पिण वस्त्रभिन्नतिम कर्मोनी वर्गणा जुदी ते किम जाणीइ? जिम केवली भगवतने ज्ञानावरणीयादि चार कर्मनी वर्गणा मूलथी गइ पण तोहि कार्मण शरीर छे त्यारे ते अनुमाने अन्य कर्मनी वर्गणाभिन्न, कार्मण शरीर ते भिन्न, इम कार्मण शरीरनो स्वरूप जाणवो, पछी तो जेम तीर्थंकर देवे कह्यु ते सत्य सद्दह्यो छे. 'इति भाव ।

२२१ प्र०—चतुर्विध बंध हेतु पूर्वक कहो

उ०—योग अने कषाय प्रतैया बध चार प्रकारे छे, त्यां एकला योगनी हलचले प्रकृतिबध अने प्रदेशबध थाय छे, अने कषाये करी स्थितिबध अने रसबध निपजे छे.

२२२ प्र०—केवळी भगवतने योग प्रतैयो शाताबध छे, ते शी रींते?

उ०—केवळी भगवंतने कांइ शुभ संकल्परूप व्यवहार नथी, तेमने एक शुक्ल लेश्यानो उदय छे, ते योगद्वारे परिणमे छे, अने योगनुं परिणमन ते औदयिक भावे जइ परिणमे, केम जे पुद्गलने पुद्गलनो विश्राम छे, तेथी ते लेश्याए योग प्रत्यइक एक साता प्रकृतिनो एक समयनो बंध छे, ते बीजे समये संक्रमे, अने त्रीजे समये खेरवे अर्थात् उत्तम पुद्गल ग्रहे, बीजे समये तेने वेदे अने त्रीजे समये खेरवे एटले खपावे.

२२३ प्र०—सम्यग्दृष्टिने अने मिथ्यादृष्टिने शुभाचार अने शुभ उपयोग केवी रीते होय छे ?

उ०—मिथ्यादृष्टिजीवने शुभाचार होय पण शुभोपयोग न होय, अने सम्यग्दृष्टि जीवने शुद्धोपयोग होय तेहने शुभोपयोग आचरणरूपे होय पण आदर न होय अने मिथ्यादृष्टि जीवने शुभाचाररूप होय पण अशुद्धोपयोगना घरनो अशुभोपयोग होय पण अशुभोपयोग उपचारे कहिए इति भाव, हवे चोथे गुणठाणे सम्यग्दर्शन पामे अनंतानुबंधिया रागद्वेष तथा मिथ्यात्वमोहनोक्षय तथा क्षयोपशम थाय.

२२४ प्र०—भामंडल करवानी शी जरूर छे ?

उ०—आणंद श्रावकनी संधि खरतरगच्छे मुनिश्रीसारनी कीधी गाथा त्रणसेने एकासीमी छे ते मध्ये अष्ट-प्रतिहार्य अधिकारे देवता भामंडल किम करे छे ? तत्र गाथा—तेज अरिहंत अतिघणो ए, खमी न शके नरनारी । ते तेज लइ सुख करे ए, पुंठे भामंडलसार ॥ १ ॥ परमउदारिक शरीरना तेज

विशेष छे ते तेजना पुद्गल संहरीने प्रभुने पुठे भामंडल करे इति भाव ।

२२५ प्र०—आनन्द श्रावकने पाचसे हलवडे भूमि खेडवानुं मान केवी रीते हतु ?

उ०—तत्र गाथा—क्षेत्र खेडयु हल पाचस्ये, मुझने अविरति एतिरे । घरघरनी पण मोकली, एक सानी वरती जे तिरे ॥ १ ॥ तेनी वरतीनो अर्थ लखीए छीए दशमि हस्तैरेकोवश विंशत्यावंशे एकोनिवर्त्तन पञ्चशतै निवर्त्तनै एकदल इदशी हलभूमिका पञ्चशतभूमीघरधरीत्री जावी एतद् भूमिका घर रहेवानी छे टाकी पाचसे हलभूमीका हल खेडवानी छे उवाडी इतिभाव ।

२२६ प्र०—कर्मचतुर्थकतपनी विधि केवी रीते छे ?

उ०—पूर्व अष्टम १, चतुर्थ ८०, प्रान्ते अट्ठम इति तपोदिन ६६, पारणक दिन ६२, उभयदिन मळीने दिन १२८ इति कर्मचतुर्थतपयतोवसुदेव हिंडौ—सापउमाअज्जिया, तेनीज्जाएसयासोओ । कम्मचउत्थं उववणा, इगितिरित्ताणी संछिचउत्थाणिति ॥ १ ॥ ते पदमाआर्याए ते त्रणे आर्याइनेसमीपेकर्म चउत्थतप कीधो, इति शान्तिनाथ भवाधिकारे, इद्दुषेणविंदुषेण भवाधिकारे गुणीकाने भवे ए तप कीधो इतिभाव।

२२७ प्र०—धर्मचक्रवाल तपनी विधि केवी रीते छे ?

उ०—अट्ठम १, एकातर चतुर्थ ३७, प्रांते अष्टम इति धर्म चक्रवाल तपनी विधि जाणवी, अथ विधि. प्रथम

षष्ठं ततः एकान्तरोपवास ६ इति प्रकार द्वयेन धर्मचक्रवाल तपनीविधि तत्र प्रथम प्रकारे दिन सर्वाग्र ८२ द्वितीय प्रकारे दिन सर्वाग्र १२३.

२२८ प्र०—तीर्थंकरनी माता चउद स्वप्नने मुखमां पेसतां देखे ?

उ०—शान्तिनाथ चरित्राधिकारे तीर्थंकरनी माता १४ स्वप्न मुखमांहे पेसता देखे यतः चतुर्दश महास्वप्नान् सुख सुप्ता तदाचसा मुखे प्रविशतोपश्यन्ती तत्तस्याकारधारिणः, इतिश्री उत्तराध्ययनेभाव विजयनी टीका मध्ये तथा शान्तिनाथ चरित्राधिकारे कह्युं छे. आवश्य चूर्णौ पञ्चाशकवृत्तौ योगशास्त्रवृत्तौ नवपदप्रकरण वृत्तौ, श्राद्धदिनकृतौ श्राद्धविधि प्रमुखे छे।

२२९ प्र०—श्रावकनो दिग्व्रत संबंधी प्रश्न ?

उ०—प्रथमं सामायिक पश्चात् इर्यावथिकी श्रावकने दिग्व्रत होय पण साधुने नहीं मेरुरुचक जवा माटे इत्यर्थः।

२३० प्र०—चोथे गुणठाणे सम्यक्त्व गुण प्रगटे अने खार, वैर, अने झेररूप अवगुण टळे ते शी रीते ?

उ०—सर्व गुणमां अग्रेसरी गुण सत्य स्थायी गुण, परंपराए, परमात्म स्वरूपने पमाडनार, ज्ञान व्रतादि अनेक गुणने खेंची लावनार, अने ते गुणना प्रतिपक्षी अनेक दोषने टाळनार, जीवने परम हितकारी सदा सर्वदा एक सम्यग् दर्शनरूप समकित गुण छे, ते गुण प्रगटे थके खार टळे, सम्यग् ज्ञानगुणे वैरभाव टळे, अने मिथ्यात्व मोह अने चारित्रमो-

दना नाशवटे झेर टळे, वळी मुनिने छट्ठा गुणठा-
णायी आगळ विषयराग उदयमायी टळे. विषय,
कषाय, उत्सूत्रप्ररूपणा दोषो दूर थाय, अने राग-
द्वेष अने मोह सत्तामायी टळता आत्मा परमात्मा
वीतराग स्वरूपी केवळज्ञानी केवळदर्शी आदि अन-
न्तगुणी अनन्तसुखमय बने छे

२३१ प्र०—उद्वेगता, अस्थिरता, असाता, आकुळता ए चार
जीवने शायी उपजे छे ?

उ०—१ अज्ञान अने मिथ्यात्वना उदये उद्वेगता, २ वेदनी
कर्मना उदये असाता ३ अविरति तथा चारित्र
मोहना उदये आकुळता अने ४ वीर्यान्तरायना उ-
दये अस्थिरता जीवने उपजे छे

२३२ प्र०—१ अपात्रदान, २ कुपात्रदान, ३ पात्रदान, ४ सु-
पात्रदान ते कोने कहीए ?

उ०—१ अपात्रदान ते श्वानादि पशु तथा बंदिवानादिने
आपवु ते. तेनु फळ आ लोकनेविषेज यश प्र-
तिष्ठारूप लेशमात्र फळ छे २ कुपात्रदान ते वैरागी
सन्यासी, कापटी, तापसादिकने आपवु ते, तेनु फळ
परभवे राज्यादिक प्राप्ति करी पापानुबंधिपुण्य बांधी
दुर्गति दळ [illegible] संसार भ्रमण वधारे, ३ पात्रदान
ते सम्यग्दृष्टि देशविरति साधर्मी प्रमुखने भक्ति ब-
हुमानथी पोषवा ते, तेथी पुण्यानुबंधी पुण्य उपार्जन
करी भवभ्रमण [illegible] ४ सुपात्रदान ते महामुनि
राजेश्वर [illegible] महात्मारूप पात्रने बहु

मानथी अन्न पानादिनुं दान देतां थकां जीव महा पुण्यानुंबंधी पुण्य उपार्जीने देव मनुष्यादि उत्तम भव करतां थकां शीघ्र सिद्धि वरे.

२३३ प्र०—छकायनां गोत्रनां नाम कयां ?

उ०—१ इंदिथावरकाय, २ बभीथावरकाय, ३ सिपिथावरकाय, ४ समुइथावरकाय, असस्सिथावरकाय, जंगम थावरकाय, इन्द्रियथावरकायनुं पृथ्वीकाय गोत्र, पीतवर्ण पुढवीनाम जीव, इन्द्र देवता, बभी थावरनो अपकायगोत्र, श्वेतवर्ण ब्रह्म देवता अपकाय जीव, सिपीथावरकायनो ते जसगोत्र रक्तवर्ण शिल्प देवता तेउकाय जीव, समुइथावरकायनो गोत्र, वायुकाय, हरितवर्ण समुद्रदेवता वायुकाय जीव, आवशाइथावरकायना वनस्पतिगोत्र, नानावर्ण पातालदेवता, वनस्पति जीव, सात नरकनां गोत्रनी पेठे ए पण जाणवा.

२३४ प्र०—दश प्रकारनां सत्य ते कयां ?

उ०—१ जनपद सत्य, २ समय सत्य, ३ स्थापना सत्य, ४ नाम सत्य, ५ रूप सत्य. ६ प्रत्येय सत्य, ७ व्यवहार सत्य, ८ भाव सत्य, ९ योग सत्य, १० उपमा सत्य. गाथा—

जपावयण समयवणा, नामेरूपेपहुच्च सच्चे य ।
ववहारभाव योगे, दसमे उवमसच्चे य ॥

२३५ प्र०—पांच इंद्रियोनी आकृति तेमनो विषय क्षेत्र, तथा विषय विकार, केटला अने कया कया छे ते कहो.

उ०—१ स्पर्शेन्द्रियनो आकार अने प्रकारे छे, नव योजन

प्रमाण अतर छेटेथी आवेला पुद्गलोनो अष्ट प्रकारे स्पर्श छे तेना विकारो ९६ छे, २ रसेन्द्रियनी आकृति सरपलो तथा कमळना पत्र सरीखी छे, नव योजन अतरे रहेला पुद्गलोनो स्वाद वायुथी खेचाइ आवे थके थाय, तेना छ रसरूप छ विषयना ७२ विकारो छे, ३ घ्राणेन्द्रियनी आकृति तलना फूल सरखी छे, तेनो विषय क्षेत्रफळ नव योजननो तेना विषय २ अने विकार १२ छे, ४ चक्षुइंद्रिय, तेनी आकृति मसुरनी दाळ समान, एक लाख योजन विषय क्षेत्रफळ, तेना विषय पांच अने तेना विकार ६०, काननो बार योजन आत्मांगुल प्रमाणे चार गाउनो योजन जाणवो. तथा सूर्यनो बिंब तो आत्मांगुल प्रमाणे घणा लाख योजन थाय ते माटे चक्षुनो एटलो विषय नथी तो सूर्यनो बिंब कि, देखाय छे. तत्रोत्तर सूर्यनो विमान देवका एक योजनना एकसठिया अडतालीस भागनो छे. तेना आपणा गाउ १३०० ने आशरे मोटो विमान छे ते संपूर्ण आंखे देखातो नथी पण तेना विमानना तळीयाना तेजनो आभासमान झलक काति दिसे छे पण सपूर्ण विमान आखे न देखाय ते माटे आत्मांगुल प्रमाणेनो लाख योजन विषय कहेवो श्रोत्रेन्द्रियनी आकृति अगथीआ वृक्षना फूल समान, तेनो १२ योजन विषय क्षेत्र, तेना विषय ३ अने विकार १२ एम एकंदर पाच इंद्रिय विषय २३ अने विकार २५२ ते विकारो रहित मात्र

इंद्रियोना आकार युक्त पोताना आत्मधर्मनुं एकांते प्रतिपालन करता थका, दशविध संयम धर्मनो उत्तम रीते निर्वाह करता, एवा जे महा मुनि महाराजो, तेमने मारो त्रिकरणशुद्धिये नमस्कार छे. त्रण प्रकारना शब्द शुभ, अशुभ भेदे छ भेद थया. राग अने द्वेष ए चार भेद. चक्षु इन्द्रियथी पांचवर्ण तेने शुभ अशुभ बे भेदे गुणतां दश तेने सचित्त अचित्त ए त्रणे गुणतां ३०, रागद्वेषे गुणतां साठ थाय. सुरभिदुरभिगंधने सचित्तादि त्रण भेदे गुणतां ६ थाय तेने रागद्वेषे गुणतां बार भेद थाय. दशने शुभ अशुभे गुणतां बार थाय. तेने सचित्तादि त्रण भेदे गुणतां ३६ थाय. तेने रागद्वेषे गुणतां ७२ थाय. आठ प्रकारना स्पर्श तेने सचित्तादि त्रण भेदे गुणतां २४ थाय, तेने शुभाशुभे गुणतां ४८ थाय. तेने रागद्वेषे गुणतां ९६ थाय. सर्व संख्याए २५२ थाय. गाथा—

बारसहिंतो सोतस्स, सेसाणं नवहिंजोयणेहिंतो ।
गिण्हंतोपत्तगथ्थं, एतो परतोनगिण्हंति ॥

२३६ प्र०—पांच इंद्रियोनुं द्रव्य तथा भावथी स्वरूप कहो.

उ०—१ द्रव्येन्द्रिय, बे प्रकारे छे सूक्ष्म अने बादर, बादर ते बाहेर दिसे छे, आकृतिरूप छे ते; सूक्ष्म ते विषय ग्रहणव्यापारे आभ्यंतर प्रवृत्तिरूप, जघन्यथी अंगुळनो असंख्यातमो भाग, अने उत्कृष्ट पूर्वे कह्युं छे तेटलो विषय क्षेत्र जाणवुं, २ भावेन्द्रियपणुं ते जीवने दर्शनावरणीकर्मना क्षयोपशमे शब्द, रूप, रस,

गध, स्पर्शादि ग्रहण शक्ति उपजे तेनी उपयोग उपलब्धि ते भावेन्द्रिय कहेवाय छे, अने आकृति ते द्रव्य इन्द्रिय जाणवी एम पन्नवणामा कह्यु छे– मनुष्य थको सिजे तेने आठ इन्द्रिय जाणवी. नारकी थकी मनुष्य थइ सिजे तेने १६, सोळ इन्द्रिय जाणवी. तिर्यंचथकी तथा पृथिवीथकी मनुष्य थइ सिजे तेने १७, सत्तर इन्द्रिय तथा देवताथकी पृथिवी मनुष्य थइ सिजे तेने १७ सत्तर इन्द्रिय जाणवी तथा पृथिवी, पाणी वनस्पति माहेथी मनुष्य थइ सिजे तो ९ नव इन्द्रिय तथा इम सर्व विचार पन्नवणा मध्ये कह्यो छे पण एनो अर्थ आम्नाय गीतार्थगुरुथी जाणवो.

२३७ प्र०–आत्मबोधरूप सम्यक्त्व प्राप्तिमा पाच लब्धिनी आवश्यकता छे, ते पांच लब्धिनु स्वरूप कहो

उ०–१ काळ लब्धि, ते आयुवर्जित शेष सात कर्मनी उत्कृष्ट स्थितिने घटाडी एककोडाकोडी सागर प्रमाण करे, एवा यथाप्रवृत्तिकरणपूर्वक चर्मावर्ते जीव आव्यो त्यारे काळलब्धि पाकी कहीए, पहेली लब्धि पाम्या पछी छेली एकठी एकसमे प्रगटे २ इन्द्रिय लब्धि ते संज्ञि पचेंन्द्रियपणु, ३ उपदेश लब्धि ते सद्गुर्वादिकना योगे उपदेश पामी बुझे, ४ उपशम लब्धि ते निर्मळ परिणामनी धाराए चढतो विषय कषायनी उपशांति भावमा अपूर्वकरणे करी ग्रथिभेद करे, ५ प्रयोग लब्धि, पछी अत.करण पूर्वक अनिवृत्तिकरणना परिणामे ग्यो थको स्वपर भेदज्ञानरूप

सम्यक्त्व पामे, त्यारे वीतराग धर्मनी रुचिपूर्वक प्रतीतात्मक धर्मरूप शुद्ध तत्त्वार्थ श्रद्धाने आत्मस्वरूपनुं दर्शनज्ञान, स्वरूपाचरणरूपे जीवने थाय.

२३८ प्र०—आत्मांगुल उच्छेदांगुल प्रमाणांगुलनां मान क्यां केवां छे ?

उ०—आवश्यक निर्युक्तिमां तेनुं मान नीचे प्रमाणे कह्युं छे.

गाथा—उस्सेहंगुलमेगं, हवइ पमाणांगुलं सहसगुणं ।
तंचेव दुगणीयंखलु, वीर सायंगुलं भणियं ॥१॥
आयंगुलनवथ्थुं, सरीर मुस्सेहंगुलेण तहा ।
नग पुढवी विमाणाइं, मिणसुयमाणंगुलेगंतु ॥२॥

२३९ प्र०—मतिज्ञानना केटला भेद छे ?

उ०—मतिज्ञानना श्रुतनिश्रित अने अश्रुतनिश्रित ते मध्ये श्रुतनिश्रितना ४ भेद अवग्रह, १ ईहा, २ अपाय, ३ धारणा ४ अवग्रहना बे भेद १ व्यंजनावग्रह, २ अर्थावग्रह व्यंजनावग्रहना ४ भेद १ स्पर्शेंद्रिय, २ रसेंद्रिय, ३ घ्राणेंद्रिय, ४ श्रोत्रेंद्रिय, अर्थाग्रहना ६ भेद पांच इंद्रिय छट्ठुं मनएम छ चोक चोवीस अने ४ व्यंजनावग्रहना इम ईहा अपाय धारणा करता एवं २८ एम ऐकेकना १२ भेद थाय १ बहु, २ अबहु, ३ बहुविध, अबहुविधादिक बार भेद तिहां अनेक जीव वाजिंत्रना शब्द सांभले छे ते मध्ये क्षयोपशमिक विचित्रताए करी कोइक जीव घणा शब्दग्रहे ते बहु १, कोइक जीव थोडाग्रहे ते अबहु २, कोइक शब्दना व्यापार मांहे इत्यादिक घणा विशेष जाणे ते बहुविध ३, कोइक थोडा विशेष

जाणे ते अबहुविध ४, कोइक तुरतग्रहे ते क्षिप्र ५, कोइक शेषग्रहे ते वीर कहीये ६, कोइक धूमादिक लिंगे करी अग्न्यादिक जाणे ते सलिंग ७ तथा जे लिग विना जाणे ते अलिंग ८, एक सदेहालो जाणे ते सदिग्ध कहीए ९, सदेह रहित जाणे ते असदिग्ध १०, कोइकवेला कह्युं ते बीजीवेलाए अणकह्ये ते जाणे ते ध्रुव कहीए ११, कोइक वारवार जणावे जाणे ते अध्रुव १२, एम अवग्रहादिक २८ भेद ते बार गुणा करता ३३६ भेद थाय एटला श्रुतनिश्रितना भेद तथा अश्रुतनिश्रितना ४ भेद ते १ औत्पातिकीबुद्धि, २ वैनयिकीबुद्धि, ३ कम्मीया ते कार्मणिकीबुद्धि, ४ परिणामिया ते पारिणामिकीबुद्धि, एव ते अश्रुतनिश्रित सर्व मली मतिज्ञानना ३४० भेद कर्मग्रथनी टीका मध्ये कह्या छे

२४० प्र०—ज्योतिष देवतामा कया जीवो न उपजे ?

उ०—पन्नवणा सूत्रना छट्ठा वक्रातिपद मध्ये कह्यु छे के ज्योतिषि देवतामाहे समूर्च्छिममनुष्यअसज्ञियो तथा तिर्यच असज्ञियो समूर्च्छिम असख्यात आयुष्यवाळा युगलिया पखी तथा अतरद्वीप युगलिया मनुष्य एटला माहेथी आव्यो ज्योतिषि देवतापणे न उपजे.

२४१ प्र०—एक योजननु प्रमाण परमाणुथी माडीने शी रीते थाय छे ? ते कहो

उ०—अनंता सूक्ष्म परमाणुए एक व्यवहार परमाणु; आठ त्रसरेणुए एक उर्ध्वरेणु; आठ उर्ध्वरेणुए एक रथ रेणु; आठ रथ रेणुए उत्तर कुरु युगलीयाना तुरत जन्मेला बाळकनो एक वाळाग्र; एवा आठ वालाग्रे एक महा हिमवन्त क्षेत्र युगलीक बाळ वाळाग्र; एवा आठ वाळाग्रे; एक महाविदेह क्षेत्र मनुष्य वाळाग्र; एवा आठ वाळाग्रे एक भरतक्षेत्र मनुष्य वाळाग्र, एवा आठ वाळाग्रे एक लीख, आठ लीखे एक जु, आठ जुए एक जव; आठ जव एक आंगळ; २४ आंगळनो एक हाथ, चार हाथनो एक धनुष, अने बे हजार धनुषे एक कोश, एवा चार कोशनो एक योजन जाणवो.

२४२ प्र०—षड्विध पल्योपमनुं स्वरूप कहो.

उ०—उद्धार, अद्धा, क्षेत्र पल्योपम, सूक्ष्म अने बादर भेदे करीने छ प्रकारे छे ते आवी रीतेः—१ पूर्वोक्त योजन चार प्रमाणे लांबो पहोळो, अने उंडो कुवो कल्पिए तेने पल्य कहिए, तेनी छे उपमा ते जेने तेने पल्योपम कहिए ते पल्यने देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रना युगळिक तुर्त जन्मेला बाळकना वाळाग्र एकना आठ आठ खंड सातवार करीए, ते वाळाग्र खंडे करी ठांसी ठांसीने भरवो, एवो के ते उपरथी चक्रवर्तिनी सेना चाली जाय, तथा गंगा नदीनो [illegible] प्रवाह पूर जोरथी ते उपरथी वहन करे, तोपण [illegible] पण [illegible] वालाग्र तेमांथी खसे नहि, एवो ठांसीने भरीए, पछी ते [illegible] वालाग्रने [illegible] समय एक एक

काढतां जेटला समयमा ते पल्य खाली थाय तेटला कालने एकबादरउद्धारपल्योपम कहिए, ते सख्यातो कहिए केमके वालाग्रखडसख्याता थाय माटे पछी ते वाळाग्रखडना एक एकना असख्याताखड कल्पिए, अने ते कल्पनाखड समय समय काढतां जेटला काळमा खाली थाय तेटला समयने एक सूक्ष्मउद्धारपल्योपम कहिए, एवा पचीस कोडाकोडीउद्धारपल्योपम एकअर्धाउद्धारसागरोपम प्रमाणे तिर्च्छालोके द्वीप अने समुद्र असख्य छे, २ पछी पूर्वोक्त वाळाग्रखड एक एकने सो सो वरसे काढना ज्यारे खाली थाय तेटला समयने एक बादरअद्धापल्योपम कहिए, अने ते वाळाग्रखडना, असख्याताखड कल्पिने प्रत्येक खंड सो सो वरसे काढता जेटला समयमा पल्य खाली थाय तेटला वखतने एक सूक्ष्मअद्धापल्योपम कहिए, तेवा दशकोडाकोडीपल्योपमे एक सागरोपम, तेवा दसकोडाकोडीसागरोपमे एक अवसर्पिणी ने उत्सर्पिणी काळ, ते बे मळीने वीसकोडाकोडीसागरोपम प्रमाण एक कालचक्र, एवा अनताकाळचक्रे एक पुद्गलपरावर्त्तनकाल प्रमाण. आ जीव ससार मध्ये निगोदादिकथी माडीने जन्म मरण करतो करतो अकाम निर्जराए कुटातो पीटातो, कोइ महापुण्यना उदये शुभपरिणामे करी नदी गोळपाषाणना घचनाघोळ न्याये करी आ अत्यतदुर्लभ एवो उत्तम कुळ सयोगवाळो उत्तम निरोगी देहसहित मनुष्यभव पाम्यो छे, छता

अनादिकाळना अज्ञान, मोह, मिथ्यात्व, प्रमादादि रूपभववासनाना जोरे आवी उत्तम योगवाइवाळा मनुष्यभवनुं लेशमात्र पण बहुमान नथी आवतुं, हा ! इति खेदे केवी अफसोसनी वात छे, माटे हे चेतन ! आ परमात्माना वचने करीने हवे चेत! अने जे कुळमां उत्तम कुळना प्रभावे करीने हिंसानो आचारज नथी तेवा अहिंसक कुळनी प्राप्ति छतां श्रीजिनेश्वरभगवंतनो धर्म पाळवामां प्रमादने छोड, अने तारुं खरुं कर्तव्य आ मनुष्य भवमां शुं? छे, तेनो विचार करी विषयकषायनी प्रवृत्तिनो जेम बने तेम संकोच कर, अने तत्त्वमार्गने आदर, सुदेव, सुगुरु, अने सुधर्मने ओळख; अने ते ओळखाण पूर्वक शुद्धक्रियानुं सेवन कर; अने सरळता, कोमळता, विनयादि गुण धारण करतां शीख जेथी परंपराये तारा आत्मानुं चिरंकाळ कल्याण थशे, तथास्तु शुभंभवतु, शांतिः शांतिः शांतिः। पूर्वोक्त सूक्ष्मअद्धा काळे करी आयुष्यमान, कर्मस्थिति, कायस्थिति, तथा अन्य काळमानादिनुं प्रमाण थाय छे; ३ पूर्वोक्त वाळाग्रखंड स्पर्श्या जे आकाश प्रदेश तेने प्रत्येकने समय समय काढतां जेवारे पल्यवाळाग्रथी खाली थाय तेटला काळने बादरक्षेत्रपल्योपम कहिए, अने वाळाग्रने स्पर्श्या सर्व आकाश प्रदेश पल्यना समय समय खाली करतां जेवारे पल्य निर्लेप थाय एटला काळने सूक्ष्मक्षेत्रपल्योपम कहिए, तेणे करी दृष्टि-

वादमा एकेंद्रिय के त्रसादि जीव संख्यानुमान कराय छे. ए असख्यातउत्सर्प्पिणी प्रमाणे इम त्रण सूक्ष्म-पल्यो शास्त्रने विसे उपयोगी होइ तिन बादर कह्या ते सूक्ष्मनो सुखावबोधार्थ इहा प्राय घणो अद्धा-पल्योपमनो प्रयोजन छे, इम कोडाकोडी सागरोपमें एककालचक्र तेणे अने ते कालचक्रे पुद्गलपरावर्त्त होइ ते आठ प्रकारना छे ते त्याथी जो जो. अस्य गाथा–उद्धार अद्धखित्त, पलियतिहा समय वा समय समए किसवहारोदीवोदही, आउसस्साइ परिमाण ॥ १ ॥ ॥ पाचमें कर्म ग्रन्थे उक्त.

२४३ प्र०–आत्मसमअवस्थानउपयोगरूप ध्यानदशा केवी रीते पमाय ?

उ०–मोहवशे जीव परभावअनुयायि प्रवृत्ति करे छे. मिथ्या सुखनी तृष्णाए मूल्यो थको ससार भ्रमण करे छे,

ज्यारे मोहस्थिति घटे त्यारे परप्रवृत्ति छुटे, अने ज्यारे परप्रवृति टळे त्यारे विषयथकी विरक्त बुद्धि थाय, अने तेणे करी मनोरोध थाय, केमजे कारण विना कार्य बनतु नथी, मनने भमवानु कोइ कारण के टाम न होवाथी ते सकल्प विकल्प क्याना करे ? जेम तृण विनानी भूमिमा, एटले उखर भूमिमा पडेलो अग्नि केने वाळे, अर्थात् पोतानी मेळे उपशमी जाय छे, तेम विषय चाळा टळवाथी मन पोतानी मेळेज रुधाय अने मन रुधायाथी मननी चचळता मटे, तेवारे मन एकाग्र थइने आ-

त्माने विषे प्रवर्त्ते, यतः जोखवेइ मोहखलु, सोविसय विरत्तो मणो णिरुंभित्ता। समवष्ठिदोसाभावे, सो अप्पाणं हवई झाया ॥ १ ॥ इति उक्तं प्रवचनसारे, आत्मभावनानी गाथा–त्रण लखीए छीए. एगोहंहोमिपरेसिं, ण मे परे णत्थि मज्झमिहकिंवि। इय आय भावणाए, रागदोसाविलय जंति ॥ १ ॥ नाणस्सविसुद्धिए, अप्पा एगतंउ ण संसुद्धो। जम्मानाणंअप्पा, अप्पाणंच अणंवा ॥२॥ आयासामाइए, आयासामाइयस्सअठोत्ती । तेणेव इमंसुत्तं, भासई आयपरिणामं ॥ ३ ॥ ए सूत्रे पण चारित्रनें आत्मपरिणामरूपज कहीए छीए. पण बाह्यक्रियारूप नथी कह्युं. तत्र काव्यं–येषांनचेतो ललनासुलग्नं, मग्नं न साहित्यसुधासमुद्रे । ज्ञास्यंति ते किममहाप्रयासा–नन्धो यथा वारवधूविलासान् ॥ इत्यर्थः ॥ त्यारे शुद्धात्मोपयोगअवस्थानरूप निर्मळ ध्यानदशानी परम शीतळ शांत सुगंधिनी अनुभवलेहेरीओनुं आत्मा आस्वादन करे, ते सुख आपणे पौद्गलिक सुखना भीखारीओ शुं जाणीए; कह्युं छे जेः—

सघळुं परवश ते दुःख लक्षण, निजवश ते सुख लहिए;
ए दृष्टे आतमगुण प्रगटे, कहो सुख ते कोण कहीएरे.
भविका वीरवचन चित्त धरीए. १
नागर सुख पामर नवी जाणे, वल्लभ सुख न कुमारी;
अनुभव विण तेम ध्यानतणुं सुख, कोण जाणे नरनारीरे. भ. २
विषय भोग क्षय शांत वाहिता, शिव मारग ध्रुव नाम;
कहे असंग क्रिया इहां योगी, विमल सुजस परिणामरे. भ. ३

२४४ प्र०—उत्सर्ग अने अपवाद मार्ग परमार्थे एकज आत्मार्थिपणारूप मोक्ष साधक दशाज छे, ते शी रीते ?

उ०—उत्सर्गमार्ग घणो कठीण, घोरतपस्या शुद्धब्रह्मचर्यादि पाळे, जिनकल्पिपणे प्रवृत्ते ते जाणवो, अने अपवादमार्ग ते पूर्वोक्त उत्सर्गनी अपेक्षाए एटले ज्यारे ते उत्सर्गदशामा न टकी शकाय, त्यारे तेमा पाछा स्थिर थवाने माटे, जे काइक कोमळ मार्गनु अवलम्बन साधनादि करवु एटले मुनि पंचमहाव्रत शुद्ध पाळे, उग्रविहार तपस्यादि करी शरीर गाळे, जेथी विषय कषायादि मोहवासना गाळे, शिष्य, गच्छ, शास्त्रादिनी धारणा करे, ते प्रत्ये परस्पर स्वाध्याय करे करावे, भव्यप्राणीओने धर्मोपदेश आपी स्वपर महानिर्मलता करे करावे, पोते उत्तम मार्गे चाले बीजाने चलावे, अने चालता होय तेने अनुमोदनरूप उपष्टंभ एटले सहायतादि दइ स्थिर करे, इत्यादि अपवादमार्गनु सेवन करी, मुनि पाछा उत्सर्गमार्गमा लीन रहे छे, एम परमार्थे उत्सर्ग अने अपवादमार्गो आत्मार्थीज छे, उभय मार्ग शास्त्रानुसार छे, पण जे निष्कारण दूषित मार्गनु सेवन करे, अने कहे जे अमे उत्सर्गने माटे अपवाद सेवीए छीए, ते चारित्रघातीनी मिथ्या वात छे, केमजे मुनिने कोइ अतिचाररूप दूषण प्रासंगिक लागीजवारूप संभव छे, पण मन थकी अतिचार सेवनकरवारूप प्रमादादि कदापि काळे न

होय. स्थविरकल्पमां पण आ कालमां सापेक्ष अपवादनी मुख्यताए चारित्र छे.

२४५ प्र०—पांच नोधम्मीया प्राणी कह्या छे ते कया?

उ०—भट्ठोदेवायच्चो, विसयासत्तो अज्जियापुत्तो । गुरु देवायणदुट्ठो, नोधम्मा पंचपन्नत्ता ॥ १ ॥ अस्यार्थः—१ भ्रष्ट ज्ञात कुळथी वंठेला जीव; २ देवादिक धर्मखाताना निःशूक मने हराम दानते पगार खानारा पूजारादिक तथा देव गुर्वादिक द्रव्यना खानारा; ३ विषयाशक्त लोलुपी लंपटी; ४ व्यभिचारवडे साध्वीने पेटे अवतरेल पुत्र, ५ देव, गुरु; धर्मादिकनो निंदक, घातक उत्थापक ए पांच अधर्मी एटले नोधम्मिया जाणवा, ते वीतराग भाषित धर्मथी पराङ्मुख रहे.

२४६ प्र०—समूर्च्छिममनुष्य मरी केटला दंडकमां जाय छे?

उ०—दशदंडकमां जाय छे. ५ पांच थावरमां ३ विकलेन्द्रियमां ९ पंचेन्द्रियमनुष्यमां १० पंचेन्द्रिय तिर्यंचमां जाय पण युगलियो न थाय. तथा ए दशदंडकमां तेउकाय. वायुकाय ए बे दंडक वर्जिने बीजा आठ दंडकना आव्या संमूर्च्छिममनुष्य थाय.

२४७ प्र०—जीवने परभवआयु शी रीते बंधाय छे; अने ते केटला प्रकारनुं छे?

उ०—जीवने आयुकर्म परभवसंबंधिनुं आ भव भोगवतां थकां एकजवार निकाचितपणे त्रण आकर्ष करी सो-

पक्रमि तथा निरुपक्रमिभेदे जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त अने उत्कृष्ट ३३ सागरोपम सुधीनु अध्यवसायनी तारतम्यताए भिन्न भिन्न जीवने नानाविध बधाय छे, त्या देवता नारकीने आ भव आयु छमास थाकता बाकी रहेतां परभवायु बधाय, तथा युगलिक मनुष्यो तथा तिर्यंच तेमज तीर्थंकरादि त्रिषष्ठि शलाकापुरुष अने चरमशरीरी एटलानु आयु निरुपक्रमि बधाय, शेषने सोपक्रमी आयुबंध होय, त्या उपक्रम एटले उपघातादि कारण विशेषे आयु त्रूटे, एवो मद मदतरादि परिणामविशेषे जीवे आयुबंध कर्यो होय, तेवो उपक्रम पण आयुना बंधनी साथेज बधाय छे, एथी जेम तेले करीने बाट सहित संपूर्ण रीते दीवानु कोडीउ भरेलु होय, ते दीवाने कोइ पण पवनादि उपघात न लागे तो तो ते ठेठ सुधी सारी रीते बळे छे, नहि तो पवनना एक सखत सपाटाए छते तेले अने वाटे ठरी पण जाए, एम सोपक्रम आयुना बंध पण एवाज ढीला जाणवा, ते व्यवहारे विष, शस्त्र, अकस्मातादि सात कारणे त्रूटे छे, पण निश्चये तो जीवे तेवीज रीतनुं तेटलाज समयकाळनु बांधेलु ज्ञानीनी दृष्टिए दीठेलु भोगवे छे, एक समयमात्र पण आयु पाछु करवाने कोइ पण समर्थ नथी, देव नारकीआदि शिवायना सोप्रक्रमी आयुवंत प्राणीओ घणु करीने पोताना भव आयुना अतमां अन्तर्मुहूर्त्त थाकता परभव आयु बांधे छे, ते बांधता जीवने अंतर्मुहूर्त्त लागे छे, ते बंध

दरमियाने त्रण आकर्ष (उचक्कां) करे छे, जेम गाय पाणी पीतीं वीसामे वीसामे पीये, तेम जीव पण आयुकर्मना पुद्गलने लेइ आकर्षि बांधे; त्यां मति तेवी गति अथवा गति तेवी मति अनुसारना परिणाम विशेषे बंध पडे.

२४८ प्र०—आकुट्टी, दर्प, प्रमाद अने कल्प ए चार शब्दार्थ कहो.

उ०—आकुट्टीकया अनाभोगतयाउपेत्यसावद्यकरणोत्साहोत्मिका १, दर्प्पोधावनप्लवनादिकः वल्गनादिकः । हास्यजनको वा नाट्यादिकदर्प्परूपोवा २, प्रमादो रात्रौ दिवाप्रतिलेखनाप्रमार्जनाद्यनुपयुक्तता ३, कल्पकारणे दर्शनादिचतुर्विंशतिरूपेसति गीतार्थस्यकृतयोगी उपयुक्तस्य अयतनतया आधाकर्माद्यादानरूपा ४, इति । अस्यार्थः ।

आकुट्टी एटले अनाभोगे उपयोग रहित सहसात्कारे उद्धतपणे सावद्यकार्य प्रवृत्ति; २ दर्प एटले अहंकारे वा इर्ष्याए चडसाचडसीए नाटक कौतकादि जोवा जतां वाटमां अश्ववृषभादिने खूब दोडाववा वगेरे अयत्नाए निर्दय सावद्य कर्माचरण; ३ प्रमाद एटले रात्रे वा दिवसे प्रमार्जन प्रतिलेखनादि सावद्य क्रिया अयत्नाए जेम तेम बेदरकारीथी करवी ते ४ कल्प एटले गीतार्थ बहुश्रुतादिना वचन निरपेक्षपणे निष्कारण आधाकर्मादि दूषित आहार ग्रहण करवो वगेरे मार्गथी भ्रष्ट आचार प्रवृत्ति ते.

२४९ प्र०—मिथ्यात्वप्रत्ययिकी १, अप्रत्याख्यानिकी २, परिग्रहिकी

३, आरंभिकी ४, मायाप्रत्ययिकी ५, ए पाच क्रियावंतीं जीवोनुं अल्पबहुत्व कहो.

उ०—मिथ्यात्वप्रत्ययिकीक्रियावाळा सर्वथी थोडा, १ ते थकी अपच्चक्खाणीक्रियावंतजीव असंख्यातगुणा अधिक केमजे तेमां अविरति भळ्या, २ ते थकी परिग्रहिकीक्रियावंतजीवो असंख्यातगुणाधिक जे भणी तेमां देशविरति भळ्या माटे, ३ ते थकी आरंभिकीक्रियावंत असंख्यातगुणाधिक जे भणी सर्वविरति छट्ठा गुणठाणाना मुनि तेमा भळे तेथी, ४ मायाप्रत्ययिकीक्रियावंत तेथी संख्यातगुणाधिक जे भणी तेमा नवमा गुणठाणावर्ति मुनि वध्या तेथी ए भाव पन्नवणासूत्रमध्ये छे. इति।

२५० प्र०—देवगतिने विषे छ लेश्या आसरी अल्पबहुत्व कहो

उ०—१ शुक्ललेश्यावंतदेवताओ सर्वथी थोडा, २ ते थकी पद्मलेश्यावंत असंख्यातगुणाधिक, ३ तेथी कृष्णलेश्यावंत असंख्यातगुणाधिक, ४ ते थकी नीललेश्यावंत असंख्यातगुणाधिक, ५ ते थकी कापोतलेश्यावंत असंख्यातगुणाधिक, ६ ते थकी तेजोलेश्यावंत ज्योतिषीदेवो असंख्यातगुणाधिक जाणवा

२५१ प्र०—सोपक्रमिआयुषवंतजीव आयु पुरु भोगवता थका पण अकाले चेवजीवियाओववरोविया—॥ मरण पाम्यो एम कहे छे तेनु शु समजवु ?

उ०—जेम राजाए कोइएक चोरने पकडीने शूळीये के फासीए दीधो, त्या ते जीवे सर्व आयु कर्मनां दळ

हतां ते आत्मप्रदेशोदये भोगवी, आयुकर्म बांध्युं हतुं तेटलुं पूरुं भोगवी लीधुं, तथा काळ आसरी अकाळे मुओ एटले जे आयु सुखे समाधे जीव विपाकोदये भोगवीने मरत, ते थोडा काळमां ते आयुना दळने प्रदेशोदये वेदीने खपावीने मुओ तेथी तेने अकाळमरण कहे छे. अर्थात् जेटलुं आयुष बांध्युं हतुं तेटलुं प्रदेशोदये भोगवीने पूरुं कीधुं तेथी संपूर्ण आयुषे मुओ तेम कहेवाय अने घणा काळे विपाकोदये भोगववानुं आयु कर्म थोडा काळमां भोगवीने खपाव्युं माटे अकाळ मरण कहिये.

२९२ प्र०–कोने संघनी बहार काढवो तथा कोने दीक्षा न आपवी जोइए ?

उ०–अथ प्रास्ताविक गाथा–

जो भणइनत्थिधम्मो, न सामाइयं न चेव वयाइं ।
सो समणसंघबज्झो, कायव्वो समणसंघेण ॥ १ ॥
अट्ठारसपुरिसेसु, वीसइत्थीसु दसनपुंसेसु ।
जिणपडीकुतित्थियाओ, पव्वावेउं न कप्पंति ॥२॥
बालेवुड्ढनपुंसयेय, किवेजडेयवाहिए ।
तेणेरायावगारिय, उमत्ते य अदंसणे ॥ ३ ॥
दासेदुट्ठेअमूढेय, अणंतेजुगए एय ।
अववंधए यभिएय, सेहेनिप्फोडीयाइय ॥ ४ ॥
एटलाने दीक्षादेवी न कल्पे,

२९३ प्र०–सोळ संज्ञाओ कइ ?

उ०—गाथा—

आहारभयपरिग्गह, मेहुणतह कोहमाणमायाए ।
लोहोहलोगसण्णा, दससन्नाहुतिसव्वेसिं ॥ १ ॥
सुहदुहमोहसन्ना, वितिगिच्छायउद समुणेयव्वा ।
सोगे तहधम्मसन्ना, सोलस ए हुति मणुएसु ॥ २ ॥

२५४ प्र०—दश सज्ञा कया कया जीवोमा छे

उ०—गाथा—

रुक्खाणजलाहारो, सकोयणीयाभएण सकुयइ ।
नीयततुएण वेढइ, वलीरुक्खेण परिग्गहेय ॥ ३ ॥
इत्थीपरिरभेण, कुरुवकतरुणोफलती मेहुणे ।
तहकोकनदस्सकदो, हुकारोमुयइ कोहेण ॥ ४ ॥
माणेण झरईरुदंती, च्छायई वल्ली फलाईमायाए ।
लोहेवीलुपलासा, खिवतिमूले धणाणुवरि ॥ ५ ॥
रयणीए संकोओ, कमलाण होईलोगसन्नाह ।
ओहे चईत्तु मग्गं, चढति रुखेसु वल्लीओ ॥ ६ ॥
इति १० सज्ञाना उदाहरण ।

२५५ प्र०—अढार भावदशा तथा अढार द्रव्यदशानु स्वरूप कहो.

उ०—तत्र गाथा—

तिरियामणुआकाया, तह अग्गवीयाय चउरो ।
देवाय नेरइया—अट्ठारसभावरासीओ ॥ १ ॥

बेरेन्द्रिय, तेरेन्द्रिय, चोरेन्द्रिय, पचेन्द्रिय, ए चार तथा समूर्च्छिममनुष्य कर्मभूमिजा अकर्मभूमिजा

अंतरद्वीपना, हवे अग्रबीज, मूलबीज, पर्वबीज, स्कंधबीज, ए चार वनस्पतिना भेद. पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वाउकाय, एवं चार तथा देवता अने नारकी एवं अढार १८ भावदिशा. आचारांग सूत्रमध्ये शस्त्रपरिज्ञाअध्ययनमांहे भावदिशा वखाणी छे. तथा अढार द्रव्यदिशा. चारदिशि, चारविदिशि, आठदिशि, विदिशिनां आंतरां. ऊर्ध्वदिशा, अधोदिशा ए १८ द्रव्यादिशा जाणवी.

२५६ प्र०—नीलीगळीए रंगेला वस्त्रमां केटला वखतमां जीव पडे छे ?

उ०—नीलीगळीए रंगेला वस्त्रथी मनुष्यसंसर्गे तत्काल कुंथुप्रमुख त्रसजीव घणा उपजे छे. एम रत्नसंचय ग्रन्थमां कह्युं छे.

२५७ प्र०—लब्धिपर्याप्तानुं तथा करणपर्याप्तानुं केवुं स्वरूप छे ?

उ०—पर्याप्तिद्विधा लब्धिः करणश्च तत्र ये स्वयोगपर्याप्ति सर्वाअपि समर्था म्रियन्ते न अर्वाग् ते लब्धिपर्याप्ता ये पुनःकरणानि शरीरेन्द्रियादीनि निवर्तन्तः ते करणपर्याप्ता इति, ननुचास्यशरीरपर्याप्तौ च शरीरंभविष्यति किं प्राग् अभिहितेन शरीरनाम्ना ? नैतदस्ति साध्यभेदात् तथा जयसोमकृत बालावबोधमां एम लख्युं छे.

२५८ प्र०—छ पर्याप्तिनुं स्वरूप कहो.

उ०—जे कर्मना उदयथी आरंभी पर्याप्ति पूरी कर्या विना न मरे ते पर्याप्तिनामकर्म, तेणे एकेन्द्रियने चार

विगलेन्द्रिय तथा असज्ञीपचेन्द्रियने भाषा होय सज्ञीपचेन्द्रियने मन होय उत्पत्ति प्रथम समयथी आरभी पर्याप्ति पूरी कर्या विना न मरे. पूरी करीने मरे ते लब्धिपर्याप्तो जाणवो शरीर इन्द्रिय पर्याप्ति पूरी न थाय त्या सुधी तेने अकरणपर्याप्तो कहेवो अथवा जे जे पर्याप्ति पूर्ण नथी थइ तेनी अपेक्षाए अकरणपर्याप्तो जाणवो. जे जे पर्याप्ति पूरी करी ते अपेक्षाए करणपर्याप्तो जाणवो. जे कर्मना उदये आरभेली पर्याप्ति पूरी कर्या विना मरे ते लब्धिअपर्याप्त नामकर्म पुद्गलना उपचयथी थयो पुद्गल परिणमन हेतु शक्ति विशेष ते पर्याप्ति विषय भेदे छे.

२५९ प्र०—पर्याप्ति ने प्राणमां शो फेर छे ?

उ०—पर्याप्ति ते उपजतीवेलाए होय अने प्राण ते जावजीव लगे होय

२६० प्र०—सम्यग्दृष्टिनी केवी दशा होय ?

उ०—गाथा—

बधोअविरइहेउ, जाणतो रागदोसदुक्खच ।
विरइसुह इच्छतो, विरइ काउ च असमत्थो ॥ १ ॥
एस असजयसम्मो, निदतोपावकम्मकरणच ।
अहिगयजीवाजीवो, अचलियदिट्ठीचलियमोहो ॥२॥
सम्मदसणसहिओ, गिण्हतोविरइमप्पसत्तिए ।
एगवइयचरमो, अणुमइमित्तत्तिदेसजई ॥ ३ ॥

ए गाथानो गुरुगमथी अर्थ धारज्यो. सम्यग्दृष्टिने उदयस्थिति प्रतियोबंध होय. पण आत्मप्रतियोबंध न होय.

२६१ प्र०—छद्मस्थ कोने कहे छे ?

उ०—छाद्यते केवलज्ञानदर्शने आत्मनः अनेनेतिछद्म—ज्ञानावरणं दर्शनावरणं मोहनीयान्तरायकर्मोदयेसति तस्य केवलज्ञानदर्शनस्यानुत्पादात् तदपगमानन्तरं चोत्पादात् ज्ञानावरणादिछद्मनि तिष्ठतीतिछद्मस्थः॥ केवलज्ञान विना बाकीनां चार ज्ञान प्रगटतां पण छद्मस्थ गणाय छे.

२६२ प्र०—मुनिने अप्रमत्तदशाए समय समय अनंतगुणविशुद्धि कही छे ते शी रीते ?

उ०—आत्मोपयोग एकाग्रध्यान भणी मुनिने आत्मप्रदेशे रहेल अनंतीकर्मवर्गणानी निर्जरा थतां आत्मानी अनंती विशुद्धि समय समय थाय छे.

२६३ प्र०—आहारकआहारक मिश्र जीव किम करे ?

उ०—जेवारे पूर्वधरे संदेह पुछवा निमित्ते आहारकशरीर मोकल्युं होय तिहा ज्ञानवंत नहीं तिवारे तिंहाथी वली बीजुं आहारक करे ते करती वेलाए पूर्वआहारक संघाते मिश्र होय ते माटे. इति भावार्थ।

२६४ प्र०—सिद्धने अफुसमाण के फुसमाण गति शी रीते समजवी ?

उ०—एक समयमां समश्रेणिना सर्वआकाशप्रदेश, फर-

सतो जीव सिद्धि गतिए जाय, पण वचमां विषम श्रेणिना आकाशप्रदेश न फरसे माटे ते अपेक्षाए सिद्धनी अफुसमाणगति कहिए, तथा समश्रेणिए आकाशप्रदेश फरसतो फरसतो जाय, ते अपेक्षाए क्षेत्रआश्रिफुसमाणगति कहीए, अने एक समयथी बीजा समयना अन्तरने न फरसे ते माटे आश्रि अफुसमाण गति कहे छे

२६५ प्र०–त्रणप्रकारना पुद्गलो दृष्टान्तथी समजावो.

उ०–विश्रसा ते स्वभावे कोइ निमित्त पामी तदाकार थाय, जेम इन्द्रधनुष्यादि अभ्रवत्, २ प्रयोगसा ते जीव व्यापारे, उद्यमे करीने जे निपजे, जेम भवन, घटपटादि, ३ मिश्रसा ते काइक सहज स्वभावे अने काइक प्रयोगे जेम ते माणसे जुनो पटो बान्ध्यो अथवा जुनी पाघडी बांधी इत्यादिमा पुद्गलोनु जीर्णपणु थयु ते स्वभावे कहीए, अने बंधनकर्म ते मनुष्यना प्रयोगवडे थाय छे, एम स्वभाव अने प्रयोगे मळी बनेल वस्तुने मिश्रसा पुद्गल कहे छे.

२६६ प्र०–श्रीतीर्थंकरना जन्मादिककल्याणक वखते साते नरके केटलु अजवाळु थाय ते कहो

उ०–पहेली नरके सूर्यसमान उद्योत, २ बीजीए वादळे ढांकेला सूर्यसमान, ३ त्रीजीए पूनमना चन्द्रसमान, ४ चोथीए वादळे ढांकेला चन्द्रमासमान, ५ पांचमीए ग्रहोना उद्योत समान, ६ छठीए नक्षत्रना उद्योत समान, ७ सातमीए ताराना उद्योत समान.

अथ प्रास्ताविक गाथा—

कालेसुपत्तदाणं, समत्तविसुद्धिबोहिलाभं च ।
अंते समाहिमरणं, अभव्वजीवा न पावंति ॥ १ ॥
अखंडियचउत्थो, वयगहणाउ जोय गीयत्थो ।
तस्स सगासे दंसण, वयगहणंसोहिगहणं च ॥ २ ॥
कत्थय जीवो बलीओ, कत्थय कम्माइं हुंति बलीआइं ।
जीवस्सय कम्मस्सय ॥ ३ ॥
कालसहावोनियइ, पुव्वकयंपुरसकार ए गंता ।
मिच्छं तंत चेवओ, समासओ होतिसमत्तं ॥ ४ ॥
नव हि जीववहकरणं, करायण अणुमोदिय जोगेहि ।
कालतिएहिंगुणीएं, पाणीवहडुस्सतेयाल ॥ ५ ॥ अस्यार्थः

साधुने पहेलाव्रतना नवकोटी पच्चक्खाण छे पण तेहना भांगा २४३ थाय इम २७ करवाना २७ कराववाना २७ अनुमोदवाने विषे निषेधे इम ८१ थाय ते काले त्रणेगुणेगुणी त्रिगुणाकरतां २४३ भेदे साधुने पच्चक्खाण होय जावजीवलगे इत्यर्थः ।

२६७ प्र०—छ प्रकारना पुद्गलनुं स्वरूप कहो.

उ०—१ बादर ते खडी माटी पाषण प्रमुख जाणवा, केमजे ते पदार्थोने छेद्या थकां तेना खंडो एकमेक न रहे, पण भिन्नभिन्न नजरे देखाय छे, माटे बादर बादर ते पहेलो भेद, २ बादर ते घी, दूध, पाणी, तेल, मध, गोळ, खांड इत्यादिकना पुद्गलने बादर कहिये, केमजे तेमने छेद्यां थकां भिन्न न थाय एकमेक मळेलांज रहे छे. ३ बादरसूक्ष्म ते शरी-

रनी छाया छता छायडो धूमाडा वगेरेना पुद्गलो नजरे देखाय छे, पण हाथमां ग्रहवाय नहि, माटे बादरसूक्ष्म, ४ सूक्ष्मबादर ते गंध, रस, स्पर्श शब्दादिकना पुद्गलो आंखे देखाता नथी, परंतु स्पर्शादिके लक्षणे जणाय छे, माटे तेने सूक्ष्मबादर कहिए, ५ सूक्ष्म ते अष्टकर्मवर्गणाना पुद्गलो चार स्पर्शवाळा छे ते नजरे देखाता नथी माटे, ६ सूक्ष्मसूक्ष्म ते छुटो शुद्धपरमाणुपुद्गल ते बे स्पर्शवाळा अत्यंतसूक्ष्म छे माटे ए रीते छ प्रकारना पुद्गल संसारमध्ये व्यापी रह्या छे, जेम छ कायना जीव व्यापी रह्या छे तेम जाणवा

२६८ प्र०—ज्ञानावरणीयादिकर्मनो बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता केटला गुणठाणा सुधी होय.

उ०—ज्ञानावरणीयनो बंध गुणठाणा १० मासुधी, दर्शनावरणीयनो बंध १० मा सुधी, वेदनीयनो बंध गुणठाणा १२ मा सुधी, मोहनीयनो बंध गुणठाणा नवमा सुधी, आयुकर्मनो बंध गुणठाणा सातमा सुधी, नामकर्मनो बंध गुणठाणा १० सुधी, गोत्रकर्मनो बंध गुणठाणा दशमा सुधी, अंतरायकर्मनो बंध गुणठाणा दशमा सुधी, हवे ज्ञानावरणीयकर्मनो उदय गुणठाणा १२ मा सुधी, दर्शनावरणीयकर्मनो उदय गुणठाणा १२ मा सुधी, वेदनीयकर्मनो उदय गुणठाणा १४ मा सुधी, मोहनीयकर्मनो उदय गुणठाणा १० मा सुधी, आयुकर्मनो उदय गुणठाणा १४ मा सुधी,

नामकर्मनो उदय गुणठाणा १४ सुधी, गोत्रकर्मनो उदय गुणठाणा १४ मा सुधी, अंतरायकर्मनो उदय गुणठाणा १२ मा सुधी, ज्ञानावरणीयकर्मनी उदीरणा १२ मा गुणठाणा सुधी, दर्शनावरणीयकर्मनी उदीरणा १२ मा सुधी, वेदनीयकर्मनी उदीरणा ६ सुधी, मोहनीयनी १० मा सुधी, आयुकर्मनी ६ सुधी, नामकर्मनी १३ मा सुधी, गोत्रकर्मनी १३ मा सुधी, अंतरायनी १२ सुधी, हवे ज्ञानावरणीय कर्मनी सत्ता गुणठाणा १२ मा सुधी, दर्शनावरणीय कर्मनी सत्ता १२मा सुधी, वेदनीयकर्मनी सत्ता १४मा सुधी, मोहनीयकर्मनी सत्ता ११ मा सुधी, आयुकर्मनी सत्ता १४ मा सुधी, नामकर्मनी सत्ता १४ मा सुधी, गोत्रकर्मनी सत्ता १४ मा सुधी, अंतरायकर्मनी सत्ता १२ मा सुधी होय, एवं बंध उदय उदीरणासत्तानुं स्वरूप कह्युं छे. ए सर्व भाव केवलज्ञानी एकजीव स्वरूपे द्रव्य गुणपर्याये छे तेह्वा अनंताजीव देखे, एकेक जीवने अनंताकर्म जे रीते छे ते देखे, एकेक जीवने अनंताभव देखे छे. एकेक जीवना अनंताभाव देखे छे, भावते परिणाम इम केवली सर्वभाव आस्तिनास्तिरूपे जीम छे ते तीम जाणे ते देखे इति भाव।

२६९ प्र०–अचित्तमहास्कंध ते शुं ? अने तेनो समुद्घात तथा केवळीसमुद्घात केवी रीते थाय छे तेनुं स्वरूप कहो.

३०–द्विप्रदेशी परमाणुओना स्कंधथी मांडीने असख्यात प्रदेशीयास्कधपर्यंत एकपुद्गलस्कध थाय, तेणे करी लोक पूराय नहि, वळी अनतापरमाणुओमळीने जे स्कध बने तेथी पण लोक सवळो पूराय नहि, पण अनंतबादरपरमाणुनो एकस्कध तेवा अनतास्कधमळे त्यारे ते अचित्तमहास्कधरूप थाय, तेणेकरी चौदराजलोक पूराय ते आवी रीते–ते स्कध विश्रसापरिणामे परिणमीने केवलीसमुद्घातनी परे दडरूप करीने दिशि तथा विदिशिमा विस्तरी खडआ पूरी चौदराज सपूर्ण स्पर्शीने पाछो केवलीसमुद्घातनी परे सवरीने स्कधरूप थाय, ते स्कध असख्यातआकाशप्रदेशअवगाहीने रहे, ते अचित्तमहास्कधक्षेत्रआसरी अढीद्वीपमाही करे, पण ते थकी बाहेर न करे, जेम केवळी केवलीसमुद्घात अढीद्वीपमाहे करे, पण बहार नहि, तेम ए पण जाणवु, तथा केवळी पण केवळी समुद्घात करे तेवारे पोताना जे आठ रुचक प्रदेश छे ते मेरुना मध्य जे रुचक प्रदेश छे, त्यां जाय, स्थापे, पछी त्याथी विस्तारीने सपूर्ण चौदराजलोक पोताना आत्मप्रदेशे परे, त्या प्रथम चौदराज प्रमाण सिद्धो उचो दडरूपे आत्मप्रदेश विस्तारे पछी रवैयाना चार मंथान भागनी परे कपाट आकारपणे विस्तारे, पछी माहीना आतरा पूरे, ए सर्व समुद्घातक्रिया केवळी भगवान् जेमनु आयुष्य अल्प होय अने कर्म घणा रह्या होय तेज केवळीभग-

वान् समुद्घात आठ समयनो करे पण बीजा नहि; पछी एम पोताना आत्मप्रदेशे चौदेराजलोकमां रहेल प्राणीमात्रना आत्मप्रदेश साथे मेळवी प्रदेशोदये कर्म भोगवीने दंड, कपाट, मंथानादि अनुक्रमे संवरीने अयोगी थया थका सिद्धि वरे इत्यादि स्वरूप विस्तारे; ग्रंथान्तरथी (लोकप्रकाशग्रन्थे कह्युं छे) गुरुगमथी जाणवुं.

२७० प्र०—निगोदनुं स्वरूप कहो तथा जीव अने पुद्गलनी शक्तिनी सूक्ष्मता जिनवचनानुसार दर्शावो.

उ०—असंख्यातप्रदेशी लोक ते प्रमाणे गोला पण असंख्याता छे, गोलो ते शुं ? असंख्याति निगोदे एक गोलो इति ते उपर गाथा—

लोएअसंखजोयण, माणेपइय जोयणंगुला संक्खा ।
पइतं असंखअंसा, पइअमसंखया गोला ॥ १ ॥
गोलो असंख निगोओ, सोअणअसंखपईपएसं ।
कम्माणंवग्गणाणंता .... ॥ २ ॥
पइवग्गणाअणंता, अणुअ पइंअणंत पज्जाया ।
एवं लोगसरुवं, भाविज्ज तहत्तिजिणवुत्तं ॥३॥ अस्यार्थः—

चौदराजलोक असंख्याती कोडाकोडी जोजननो छे, ते मध्ये एक जोजन लइए, तेना अंगुल असंख्याता थाय, ते मध्येथी एक अंगुल लीजीए, तेना असंख्यातमा भागप्रमाण, एकभाग लइए, ते मांहे असंख्याता गोळा छे, ते मांहेलो एकगोळो लइए ते एकगोळामांहि असंख्याति निगोद छे, ते

मांहेली एकनिगोद लइए ते निगोदमां अनता जीव छे, ते माहेलो एकजीव लइए तेमां असंख्याता प्रदेश छे, ते एकजीवने प्रदेशे प्रदेशे अनतीकर्मवर्गणा छे, ते माहेली एक कर्मवर्गणा लीजीए ते माही अनतापुद्गलपरमाणुआ छे, ते माहेलो एक परमाणु लीजीए, ते मांही अनता पर्याय समकाळे परिणमे, एवी जीव अने पौद्गलिक शक्तिनी अत्यतसूक्ष्मता जाणवी, एवु श्रीवीतराग वचन तहत्ति करी मानीए हवे निगोदीआ जीवना भवनी सख्या काळ मान विचारे छे.—असख्यात समयनी एक आवली थाय, २५६ आवलिनो एक निगोदीआ जीवनो क्षुल्लक भव थाय, एक श्वासोच्छ्वासमाहे चुवालीससेंने साडीच्छेतालीस आवली थाय तेवा भव निगोदीओ जीव एक श्वासोच्छ्वासमां १७ भव झाझेरा करे, एटले ते जीव सत्तरवार मरे अने अढारमी वार उपजे, केमजे एक श्वासोच्छ्वासमां १७ भव अने ९४॥ आवळी जेटलो काळ थाय छे ते प्रमाणे गणता बे घडीमां ३७७३ श्वासोच्छ्वास थाय छे, तेटलामा निगोदिआ भव ६५५३६ थाय, ए लेखे एक दिवसमां श्वासोच्छ्वास ११३१९० अने तेमा भव एटला श्वासोच्छ्वास निरोगी युवान पुरुषना थाय, तेवा एक दिवसमा १९६६०८० भव निगोदिओ जीव करे, ते हिसाबे एक मासना श्वासोच्छ्वास ३३९५७०० गणता निगोदीआ भव ५ क्रोड ८९ लाख ८२ हजार अने ८०० थाय,

अने एक वरसमां ४ क्रोड, ७ लाख, ४८ हजार, अने ८०० गणतां तेने विषे निगोदीओ जीव ७० कोडी ७७ लाख ८८ हजार अने ८०० वार जन्ममरणरूप भव करे, एवा भव पूर्वे आ जीवे असंख्यातेकाले असंख्याता अधिक भव कीधा, एम अनंताकाले अनंता भव कीधा, अनंता अतीतकाळमां अनंताअनंत भव कर्या, ते श्री वीतराग परमात्मानुं वचन सद्दहिने, हे चेतन ! तुं मनमां कांइक पापनो त्रास आण अने आ तारा पोताना जीवनी दया चिंतवीने तेने आवा भयंकर जन्ममरणना फेरामांथी मुक्त करवानो श्रीजिन प्रणीत मार्ग छे, तेने अप्रमत्तपणे यथार्थ आदर. इतिभाव. जूनी प्रतिमां नीचे प्रमाणे पाठ छे. तथा एक गोलामांहे असंख्याति निगोद छे. निगोदशरीर एकशरीरे अनंता जीव छे, एटले अनंते जीवे मलीने एक शरीर बांध्युं छे, आप आपणा तेजसकार्मण जूदा छे. औदारिक एक छे. साथे आहारनिहार साथे मरण २५६ आवलीनो आयु भोगवी पर्याप्ति पूरी करीने मरे तेहनी निश्राए बीजा कोइ अपर्याप्ता होय नहीं ते अनंत केटला छे ? जेटला कंदमूल मध्ये अनंता छे ते कंदमूल चौदराज प्रमाणे ढग करीए तेमांहे पण सूक्ष्मनिगोदना एकशरीरना अनंता निकल्या तेमांहे न समाय एहना अनंताअनंत भव घणा छे. तिहांना निकळ्या तेमांहेज समाय, तथा कंदमूलना ते बादरनिगोदिया छे व्यवहारराशि-

मांहि आव्या छे अनताकदादिक माहे छे. तथा जेटला जीव सूक्ष्मनिगोदगोलकमाहेयी निकल्या छे ते व्यवहारराशिमाहे आव्या ते कालादिक लब्धि पामी सिद्धिवरे तेटला अव्यवहारनिगोदमाहेयी नीकळी उचा व्यवहारराशिमाहे आवे पण व्यवहारराशि तो ओछा न थाय, कदापि मुक्ति जावानो विरहकाल होय तेटला काल सुधी सूक्ष्म अव्यवहारराशि निगोदनो जीव कोइ व्यवहारराशिमां न आवे एहवु उपमितिभवप्रपचग्रथमाहे कह्यु छे

२७१ प्र०—बादरसाधारणवनस्पतिकायमांयी जीव मरीने सूक्ष्म गोळकनिगोदमा जाय तो त्या केटलो काळ उत्कृष्ट रहे

उ०—अढीपुद्गलपरावर्तन, मतातरे असख्याति उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी पण कह्यु छे, त्यायी नीकळी बादर निगोद कंदमूळ माहि उत्कृष्ट ७० कोडाकोडी सागरोपम सुधी रहे, एकनिगोदनो गोळो असख्याताआकाशप्रदेश अवगाही रह्यो छे, तथा अव्यवहारराशिया निगोदीआ जीव जे गोलकमा छे ते भवस्थितिपाकना उचा आवे ते एकसमये उत्कृष्ट केटला नीकळे ? तोके जेटला अढीद्वीप माहीयी सकळकर्म खपावी एकसमये जेटला जीव सिद्धि वरे, तेटला सूक्ष्मनिगोदमायी नीकळी व्यवहारराशीमा आवे, ते जघन्य एकसमयमा एक, बे, त्रणथी उत्कृष्ट १०८, अने तेटलाज सूक्ष्म

निगोदमांथी नीकळी व्यवहारराशीमां आवे तथा व्यवहारराशीया जीव पाछा निगोदगोळकमां जाय तो ते एकादिथी मांडी उत्कृष्ट अनंता सुधी जाय, एम व्यवहारराशीया नीकळे तो उत्कृष्ट अनंता नीकळे, पण अव्यवहारराशीया तो उत्कृष्ट १०८ नीकळे, तेमां भव्य अने अभव्य बेउ होय ते सूक्ष्म निगोदना अनंता नीकळ्यावाद निगोदमांहे समाय, बीजामांहे नहि, तथा एकसूक्ष्म निगोदमांहे अनंता जीव केटला छे? तोके त्रण काळना जेटला समय अनंता छे, तेथी अनंता जीव एक निगोदमांही छे, तेथी ज्यारे केवळी भगवंतने सिद्धना जीवनी संख्या पुछीए, त्यारे कहे छे के एक निगोदने अनंतमे भागे सिद्धमां जीवो छे, एम ज्यारे पुछीए त्यारे जवाब मळे, केम जे पूर्वोक्त निगोदअनंतानुं स्वरूप विचारतां ए वात यथार्थ विवेकीने समजमां आवे, माटे उत्तमजीवे श्रीवीतराग परमात्मानुं वचन सदा सर्वदा सद्दहवा योग्य छे, आपणी बुद्धिनी मंदताने लीधे निरोगी, निर्मम वीतराग प्रभुना वचनमां संदेह लाववो नहि, केम जे एमणे तो पोताना ज्ञानमां दिठुं तेज कह्युं छे अने तेज सत्य छे. जूनी प्रतिमा नीचे प्रमाणे पाठ छे. व्यवहारराशिया बादरनिगोदमांहे जे अनंता छे ते करी कर्मनी बहुलताए सूक्ष्मनिगोद गोलकमांहे जाये ते सित्तेर कोडाकोडी सागरोपम सुधी तिहां रहे वळी पाछा कंदादिक साधारणमांहे आवे इम संबंधे सूक्ष्मना

बादरनिगोदमाहे आवे वली बादरना सूक्ष्ममाहे जाय एम बेस्थानके आवागमन करता जीव उत्कृष्टो रहे तो अढीपुद्गलपरावर्तनपर्यंत रहे पछी पृथ्वी-आदिक स्थानके फरसतो उचो आवीने मनुष्य थाय, तीहा व्यवहारराशियो भव्यजीव सामग्री मळे बोधिबीज पामी सिद्धिवरे तथा वली कोइ वा-चनाए इम कह्यु छे जे कंदमूलसाधारणमाहि थी जीव सूक्ष्मगोलकमाहे जाय तो उत्कृष्ट काल रहे तो असख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल सुधी सूक्ष्मनिगोदना गोलकमाहे रहे, तिहाथी नीकळ्यो बादरनिगोदमाहे उत्कृष्टो ७० कोडाकोडी सागर सुधी रहे, एम सर्व बे निगोद मळी आवागमन करता उत्कृष्टे अढीपुद्गलपरावर्त सुधी व्यवहार राशियो जीव निगोदमाहि रहे एकनिगोदनो गोलो असख्याताआकाशप्रदेश अवगाहि रह्यो छे तथा अ-व्यवहारराशिया जे निगोदमाहि छे ते भवस्थितिनी परिपक्वता सुधी उचा आवे ते एकसमये केटला नीकळे ? जेटला अढीद्वीपमाहियी सकलकर्म खपावी एकसमये जेटला सिद्धिवरे तेटला सूक्ष्म निगोदमाहेथी निकळी व्यवहारराशिमा आवे एक समये एक, बे, त्रण उत्कृष्टे एकसमये अढीद्वीपमाहे १०८ सिद्धिवरे तेटला सूक्ष्मनिगोदमाहेथी निकळे व्यवहारराशिपणो पामे तथा व्यवहारराशियो निगो-दना गोलामाहे जाय तो एकसमये एक, बे, त्रण एम अनता सुधी जाय ते व्यवहारराशिया निकळे

तो अनंता सुधी एकसमये निकळे पण अव्यवहारिया ते एकसमये उत्कृष्ट १०८ निकळे तेमांहे भव्य अभव्य बे होय. ते सूक्ष्मनिगोदना अनंता निकळ्या बादरमांहि समाय बीजामां नहीं, तथा एक सूक्ष्मनिगोदमांहे अनंताजीव केटला छे ते त्रण कालना समय अनंता छे तेहथी अनंताजीव एक निगोदमांहे छे, तेणेकरी जेवारेजेवारे पुछीए तेवारे जिनेश्वर कहे छे जे "एकस्सनिगोअस्स अणंत तमो भागो य सिद्धिगओ" एटले सूक्ष्मनिगोदथी बादरनिगोदमांहे निरंतर आवे छे ते ते आवे तो एकसमये १०८ सुधी उत्कृष्ट आवे तथाचोक्तं—सिज्झंति य तियाखलु, इहय ववहाररासिमज्झाओ। इतिअणाईवणस्सईमज्झाओ, तित्तियाचेव ॥ १ ॥ इतिश्रीभुवनभानुकेवली चरित्रमध्ये उक्तं. एम निगोदनो विचार लख्यो छे.

२७२ प्र०—सिद्धशिलानुं किंचित् स्वरूप वखाणो.

उ०—जेम साबुनो गोळो उपर जाडपणे समो अने नीचे टेकरारूपे विस्तरतो तेम अथवा उंधी उवाडी राखेल अर्धछत्रआकारे, श्वेत, सुवर्णमय, स्फटिकरत्नमय सरखी निर्मळ मध्ये आठजोजन जाडी परिधिविस्तारमां ४५ लाख जोजन प्रमाणे अढीद्वीपरूप मनुष्यक्षेत्रनी उपरे ढांकण समान, छेडे जातां माखीनी पांख समान पातळी, लोकना अग्रभागे रहेली अतिनिर्मळ सिद्धशिला शोभी रही छे, जेनी उपर $\frac{1}{6}$ गाउए एटले एक गाउने छठे भागे अनंता

सिद्धपरमात्माओ विराजे छे, तेमने मारो त्रिकरण शुद्धिए नमस्कार हो

२७३ प्र०–अष्टमहासिद्धिना नाम अर्थसहित कहो

उ०–प्रथमलघिमा ते शरीरनु हलवापणु थाय जलपुष्प उपरि तथा कटकउपर मुनि चाले पण किलामना न पामे १, बीजी वसिमासिद्धि तेहथी सिंह, सर्प, देवमनुजादिक वश्य थाय २, त्रीजी सत्यसिद्धि परमैश्वर्यपणु पामे चक्रवर्त्ति इद्रादिक थकी अधिकी ऋद्धिविकुर्वे ३, चोथी काम्यसिद्धि तेथी अत्यत बलसपदाहोय, पृथ्वीपर्वतादिक उपाडे अचिंतित पराक्रमी होय ४, पाचमी महिमासिद्धि तेथी मोटु लाखजोजनु शरीर करे ५, छट्ठी अणिमासिद्धि तेथी नाहनु कुथुआ जेवडु रूप करीने भीतमायी तथा पर्वतमायी निकळे अने पोते विघ्न न पामे ६, सातमी यत्रकामावसायित्वसिद्धि तेथी जिहा उपयोग दे तिहा जाणे निर्मल श्रुतज्ञान अवधिज्ञानने योगे ७, आठमी प्राप्तिसिद्धि तेथी सकल मोटीवस्तु प्रत्यक्षपणे देखे रुपिवस्तु देखे अवधिज्ञानदर्शन त्रण योगे ८, ए अष्टमहासिद्धि मुनिराजने होय तेहना शब्दार्थ जाणवा

२७४ प्र०–क्षणमात्र सुख अने बहुकाळ दु ख ते शी रीते ?

उ०–आ जीव आ ससारना अनुकुळ इद्रिय विषयना भोगादिकने विषे लुब्ध थयो थको मधुबिदुआना दृष्टाते क्षणमात्र सुख अने बहुकाळ दु ख भोगव्या

करे छे, ए मधना एकटीपानी तृष्णामां पोतानी आसपास अनंतगणुं व्यापी रहेलुं दुःख हिसाबमां गणतो नथी, तेम स्त्रीसेवनमां जाणे साक्षात् अमृतसार महास्वादिष्टभोजन प्राप्त न थयुं होय, तेवो लोलुपी थयो थको मुंड सुकरनी पेठे निज स्वरूपने तद्दन विसारीने अथवा उवेखीने खरज खणवाना स्वादना परे अथवा मधुलिप्त खड्गधाराने चाटवानी परे प्रथम सेवन करतां सुख वेदे, अने पाछळथी तत्काळ एकक्षणवारमां शरीर वीर्य क्षय थतां घाभरा जेवो थइपडी निर्माल्य नपुंसकरूप अनुभवे छे, अने त्यारेज ते पोतानी मुंडसुकरपणानी निर्लज्ज बाळचेष्टाने अंतरदृष्टिए धिक्कारे छे, तेम आ संसारने विषे चक्रवर्ति आदिनां विषयनां उत्कृष्ट पौद्गलिक सुख नर्कादिकने विषे तेना विपाककाळ आगळ तुच्छ अल्पकालिक क्षणिक छे; छतां हा! इति खेदे आ भवनी अनादि काळनी विषय वासना जाणताने पण बाळरूप करनार एवी महामोहमय प्रबळताथी चेतनने सावधान रहेवानुं छे, जुओ बारमा ब्रह्मदत्त चक्रवर्तिनुं आयुष्य मात्र ७०० वरसनुं हतुं ते भोगवीने नरके गयो, तिहां ३३ सागरनुं आयु भोगवे छे. तेटलो काल विषयसुख भोगव्या ते उपर केटलुं दुःख तेहनी विगत वर्ष १०० दिवस ३६००० थाय तेवारे ७०० वर्षना दिवस २५२००० थाय

तेहना मुहूर्त ७५६००० ते एकमुहूर्त्तना ३७७३ श्वासोच्छ्वास थाय ७५६००० ते गुणा करतां २८५२३८८०००० एटले ७०० वर्षना एटला श्वासोच्छ्वास थाय तथा सागरोपम ३३ ना पल्योपम त्रणसेत्रीसकोडाकोडी थाय तेहना आंक ३३००००००००००००००० तेवारे एकश्वासोच्छ्वास सुधी संसारमध्ये विषयना सुख भोगव्या ते उपरे ११५६९८५ ईग्यारलाख छपन्नहजार नवसेंने पचासी एटला पल्योपम थाय सातमी नरके दु:ख भोगवे छे एटले "खणमित्तसुखबहुकालदुरकम्" ए पद सूत्रे कह्यु छे तेहनो ए भावार्थ जाणवो. अने तेटलामा अतिअधर्मपणे नि:शंकतार्थी भोगवेला जे विषयभोगो तेना दारुणविपाको ते सातमी नरकने विषे ज्यां आख मीचीने उघाडीए एटली वार पण जीवने लेशमात्र सुख नथी तेने विषे जीव एकलो निराधारपणे भोगवी रह्यो छे माटे ज्ञानी कहेछे जे—

प्रभाति

विषयवासना त्यागो चेतन, साचे मारग लागोरे,
तप जप क्रिया दानादिक सहु, गीणति एक न आवेरे,
इंद्रिय सुखमे झल्यु ए मन, वक्र तुरग ज्यु धावेरे. इत्यादि

एम जाणी आ संसारना मूळ जे विषय कषाय मोहादि छे तेनो जय करवाने माटे परमात्माना वचनमा ज्ञानपूर्वक विरक्तबुद्धि राखी इंद्रियोनो जय करवो, जेथी विषय त्यागे पंचमहाव्रतादि प्रत्रज्या उदय आवे, कषायनी मंदताए गुण-

ठाणांनी श्रेणिए चढे अने स्वरूपाचरण चारित्ररूप शुद्धात्मोपयोग तीव्र वर्ते.

२७५ प्र०—मिथ्यादृष्टि अने सम्यग्दृष्टिना आचार तथा उपयोगने सरखावो.

उ०—मिथ्यादृष्टिजीवने शुभाचार होय पण शुभोपयोग न होय, अने सम्यग्दृष्टिजीवने शुद्धोपयोग होय तेने शुभोपयोग आचरणरूपे होय पण आदरण न होय, अने मिथ्यादृष्टिजीवने शुभआचाररूप होय, पण ते अशुद्धोपयोगना घरनो अशुभोपयोग होय छतां तेने शुभोपयोग उपचारे कहिये.

२७६ प्र०—युगप्रधानना गुणो कहो.

उ०—युगप्रधानना गुणो १४ छे. तत्र गाथा—

पडिरुवोतेयस्सि, जुगप्पहाणागमोमहुरवक्को ।
गंभीरोधीमंतो, उवएसपरोयआयरिओ ॥ १ ॥
अपरिस्सविसामो, संगहसिलो अभिग्गहमईय ।
अविकत्थणोअचवलो, पसंतहियओगुरुहोई ॥२॥
एवं चतुर्दशगुणा भवन्ति ।

२७७ प्र०—कया ठेकाणे त्रणयोयो करवी.

उ०—भद्रबाहुस्वामीकृत ओघनिर्युक्तिमां ७२ मी गाथामां त्रणयोयो करवी कही छे. यथा—

अवस्सगंतुकाओ, जिणोवइट्ठंगुरुवएसेणं ।
तिन्निथुई पडिलेहा, कालस्सविहिइमोतत्थ ॥ १ ॥

२७८ प्र०—तपदान अने अनशननुं शुं फल छे ?

उ०—तवसयमेण मुक्खो, दाणेणहुतिउत्तमाभोगा ।
देवचणेणरज्ज, अणसणमरणेणईदत्त ॥ १ ॥

२७९ प्र०—अभव्यजीवो शु नथी पामता

उ०—इदत्त चक्कीत्त, पचोत्तरविमाणवासित्त ।
लोगतादेवत्त, अभव्वजीवा नपावति ॥ १ ॥

२८० प्र०—कया अभव्यजीवो थया

उ०—सगमकालयसूरि, कविलाअगारपालयादोवि ।
एएसत्तअभव्वा, उदाइनिवमारओचेव ॥ १ ॥

२८१ प्र०—तुच्छनु स्वरूप कहो

उ० तुच्छभत्तपाणु, तुच्छानिंदाय तुच्छमारभो ।
तुच्छा जहा कसाया, ताह तुतुच्छससारे ॥ १ ॥

२८२ प्र०-कया जीव अहींथी मरीने महाविदेहमां नवमे वर्षे केवली थाय छे?

उ०—इहभरहेकेइजीया, मिच्छादिठ्ठीभद्दयाभव्वा ।
तेमरीउणनवमे, वरसे होहतिकेवलीणो ॥ १ ॥

२८३ प्र०—चमरेन्द्रनो केवो परिवार छे?

उ०—चमरेन्द्रने पाचअग्रमहिषी छे. आठआठसहस्र देवीनो परिवार एम ४० सहस्र देवीओथी भोग भोगवतो विचरे छे

२८४ प्र०—षट्दर्शनना नाम कहो

उ०—१ बौद्ध, २ नैयायिक, ३ सांख्य, ४ जैन, ५ वैशेषिक, तथा ६ चार्वाकदर्शन ए छ दर्शनना नाम.

२८५ प्र०—त्रेसठशलाकापुरुषोना जीवो केटला तथा माता पिताना जीवोनी संख्या केटली छे?

उ०—त्रेसठशलाका पुरुषोना जीव ५९ छे. तेहनी विगत—त्रणजीव चक्रवर्त्तिनी पदवीना ओछा थया तथा एक वासुदेव थया ए ४ जीवो घट्या तेथी ५९ थया. तथा ५९ जीवना माता ६० पिता ५१ कह्या छे तेहनी विगत. २४ जिननी माता, ९ चक्रीनी माता, ९ वासुदेवनी माता, ९ बलदेवनी माता, ९ प्रति वासुदेवनी माता एवं ६० माता जाणवी. हवे पिता ५१ तेहनी विगत, २४ जिनना पिता, ९ चक्रीना पिता, ९ वासुदेव तथा बलदेवना पिता, ९ प्रतिवासुदेवना एवं ५१ पिता जाणवा. एणी रीते पदवी ६३, जीव ५९, माता ६०, पिता ५१ ए रीते अर्थ.

२८६ प्र०—श्रीऋषभदेवस्वामी केटला वर्षनो काल गृहस्थाश्रमे वस्या तथा सर्वायु केटला वर्ष जीव्या.

उ०—ऋषभदेवस्वामी वीसलाखपूर्व कुमारपणे रह्या तेहना वर्ष केटलां चौदलाखकोडाकोडी इग्यारहजारकोडाकोडी वली बसेंकोडाकोडी १४११२००००००००००००००००० एटला वर्ष कुमारपणे रह्या त्यारपछी ६३ लाखपूर्व राज्यावस्था भोगवी तेहना वर्ष केटला? चुंवालीसलाख कोडाकोडी पीस्तालीसहज्जारकोडाकोडी बत्रीसें कोडाकोडी एंसीकोडाकोडी तेहना आंक

४४४५३२८००००००००००००००० त्यारपछी एकलाखपूर्व दीक्षाकेवलपणे रह्या तेहना केटला वर्ष सित्तेरहज्जारकोडाकोडी पाचसेकोडाकोडी ते उपरे ६० कोडाकोडी तेहना आंक ७०५६००००००००००००००००० एटला वर्ष थया एम सर्वे चोरासीलाखपूर्वना वर्ष सरवाळे ५९ लाखकोडाकोडी २७ हज्जारकोडाकोडी ते उपरे वली ४० कोडाकोडी एटला वर्ष जीव्या. एटला वर्ष श्रीऋषभदेव सर्वायु जीव्या, एकडा उपर १९ मींडा आवे त्यारे कोडाकोडी थाय एकडा उपर २१ मींडा आवे त्यारे कोडाकोडीकोडाकोडी थाय. तथा एकडा उपर २९ मींडा आवे तेवारे कोडाकोडीकोडाकोडी थाय इत्यर्थ ८४ लक्षपूर्वनो जाणवो

२८७ प्र०—प्रकृतिबंध, स्थितिबंध, रसबंध, तथा प्रदेशबंध क्यारे क्यारे नीपजे ?

उ०—योगे प्रदेशबंध प्रकृतिबंध नीपजे ते कर्मवर्गणाकलनो संचय थाय, तथा योगनें लेश्या बे एकठा मळे त्यारे प्रकृति ने प्रदेशबंध नीपजे, तथा ध्यानकषाय ए बे मळे त्यारे स्थितिबंध रसबंध नीपजे, तथा जिहां कषायध्यान आवे त्यारे च्यारे भेला थाय इत्यर्थ ।

२८८ प्र०—शास्त्रना कहेला भारनुं प्रमाण कोइक कहो ?

उ०—छसरसवनो एक जव, ३ जवनी एक गुंजा (च-

णोठी), ३ गुंजानो एक वाल, सोळवालनो एक गदीआणो, दशगदीआणे एक पल, दोढसोपले एकमण, दशमणनी एकधडी, दश धडीनो एक भार जाणवो.

२८९ प्र०—अढारभारवनस्पति कहेवाय छे त्यां भारनुं प्रमाण केटलुं, तथा ते वनस्पति अढारभार कइ कइ छे ते कहो.

उ०—३ क्रोड, ८१ लाख १२ हजार नवसें सीतोतेर मणे एकवनस्पतिभार थाय छे, तथा प्रत्येक जातनी वनस्पतिनुं एक एक पान लइने एकठो ढगलो करीए, ए प्रमाणमां चारभार वनस्पति केवळ फुलमय छे, तथा आठभार वनस्पति फळ फुलपानमय छे. तथा छभार वनस्पति वेलनी छे, एम एकंदर १८ भार वनस्पति जाणवी.

२९० प्र०—मुनिराज कया चोविसपरिग्रहना त्यागी होय.

उ०—क्षेत्रंवास्तुधनधान्यद्विपदचतुष्पदंयानंशय्जासयनं भाण्डं कुप्यंचेति बहिर्दश, मिथ्यात्ववेदहास्यादिषट्कषाय चतुष्टयंरागद्वेषावाभ्यंतराःचतुर्दश ॥

२९१ प्र०—महारोग केटला तथा तेनो संतानपरिवार केटलो कह्यो छे ?

उ०—चार मोटा रोग कह्या छेः—१ ज्वर, २ भगंदर, ३ कोढ, ४ धातुक्षय. तेनी चार स्त्रीओनां नामः— तावनी स्त्री तरस, भगंदरनी स्त्री हेडकी, कोढनी स्त्री भूख, धातुक्षयनी स्त्री निद्रा. तथा ते प्रत्येक रोगनां

ते स्त्रीओने समागमे पचिस पचिस छोकरां रूप नानाविध रोगोनी उत्पत्ति छे, पूर्वोक्त प्रत्येक रोगने २५ गुणा करता १०० रोग थाय, ते मध्ये आठ बीजा रोग मेळीए तेवारे वैदकशास्त्रमा वर्णवेल १०८ रोगनी सख्या थाय छे तेनी चिकित्सा निपुण नाडीपरीक्षाना अनुभवी वैद्य यथार्थ करी शके, पण ते सर्वद्रव्यरोग, अने तेना मटाड-नार पण द्रव्यवैद्य जाणवा, पण जे थकी ते द्रव्यरोगो उत्पन्न थाय छे ते भावरोग जीवनी विषयकषायरूप अनादिकाळनी मलिन विकारी परिणति छे, तेना वैद्य तो सनत्कुमार सरखा परि-णतिवत महात्माओ गणधर तीर्थंकरादि जाणवा, जे सर्वऔषधना जाण, तथा सर्वरोगना मटाडनारा छे, माटे हे चेतन । तु मिथ्या शारीरादिकनी ममताने छोडीने तेओने शरणे जा, तेमना वचनने आदरथी स्वीकार अने तेमने मार्गे चालतो अनादि अनतअव्याबाध सुखने अचलपणे अनुभवीश.

२९२ प्र०—एकसौधर्मेंद्रना आउखामा केटली इद्राणीओ चवे ?

उ०—कोडाकोडी दुविस, पचासीलक्खाहुतिकोडीओ ।
इगुत्तरीसहसाकोडी, चत्तारिसयायतदृकोडी ॥ १ ॥
अट्ठावीसकोडी, सत्तावन्नहवतिलक्खाइ ।
सहस्साचउदससया, च्छासीइदेगजमित्थि ॥ २ ॥
इयसक्खादेवीओ, चवतिइगइदजम्ममि ॥ ३ ॥

इद्र विषयसुख भोगवतां एकलाख अठावीस

हजाररूप विकुर्वे, तेनी आठअग्रमहिषीओ प्रत्येक १६ हजाररूप विकुर्वे, त्यारे ते हिसावे इंद्रनुं आयुष्य जे बेसागरोपमनुं छे तेमां २२ कोडा-कोडी ८५ लाख ७१ हजार चारसो अठावी-स कोडी ५७ लाख १४ हजार बसो छीयासी उपर आठ गुणी एटली देवांगनाओ एकइंद्रना आयुष्यमांहि थये.

२१३ प्र०—पांच स्थावर, विगलेन्द्रि, तथा पंचेन्द्रिय क्यां क्यां होय.

उ०—एगेन्दियपंचेंदीया, उड्ढेअहेयतिरियलोएय ।
विगलेंन्दियजीवापुण, तिरियलोएसु मुणेयव्वं ॥ १ ॥
पुढवीआउवणस्स, बारसकप्पेसु सत्तपुढवीसु ।
पुढवीजा सिद्धसिला, तेउनरखित्तितिरियलोए ॥ २ ॥
सुरलोए वावीमज्झे, मच्छअनत्थीजलयराजीवा ।
गेविज्झेनऊवावि, वाविअभावेजलंनत्थी ॥ ३ ॥

२१४ प्र०—नवनियाणानुं स्वरूप तथा ते नियाणाना करनारने केवा हीनफळनी प्राप्ति थाय छे ते कहो.

उ०—१. राजादिक थवानी इच्छा, २. अमात्य थवानी इच्छा, ३. स्त्री थवानी इच्छा, ४. देवभोगनी इच्छा, ५. देवीभोगनी इच्छा, ६. भोग न पासवानुं नियाणुं, ७. श्रावक थवानी इच्छा, ८. दरिद्र थवानी इच्छा, ९ कर्मरहित थवानी इच्छारूपनियाणुं; प्रथमना छ नियाणाना धणी दुर्लभबोधी थाय, प्रायः धर्म सद्दहे नहि, सातमानियाणाना धणीने देशविरति

उदय न आवे, आठमाना धणीने सर्वविरति उदय न आवे, नवमाना धणीने मुक्ति न थाय.

२९५ प्र०–पुरुषवेद, स्त्रीवेद, नपुसकवेद, पचेन्द्रियपणु, अने त्रसपणु, कायस्थितिए लागलगाट तेने तेज पर्याये रहे तो उत्कृष्ट केटलो काळ रहे ?

उ० १. पुरुषवेद, उत्कृष्ट ६०० सागरोपम झाझेरा,
२, स्त्रीवेद, ११० पल्योपम ६ क्रोडपूर्व सुधी,
३, नपुसकवेद, अनती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी सुधी,
४, पचेन्द्रियपणु, १००० सागरोपम झाझेरा,
५, त्रसपणु, २००० सागरोपम झाझेरा,

प्र० २९६–पाचज्ञान त्रणअज्ञान कालथकी जघन्य तथा उत्कृष्टे केटलो काळ रहे

उ०–मतिज्ञान अने श्रुतज्ञाननोकाल जघन्यथी एकसमय उत्कृष्ट ६६ सागरोपझाझेरो, अवधिज्ञान एकसमय ते केम ? विभंगज्ञान समकित पटवजे तेवारे विभंग फीटी अवधिज्ञान थाय त्यारे एकसमय रहि वली पटे, विभगज्ञाननो विभंगज्ञानेज आवे एम अवधिज्ञान जघन्यथी एकसमय होय, मन पर्यज्ञान-जघन्यथी एकसमय उत्कृष्टे देशेउणां पूर्वक्रोडी. एक समय ते किम ? तेवारे अप्रमत्तगुणठाणे वर्तता मन पर्यवज्ञान उपजीने जाय, तिहां एकसमय जाणवो, केवलज्ञाननां धणीने सादिअनंतनोकाल जाणवो. हवे मतिअज्ञानने श्रुतअज्ञानना भागा कालआसरी त्रण-जाणवा, एकअनादि ने अननए अभव्यने १ अनादि

सांत ते ए भव्यने २, सादि अने सांत ते समकितथी पडी पछे चडे तेहने होय ३, सादि अने सांत छे तेहने जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्टे तो अर्द्धपुद्गल परावर्त्त जाणवो ४. हवे विभंगज्ञाननो काल लखीए छीए. जघन्य तो एकसमय, उत्कृष्ट सागर ३३ झाझेरो, मनुष्यनो आयु पूर्वकोडीनो पाली सातमी नरके उत्कृष्टे आउखे जाय एटले एक पूर्वकोडने तेत्रीस सागर थाय, हवे ए आठे ज्ञाननुं आंतरु कहे छे. मतिज्ञाननुं आंतरु जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनुं होय, उत्कृष्टे अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त माठेरुं होय एम एणे प्रमाणे श्रुतज्ञान अवधिमनःपर्यवज्ञाननुं पण आंतरु जाणवुं केवलज्ञाननुं आंतरु नथी, हवे मतिश्रुतज्ञाननुं आंतरुं जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट ६६ सागरोपम झाझेरुं होय, हवे विभंगज्ञाननुं आंतरुं जघन्यतो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तो वनस्पतिनो काल इति भाव।

२९७ प्र०—सत्तरप्रकारना मरणनुं स्वरूप कहो.

उ०—१. समयसमय आयुकर्मदळ खपवारूप मरण, २. संपूर्णायु भोगववारूप मरण, ३. नरकादि गतिनुं चरम मरण, एटले फरी ते गतिए मरण न थाय ते; ४. व्रतीनुं मरण, ५. पतंगीआनी पेठे इंद्रिय विषयासक्त मरण, ६. शल्य सहित लज्जायुक्त मरण, ७. चरमशरीरी मरण, ८. अविरतिमिथ्यादृष्टिना बाळ मरण, ९. समकितीव्रतीना मरण, १०. छद्मस्थचारित्रीयाना मरण, ११. देशविरतिश्रावक

मरण, १२. केवली मरण, १३. फांसी शस्त्र, विषादिक थकी मरण, १४ पक्षीपशुओ पासे शरीर करडाववारूप मरण, १५ अणसणी आराधक मरण, १६ वेयावच्च त्यागपूर्वक अणसणी मरण, १७ पादोपगम मरण ते निश्चल छुटी पडेल झाडनी डाळी समान कायाने वोसराववारूप मरण.

२९८ प्र०–भूमी क्या सुधी अचित्त होय?

उ०–१ राजमार्गनी भूमिका पाचआगळ सुधीनी उपरनी सचित्त पछी खोदेली अचित्त, २ शेरीनी भूमी सातआगळ सुधी, ३ घरनी भूमी दश, ४ मळमूत्र भूमिका पदर आगळ, ५ गाय भेंस बकरी वगेरे बांधवाना स्थाननी भूमी २१ आगळ सुधीनी अचित्त, ६ चुला हेठळनी भूमी ३२ आंगळ सुधी ी अ त्त, ७ कुभारना निभाडानी भूमी ७२ आगळ अचित्त, ८ इटवा अध भूमि १०२ आंगळ अचित्त. इति सुयडागवृत्तिमध्ये कयु छे.

प्र० २९९–आवलनी छालमा केटला जीव होय.

उ०–आवलनी छालमा असख्यताजीव कह्या छे, ते पन्नणाजीना पहेलापदमा कयु छे

प्र० ३००–नोकारवालिना १०८ गुण ते कया?

उ०–बारगुण अरिहतनाते अष्टमाहाप्रातिहार्य ज्ञानातिशय १ वचनातिशय २ पुजातिशय ३ अपायापगमातिशय ४ एव १२, आठकर्मना क्षयथी सिद्धना

गुण ८, आचार्यना ३६, "पंचिंदियसंवरणो" इत्यादि गाथा बेथी जाणज्यो, उपाध्यायना २५ इग्यार अंग भणे भणावे एम १२ उपांग भणे भणावे तथा चरण-सित्तरि करणसित्तरि आराधे एवं २५. हवे साधुना २७ गुण ते छव्रत पाले छकायरखवाले १२ पंचेन्द्रियनो निग्रह १७ लोभनिग्रहसंचर १८ क्रोधनिग्रहक्षमागुण एवं १९ भावविशुद्ध २० पडिलेहणाविशुद्ध २१ संग्रहयोगयुक्त २२ मनवचनकायनुं कुशलपणुं २५ शितादिक पीडानो सहवो २६ मरणांत उपसर्गनो सहवो २७ ए सर्व मली १०८ गुण पंचपरमेष्ठिना तेहनी नोकारवाली कहिए इत्यर्थः इति ।

प्र० ३०१–साधु सोएवसा पंचमहाव्रत पाले अने श्रावक सवाछ वसाए पंचअणुव्रत पाले ते केवी रीते.

उ०–पहेलुं प्राणातिपात श्रावकने अणुव्रत तिंहा दया श्रावकने वसा १। नी होय पांचस्थावर ते सूक्ष्म ने बादर एवं १० ते पर्याप्ताने अपर्याप्ता एवं २० एम एणि रिते साधु सोवसाए पंचमहाव्रतपाले, श्रावकने पांचअणु-व्रतमलीने सवाच्छवसा इत्यर्थः तथा वली पांच अणुव्रत श्रावकने होय तेहनो विवरो लखीए छीए, स्थूलबेंद्रियादिक त्रसजीव निरापराध उपेतकरणी न हणे ए प्राणातिपात अणुव्रतनी दया वसा १। नी होय ते पूर्वे [illegible] जो जो, तथा बीजा अणुव्रत मध्ये आपणे काजे रक्षसाधुने समस्तजीव रक्षा वसा २० सूक्ष्म ने बादर वसा १० काढ्याने परने

आत्मा अतट्ठापरट्ठाचेव ५ सापराधने निरापराधे करी वसा २॥ अपरावे हणे पण निरापरावे नहीं २॥ सापेक्षने दया निरपेक्षे वसो १। रहे तथा अत्र गाथा,

तसाथावराय जीवा, सकप्पारभओभवे दुविहा ।
सावराहनिरावराहा, सावक्खा चेव निरवक्खा ॥ १ ॥

जीव वे प्रकारे सूक्ष्म ने बादर जे मव्ये सूक्ष्मना १० मेद तथा १० बादरना, सूक्ष्मना १० ते पांच स्थावर पर्याप्ता ने अपर्याप्ता, एव १० नी दया श्रावकने न होय, एव १० बादर ते किहा ? बेइंद्रि १ तेंद्रि २ चौरींद्रि ३ पचेन्द्रि ४ ए पर्याप्ता ने अपर्याप्ता एव मेद ८ पचेन्द्रिसंज्ञीनो ९ ने असंज्ञीनो १० एव मेद बादरना थया, ते मव्ये श्रावकने सकल्पी न मारवु आरभे जयणा एव ५ मेद रह्या, ते मव्ये अपरावे हणे निरपराधे नहीं एटले २॥ वसा रह्या, ते मध्ये सापेक्ष अने निरपेक्ष निर्दयपणे न हणे एव १। वसानी दया श्रावकने त्रसजीवनी रही इति प्राणापातनी जीवदया १ । वसानी इति । मृषावाद-अणुव्रत २ समस्तमृषावादनियम साधुने २० वसा सूक्ष्म ने बादर करता वसा १० उपयोगे अनुपयोगे " अतट्ठापरट्ठा " आत्मपर एव ५ स्वजन परजन करतां एव २॥ धर्म अपर अधर्म परमार्थे १। तत्र गाथा—

सुहमसायरमलीय, अप्पाणपरमेयग भवे दुविह ।
सयण परग च तहा, धम्मत्थ केवलपरमत्थं ॥ १ ॥

पांच मोटकाजूठा ते सूक्ष्म ने बादर एवं १० ते उपयोगे ने अनुपयोगे एवं २० वसानुं मृषावाद साधु न बोले पण श्रावकने १। वसानुं मृषावाद श्रावकथी पले इति भाव । अथ अदत्तादानअणुव्रत ३ समस्त अदत्तविरमणसाधुने २० वसा सूक्ष्म बादर भेद थइने वसा १० सराजनिग्रह ने निराजनिग्रहथी ५ आत्मनिमित्त परनिमित्तथी २॥ याच्युं तथा अणयाच्युं १। वसा तत्र गाथा—

सुहुमथुलमदिन्नदाणं, निवरायदंडकारियं ।
रायनिगहकारियंपुण, दुविहंकहियं गुरुजणेहिं ॥ १ ॥
नविराहनिगहकरं, अप्पाणंभेयगं दुविहं ।
दिन्नमदिन्नंच परं, भासियवं निउणबुद्धिहिं ॥ २ ॥

अदत्त पांच स्थूलजीव अदत्त १ जिन २ गुरु ३ स्वामी ४ सागारिअदत्त ५ ते सूक्ष्म ने बादर एवं १० उपयोगे तथा अनुपयोगे एवं २० वीसगुणी ए इति । हवे मैथुनअणुव्रततुर्य ४ साधुने समस्त मैथुनविरमण २० मनवचनकाया ३ एवं १० स्वदारा परस्त्री करतां एवं पांच वेश्या तथा परस्त्री २॥ कुमारी तथा अपरस्त्री १ । तत्र गाथा—

मणवयकायमेहुण, मविनियय अविरई ।
इत्थीओवेसापरत्थीओ, कुमारीपरइत्थीनियमो य ॥१॥

स्वदारा १ परस्त्री २ वेश्या ३ दासी ४ कुमारी ५ एवं ते मनवचन तथा कायाए करी एवं १० ते सुपने तथा जागृतपणे एवं वीस २० वसानो शी-

यल साधु पाले तिहा वसा १। तुं होय श्रावकने इति । अथ परिग्रहअणुव्रत पांचमु साधु वे समस्त विरमण २० अभ्यन्तरने बाह्य करतां १० " अतट्ठा य परट्ठा " ए वे भेदे ५ स्त्रीपिहरआत्मनिष्ठातुं २ ॥ स्त्री आत्मदत्त एव वसा १ । तत्र गाथा—

अब्भतरबाहिर परिगहो परसकीयगाचेवईत्थी ।
पियअप्पोईत्थी नियदत्तनीउय ॥ १ ॥

धनधान्य १ खेतवत्थु २ रुपुसोनु ३ कुवइते वासण ४ द्विपद चतुष्पद एव ५ ते बाह्यने अभ्यतरे १० ते इच्छामुर्च्छारूपे २० ते मध्ये श्रावकने वसा १ । परिग्रहपले इति पूर्ण । अथ गाथा—

तसाथावरायजीवा, सकप्पारभओ भवे दुविहा ।
सावराहानिरावराहा, सावक्खा चेव निरवक्खा ॥१॥

इति प्राणातिपातविरमण ।

सुहुमबायरमलीय, अप्पाणपरमेयग भवे दुविह ।
सयण परगचतहा, धमत्थं केवलपरमत्थ ॥१॥इति।२॥

सुहुमथुलमदिन्नदाण, निवरायदड कारियं ।
रायगहकारियपुण, दुविहकहियगुरुजणेहिं ॥ १ ॥

नविराह० १ इति ३, मणवयकायमेहुण० १ इति ४ । अब्भ० १,५ । स्वजनकाजे धर्मकाजे मुकी परकाजे बोल्वानियम ए मृषावादअणुव्रत समस्तमृपा नियम २० सूक्ष्मने बादरभेदे १० आत्मकाजे परकाजे ५ स्वजनपरकाजे २॥ धर्मपरकाजे १। एव द्वितीय, हवे तृतीयअणुव्रत राजनिग्रहकारिउ परासुं

उ०—गाथा—

चत्तारियवाराओ, चउदसपुव्वी करेइ आहारं ।
संसारंमिवसंतो, एकभवे दुन्निवाराओ ॥ १ ॥

३०४ प्र०—आहारकशरीरनुं जघन्य अने उत्कृष्ट आंतरुं केटलुं ?
समयोजहन्नमंतरं, उक्कोसेणंजावछमासा ॥

उ०—आहारसरीराणं, उक्कोसेणं तु नवसहसा ॥ २ ॥

३०५ प्र०—पांच प्रकारना समकित जिनेश्वरे कया प्ररुप्या छे ?

उ०—खईउ खओवसमीयं, वेयगमुवसामीयं च सासाणा ।
पंचविहं समत्तं, परुवियंजिणवरंदोर्हि ॥ १ ॥

३०६ प्र०—क्षेत्र अने कालमांथी सूक्ष्म कोण छे.

उ०—सुहुमोयहोइकालो, ततोसुहुमतरहवइखित्ते ।
अंगुसेठीसित्ते, उसप्पिणीओअसंखिज्जा ॥ १ ॥

३०७ प्र०—अभव्य, दुर्भव्य, अने निकटभव्य, ए त्रणने ग्रंथि-भेदथी पाछा पाडवामां मुख्य हेतु कोण छे ?

उ०—अनादिमिथ्यात्वनी वासनाए पतितपणुं ते अभव्यने होय तथा विषय लालसाए पतितपणुं दुर्भव्यने होय, कर्मवर्गणामांथी कोइककर्मोदये पतितपणुं निकट भवीने यथाप्रवृत्तिकरणग्रंथिदेश थकी कोइ कर्मना उदये पतित थाय, पण विषयवासनाए के लाल-साए नहि, आमां अभव्यने मंदता यथाप्रवृत्तिकरणे करी तीव्रभाव एटले उत्साहने पामे, निकटभवीनी मंदता क्षयोपशमभावने पामे.

३०८ प्र०—यथाप्रवृत्तिकरणनो शब्दार्थ कहो.

उ०—यथा एटले जेवा कर्म उदय आवे तेवा प्रवृत्ति एटले वेदीने खेरवे, करण एटले शुभ परिणामे करी, अर्थात् यथाप्रवृत्तिकरणमां जीव अकाम निर्जराए तथा कषायनी मदताए पूर्वना औदयिककर्मने खपावे, पण नवा रागद्वेषप्रत्ययिक बंध न करे एम यथाप्रवृत्तिकरणमा जीव अकाम निर्जराए तथा कषायनी मदताए पूर्वना औदयिककर्मने खपावे, पण नवा रागद्वेष प्रत्ययिक बंध न करे एम यथाप्रवृत्तिकरणे तो अभवीजीव पण असख्यातीवार गठीदेश सुधी आवे, पण ते गठीने भेदवाना अपूर्वकरणरूपी परिणाम न थाय तेथीं पाछो पडे, इहा गठी ते अनादिरागद्वेषनी निविडगाठ, जेम कोइ वृक्षना काष्ठप्रमुखनी निविडगाठ भेदी न जाय, तेम आत्मानो पुद्गल उपर तन्मय एकीभावरूप ममता ते ग्रथि जाणवी ते अपूर्वकरणपरिणामविशेषे भेद प्रारभे तेहने अते भेदांने अनिवृत्तिकरण पामे ए सर्व क्रियाअतर्मुहूर्तनी त्यारपछी मिथ्यात्वनो जाणवो उपशम समकितनु थवु ते अतरकरण एकसमयनो इति ४ करणनो भावार्थ ।

३०१ प्र०—सम्यक्त्वनी प्राप्तिए शु पामे शु समरे

उ०—समकित पामे थके जीवनो शुद्धोपयोग समर्यो, ते उपयोग समरे, जीव समर्यो, जीव समरे योग समर्यो, योग समरे परिणाम समर्या, परिणाम समरे अध्यवसाय समर्या, वळी बीजी रीते कहीए तो

जीवत्व समरे शुद्धोपयोग समरे, अने तेथी शुद्ध श्रद्धानरूप समकित पामे, तेथी योग समरे, तेथी व्रतपच्चक्खाणादि रुडी रीते उदय आवे तेथी परिणाम सारा थाय, तेथी अप्रमत्तता जीवने आवे, अने तेथी जीवना अध्यवसाय समरे, अने शुक्लध्यान प्रगटे, अने तेने योगे क्षपकश्रेणिआरोही कर्मक्षय करी केवळज्ञान पामी मुक्तिपद वरे, एम परिपाटि सुधारा अने बगाडानी उलट पुलट जाणवी.

३१० प्र०—पर्याप्ति अने प्राणमां शुं फेर ?

उ०—भवोत्पत्तिकाले अंतर्मुहूर्तमां जीव जे करे ते पर्याप्ति, पछी जीवेत्यांसुधी सहचारी रहे ते प्राण कहिए, अर्थात् भवभव प्रत्ये उपग्रहण थाय ते पर्याप्ति अने सहचारी भवोपग्राही संबंध ते प्राण जाणवा.

३११ प्र०—परमाणु अने प्रदेशमां शुं विशेष ?

उ०—स्वाभाविक ते परमाणुं, अने विभाविक ते प्रदेश, जे परमाणु स्कंधने वळग्यो छे, त्यांसुधी प्रदेश कहेवाय, छुटो पडे तेने परमाणु कहिए.

३१२ प्र०—श्रीआदीश्वर भगवान् सिद्धाचळजी पूर्वनवाणुं वार आव्या तेनी अंक संख्या लखो ?

उ०—६९ कोडाकोडी ८५ लाख ने ४४ हजार क्रोडवार आव्या, एने पूर्वनवाणुंवार कहिए.

३१३ प्र०—पांच शरीरनो शब्दार्थ कहो.

उ०—पन्नवणानी टीका मध्ये कह्युं छे. पधानं शरीरमौदारिकं तीर्थंकरगणहरोः

रसातिरेकयोजनसहस्त्रमानत्वादौदारिक, वैक्रियद्विधा भवधारणीय उत्तरवैक्रियं च यदेकभूत्वा अनेकभवति अनेकभूत्वा एकचभवति शेषशरीरापेक्षया बृहत्प्रमाण वैक्रिय ॥ उक्तच ॥

कज्जमि समुप्पन्ने, सयकेवलिणाविसुद्धलद्धिए ।
जएत्थआहारिज्जइ, भणियआहारकं ततु ॥१॥ अथतेजस
सव्वरससिद्धरसाइ, आहारपाकजणगच ।
तेयगलद्धिनिमित्त, तेयग होइ नायव्व ॥ १ ॥

भुक्ताहारपरिणमनकारण ३। अत्यतशुभवैक्रियत्वात् इत्याहारक ४। कर्मणाजातकार्मण कर्मपरिणामच आत्मप्रदेशसहक्षीरनीरवत्, कर्मणो विकार कार्मण इतिवा, यदुक्त यन ॥

कम्मविगारोकम्मण, मट्ठविहचित्त कम्मनिप्फन्न ।
सव्वेसिं सरीराण, कारणभूतमुणेयव्व ॥ १ ॥

३१४ प्र०—मिथ्यात्व अने चारित्रमोहनो तात्त्विक अर्थ कहो

उ०—शुद्धआत्मादि नवतत्त्वने विषे जे विपरीतबुद्धि तेज मिथ्यात्व, निर्विकारी आत्मज्ञानथकी विपरीत प्रवर्तन, अर्थात् वीतरागचारित्रने विषे मुंझवण, विकळता ते चारित्र मोह.

३१५ प्र०—रागद्वेष ते कर्मजनित छे के जीवजनित छे

उ०—एकदेशे शुद्धनिश्चयनये ते कर्मजनित छे, अने अशुद्धनिश्चयनये जीवजनित छे, पण वास्तविक रीते शुद्ध परम अर्थ सहता वस्तुगते, रागद्वेष ए नथी पुद्गलनो स्वभाव, के नथी जीवनो स्वभाव मूळरूपे, पण ते बनेना संयोगिकभावथकी एक नवीन वर्ण-

शंकर उत्पत्ति छे, तेथीज जे जीव रागद्वेषी छे तेओ वर्णशंकररूप देखाव संसारमां करे छे, अने तेओने बाळलीलावंतभवनाट्यने विषे मग्न जोड रह्या छे.

३१६ प्र०—श्री युगप्रधान आचार्यजी महात्माना चार मुख्य अतिशय कया ?

उ०—१ जेमना वस्त्रमां जूं न पडे, २ ज्यां विचरे ते देशनो भंग न थाय, ३ तथा ते देशमां चिंता न उपजे, ४ तेमना पग धोइने पीए तेना सर्व रोग नाश पामे.

३१७ प्र०—उत्सेधांगुल, आत्मांगुल, अने प्रमाणांगुल नो अर्थ कहो, तथा तेणे करी कइ कइ वस्तुओ मपाय छे. ते पण कहो.

उ०—१ उत्सेधांगुल एटले स्वदेशे, स्वक्षेत्रे, स्वकाळे पोतानुं जेवडुं शरीर होय तेना प्रमाणनो एकआंगुल जाणवो तेणे करी शरीरादिक मपाय छे. २ आत्मांगुल ते उत्सेधांगुलथी बमणो जाणवो, अने तेणे करी घर, हाट वगेरे मपाय छे, ३ आत्मांगुलथी हजारगुणो प्रमाणआंगुल जाणवो, तेणे करी पृथ्वी, पर्वत, विमानादि मपाय छे.

३१८ प्र०—भावना, अध्यात्म मौनपणुं, मुनि अने सम्यक्त्व तेनो टुंक तात्त्विकशब्दार्थ कहो.

उ०—१ आत्माने ज्ञानादिकेकरी भावीए ते भावना, २ आत्माने अधिकारी करीने जे करीए ते अध्यात्म ३ सत्य यथार्थ जिनवचनानुसार बोलवुं, ते खरुं मौन एटले मुनिपणुं जाणवुं. तथा ४ जगतूतत्त्वने

पचास्तिकायने यथार्थ माने तेने मुनि कहीए, अने जे मुनिपणु छे तेज खरु सम्यक्त्व कहिये.

३१९ प्र०—दीक्षाने अयोग्य केवा प्राणीओ कह्या छे

उ०—१८ प्रकारना पुरुष, २० प्रकारनी स्त्रीओ, तथा १० प्रकारना नपुसक जातिना प्राणीओने दीक्षा आपवाने जिनराजे वर्जन कर्यु छे, तेमा प्रथम १८ प्रकारना पुरुष कया ते कहे छे—१ बाळ, २ वृद्ध, ३ क्लीब ते नपुसक, ४ जड ते मूर्ख, ५ रोगिष्ट, ६ चोर, ७ राजानो अपराधी, ८ उन्मत्त, ९ अध, १० दास एटले कोइनो गोलो प्रमुख, ११ दुष्ट कषायवत एटले अत्यतक्रोधी मानी वगेरे, १२ मूढ ते मोहमयी, १३ करजदार, १४ हीनजातिवत, १५ विद्यादिक कोइपण गूढस्वार्थरागवत, १६ भिक्षुक मागीखानार निर्लज्ज प्रमुख, १७ चोरीने के भरमावीने के अन्य कोईपण अयोग्य प्रकारे मेळवेला शिष्यने, १८ हीनसत्त्ववत ते बीकण प्रमुख, ए रीते ए अढारदोषवत पुरुष तथा १९ गर्भवती स्त्री तथा २० स्तनपान करनार बाळकवत स्त्री ते धावप्रमुखस्त्री एम ए बे युक्त वीशदोषवत स्त्री जातिना प्राणीओ दीक्षाने अयोग्य कह्या छे, वळी एज रीते दशप्रकारना नपुसक पण ग्रथातरथी जाणी लेवा

३२० प्र०—कोइ जे अल्पससारी छे ते कया लक्षणथी जाणीये.

उ०—अल्पआहार, अल्पनिद्रा, अल्पआरभ, तथा अल्पकषाय होय ते नियमा अल्पससारी जाणीये.

३२१ प्र०—साम, दाम, भेद अने दंड ए चार नीतिनो टुंक शब्दार्थ कहो.

उ०—१. साम ते प्रेमवाळुं मधुर वचन, २ दाम ते दंड आपीने झघडो मटाडवो संतोषवो ते; ३ भेद ते शत्रुवर्गमां कोइ छळभेदकरी लांच रुशवतादिके पुरुषोने फोडी शत्रुनी अंदरने अंदर फाटफुट पडाववी ते, अथवा एकपक्षनी सामे बीजापक्षनी तरफेण करीने भेद पडाववो ते; ४ दंड पूर्वोक्त त्रणथी न माने तो छेवटे युद्धादि करी शिक्षा आपवी ते.

३२२—आजकाल कोइने पण सम्यक्त्वगुण प्रगट्यो छे, तेनी कोइ पण शीघ्र जणाय एवी कोइ परीक्षा रीति छे. तेनी खात्री शी रीते करी शकाय ?

उ०—वीतरागपरमात्मा श्रीअरिहंत जिनेश्वरदेवनुं नाम सांभळतां जे जीवने रोमांच खडा थाय, तीव्र शोकावस्थामां पण जेमनुं गुण स्वरूप सांभळतां, मुद्रा नीहाळतां तमाम शोक दुःख पीडादि मूली जइने अंतरंग अने बहार अत्यंत हर्षोल्लास प्रगटे, ए परमात्मा उपर परिणतिनुं शीघ्र परखाय एवुं खास लक्षण चिह्न छे.

इति श्रीविचाररत्नसारग्रन्थसिद्धान्तना प्रश्नः ।

पं. श्री देवचन्द्रजीकृत प्रश्न समाप्तम् ॥

श्रेयं भूयात् संवत् १८७५ ना वर्षे माहसुदि २ दिने बुधवारे लि. पं. श्रीरूपचन्द्रजीगणि तच्छिष्य रत्नचन्द्रेण श्रीमत्खरतरगच्छे भट्टारकक्षेमशाखायां श्रीअहमदावादे घांचीनीपोल मध्ये श्रीसंभवनाथप्रसादात् लिपीचक्रे अधिकहीननामिथ्यादुष्कृतम् ॥ ग्रन्थांकं २५२७ ॥

श्री देवचंद्रजीकृत छूटक प्रश्नोत्तर ग्रन्थः

॥ अथ छुटक प्रश्नोत्तर लिख्यते ॥ श्री खरतरगच्छे प प्र महाराज श्रीदेवचद्रजीने श्रावके प्रश्न कर्या तेना उत्तर दिधा ते प्रश्नोत्तर अमोए देवचद्रजी महाराजनी चोपडीमांहे दीठा ते लख्या छे रावनपुरना सघे प्रश्न पूछ्यु जे श्रावक सूत्र वांचे अथवा न वाचें ? तेहनो उत्तर—आगम रीते जे छे ते लिखीए छीए, जे सूत्र नंदीसूत्रमध्ये जेटलाना नाम छे तथा ठाणगे पण सूत्र ४ ना नाम छे ए सूत्रमध्ये श्री ४५ योगनी विधि श्री अनुयोगद्वारचूर्णिमध्ये छे तेहथी प्रीछज्यो तथा अनुयोगद्वारसूत्रे मध्ये सूत्र भणवानो विधिना बोल छे ते चूर्णीमध्ये ए अधिकार छे तथा योगवही सूत्र भणवा ए परमार्ग छे श्रीउत्तराध्ययने सूत्रे कह्यो छे. ॥ गाथा ॥

संवंगुरूकुलेनिचें, जोगवंहउवेहाणवं।
पीयंकरे पीयंवाई, चेसिरकं लद्धुमरिहइ ॥ १ ॥

इहा योगवत उपधानवंत ते शीखवा योग्य छे. तथा श्रीठाणांगे " तिहिंठाणेहिंसपन्नेअणगारे अणाइयं अणवदग्गदीहमद्ध चाउरतससारकतारविइवएज्जा त: अणिदाणयाए, दिठिसपन्नयाए, जोगवाहियाए " इहा जोग वहेवाना अक्षर छे केइक दुर्मतिजीव इहा योगशब्दे मनवचनकायाना योग कहे तेहने कहीए जे मनवचनकाया विना सज्ञी जीव कोण छे ? तो योगवाही ए पद किम उपजे ? तथा शुभयोगपणे ते शुभपद

तो सूत्रमध्ये दीसतो नथी. तथा ठाणांगसूत्रमे दशमेठाणांगे कह्युं छे. " दसाहिं ठाणेहिं जीवा आगमेसिभद्दत्ताएकम्मं पगरेंति तं. अनिदाणयाए, दिठीसंपन्नयाए, योगवाहीययाए, खंतीखमणयाए, जीइंदियाए, अमाइल्लयाए, अपासत्थयाए, सुसामन्नयाए, पवयण-वछल्लयाए, पवयणउज्झावणयाए तथा उत्तराध्ययने पण कह्युं छे.

नीयावत्तीअचवले, अमाइ अकुतूहले ।
विणीय विणएदंते, जोगवं उवहाणवं ॥ १ ॥

इत्यादि वचन अनेक छे. बत्तीसयोगसंग्रहमध्ये पिण-सूत्र भणवानो मनोरथ कह्यो नथी. तथा सर्व सूत्रे श्रावक लद्धट्ठा कह्या छे, पण आचारांगादिकसूत्रना पारगामी किहांइं कह्या नथी. तथा उत्तराध्ययने १३ मा अध्ययनमांहे गाथा छे. जे ॥

महत्थरूवा वयणप्पभूआ, गाहाणुगीयानरसंघमज्जे ।
जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इहज्जयंतेसमणोमिजाओ

ए गाथामे कह्यो. एहवी गुणवंत गाथा ते भिक्षु भणे ते माटे हुं पिण श्रमण थयो इहां पण सूत्र भणवाना अधिकारी मुनि दीसे छे, तथा सुगडांगे १४ मा अध्ययने कह्यो छे.

गंथं विहाय इहसिखमाणा, उठायसुबंभचेरे वसिज्जा ।
उवयकाराविणुयंसिरके, जे छेएवि पमायंनकुज्जा ॥१॥

ए गाथाइं पण ग्रंथ छे. ते मुनि योग्य छे इंम छे. इंम अनेक सूत्रे पाठ छे. तथा समवायांग सूत्रे" सेणंअंगट्ठायाएपढमे

अंगेदोसुअरवंधापणवीस अज्झयणापचासी उदेसणकाला, पचासी-समुदेसणकाला," इम सर्व आगमनाउद्देशासनाकालग्रहण कह्या छे. ते पिण कालग्रहण ते जोगवह्ये थाय ते माटे योग वह्या विना सूत्र भण्या नथी कह्या इम नदी तथा भगवतीसूत्र मध्ये पाठ छे तथा व्यवहारसूत्रे सर्व आगमनना भणवानो पर्याय कह्यो छे दीक्षाथी वीस वरस पर्याय, सर्व आगम भंणे तथा निशीथ सूत्रमाहे कह्यो छे " जेभिरकु अणत्थियवागारत्थिय वा वाएइय तंसाइज्जइ तस्सचाउम्मासीयपरिहारठाण " इहा जे गृहस्थने वाचनादे अथवा ग्रहस्थने वाचता अनुमोदन करे तेहने च्यार मासनो पाल्योचारित्र जाय इत्यादि प्रगटाक्षर छे ते माटे गृहस्थने सूत्र भणवो वांचवो नहीं तथा प्रश्नव्याकरण सूत्रे कह्यो छे " त सच भगव तित्थगरसुभासिअ दसविहं चउदसपुवेहं पाहुडत्थपवेढिअ महारिसीणंसमप्पदिनं देविंदनारिंदाणभासीअत्थ " इहा पण साधुने सूत्र दीधो, अर्थ देविंद्रनरिंद्रने दीधो तथा कोइ कहेसे जे सुबुद्धीमत्रीये च्यार महाव्रतरूपधर्म कह्यो ते माटे अम्हे कहु छु तेतो सुबुद्धीमत्रीये वातरूप उपदेस कह्यो, पण अगादिक वाच्या नथी ज्ञातासूत्रे सुबुद्धीमत्रीने अधिकारे दीक्षा लीधा पछे आचारागादि भण्या, जो गृहस्थपणे आचारादि भण्या होत तो दीक्षा लीधा पछे स्याने भणे ? ते विचारज्यो तथा वली कोइक कहेस्ये जे श्रावक सुअपरिग्गहिआ, कह्या छे तेतो फक्त शब्दे आवश्यकादिक तथा अर्थनोधारणतेपिणश्रुत छे ते माटे सुअपरिग्गहिआ कह्या छे. शुभज्ञानी समकिती देशविरतीने कहा छे, आचारागादि सूत्र नी ना छे तथा ठाणगे तो " अवायणिज्जापन्नत्ता तजहा अविणीए, विगयपडिबद्धे अनुसिआ पाहुडे, विगयपडिबद्धेनो अर्थ

ठाणंगे टीकामे उपधानतप विना विगयप्रतिबद्ध ते अवाच नीक छे. ते माटे योग उपधानवंतने सूत्र भणवा कह्या छे. तथा कोइक कहेस्ये जे यतिलिगे योगवह्या विना सूत्र वांचे छे ते किम वांचे छे ? तेहनो उत्तर जे योगवह्या विना जे सूत्र वांचे तेहने अरिहंत आणानी विराधना छे. जो पोताने छंदो करे तेने कोण कहे ? पण जो पोताने तथा श्रोताने लाभना अर्थ होय ते तो आज्ञा प्रमाणे वर्ते. श्रीअनुयोगद्वार टीकाए जे अविधिकरी सूत्र वांचे ते पोते ज्ञानावरणीयकर्म चीकणो करे छे, अने जे सांभले छे ते दर्शनावरणीय कर्म चीकणो करे छे. तथा साठिसो प्रकरणे कह्यो.

उस्सुत्तभासगाणं, बोहीनासोअणंतसंसारो ।
पाणच्चएवि धीरा, उस्सुत्तं तं न भासंति ॥ १ ॥

इमजाणी उत्सूत्र न बोलवो तथा जीतव्यवहारेसर्वनेयोगवहीनेज सिद्धांत भणवा एहनी हुंडी तथा हीरप्रश्न तथा विधिप्रपाप्रमुख अनेकग्रंथे अधिकार छे. इहां कोइकधन्नोअणगार वेरस्वामीप्रमुखनो दृष्टांत देइने कुयुक्ति करे ते पोताना आत्माने अहित करे छे. धन्नोअणगारप्रमुखआगम व्यवहारे छे तेहने जीतनो निर्धार नही, पण हवणां तो जीतनो व्यवहार छे ते माटे योगवही सिद्धांत वांचे तेपिण नयप्रमाणसप्तभंगी निक्षेपातथाद्रव्यभावतथा निमित्तउपादान उत्सर्ग अपवादनाजाण हुवे ते प्रश्नव्याकरणमे बोल कह्या. तेहनो जाण हवे ए सिद्धांतनो उपदेश करे ए मार्ग छे. मुख्यपणे अर्थना कथक आचार्य, सूत्रना दायक उपाध्याय गुणवंतने आज्ञा छे. बीजा

साधुने पिण उपदेश देवानी प्रवाहरीति नथी, तो गृहस्थलिंगे उपदेश करे ते किम पालवे ? घणु स्युं लखीइ ? आगमगंभीरमुखे मिल्या अनेकअर्थ कहेवाये इम भीळज्यो

तथा कडुकमती कहे छे जे पोरसीप्रमुखपच्चक्खाणे जो पहोरथी वधतो काल थाय तो दोष छे तेहनो उत्तर जे पच्चक्खाणनी शुद्धि ६ कही तिहा तीरीयसमदायकाल ए पाठ आवश्यकनिर्युक्ति-प्रवचनसारोद्धार पच्चखाणभाष्यने विषे छे वली भगवती टीका-मध्येखदाधिकारे तीरइतिपूर्णेपि भवद्‌धो स्तोककालावस्थानात्ए पाठ छे

तथा केइकगच्छना चउसठ अठम तपने अधिकारे आगल पाछल बे एकासणा करे तेवारे चउत्थादिक तप थाय ते माटे अनेक कुयुक्ति करे छे तेहनो उत्तर श्रीभगवती टीकामध्ये खदाधिकारे चउत्थचउत्थेण विचतुर्थभक्तंयावद्भक्तंत्यज्यते यत्रच-तुर्थमियचोपवासस्यसंज्ञाएव षष्ठादिकमुपवासद्वयादेरिति

तथा केइक सडासा पूजवो मानना नथी तिहा श्रीभगव-तीसूत्र टीकामध्ये एवनिसीडयवति निषितव्य उपवेष्टव्य सदंसकभू-मिप्रमार्जनादिन्यायेनेत्यर्थ

तथा श्रीनवानगरना संघे मह० अमरचदशेठ जादवजी सा मदन मह० रायचद भ० डोसा मह० भीम मह० माहवीजे प्रमुखे नवानगरथी पुछाव्या तेहनो आगमशाखें उत्तर लीखीइ छे. प्रश्न पुछ्युं जे देवता शय्यामे उपजे ते देवतानो मूलगो शरीर शय्यामे रहे के न रहे ? तेहनो उत्तर जे देवना शय्यामे उपन्या पछी रहे नही देवता देवलोक मध्ये जे कार्य करे ते मूलगे रूपे करे छे तिहा श्रीरायपश्रेणिसूत्रे कह्यु छे." तयाणसेसुरीयाभेदेवे तेसिं सरिसावव-

गाणंदेवाणं अंतीयेएयमठंसोच्चा निसम्महट्ठतुठेजाव सणिआउ अ-भ्भुठेइ अभ्भुठियत्ता उववायसभाए पुरिच्छिमिल्लेण दारेणं नि-ग्गछेइ जेणेवद्दारे तेणेवउवागच्छति हरयंअणुप्पदाहिणीकरेमाणे पुरिखिमिलेणं तोरणेणं अणुप्पविसति" इत्यादि पाठे नवावैक्रिय कर्या विना सर्व पाठ छे ते माटे शय्यामध्ये कोइ देवतानो शरीर न रहे तो शय्या खाली रहे छे, ए पाठ जीवाभिगम मध्ये विजयदेवाधिकारे छे. तथा भगवतीसूत्रे चमरोत्पातअधिकारे सौधर्म्मेंद्रे वज्र मुक्या पछी श्रीवीरनिआसातना जाणी तेवारे वज्रने लेवा माटे उत्तरवैक्रिय अणकरे पडतो मुक्यो इहां पण उत्तरवैक्रियनो पाठ नथी तेमाटे देवलोकमध्ये मूलगेरूपेज प्रवर्त्तें पण उत्पात शय्यामध्ये मूलगोरूप रहे ए पाठ कीहांइं नथी.

तथा बीजे प्रश्नेसंगमाने देवलोकथी मूलगेशरीरे काढियो छे जेसंगमानी देवांगनाए इंद्र आगल विनती करी जे अम्हने सी आज्ञा छे तेवारे इंद्रे कह्यु जे तुम्हे मेरु जावो अने वली पाछा इहां सुखे आवज्यो पिण संगमाने देवलोकमध्ये आण-स्योमा इंणेकरी जाणीये छे जे ते मूलगो शरीर तिहां रह्यो हवे तो देवांगनाने स्याने जावो पडे तेमाटे मूलगा शरीरे काढ्यो छे. ए कल्पकिरणावलिमध्ये अधिकार छे.

तथा केवलीसमुद्घात जे केवलीने छ मासनो शेष आउखो हवे ए अवसरे केवलज्ञान उपजे ते नियमा समुद्घात नियमा करे तेहथी अधिक आउखा वाला केवलीने समुद्घातनी भजना छे. करे अथवा न करे ए अधिकारपन्नवणा टीका तथा गुण-स्थानक्रमारोह टीका मध्ये छे. ॥ ३ ॥

तथा पुष्प परोवानो पाठ पंचासकमध्ये तथा हीरप्रश्न मध्ये

प्रगट छे तेपण तुम्हे जोज्यो तथा विचरता तीर्थंकरने फूले पूजे एहमे शका आणे तेहनी बुद्धिनो दोष छे, उववाइमव्ये अप्पेगरयापूयणवत्तीया ए वचन छे ते ए पदनी टीका पूजनंपुष्पमालादिना ए अर्थ कह्यो छे, अभयदेवसूरिकृत टीकामध्ये पाठ दीसे छे

तीर्थंकरसचित्तने अडके नहीं इम कहे तेपण समझता नथी केवलीना पगथी तीतरना बचा कुकडानां बचा पारेवाना बचा मरे तोपण सपरायकीकिरिया न लागे ए पाठ भगवतीसूत्रमध्ये प्रगट छे ते जोजो तो भक्तो फूल चढावे तेमव्ये स्यो दोष छे ? ।

तथा बुचे पाणी पीतां अरवो पाणी कलसीयामे रहे ए मव्ये सम्मूर्छिम उपजवानो तत दीसतो नयी पन्नवणा टीकाने आसयेइम जणाय छे पिण ए चालकरवो नहीजी

- तथा राते तो अपकायजीवनी तमसकाययी वृष्टि थाय छे ते अगासे थाए एतो निरधार दीसे छे अने ते वृष्टि मे बीजा जीव तो जाण्या नयी अने किहांइक ग्रथे अन्यजाति मव्ये उपजता पण कह्या छे योगशास्त्र टीकामे ए चरचा लिखी छे, ते माटे उपजता पिण जणाय छे, शीतस्पर्शने योगे रसीया उपजवानी हा दीसेतो छे पिण वणेकाल गये योनिपलटे उपजे परभाते रविकिरण उवडे ते हणाय छे ए जाणवो पिण आगमरीते तमसकायिया ठरे छे

तथा आहारकशरीर करे प्रदेशत्रीछेभांगे जे दिशे केवलीने निर्धार ते दिशे नीकले छे, दसमाद्वारनो 'काइ प्रयोजन नयी किहाइ पाठ पण नयी अने मुख्यपणे हृदय प्रमुख आगला

नाखे छे; अने प्रभु विहार पछी पण विखेरी नाखे छे. तथा फूल समोसरणमाहे सचित्तनी मुख्यता छे. इम जाणजोजी. तथा तीजे प्रश्न पूछ्यो जे प्रभुनी माताए सरोवर दीठो ते किहां छे. ते कल्पनी टीकामध्ये तथा जंबूदीवपन्नत्तिनी अपेक्षाये तो चुलहेमवंत उपर पद्मद्रहते जणाय छेजी. जेम कमलप्रमाण ए रीतनो सर्व वर्णव्यो छेजी. तथा पांचमे प्रश्ने जे व्यवहार रासी मध्ये जेटला जीव मोक्ष जाय तेटला अव्यवहारीनिगोदमांथी नीकले ए पाठ छे तेहना उत्तर माटे लिखीये छे जे अव्यवहारीनिगोदमध्ये पिण भव्य तथा अभव्य बे जीव छे. व्यवहारराशिमध्ये पिण भव्य अभव्य बे जातिना जीव छे. ते मध्ये भुवनभानुकेवली चरित्रे भवभावनीटीका तथा उपमितिभव प्रपंचामध्ये अनादिनिगोदथी अभव्य नीकली व्यवहारराशिमध्ये आवे छे ए प्रगट अक्षर छे. ते माटे इहां पूछस्ये जे भव्यजीव तो व्यवहारराशिमांथी अवसरे मोक्ष जाय छे. तिणे वधे नही पिण अभव्य जे व्यवहारीया थया ते तो व्यवहारराशिमध्ये छता पामीये तेहनो उत्तर जे घणो काल तो भव्य नीकले छे अने कोइक वेला १० जीव मोक्ष जाय तेवारे अव्यवहारीनिगोदथी १० जीव नीकले ९ भव्य १ अभव्य इम पण निकले छे. केइक कहस्ये जे ए रीते करतां व्यवहारराशि वधती जणाय छे. तेहनो उत्तर जे मूल तो इम वधे नहीं कदापि कोइ कला उपजे तो पिण अल्प माटे गिण्या नथी. तथा ॥

सिज्जंतिजित्तीयाकिर, गुणयोगेणंविवहाररासीओ।
एइतितित्तियाकिर, अणाइनिगोयरासीओ ॥ १ ॥

इहा संख्यानो नियम कह्यो छे पण भव्य अभव्य नियम नथी ते माटे पचागीनी रीते इम जणाय छे पछी तो श्री केवलीना जाण्यामे हुवे ते प्रमाण छेजी तथा समवसरण मध्ये फूलनी वृष्टि थाय छे ते सचित्तफूलनी छे श्री यशोविजय उपाध्यायजी प्रतिमागतकमध्ये पण ए घणो चर्चो छेजी इम सद्दहवो जे कारणे प्रशस्तमार्ग जे करे ते मध्ये आ स्रव नथी ए सूत्रनी परिपाटी छेजी कोइक प्रगटाक्षरमार्ग तो उत्तराध्ययन सूत्रे मृगी पुत्राध्ययने कह्यो छे

अपसत्थेहिदारेहि, सव्वओपिहीयासवो ।
अज्झप्पज्झाणजोगेहि, पसत्थदमसासणो ॥ १ ॥

इत्यादिक अनेकआचारादिसूत्रे घणा पाठ छे ते जोड लेजो तथा प ज्ञानकुसलनो प्रश्न जे सूत्रे द्रव्य छ कह्या छे तथा विशेषावश्यक मध्ये पाचज द्रव्य कह्या छे. तेहनो स्वरूप लिखीये छे जे वस्तुगते विचारतां ह्यालनो वस्तुपणो पिंडरूप द्रव्यपणो नथी ते माटे अस्तिकायपणो नथी. अस्तिकायपणो बहुप्रदेश मिले बहुपरमाणु मिले थाये ते कालने नथी कोइक कालना रेणु असख्याता माने छे लोकाकाशप्रदेशप्रमाण माने छे पिण ए वात प्रमाण नथी जे रेणुआमाट्या अस्तिकायपणो थाय कदापि रेणुआने भिन्नद्रव्य मानीये तो कालद्रव्य असख्याता थाये अने सूत्रे कालद्रव्य अनतो मान्यो छे ते माटे रेणुआनो मानवो तो सभवे नहीं तथा सूत्र परपाटीये श्रीजीवाभिगमसूत्रे पण इम दिसे छे " जे किमयभतेकालोत्तिपवुच्चइ गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव" एटले जीव

अजीवनी वर्त्तनालक्षण कांइक पर्याय वर्त्तना ते काल जाणवो. ए सूत्र वचन छे. तथा उत्तराध्ययने २८ अध्ययने" अनंताणिय दव्वाणिकालो पुग्गलजंतवो" ए पाठ छे ए पाठे कालद्रव्य अनंता कह्या ते जीवअजीवद्रव्य अनंतानी जुदी जुदी वर्त्तना तेहने कालद्रव्य मानीने अनंतद्रव्य कह्या छे ते माटे कालद्रव्य छठो वस्तुगते जूदो नथी. अने पर्याय ते वस्तुनो आरोप करीये तो एहने द्रव्यपणे कहीये. जिम घटद्रव्य ते घट छे. ते पुद्गलनो बंध छे. ते विभाग पर्याय छे ते पिण उपचारे द्रव्य कहीइ छे. तिम ए पिण जाणवो. तथा कोइ पूछे जे काल ए छतो छे के अछतो छे ? उत्तर–जे कालवर्त्तनारूप पर्याय पंचास्तिकायमध्ये छतो छे, पण पंचास्तिकायथी भिन्न नथी. ते माटे इम कहेवो. अने जे भगवतीसूत्रे छठो कालद्रव्य छे ते अढीद्वीपप्रमाण ज्योतिश्चक्रने वारे जे व्यवहारकाल तेहने कालपणे मानीने ए वचन कह्यो छे. ते माटे व्यवहारनये छ कहीजे, निश्चयनये तो पंचास्तिकाय छे. तथा तत्त्वार्थटीका मध्ये कह्युं छे जे द्रव्यास्तिकायनयन गवेषीये तो पर्यायास्तिकायने द्रव्य मानीये तेवारे कालद्रव्य कहीये, तेमाटे ए श्रद्धा राखवी. तथा सिद्धांतना आलावा तथा द्रव्यानुयोगनीपरिणति सर्व इम ठरे छे. तथा धर्मसंग्रहणीमध्ये बे मत कह्या छे. तत्त्वार्थकारे पिण" सोऽनंतसमय" ए सूत्रसदहवो ते काल छ द्रव्य अनंतसमय रूप छे इम कह्यो तथा श्री हेमाचार्यें पिण कालना रेणुक कह्या ते पाठ जो जो ॥

लोकागप्रदेशस्थाभिन्नाः कालाणवस्तुयेभावानां ।
परिवर्त्तापिमुख्यः कालसउच्यते ॥ १ ॥ (?)

इम पाठ छे पण मूलद्रव्यानुयोगमध्ये नजर देतां तथा जीवाभिगम अनुयोगद्वारसूत्र तथा पन्नवणा भगवतीना अल्प बहुत्व विचारतां कालद्रव्य जूदो नथी पचास्तिकायनी वर्त्तना छे, तिहां कोइ पूछस्ये जे जेवारे पचास्तिकायनीवर्त्तनाने काल मानीये तेवारे कालने एकलो अरूपीपणोठहरे नहि जे पुद्गलास्तिकायनी वर्त्तना रूपी जोईये, तेहनो उत्तर जे पुद्गलनी वर्त्तना मुख्यपणे रूपी सभवे पिण वर्त्तना ते पिंड नहीं वर्णादिक तथा अगुरुलघुनो पलटण उत्पादव्ययरूप छे ते व्यक्तअवस्था थाये नहीं तेमाटे अरूपीज बहु यतिये गिण्यो तथा कोइक पूछस्ये जे काल जेवारे जीवनी वर्त्तना गवेषीये तेवारे कालने चेतनपणो आवस्ये तेने कहे छे जे जेवारे पर्यास्तिकनयनी भेद व्याख्या करे तेवारे चारित्रादिक गुणमध्ये ज्ञानगुणनी नास्ति कहीइ जे सर्वगुणस्वरूपे अस्ति छे पररूपे नास्ति छे तो वर्त्तनापर्यायने चेतनपणो किम कहेवाये ? तेमाटे कालद्रव्यने पिण अचेतनज कह्यो, इम कालने उपचारे निक्षेपा द्रव्यादिक च्यार गुण पर्याय सर्व कहेवा, पिण मूलव्याख्याये काल ते पंचास्तिकायनी वर्त्तना छे. सूत्र तथा निर्युक्ति तथा भाष्यकार सर्व गीतार्थ तथा गणधर सर्वनी एहिज व्याख्या छेजी, तथा पुछे जे द्रव्य छ छे के पांच छे? ते जीवाभिगमसूत्रे तो द्रव्य पाच कह्या छे अने भगवतीप्रमुखमध्ये द्रव्य ६ कह्या छे, पिण सूत्रना वचन विरोधी हुवेज नहीं तेहनो परमार्थ धारवो पण जिहां उत्तराध्ययन भगवती तथा टीकाप्रमुख सर्वत्र जिहा ६ द्रव्य एहवो पाठ तिहा नियमापचास्तिकायनी वर्त्तना तेहने उपचारे भिन्न व्याख्याये भिन्न द्रव्य कह्यो ते सर्वत्र उपचार जांणज्यो तथा कोइक कहेस्ये जे एहनी साख किहां छे तेहने कहीये

जे जीवाभिगम तथा महाभाष्यथी वधती साख कोनी मागो छो ? वली पूछस्ये जे एटले ठेकाणे ६ द्रव्य कह्या छे तो पांच किम मनाय ? तेहने कहीये जे जीवाभिगम तथा भाष्यकारे ते ए अक्षर सर्व जाण्या हता तेहथी अजाण्या नही. अनुयोगद्वारे अनादिसिद्ध कह्या ते पण ए उपयोगेज कह्या छे, तथा वाच्यवाचकभावे कालनो नियम जूदो कह्यो छे तेमाटे द्रव्य जूदो वाच्यमां संभववो घटे छे, तेहने उत्तर संवरतत्त्ववाचक नाम जूदो कह्यो छे, तेहनो वाच्यज्ञान चारित्रादिक पण छे तेमाटे संवरपदार्थ कह्यो पण संवर ते जीवनी परिणति छे पण पिंडपणे जीवथी संवर जूदो नहीं. तथा वली कहेस्ये जे संवरने द्रव्य कह्यो नथी पण द्रव्यथी प्राणातिपातादिक कह्या. तथा प्राणातिपातादिविरमण पण द्रव्यभाव आगम मध्ये कह्या, तेमाटे ए सर्वेथी कांइ द्रव्य जूदो थाय नहीं तथा कोइक पूछस्ये जे ए ५ समान छठो द्रव्य कह्यो, तिहां उत्तर जे पंचमहाव्रत भेलो छठो रात्रीभोजनव्रत कह्यो, पिण अपेक्षाए कह्यो, तेमाटे रात्रीभोजन कांइ मूलगुण महाव्रतरूप न थाये. सर्व गुण, सर्व पर्याय, सर्व परिणाम, सर्ववाच्यवाचकभाव, संयुक्त छे. तेमाटे भिन्नपिंडी द्रव्यपणो न पामे अने पर्यायने द्रव्य कहीये एहवे नये पिण जैन बोले, ए दीक्षा लेवा माटे कालने छठो द्रव्य कह्यो ते रीते कहीये, यावत्मात्र अभिलाप्यभाव होवे ते वाच्यवाचकभावसंयुक्तज होवे, तेमाटे द्रव्यपणो न पामे, जिम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनो देशपणो तथा पुद्गलास्तिकायनो देशपणो कदापि खंधथी जूदो नथी, अने अजीवना भेद करतां जूदो कह्यो, तेमाटे ते रीते एपण मानज्यो. प्रवचनसारोद्धारमध्ये तथा पंचकारणमध्ये जे वसंतादिकना

ऋतुस्वभावादि बोल्या ए सर्व व्यवहारनय तथा आदित्यादिगति परिछित्तिरूप बाह्यकाल लेइने बोल्या छे, ते परमार्थे नथी ते श्रीभगवतीसूत्रे प्रश्न छे. जे केटलीक वनस्पति उष्णकाले फले ते स्वामि कीम छे? तेवारे श्रीवीतराग कहे छे ए जीवने उष्ण फरसी पुद्गलनो आहार घणो लेवराय छे. तेमाटे उनाले फले छे. तिहां जीवनो उदीतकर्मकारण छे, पिण एकांत कालनी मुख्यता नथी. वली काल अपरिणामी अकर्त्ताद्रव्य छे ते स्याने परमध्ये परिणमे स्याने परकार्य करे, तेमाटे वृक्षादिकनो जीव पुद्गलद्रव्य छे तेमाटे ते फलजीव पुद्गल मध्ये एहनी वर्त्तना मान्यांज, सर्व समो पडे, पिण भिन्नद्रव्य मान्यां कोइ समो पडे नहीं, वली कोइक पूछस्ये जे धर्मास्तिकायपण अपरिणामी अक्रिय अकर्त्ताद्रव्य छे ते किम चलणसहायी थाय छे? तेहनो उत्तर जे गति परिणामी जीवद्रव्य तथा पुद्गल द्रव्यने सहायी थाय छे पिण ते धर्मास्तिकायरूप छे. अने काल ते अस्तिकाय नथी तथा भावप्रकरणे "कालोऽतिकलन काल एव द्विधा वर्त्तना लक्षण १ समयावलिकादिलक्षणश्च अतस्तत्रवर्त्तंतेभवति भावास्तेनतेन रूपेण तान् प्रतियोजकत्व वर्तना सा लक्षणंलिंगऽस्येतिवर्तना लक्षण. अयं समस्तद्रव्यक्षेत्रभावव्यापीति" १ एहनो अर्थ जेवर्ते थाये ते रूपे प्रतियोगी सहकारीपणे ते वर्त्तना कहीये, ते वर्त्तमानज छे लक्षण जेहनो ते वर्तनालक्षण काल कहीये द्रव्य धर्मादिक क्षेत्र सर्वना प्रदेश भाव सर्व द्रव्यना गुणपर्याय ते मध्ये व्यापकपणे छे. एटले पंचास्तिकायनी वर्त्तना तेहज निश्चयकाल कह्यो, ए मध्ये जूदा कालद्रव्यनी ना थई. बीजो समयावलिकालक्षण ते व्यवहारकाल जाणज्यो. ते समय वर्तमान एक छतो भिन्नद्रव्य मानीये

तो ते समयनो क्षेत्र किहां मानीये, जिहां मानीये तिहां एक प्रदेश मध्ये रह्यो जोइये. तेवारे सर्वलोक अलोक मध्ये उत्पादव्ययनी वर्तना किम थाये ? तेमाटे पंचास्तिकायनी वर्तना ते कालज मान्यो पूरवे कही नवजीरणता एपण कालनोलक्षण स्थूल छे. नवजीरणधर्म खंधनो छे अने कालनी वर्तना सर्वद्रव्य मध्ये छे ते पुद्गलपरमाणु तो नवजीरण थतो नथी तेवारे ए व्यवहारकालनी अपेक्षाए जाणवो, तथा नवजीरणता पुद्गलपरमाणुनोपर्याय छे इम लिख्यो ते ए परमाणु तो एकलानो पर्याय छे नही, खंधनो उत्पन्न पर्याय छे, जिम शब्दपणो छे तिम छे, अत्र तेहने एम छे तेमाटे वर्त्तमान समय एक छे ते सर्व जीव पुद्गलादिकमें वर्ते छे, ते माटे कालद्रव्य अनंतो कहेवाय छे, जो अणुकादिक कोइ काल मानीये तो "जीवापुग्गलसमवा" ए गाथा द्रव्यानुयोगना अल्प-बहुत्वनी भगवती टीकामध्ये छे. तथा पन्नवणासूत्रे "एसिणंभंते-तीणंपुग्गलाणं" इत्यादि प्रश्नसूत्रे उत्तर कह्यो छे "सव्वथोवाजीवा पुग्गलाअणंतगुणा अद्धासमया अणंतगुणा सव्वदव्वाविसेसाहीया" ए पाठ छे, तेह जीव अनंता, तेहथी पुद्गल अनंतगुणा, तेहथी कालसमयअनंतगुणा, ते सर्वथी काल अनंतगुणो, द्रव्यवर्त्तना गवेखीये तोज पूरवे (पालवे) जो काल भिन्नद्रव्य मानीये तो पूरवे जे कारणे जे एक आकाशप्रदेशे अनंताकाल द्रव्य मानीये तो पूरवे जे कारणे जे एक आकाशप्रदेशे अनंताकाल द्रव्य मानीये तो अस्तिकायपणो वई (टली) जाये, अने एक आ-काशप्रदेशे एकएक काल द्रव्य मानीये तो असंख्यातो द्रव्य थाय, पण अनंतो न थाय तेवारे सूत्रनो अल्पबहुत्व किम मिले? तेमाटे जीव तथा पुद्गल धर्म अधर्म आकाशनीवर्त्तना मान्यांज

पूरवे ए सूत्रनो पण एहज आशय छे, जिहां "छदवापन्नत्ता" इत्यादिक सूत्र पण व्यवहारकालने उपचार मानी छ कह्या ए आशयसहित छे, तेमाटे एहि आशय सिद्धांतकारनो छे. सिद्धातवादी पण इमज कहे छे इहां जूदो पोतानी मतिना दोषे समझण विना सिद्धातवादीपणो जूदो माने तेहने संसार वधे, अने सिद्धातअनुयायी सिद्धातवादी श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणथी वधतो बीजो कोइ नथी, सिद्धातनी खरी आज्ञा प्रमाणजीव छे. तेहथी वधतो हीनो चित्तमा विकल्प करे तेहने संसार वधे इम धारज्यो, एटले आवलिकादि व्यवहारकाल ते सर्व लौकिक छे परमार्थे पचास्तिकायनीवर्त्तनाने काल कहीये छे पण जूदो नथी, अने कालद्रव्य कह्यो ते उपचारे छे, तिहा वली पूछे जे उपचार वस्तुनी छती राखीने कह्यो छे के वस्तु पाचज छे? तेहनो उत्तर जे वस्तुपणे मूलसूत्रने प्रमाण पाचज वस्तु छे छठो वस्तुपणे नथी, अने पंचास्तिकायमध्ये स्वकालरूप एक स्वभावपर्याय छे, तेहने काल मान्यो छे ते स्वकालरूप पर्याय ते पचास्तिकायमध्ये छतो छे तेमाटे छतानो उपचार छे इहा कोइ पूछस्ये जे छतो तेहने उपचार छे किम कहीये? तेहनो उत्तर जे, जिम छे तेहथी वधती अवस्था कहेवी ते उपचार, जे वर्त्तना ते पर्याय स्वभाव हतो तेहने द्रव्यपणो कहेवो ते उपचार छे एटले द्रव्यपणो अछतो छे, इम धारवो, तथा अजीवना १४ भेदमध्ये तथा ५६० भेदमध्ये अछतो होवे तो किम गण्यो? तेहनो उत्तर जे धर्मास्तिकायदेश १ अधर्मास्तिकायदेश २ ए भेद अछता छे, पण ए भेद मध्ये गण्या छे तेमाटे ए भेद सर्व वस्तुगति तथा उपचार ए बे मेलीनेज प्ररूप्या छे, पांचसेसाठ भेदमध्ये

बीजा पण उपचारी भेद घणा छे, सिद्धांतनो भाष्यकारनो आशय एकज छे, अने व्याख्याभेद छे. तथा कोइ कहेस्ये जे कोइक गीतार्थ पोतानो आशय पोषे, ते तो जे पोष्यानो आशय पोषे ते गीतार्थ नथी. गीतार्थने तो सिद्धांतना सर्व आलावा अबाधक रहे ते अर्थने मुख्य कहे. बीजा कोइक ग्रंथे अर्थ कह्या हुवे तो ते कहे पण तेपणे कहे ए रीत छे. इहां पंचास्तिकाय मध्ये, स्वकाल तेहज काल छे, पण जूदो नथी, उत्पाद व्यय ते सर्व द्रव्यमां समये समये थाय छे. ते समय जूदो मानीये तेवारे सिद्धनो तथा धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायमां आकाशमां काल भिन्न द्रव्यथी उत्पादव्यय मानवो पडे. तेवारे सिद्धादिकनो उत्पादव्यय परअपेक्षाये (थाय) ते परअपेक्षाये उत्पादव्यय मानतां उत्पादव्यय ध्रुवता ते द्रव्यनो लक्षण (परापेक्षाए थाय) जे लक्षण होवे ते स्वरूपेज होवे परअपेक्षाये थाय नहीं (स्वस्वरूपेणलक्षणंनपरस्वरूपेणलक्षणं) तथा तुह्मे सूत्रनी साक्षी मागी ते जीवाभिगममध्ये "किमिदंभंतेअद्धासमएत्तिवुच्चेइ गो० जीवाचेव अजीवाचेव" ए पदमध्ये ए आव्यु छे. तथा जिहां छ द्रव्य कह्या तिहां लगतोज पूछ्यो जे "कतिणंभंते अत्थिकायापन्नत्ता ? गो० पंचअत्थिकाया पन्नत्ता ।" ए पदमध्ये अस्ति ते छतानो नाम छे, तेटला छता पिंडपणे केटला छे ? तो कह्यु जे पांच छे. एटले एथी वधतो अक्षर स्यो मागो छो ? तथा उपचार हस्ये तो किवारे कैलोक थई जस्ये, सिद्धमे संसारीपणो थास्ये ते एहवी कल्पना स्याने करीये ? जे धणीये तथा पूर्वाचार्ये जे उपचार कर्यो ते करीये. पण नवा न कल्पीये. अने कोइक उपचार करीये ते पण कोइक कार्य माटे करीये. सूक्ष्मनिगोदीयाने सिद्ध

कह्या ते उपचारे, इम अनेक उपचार छे. ते केटला लिखीये, असतूस्थापनादिक ए सर्व उपचार छे, पण कार्य माटे छे तथा कोइक चापी बोलाय ते मध्ये कोइ जीवने लाभ नहींजी. तेमाटे एटलो बोलवानो मन करीये, पण खींचाताण मध्ये न पेसीये. तथा श्रीभगवतीसूत्रमध्ये धर्मास्तिकायना नामपर्याय कह्या छे, तिहां धर्मास्तिकाय कहीये प्राणातिपातसवर कहीये. इम अढारसवर ते धर्मास्तिकायना नाम कह्या तथा अढार पापस्थानने अधर्मास्तिकायना नाम कह्या. ते पण सर्व उपचारे कह्यो छे तेमाटे एहवा उपचार सूत्रे अनेक छे तेमाटे पंचास्तिकायनी वर्तना तेहजने काल कह्यो छे अत्र श्रीतीर्थंकरदेवे पण छ द्रव्य कह्या, तेपण आशय मध्ये एहज उपयोगे कह्या छे. बीजो कोइये नवे ए आशय न कह्यो. "अणागयद्धाजीयद्धा जीवाजीवइ" इत्यादिक जोज्यो तथा श्रीजिनाशयश्री भिन्न कह्यो नथी वीरमुखथी सुधर्मास्वामीए अर्थ इमहीज धार्यो हतो ते परपराये चउदपूर्वधारी भद्रबाहु स्वामी निर्युक्ति मध्ये पण एहज. जिनभद्रगणिक्षमाश्रमण तेपण दशपूर्वधर छे ए वात गणधरसार्धशतक गणधरदोढसावृत्ति तथा कल्पचूर्णि मध्ये सुणी छे. व्याख्यात छे, तेह सुखे करीये पण आशयमूलगो राखीने करीये इम धारवो तेमाटे ए व्याख्या एणे रीतेज करज्यो जे वस्तुपिंडपणे पाच छे, अने पाचना स्वकालपर्यायने कालद्रव्य कही बोलाव्यो छे, ते आरोपेज छे ए आरोप ते जिम निश्चयअर्थावग्रह एक समयनो छे अने व्यवहारे अर्थावग्रह असख्यात समयी लोकने बोधवा माटे मान्यो, तिम मानज्यो तथा वली जे प्रमाणप्रत्यक्ष मध्ये वस्तुगते केवलज्ञान ते सर्व प्रत्यक्ष मान्यो अवधिमन.

पर्यवने देशप्रत्यक्ष मान्यो. वली लोकव्यवहारे उपचार करीने षोढा इंद्रियसन्निकर्षथी जे ज्ञान थयो तेहने पण व्यवहारे प्रत्यक्ष मान्यो. ए बे रीत नंदीसूत्रादिक मध्ये छे. तेपण कारणे छे. तिम कालनी बे व्याख्या कारणे छे. पण मूल व्याख्याने निजराखीने सर्व व्याख्या करीये. ए रीते कल्याण छे. तथा विशेषावश्यके "नतुपश्यतिक्षेत्र कालावसौ तयोरमूर्त्तत्वादवधिश्च-मूर्त्तविषयत्वात्, वर्त्तनारूपंतुकालंपश्येत्तद्द्रव्यपर्यायत्वात्, तस्येति" इहां पुद्गलनीवर्त्तनानी अपेक्षायेकालने रूपीगवेख्यो छे. तथा बावीसहजारीमध्ये तथा "कालस्यवर्त्तनादिरूपत्वात्, द्रव्यपर्याय-त्वात्, द्रव्योपक्रमएवोपचारात्," श्रीभगवतीसूत्रे १३ मे शतके उद्देसे ४ थे कालस्पर्शनाधिकारे नात्थिइकेणवि ए अधिकारे टीकामध्ये पुद्गलादिकनी वर्तना तेहिज काल गवेष्यो छे. राधन-पुरथी पं. वीरचंद गणीए पूछ्युं तेहनो पडुत्तरजे वैक्रियशरीर करे तेवारे, अथवा आहारकशरीर करे तेवारे सर्वप्रदेश आहा-रकशरीर मध्ये छे. पण औदारिक मध्ये नथी. तेहनो उत्तर जे आहारकवैक्रियलब्धिकाले ठाणांगवृत्ते त्रण शरीर छे. तथा कर्मग्रंथ कम्मपयडीमध्ये पण उत्तरवैक्रिय तथा आहारक करतां उदयस्थानक नामकर्मनां कह्यां छे. "आहारक संयतानां उ-दयस्थानानि भवंति तद्यथापंचविंशतिः सप्तविंशतिः अष्टाविंशतिः एकोनत्रिंशत्" "तत्र आहारकमाहारकोपांगसमचतुरस्रसंस्थान उपघातंप्रत्येकंइति पंचप्रकृतयः प्रागुक्तायांमनुष्यगतिप्रायोग्याया मेकविंशतौ प्रक्षिप्यंते मनुष्यानुपूर्वीचापनीयते ततोजातापंच-विंशति" रित्यादिपाठे, आहारकवालाने औदारिकोदय दीसतो नथी. वली जो एहने औदारिकउदय होवे तो संघयणनो पण उदय जोइये. तेमाटे ते आहारकशरीरकाले औदारिक उदय

दीसतो नथी तथा कोइ पूछस्येजे औदारिकशरीर छतो देशनादेतो दीसे छे ते एहनो आशय छे, जे आहारकनो अतर्मुहूर्त्त नान्हो जणाय छे ते लोकने खबर पडे नहीं तथा जो ए शरीर मध्ये आत्मप्रदेश छे तेपण तैजसकार्मणशरीरी छे, पण औदारिकावगाही नथी अने जो ए शरीरे आत्मप्रदेश सर्वथा न मानीए तो आहारकशरीरनो सकेलो सभवे नहीं तथा तिहा उत्तर साभलताज आहारक टली जाय छे अने आत्मप्रदेशो औदारिकशरीरमध्ये समाय छे तथा कोइक पूछस्ये जे मूलगे शरीरथी जास्ये आहारक जाइ ता सीम आत्मप्रदेशनी श्रेणि छे ते तैजसकार्मणवत छे, जे समी अवगाहनापन्नवणासूत्रे पाचराजनी कही छे कार्मणनी अवगाहना १४ राजनी कही छे उत्कृष्टथी जघन्य अगुलने असख्यातमे भागे कही छे, अने आहारक करता शरीरादि पर्याप्ति नवी करवी पडे छे ते कर्मग्रथटीकामध्ये कह्यु छे. "शरीरपर्याप्तापर्याप्तस्यसप्तविंशति " इत्यादि तथा जे आहारकनी अवगाहनामुड हस्ते छे तेमाटे मध्यप्रदेशे तैजसकार्मण छे इम जाणवु तथा औदारिकशरीरवत प्रथमथी आहारकपुद्गलग्रहे तेपण औदारिकशरीरथी लेतो नथी, जे औदारिकआहारकबधन नथी तेपण आत्मप्रदेशगत आहारकनामकर्मनी प्रकृति तेपण कार्मणवर्गणारूप जे उदय थइ तेहने उदये आहारकसमुद्घात करे, तेणे प्रदेश बाह्य नीकले. ते प्रदेश तैजसकार्मणशरीर छे ते शरीरथी नवा आहारकवर्गणाना पुद्गल आहारे ते सर्वप्रदेशे आहारे ने पछे सर्व प्रदेशे आहारकशरीर छे एक अष्टप्रदेश ते अचलछे तथा श्रेणिगत प्रदेश सर्वने तैजसकार्मण शरीर छे ते पछे आहारकशरीर उदय छे इम जणाय छे, इहा किहा औदारिक उदय मान्यो हवे तेजो प्रशस्तआचार्य वचन

ए तेजोप्रदेशोदयरूप गणवो. पण विपाकी नथी. तथा वैक्रिय शरीरने पण इंमहीज जाणवो. ईहां कोइ पूछस्ये जे, चक्रवर्ति भोगकाले ६४ हजाररूप करे छे तिहां स्त्रीरत्न साथे भोग मूलगेरूप करे छे ते मूलगो औदारिक शरीर छे? तिहां इंम छे जे चक्रवर्ति ६४ हजाररूप करे छे ते बहुरूपिणी विद्यानी पेरे औदारिक शरीरनाज छे पण वैक्रिय नथी तथा श्रीभगवतीसूत्रे "घडाओघडसहस्सं घडाओघडसहस्सं" ए पाठे घडा एकमांथी हजारेबंध घडा काढे ए पण वैक्रिय नथी अत्रकरीया भेदे घडामांथी घडा काढे छे तिम औदारिक शरीरमांथी औदारिक शरीर काढे छे ए अक्षर पण ग्रंथांतरे दीठा छे पण ते ग्रंथ पासे नथी. आहारक कर्याथकां पूर्वशरीरमध्ये आत्मप्रदेश छे ते तैजसकार्मणशरीरी छे पण औदारीक शरीरी नथी अने आहारक करे तेपण इहां ३ वर्गणानो करे छे. तथा आहारकशरीरी करतां औदारिकमिश्र मान्यो छे ते पूर्वग्रहीत औदारिक पुद्गल जे छे, अने नवा ग्रह्या जे आहारक पुद्गल ते भेला थया माटे मिश्र छे पं आहारकथी औदारिक ग्रहण नथी. आहारक मूकतांकाले पण प्रथमथी औदारिकपुद्गल ते कार्मणथी लेवराइ छे इंम जणाय छे, पछे तो आगम अनंत छे. तथा तुम्हे विष्णुकुमार आश्री लिख्युं ते वैक्रियशरीर करतां औदारिक शरीर ते पण वैक्रिय मांहेज समाणो छे अने ते औदारिक पुद्गल ते वैक्रियने उदयबले वैक्रियपणे परिणमे, पुद्गलनो पलटणस्वभाव छे तेमाटे जे वैक्रियसमुद्घात करतां सोल जाति रत्नना पुद्गल तेह पलटावी वैक्रियपणे परिणमावी लेवे छे, अने जे वैक्रियशरीर घणा करे छे तेहने औदारिक मध्ये जे प्रदेश छे तेहनी बे परिपाटी छेजी मूलगा शरीर पण पलटीने

वैक्रिय थयो छे, अने लोक औदारिक जेहवो देखे तेतो शक्ति विशेष छे, जिम इंद्र कालिकाचार्यपासे निगोदस्वरूप पूछवा आव्या वृद्धद्विजरूप करीने ते शरीर वैक्रिय हतो पण लोके औदारिकपणे दीठो, आचार्ये पण पछे उपयोग दीधे जाण्यो तिम मनुष्य वैक्रिय करे ते मूल शरीर पण वैक्रिय छे, अने बीजा शरीर तेपण वैक्रिय छे ए वैक्रियसमुद्घातनी उत्कृष्ट अवगाहना लाख योजननी छे तेमाटे अने जे लाख योजनथी उपरात छे ते तो मूल शरीरे तथा अतरालवर्त्ती प्रदेश सर्वमध्ये तैजसकार्मणशरीर छे, समुद्घातगत केवली शरीरपरे पण औदारिकशरीर नथी जे उत्तरवैक्रियकाले औदारिकना उदयनी ना कही छे कर्मग्रंथने विषे तेमाटे इहा कोइ कहे जे एकरूपे २ शरीर कह्या छे पण रूपभेदे वैक्रियादिक हवे तेहने उत्तर जे कर्म उदय न हवे ते सर्व प्रदेशेज हवे पण कोइ प्रदेश हवे कोइ प्रदेशे न हवे इम हवे नही. यद्यपि शुभनामकर्म अशुभनामकर्म तेना "भुवरिसिराइसुह" ए पाठे नाभि सीम नाभियी हेटले अशुभ इम उदय कह्यो छे पर तिहा तत्त्वार्थ टीकाकारे कह्यो छे जे नाभिपर्यंत शुभनो विपाकोउदय अने नाभियी हेटल शुभनामकर्मनो प्रदेशोदय छे अशुभनो उदय छे इम जाणवो पण कर्म उदय हवे तेदल थोडावणा चीकणा लूखानो फेर हवे पण कोइ प्रदेशे न हवे इम न हवे, तेमाटे इंम जाणवुजी. तथा तुम्हे पूछ्यु जे मनुष्यगतिमार्गणा तथा तिर्यंचगतिमार्गणा मध्ये औदारिकद्विक नरकद्विक वज्रऋषभनाराचसंघयण ए पाच ५ प्रकृति मूलओघे बधनथी तो औदारिकमिश्रकाययोगनी मार्गणाए चोथे गुणठाणे ७५ प्रकृतिनो बंध तेमध्ये ए ५ प्रकृति गवेषी ते स्यू? तेहनो उत्तर परपराइ इम

सांभल्यो छे, मनुष्यगति तिर्यंचगति मार्गणामां उत्तरवैक्रिय करे ते काले वैक्रिय करतां वैक्रियद्विक देवद्विक न बांधे पण उत्तरवैक्रिय काल गवेख्योज नथी उपाधिकृत ते कारणिक छे. ते गवेखता नथी, इम जणाव्यो छे, अने जे मनुष्यतिर्यंच उत्तरवैक्रियपणे वर्त्तमान ते वैक्रियथी वैक्रियद्विक न बांधे, तेवारे औदारिकद्विकनरद्विक बांधे, अने औदारिक प्रत्ययि प्रथमसंघयण पण समकितीपणा माटे बांधे, ते जीव वैक्रियशरीर मूकतां वली औदारिकशरीरी थातां औदारिकमिश्रकाय योगी थाइ. ते कोइककाल सीम ए पांच प्रकृति बांधे. ते ए आशय जणाववाने ए पांच गवेखी छे, वैक्रिय मूकतां औदारिक मिश्र थाइ ए सिद्धांतनो मत छे. संभारवाने सूक्ष्म ऋजुसूत्रनयनो आशय छे, ए अक्षर किहांइ दीठा नथी, परंपरामध्ये सांभल्यो छे. तथा जयसोम पन्न्यासे कर्मग्रंथ विषमपदपर्यायना पत्र १०–१२ कर्या छे ते मध्ये लिख्यो छे तिहां बृहद्बंधस्वामित्वटीकानी साख लिखी छे. ए पण एकवार जीर्णश्रुतधर पासे धार्यो छे पण अक्षर दीठा नथीजी. ए प्रश्नपङ्कुत्तर. तथा कडूआमती शालावा ए प्रश्न पूछ्योजे, आत्माना मध्ये आठप्रदेश किम रह्या छे ? अथवा सावरण छे, निरावरण छे ? तेहनो उत्तर. आठ प्रदेश छे ते च्यार उपर छे, ने च्यार हेठल छे. ते निर्मल छे. निरावरण छे. तेहनी साख लिखीइं छे. मध्यात्मप्रदेशाष्टकस्य न कर्मबंधः यदुक्तं श्रीआचारांगटीकायां लोकविजयाध्ययने प्रथमोदेशकस्यादौ " तदनेन पंचदशविधेनापियोगेनात्माऽष्टौ प्रदेशान्विहायतप्तभाजनोदकवदुद्वर्त्तमानैः सर्वैरेवात्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशदेशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलिकं यद्बध्नाति तत्प्रयोगकर्मेत्युच्यते" एहवा पाठथी आठ प्रदेशनिरा-

वरण छे. सिद्धसमान छे. केवलज्ञानादिक अनंतगुण निरा-
वरण छे, तिहां वळी पूछयो जे आठप्रदेश निरावरण, केवल-
ज्ञानमयी छे तो लोकालोक का जाणता नथी ? तिहा उत्तर
जे पंचास्तिकाय मध्ये जड च्यार आस्तिकाय छे. ते अकर्त्ता
छे, जे सर्वप्रदेशे कार्य भिन्नभिन्नपणे करे छे, अने जीवद्रव्य
कर्त्ता छे ते एक जीवना असख्याता प्रदेश बधा मिळीने
जाणवारूप कार्यने करे छे, ते सर्व प्रदेश मिल्या जाणपणो
करी शके तेमाटे आठ प्रदेश निरावरणा छे पण केवलज्ञान-
मयी छे पण सर्व पदार्थ जाणी न शके जे आठ निर्मला पण
असख्याता सावरण छे तेह प्रदेशे तो केवलज्ञानादिगुण अ-
वराणा छे. ते प्रवृत्ति करी शकता नथी आठ प्रदेशे सर्व भाव
जाणी शके नहीं वळी कोइ पूछस्ये जे ए आठ प्रदेश नि-
रावरण केम रह्या ? तेहनो उत्तर जे भगवती सूत्रे जे "एअइ
वेअइ चलई फदई से बधई" ते जे प्रदेशचलपणे वर्त्ते ते बंधाये
तेमाटे ए आठ प्रदेश निश्चल छे तत्त्वार्थवृत्तौ "क्रियावत्व पर्या-
योपयोगिता प्रदेशाष्टकनिश्चलता एवप्रकारा सति भूयास" तथा
भगवती सूत्रे अनादिअनंत सबध कह्यो छे, तिणे ए आठ
प्रदेश अचल छे, बीजा सर्व प्रदेशे कटाहगत तेल उकालतां
जिम तेल उपरनो नीचे आवे छे, नीचाथी उपर आवे छे तिम
सर्व प्रदेश चली रह्या छे. प्रदेशने चलवे वीर्यनी चलता छे
जेकेड एकला वीर्यनी चलता माने ते न घटे, जे द्रव्यनोक्षेत्र
जे प्रदेश ते मुकीने गुणने अन्यक्षेत्रे जवो घटे नहीं, ए
तत्त्वार्थकारनो आशय छे तिहा कम्मपयडीमध्ये वीर्यविभागने
अधिकारे आत्मप्रदेशे वीर्यनो तरतमपणो कह्यो छे ते क्षयो-
पशमज ए रीते छे परकोइ प्रदेशनो वीर्यकोइ मध्ये आव्यो

नथी. तिहां कोइ पूछे जे, कार्याभ्यासे सर्व प्रदेशनो वीर्य मिली कार्य करे छे, ते इहां आत्मानो कर्त्तापणो सर्व प्रदेश मिल्यांज छे. ते माटे सर्व प्रदेशनो वीर्य स्वस्व प्रदेशे रह्यो साहाय्य करे छे, पण परक्षेत्रीगुण थाय नहीं. तथा वली पूछ्योजे "अक्खरस्स अणंतमो भागो निचुग्घाडीयो चिठइ" तेएस्यूं छे ? तेहनो उत्तर जे आत्माने असंख्यात प्रदेशे अक्खर कहेतां ज्ञानगुण तेहनो अनंतमो भाग जेम तेनो अंश तथा श्रुतनो अंश ते सदा उघाडो छे. ते क्षयोपशमी छे, एटले ए अनंतमोभाग जे उघाडो थयो छे, ते एकेन्द्रियथी मांडी पंचेन्द्रियपर्यंत वेत्तापणो करे छे. वली कोइ पूछस्येजे ए अनंतमोभाग जे उघाडो ते सदा उघाडो ? तेहने उत्तर जे अनंतमो भाग उघाडो तेतो वली अयथार्थपरभावानुयायी प्रवृत्तिकार तो जे मतिज्ञानावरणी बंधाणी तेहने उदये अवराय छे, पण जे आत्मानो वीर्यक्षयोपशमी छे ते वली बीजा मतिज्ञानांशने क्षयोपशम करे छे, इम संतति रीते सदा ज्ञाननो अनंतमोभाग प्रतिप्रदेशे क्षयोपशमी उघाडो पामीये छे. तेहनी साखश्रीविशेषावश्यकथी लिखीये छीए " तत्रह्यक्षर शब्देनाविशेषितंएवज्ञानं अभिप्रेतंतथापिरूढिवशात् " तथात्राप्यऽक्षर शब्दोवर्णएववर्त्तते इत्यादि पाठथी जोइ लेज्यो. सर्व प्रदेश क्षयोपशम प्रतिपादकंसूत्रं इत्यादि तथानंद्यां तदपिवाक्षरं द्विधाज्ञानं आकारादिवर्णजातं च इहां नंदीटीकामध्ये अधिकार घणो छे. वर्णश्चश्रुतं ए विशेषावश्यक वचनथी श्रुतज्ञाननो अनंतमो अंश गवेख्यो छे. ते श्रुतज्ञाननो क्षयोपशम ते सर्व प्रदेशीय हवे ए कम्मपयडी प्रमुखथी जोइ लेज्यो. तेमाटे अक्षरनो अनंतमोभाग ते सर्व क्षयोपशमी छे जो सर्व प्रदेशे

न हुवे तो सर्व प्रदेशने इंद्रियज्ञान वेत्तापणो किम थाये ? तेमाटे इम सद्दहवोनिर्धार छे इहां इंद्रियक्षयोपशमना माननो अधिकार छे, तेह मध्ये युक्ति अनेक उपजे पण नव भेदे धारवा ते सर्व आगम रीते सापेक्ष छेजी अथवा " यद्यपि अभिलाप्याना भावानामनंतभाग एवश्रुतनिबद्धस्तथापिप्रसंगत सर्वेऽप्यभिलाप्या श्रुतविषय न जानंति इति उच्यते" ए पाठ भगवती टीका मध्ये आठमे शतके उद्देशे २ छे. सा हरखचंद दल्ला प्रश्न पूछयो मकसूदाबादथी जे, पुद्गलपरमाणुने विषे वर्णादिक परिणमे छे ? तेहनो उत्तर " कारणमेवतदंत्यसूक्ष्मनित्यश्चभवति परमाणु एकरसवर्णगंधाद्विस्पर्शः कार्यलिंगीच " ए तत्त्वार्थवृत्तिनो वचन छे, जे सर्वखंधनो अंत्य कहेतां छेहलो कारण छे एटले द्व्यणुकादि सर्वखंध परमाणुथी नीपजे पण परमाणुनो कोइ कारण नथी ए अनादिअनंत शास्वत सिद्धद्रव्य छे ते सूक्ष्म छे तेहनो परमार्थ जे एक जीवनो एक प्रदेश, तथा आकाशनो एक प्रदेश तथा परमाणु एक सर्वनी अवगाहना तुल्य छे पण एक आकाशप्रदेशमध्ये एक जीवना असंख्याता अने अनंताजीवना अनंताप्रदेश मावे, एक प्रदेशे कर्मवर्गणापणे परिणम्या अनंता परमाणु समाइ रहे ते माटे आकाशप्रदेशथी आत्मप्रदेश समायवे सूक्ष्म छे, अने आत्मप्रदेशथी परमाणु समायवे सूक्ष्म छे, तेमाटे सर्वथी परमाणु सूक्ष्म छे, तथा ते परमाणु द्रव्यपणे नित्य छे ते एक परमाणुमे एकवर्ण, एक रस, बे फरस हवे, ते मध्ये फरस लूखो तथा चीकणो, उन्हो तथा टाढो, ए च्यार माहेला बे हवे लुखो उन्हो ए बे अथवा लुखो टाढो ए बे अथवा चीकणो उन्हो ए बे, अथवा चीकणो टाढो ए बे ए रीते हवे तेजे परमाणु श्वेत वर्ण हवे ते विश्रसापरि-

णामेज कालो थयो. श्वेतपणानो व्यय कालापणानो उत्पाद, इत्यादिक धारवो, तथा तुम्हे पूछ्यो जे ए परमाणुमें पूरणगलन ते किम छे ? तेहनो उत्तर. एकपरमाणुमें जे वर्णादिक गुण हवे ते एकगुणो हवे. ते समयमां ते संखगुण थाय. अथवा असंखगुण थाय, अथवा अनंतगुण थाय, अथवा अनंतगुणो हवे, ते असंखगुण संखगुणा एकगुण थइ जाये. कोइक समये वर्ण इंम थया, कोइक समे वर्ण ते प्रमाणेज रहे तो गंधादिक वधे घटे, कदाकाले वर्णादिक च्यार तेह प्रमाणे तेहनो तेज रहे. पण अगुरुलघुगुणतो एकसमयथी बीजे समये षट्गुणहानि अथवा वृद्धिपणे नियमापरिणमे ते पूरणगलनतानियमा छे पण अगुरुलघुनी पूरणगलनतागवेखी नथी. वर्णादिकनी जे गवेखी छे तथा परमाणुमध्ये एक परमाणु अन्यथी मिलवारूप स्निग्धता छे तेपण घटेवधे छे "द्वाभ्यांद्वाभ्यां अधिकाभ्यां संबंधः" ए तत्त्वार्थनो वचन छे. ते रस शब्दे तीखा कडुआ मांहिली नवी, तथा फरस मांहिलो नथी. जे रस मध्ये स्वाद धर्म छे, पण मिलवानो धर्म नथी. तथा फरस मांहिला स्निग्धता लेवे तो "रुखस्सरुखेण दुयाहिण्ण" एटले लुखो परमाणुओ बीजा लुखा परमाणुथी द्विगुण अधिकने मिले ए पाठ न ठरे किम तेमाटे मिलवो कारणरूपज स्निग्धता ते पूरणगलनगुणनी छे ते पण घटेवधे छे, जे पुराणुं ते पूरण, घटे ते गलन थयो, तथा एक परमाणु एक लाभे अस्तिकाय कहेवाय छे ते स्यामाटे जे अन्य परमाणुथी मिलाय तेहनो कारण पूरण गलननी आद्रता ते परमाणुमध्ये छे. तेमाटे आस्तिकायना छे. जे अगुरुलघुनी हानिवृद्धितो सर्व द्रव्यमां छे तेमाटे तेहनी पूरणगलनता गणवी नही जे वर्णादिक ४ नी तथा

पूरणगलननी जे हानिवृद्धि ते पूरणगलनपणे लेवी ए रीते ते वळी पुद्गलद्रव्य छे, तेपण नित्यादिक अनतस्वभावी छे, अनतगुणपर्यायी छे, सदाकाल छे कटुकमतीगच्छे सा लाद्धा कृत प्रश्नमे वीरस्वामीनो जीव सातमीनरकथकी सिंहपणे उपन्यो ते किम ? तेहनो उत्तर "सप्तम्या उद्वृत्त. तिर्यच्येव उत्पद्यते" प्रायोमत्स्येण तथा श्रीविशेषावश्यकमध्ये " सत्तममहिनेरईया ते उववाउ अणतरुवटा नयपावेइमणुस" इतिवचनात् तिरिंजचमव्येउपजेमत्स्यतोकाइनियामकनही तथा सिंहथी नरके गये पण सर्वसिंह नरके जाये ए नियम नथी उक्तच "वालादाढीपरकीहवति नरगागयाउ अइक्रूराजति पुणोनिरएसुबहुल्लेण न उण नियमो " ते माटे नियम नथी मनुष्य मरी चक्रवर्ति थया ते किम घटे ? तथाच कल्पटीकायासमयसुदरोपाध्याये " सुरनेरइएहिचियहवंतिहरि अरिहचाक्किबलदेवाइत्युक्तत्वात्कथमनुष्योमृत्वाचक्रवर्त्तिर्जात." तत्रोत्तरं " यथास्मिनक्षेत्रेदशाश्चर्याणिजातानि तथा तास्मिनक्षेत्रेइदमाश्चर्यमव्येगणितमस्ति पुनस्तत्रनागकुमारतस्तीर्थकरोजातोस्तिइद विस्तारार्थिनादेवभद्रकृतवीरचरित्रद्रष्टव्य " तथा स्त्रीपचानुत्तरविमानआश्री पूछ्यु तेहनो उत्तर जे "श्रीनेमिनाथस्य सप्तमेभवे स्वयवरा यशोमती भार्या, तथा द्वावपि अपराजितेमहाविमानेदेवत्वेनोत्पन्नौ" इति भवभावनाटीकाया तथा स्त्रीने वज्रऋषभनाराचसहननअस्ति "तनाक्षराणिपचसग्रह कम्मपयडीग्रथे नामकर्मोदयभगाधिकारमनुष्यस्त्रीषुषट्सहनन तस्यभगकाकृता, दिगवराम्नायेपि गोमट्टसारे एवमेववाक्य च मणुस्सणीसु छसवयणा इतिवाक्यात्, तथादिग्पट्टीयनिभग्यायोनिमतीस्त्रीक्षपकश्रेणिस्वरूप तत्रप्रथमनपुसकवेदसत्ताक्षय पश्चातपुरुषवेदसत्ताक्षय उदितवेदस्यप्रांतेक्षतिरितिनीति." दडकने अधिकारे सक्षेप विस्तर व्याख्या

दिखाडवाने अर्थे ए कथन कर्यो छे. राधनपुरी श्राविका आणंदबाईकृत प्रश्नोत्तराणिपुलाकचारित्रीयाने श्रुत जघन्य नवमा पूर्वना तीनवस्तु उत्कृष्टे नवपूर्व पुरां श्रीभगवती २५ मे शतके कह्यो छे, ते पुलाकचारित्रीयाने द्रव्यलिंग तीन कह्या छे, गृहलिंग, अन्यलिंग, स्वलिंग. ते गृहलिंगी अन्यलिंगी पूर्वकिमभणे ? तेहनो उत्तर जे श्रीभगवतीसूत्रेकह्या छे जे " भावलिंग पडुच्चनियमासलिंगेहुज्झा " ए पाटना आशयथी जे जे द्रव्यथी तीनलिंग कह्या ते वैक्रियलब्धिकरतां कारणे साधु गृहस्थलिंग अन्यलिंग करेपरे ते साधु छे. पण गृहस्थ नथी. तथा वीजे प्रश्ने भगवतीसूत्रे वंधनो उदयनो नीम छे. परं सत्तानो नाम नथी. ते भगवतीसूत्रे सर्वअधिकार समकाल कहे ते नियामक नथी. परं पन्नवणा तथा समवायांगे सत्तानो पाठ छे. तथा तीजे प्रश्ने धर्मलाभनो पाठ किहां छे? तेहनो उत्तर जे भवभावना टीका तथा उपमितिभवप्रपंचादिक ग्रन्थे पाठ छे. चोथे प्रश्ने आलोयणनो तुम्हे कह्यो ते किहां कह्यो छे ? तेहनो उत्तर जे परंपरा जीत दीसे छे. तथा नांदि मांडे तिहां अखीयाणां मुकवानो अधिकार विधिप्रपाप्रमुखविधि ग्रंथमे छे. तथा स्त्रीनी असज्झाइ चोवीसपहोरनो मान, आवश्यकनिर्युक्ति तथा प्रवचनसारोद्धारटीका मध्ये छे. तथा तिर्यंचणीनी असज्झाइनो जीत दीठो नथी. तथा सिद्धांतरासामध्ये कह्यो छे. तिर्यंचणीनी असज्झाइकालेदुहली धातु झरे छे. पण रुधिर झरतो नथी. ते माटे धातु झरे, असिज्झाइ नथी तथा मनुष्यने धातु झरवा काले पाणीयेसुचि करे ते समूर्च्छिमनी उपज टालवाने परं असिज्झाइ नथी. तिर्यंचना धातुप्रमुखमलथी समूर्च्छिम उपजे नहीं. अने जे कुयुक्ति करी जे जीत

उथापे तेहने जीतनी श्रद्धा नथी पण आगमनी आज्ञाये इम छे जे गीतार्थनो करयो जीत मानवो तिहा साख छे

असढाइन्नवणज्झ, गीअत्थअवारीयंतिमज्झत्था ।
आयरणाविहुआणंति, वयणओसुवहुमन्नंति ॥१॥

ए वचनथी उत्तम आचार्य जे जीत करयो ते प्रमाण छे, तथा चूर्णिकार टीकाकारना कीया जे वीजा ग्रथ ते मध्ये जे वचन ते पण पचागीनेपरे प्रमाण करवो इति तथा विरादनासघे सा टोकर प्रमुखे पूछ्यो प्रश्न तेहनो उत्तर जे तुम्हे पूछ्यु जे पुस्तकनी आगमनी पूजा किम छे ? केटला प्रकारनी छे तेहनो उत्तर जे जलनी तो पूजा पुस्तकनी नथी अने परपरागत ज्ञानपूजानी गाथा छे ते गाथा ।

नमंतसामंतमहीवनाह, देवेहिंपुज्झंसुविहीयपुव्वं ।
भत्तिहिमुत्तित्तमणिदामएहिं, मंदारपुप्फपसवेहि-
नाणं ॥ १ ॥
तहेवसङ्घामणिमुत्तिएहिं, सुगंधपुप्फेहिंवरंसुएहिं ।
पूयंति वंदंति नमंति नाणं, नाणंसलाभायभवक्ख-
याय ॥ २ ॥

आशयथी मणि कहेता रत्नजाति, पुप्फ कहेता फूलजाति असुकवस्त्रजाति मोतीनीजातिना पूजाना अक्षर छे तथा श्रीपालचरित्ने तथा नवपदप्रकरण श्रीरत्नप्रभसूरिकृतमध्येसिद्ध चक्रनी पूजामध्ये ज्ञानपदनी पूजा अष्टप्रकारी करी छे तथा शत्रुंजयमहात्ममध्ये धनेश्वरसूरिजीए सोनाने कमले ज्ञानपूजानो

अधिकार छे. तथा रूपानाणे सोनहीये गौतमपदनी पूजानो अधिकार छे. तथा ज्ञानपंचमीनी कथामध्ये तथा पूजापटल, श्री तत्त्वार्थकारकृत छे, तेमध्ये वासपूजा, नाणानीपूजा, मोतीनी, वीटणानी, दीवानी, धूपनी, एटली पूजा लिखी छे. तथा जीतकल्पचूर्णिमध्ये जिहां आचार्यादिक पुस्तक वांचे तिहां वासपूजा वीटणा निसित्त वस्त्रपूजा रूपा सोनाना फूल तथा नाणो तथा श्रीफल तथा दीप तथा धूपनी पूजा ज्ञाननी करवी पण गुरु आचार्य ते सचित्तने अडकता नथी जे पुस्तकथी गुरुने अडकवो पडे तेह पुस्तकने तो वासनी तथा सोनारूपाना फूलनी तथा नाणानी रत्ननी तथा लूगडानी एटली पूजा करवी ए जीत छे. धूपपूजा श्रावक पोते गुरुने अडकवा विना करे तथा गुरुपूजा गुरुने नव अंगे रत्नेकरी नाणेकरी सोनारूपाने फूले करी करवी ए अधिकार हीरप्रश्नमध्ये साखसहित छे. तथा गुरुने तथा पुस्तकने वधाववाने चोखे तथा मोतीए तथा सोनारूपाने फूले वधाववा एटलानो जीत छे वधतो जीत नथी. तथा गूहलीनो अधिकार श्रीविशेषावश्यकमध्ये गणधरस्थापना अधिकारे इंद्राणीए करी छे. ए सर्व पंचांगीने रीते लिख्यो छेजी. "यत जेणेव वसायसभाणेव उवागच्छाति लोमहत्थगपरामुसंति पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्झातिदिवएदगधाराअगेहिवरेहिं गंधेहिं यमलेहिं अचेति" ए पाठथी पाणीनी धारा फूलनी पूजानो अक्षर सूरीयाभने अधिकारे छे. शाह लाधाजीना पूछ्या प्रश्ननो उत्तर तुम्हे पूछ्युं जे वायुकायने वैक्रियशरीर छे ते लब्धिप्रत्ययी छे भवप्रत्ययी नथी जे पन्नवणानो वचन छे तिरिगति मनुष्यने लब्धिप्रत्ययी वैक्रियज हुवे तेमाटे वायुकाय ते तिरियंचना ४८ भेदमध्ये छे. तथा जे पूंठलेभवे जे

वैक्रियद्दुग वाल्यो हवे एहवो पचेंद्री तिरियच मनुष्य मरीने वादरएकेन्द्रिपर्याप्तामे उपन्या छे औदारिकशरीरने उदये भोगवता पछे लब्धिरूप उदय थाइ तथा सर्व विजयमध्ये ३२ हजार देश छे आर्य २५ जणाय छे पण अक्षर दीठा नथी. तथा महानिशीथे सुमतिभ्रष्ट थया ने परमाधार्मि थ्या ते अनेक पुद्गलपरावर्त्त ससारभम्यो ते जे समकीतितो अर्धपुद्गलपरावर्त्त ससारभमे अधिकोभमे नहीं ते किम मिल्यो ? एहनो पडुत्तर जे पडवाइने अर्धपुद्गलपरावर्त्त कह्यो ते कालपुद्गलपरावर्त्त लीधो छे अने जिहा अनेक पुद्गलपरावर्त्त कह्या छे ते कालपुद्गलपरावर्त्तमध्ये द्रव्यपुद्गलपरावर्त्त अनेक थाइ तथा अभव्यजीव आश्री श्रीभुवनभानुकेवलीचरित्रमध्ये अव्यवहारराशिमध्येथी निकल्या ए पाठ दीठो ते अव्यवहारमध्ये अभव्य छे इम ठहरचा छेजी. तथा मासआश्री लिख्यो ते आचारागटीकामध्ये तथा आचारागचूर्णिमध्ये तथा निशीथचूर्णिमध्ये एहज अर्थ करचो ते बीजे कोणे नवो कल्पायेजी तथा जे साधु अध्यापकपणे जे असुज्झताआहारादिक करे तेहने बध नहीं आत्मानो कर्त्तापणो स्वरूपानुयायी हवे तेवारे जे हिंसादिक ते प्रशस्त छे अने प्रशस्तआस्रवनी आलोयण नथी वदित्तुमध्ये "आयरियमप्पसत्थे" इत्यादि पाठ जोज्यो. ए चर्चा मुहडामुहडे कहेवराइ.

॥ कर्मसंवेधप्रकरण ॥



॥६०॥ ऐंनमः ॥ श्रीमज्जिनकुशलसूरिसद्गुरुभ्योनम ॥ सिरिवीरनाहनाण । वंदिअपम्भठकम्मरयगण । गुणमग्गणठाणेसु अ । भणासि कम्माणसवेह ॥ १ ॥ नाणतरायदुगभग । दसेइक्कार खीणमोहजा । केवलदुगेअभावो । वेअणसता अहरकाए ॥ २ ॥ गोयम्मि सत्तभगा । अठयभगाहवतिवेअणीए । पण नव नव पण भगा । आउचउक्केवि अणुक्कमसो ॥ ३ ॥ चउछद्दुदुन्निसत्तसु एगेचउगिणसुवेअणीअभगा । गोएपणचउदोतिसु । एगठ्ठसुदुन्निइक्कम्मि ॥ ४ ॥ अट्टच्छाहिगवीसा । सोलसवीसचबारछदोसु । दोचउसुतीसुइक्क । मिछाइसुआउएभगा ॥ ५ ॥ दोदोतिन्निअदोदो । दुगठगदुगसतखीणमोहजा । गुणपच्चईयाभगा । मग्गणठाणेसुणेयह्वा ॥ ६ ॥

दर्शनावरणीयभंगा.		मार्गणास्थानेषुभंगा.	
म.ग पंचें १ त्रस १ यो. ३ चक्षु अचक्षु द. २ शुक्ल १ भव्य १ सज्ञी १ आहा १॥ १२	११	अज्ञान ३ लेश्या ५ अनाहारक १ अ १ गति ३॥ १३	४
वेद ३ कसाय ४॥ ७	७	यथाख्यात १	४
ज्ञान ४ अ. द. १ क्षाय	९	केवल २	०

था. ५ इंद्रिय ४ अभ. १ असं. १ सि. १ सा. १॥१३	२	उपशम १	६
सामायक १ छेदोप. २	५	सूक्ष्म संपराय १	३
परिहारविशुद्धि १	२	वे. स. मिश्र. देशवि. ३	२

मार्गणासुवेदनीयभंगाः		
म. ग. पंचेन्द्रिय १ त्रस १ क्षायिक अनाहारक १॥	५	८
केवल २ यथाख्यात १॥	३	६
सूक्ष्मसंपराय १		२
शेषमार्गणा ५३		४

बावीसइक्कवीसा। सत्तरस(स)तरसेवनवपंच। चउतिगदुगंचइक्कं। बंधठाणाणिमोहस्स ॥ ७ ॥ छब्बावीसेवेअति। हासदुगअरइदुग-न्नतमगुणीआ। चउइगवीसिअसंढा। अणिछिदुगभंगसतरतिगे ॥ ८ ॥ पंचाइसु विणुजुअलं। भंगेक्कं मोहणिज्झउदयाइं। इग दो चउ पण छ सग अड नव दस इयपयाइं नव ॥ ९ ॥ दसबावीसे नवइग। वीसेसत्ताइं उदयठाणाणि। छाइनवसत्तरसे। तेरेपंचाइअठेव ॥ १० ॥ चत्तारिआइनवबंधएसु उक्कोससत्तमुद-यंसा पंचहिबंधगेपुण उदउदुण्हंमुणेयव्वो ॥ ११ ॥ इत्तोचउबं-धाई इक्किक्कुदयाहवंतिसव्वेवि बंधोचरमेवितहा उदयाभावेविवा-

होज्झा ॥ १२ ॥ इक्कगठक्किक्कारस दससत्तचउक्कइक्कगचेव एए चउवीसगया चोविसदुगिक्कम्मिइक्कारा ॥ १३ ॥ मिछेसगाइचउरो सासणमीसेसगाइतिन्नुदया छपचचउरचउगाइ चउचउउदयापमत्तता ॥ १४ ॥ चउगइतिन्निपुव्वे इगइक्कोबायरेडगोसुहुमे भंगाणचपमाणं पुव्वुदिट्ठेणनायव ॥ १५ ॥ इक्कठडिक्कारिक्कारसेवइक्कारसेवतिन्नि एएचउवीसगया बारदुगिपचइक्कम्मि ॥ १६ ॥ अठगचउचउचउरठ, गाय चउरोय हुतिचोवीसा, मिछइअपुवंतो, बारसपणगंचअनियट्टी ॥ १७ ॥ अट्ठट्ठीबत्तीस बत्तीस सट्ठिमेवबावन्ना चोआलदोसु वीसा, गुणेसुपयसखचोवीसा ॥ १८ ॥

मार्गणासु गोत्र भगा		मार्गणासुआयु कर्मभगा	
गति २ इद्री ४ थाव ५ अस १२	३	मनुष्यगति	९
		नरकगति	५
गतिदेव २ वे. ३ ले ५ अज्ञान ३ क ४ अवि १ अभ १ सि १ १९	भ ५	तिर्यंचगति	९
		देवगति	५
म ग १ पचेंद्रीय १ त्रस १ भव्य अनाहारक १॥५	७	इन्द्रिय ४ पृ १ अप १ वनस्पति १ ७	५
सा. १ छेद १ परि. १ सूक्ष्म १। ४	१	तेज १ वायु १ २	३
चो. ३ चक्षु १ अचक्षुद शुक्ल १ सज्ञी. १ आहा ८	६	पचेंद्री १ त्रस १ योग ३ क ४ दर्श २ लेश्या ६ अज्ञा ३ अच १ सि १ भव्य १ अभ.सज्ञी. १॥२५	२८
देशवि. मिश्र । २	२		

केवल. २ यथाख्यात १।३	२
ज्ञान ३ अद. उपशम ५	३
क्षयोपशम १	२
क्षायिक १	४
मनप. ज्ञान १	२
सास्वादन १	४

ज्ञान. ३ अ. द. १ सम्यक्त. ३। ७	२०
केवल २	१
सामा. ३ मनज्ञान १	९
देशविरति १	१२
सास्वादन	२६
सूक्ष्म. १ यथाख्यात १	२
मिश्र	१६
असंज्ञी १	९
आहारक	२८
अनाहारक	४

पु० २३	स्त्री० २३	नपुं० २३

वेयतिकसायचउगुण बारसतेज्ञुअलदुगणचउवीसा चउरुदयं-जा हुंतिअपयगुणीआहुंतिपयभेआ ॥१९॥ उवसामगखवगे पुणवीसं चोवीससतरभंगाय वेयागिसोलसकेवल दुगेअहरकायगेनात्थि ॥२०॥ सुहुमेगंसेसेसुअमग्गण ठाणेसुगुणभवानेआ चउवीसगायभंगा पय-संखाउदयपच्चइआ ॥२१॥ इतिउदयं ॥ अठयसत्तयछचउ तिग-दुगएगाहिआभवेवीसा तेरसबारिक्कारस इत्तोपंचाइएगूणा ॥२२॥

सतस्सपयडिठाणाणि ताणिमोहस्सहुतिपन्नरस गुणउदयबंधठाणे भणामिसतससवेह ॥२३॥ तिन्नेगेएगेगातिग मी सेपचचउसुति- गपुव्वे, इक्कारबायरम्मि, सुहुमेचउतिन्निउवसते ॥२४॥

मार्गणास्थानेशुमोहोदयभंगा			
म ग १ प १ त्रस १ यो ३ वे ३ क ४ च. १ अच १ शुक्ल १ भव्य १ सज्ञी १ आ- हारक १ ॥१९॥	चो ५२ भ १७	सामायक छेदोप मति- ज्ञान.	चो २० १७
		परिहारविशुद्धि	चो १६
		सूक्ष्मसपराय	भ १
इन्द्रीय ४ पृ अप वन. असज्ञी १॥८	चो १२	अविरति	चो १४
तेज १ वायु १ अभ. मि. ४	चो ८	लेश्या ३ आदि	चो ४०
		लेश्यातेज १ पद्म	चो ४८
देव—नारकी	चो २४	क्षयोपशम	चो १६
तिर्यंच	३२	उपशम	चो २० १७
देशविरति	८		
ज्ञान ३ अ. द ४	चो.३६ १७	क्षायिक	चो २० १७
अज्ञान ३	१६	मिश्र	चो ४
केवल २ यथाख्यान १॥२	०	सास्वादन	चो ४
		अनाहारक	चो.२०

गुणस्थानेषु मोह सत्तास्थानानि.

मि.	२८।२७।२६	अप्र.	२८।२४।२३।२२।२१
सा.	२८	अपू.	२८।२४।२१
मि.	२८।२७।२४	अनि.	२८।२४।२१।१३।१२। ११।५।४।२।१
अ.	२८।२४।२३।२२।२१		
दे.	२८।२४।२३।२२।२१	सूक्ष्म.	२८।२४।२१।१
प्र.	२८।२४।२३।२२।२१	उपश.	१८।२४।२१

छवीसातिगंदसगे नवगेबावीसछक्कअडगेअ इगवीसाइसत्तग सत्तेछवीसाविणुएए ॥ २५ ॥ तेछपणगेछस्सगवीसाविणुचउक्किइगचउडवीसं अडचउइगवीसतेरस बारसइक्कारसंचदुगे ॥ २६ ॥ दुगंतिगछगसगवीसं तेरसदुगंविणुइगेयसमसंता छवीसातिगदुवीसे इगवीसेअठवीसंति ॥ २७ ॥ विणुछव्वीसंइगवीसछक्क, सत्तरसेतेरंसेनवेपंच, सगवीसाविणापणगे, अडचउइगवीसतेरातिगं ॥ २८ ॥ अडचउइगवीसातिगं इक्कारसपंचउचउगबंधे तिगबंधाइसुतिगसंत, संतदुगखवगपच्छइआ ॥ २९ ॥ नरतसपणंदिसुक्का, चक्खुदुआहारभवसंन्नी, सुयोअकसाएवेऐ, सब्वेवंधुदयसंतंसा ॥३०॥ बावीसिगवीसिबंधे, भूजलइगविगलतरुअसंन्नीसु, सगअडनवदसउदये, संतेअडसगछहिअवीसा ॥ ३१ ॥ गइतसमिछदुगवीसअठछवीसता, बंधेदुवीससंते छावीसिगसेसपुव ॥३२॥ नाणतिगओहिदंसे, बावीसिगवीसहीणअडबंधे दसविणुउदयासंते, तेरसकेवलदुगेनात्थि ॥३३॥ लेसातिगदेवनिरये, अवि-

रइअणहारगेदुवीसतिग, छाईपणेगवीसाई, अठ्ठुदयातेअअन्नाणे ॥३४॥ सतेचउवीसचउ तेउपम्हासुनवगजावधे चउराईदसउदये इगवीसइवीस जा सते ॥३५॥ मणसामाइयछेए नवओइगजावन्न- वइउदए इगसत्तंजासत्ते, छवीससगवीसविणुसेसा ॥३६॥ परि- हारेनवबवो चोराइसत्तवेअइसते, इगदुगतिगचउअडज्ञुअवीसा सुहमेनबवस्स, ॥३७॥ उदयइगसतेइग, चउअडयअवीसइग, अहूरकाएअणुदयइगसतविणा, देसेबवस्सतेरेव ॥३८॥ पचाईअ- डउदए सतेइगढुतिचउटजुयवीसा तिरीएदुवीसओतेरपणओ दस- एगवीसओवरिमा ॥३९॥ उवसमगेसत्तराई इगजाबघेयएगओ- अडजा, चउअटवीसासते खवगे वघुदयएमेव ॥४०॥ सतेदुगवी- साइ छगविणुसद्देअवेअगेबवो सतराईनवणओ नवजादुतिचउड- वीसना ॥४१॥ मीसेसनरसबवो सगअटनवउदयचउसगटयआ- वीसा वीसासतसापुण सासाणेबवइगवीस ॥४२॥ उदयएसगट- नवग सतेअटवीसमग्गणाटाणे, बवाइतिगमोहस्स भणिअभगाय- पुवुत्ता ॥४३॥ तेवीसपनवीसा छवीसाअटवीसागुणतीसा तीसे- गतीसमेगं बवटाणाणिनामरस ॥४४॥ चउपणवीसासोलस नव- बाणुईसयायअडयाल एयालुत्तरआयाल सयायइक्किक्कबवविही ॥४५॥ धुवबंधिनवगनिरिदुग एगिंदीअजाइउरलतणुहुड थावर- मपइज्ञमथिर असुभमणाइज्जअदुगबवे ॥४६॥ एगिंदिगमणज्जुगो थूलओपरित्तइयरवाजोगे बवइमिच्छेअणिरय सुहमओदेवविणदुगड ॥४७॥ परघुसासस्सेवे पणवीसइच्छपरित्तथूलाओ थिरसुभजस- इयरेसु भगटयनिगोइपवइया ॥४८॥ आयरसाहारणओ सुहम- पत्तेअईयरओभगा जसविणुचउड्गजुग्गा दुगइआवीससिच्छत्ते ॥४९॥ तेवीसनवटाणे थावरएगिंदिविणुटनिइअतस उवरिमजाइ- सुअणा छेवटोरलउवगच ॥५०॥ चउभगाजाईहिंचउहिं तिरी-

आणातिरिदुगविहीणं मणुदुगजुत्तंमणुए एगंभंगापणअपज्झे २५बं। २५भं॥ ॥ ५१ ॥ बायरपरित्तपणवीस मज्झेआयावजुअछवीसंति अहवाउज्जोअजुअं भंगाअडदुगणइगजुग्गा ॥५२॥ धुवनवपणं-दितसचउ परवावेउव्विदेवदुगसुगइ समथिरइयरछगेवा देवडवीसेठ-पुव्वंता ॥५३॥ मिच्छेदसअपसत्थेहिं इगभंगोनिरयजुग्गअडवीसे षिवविअलेपणवीसे कुखगइपज्जत्तपरिवदुगदुसरं ॥५४॥ असम-त्तहीणनववीसा भंगाचोवीसवियलपच्चईया बंधइतिरिनरमिच्छा धुवतिरिपरवायउरलदुगं ॥५५॥ तसचउपणंदिवीसे, संघयणागि-इसुअन्नतमदुतयं थिरमथिरंवाछक्कं, खगईइगसव्वगुणतीसं ॥५६॥ यसओसगपयदुगणा संघयणगुणायआगइगुणआ छयालसयठभंगा तिसीएमणुएविएमेव ॥५७॥ देवडवीसेजिणजुअ भंगटगसम्मओ-अपुव्वंजा विअलपणंदीयतिरिजुग्ग गुणतीसेजोअजुअतीसं ॥५८॥ पुव्विवभंगसामीअ नरगुणतीसेसजिणअडभंगा सुरअडवीसेसाहार भंगसिगनरअपुव्वंजा ॥५९॥ आहारतीसजिणजुअ बंधइसुमुणी-अएगजसपगइ एगविहबंधठाणे, अपुव्वओसुहुमठाणंजा ॥६०॥ इगविगलथावरेसुं अडविसिगतीसएगविणुपंच, देवेसुतीसगुणतीस छवीसपणवीसतेवीसा ॥६१॥ तसजोअकसाएसुं चक्खुदुआहार-भव्वनरसंन्नी पंचंदीयविएसुं सव्वेदेसेनवडवीसा ॥६२॥ तिरिअ विरयअन्नाणे आइतिलेसेअभव्वअणहारे मिच्छअसंन्निसुठाणा णेया-इगतीसएगविणा ॥६३॥ एगविणातेउए तिवीस छव्वीसहीणप-म्माए सासाणेअडवीसतिअं इगतीसजुयंचपरिहारे ॥६४॥ ना-णचउओहिदंसे, उवसमखवगेअछेअसामाइए आइतिबंध विणायण एगविणावेअगेएए ॥६५॥ अहखायकेवलदुगे अबंधसुहुमेएग-विहबंधो गुणतीसतीसनिरये मीसेअडवीसगुणतीसं ॥६६॥

सुक्काएतेवीसगछवीसहीणाय तेउएभंगानिरविगलसुहमतिगे-हीणाइगविणुपम्माअतिरिसुक्का ॥१॥ इति मा० बंधस्या० ॥

बवाप्रा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	
एकेन्द्रिय	४	२०	१६						
वेन्द्रिय		१			८	८			
तेन्द्रिय		१			८	८			
चोरिन्द्रिय		१			८	८			
तिर्यंचपच		१			४६०८	४६०८			
मनुष्य		१			४६०८	८		१	
देवता				८	८	१	१		
नारकी				१					
सर्व	४	२५	१६	९	९२४८	४६४१	१	१	१३९४५

इगविगलथावरेसु अजिणविउव्वाअनाणतिरिएसु मिच्छअसन्नीअभव्वे अजिणाहारा सजिणअजए ॥ ६७ ॥ अविगलविउव्विनिरए अविरयजासम्मनाणुवहिदसे चरणतिदेसेसुरजा अहरकायदुकेवलेनात्थि ॥ ६८ ॥ देवपरित्तबायर तिरीअनरासेसयासुठाणभवा भगामग्गणठाणे ववठाणाणनेयव्वा ॥ ६९ ॥ अणहारेनिरयभवा आहारगतणुभवायनोभगा मणनाणेसामईआभगसखामुणेयव्वा ॥ ७० ॥ मिच्छेतेवीसाड । साणाडसुअट्ठवीसओबघे । छतिन्निदोतिदोदो । चउपणसेसेसुजसनवो ॥ ७१ ॥ मिच्छेअजिणाहारा । अविरयलनिरछेवहुडसासाणे । दुहगतिसवयणागिइ । चउविणदुगइज्जमीसदुगे ॥ ७२ ॥ सजिणासमत्ताओ, देसदुगेदेवजायसाहारा अपमत्तदुगेभंगा अनिआट्टिदुगेयइक्किक ॥७३॥ देवभवादेसदुगे अपमत्तदुगेअदेवनरजुग्गा,

बंधस्थानानिमार्गणासु	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१	
म. प. त्र. यो. ३ वे. ३ क. ४ दर्श. २ आहाभ. संज्ञा. १ शुक्ल॥ १६	४	२५	१६	९	९२४८	४६४१	१	१	१३९४७
था. ५ इग १ विग. ३	४	२५	१६	०	९२४०	४६३२	०	०	१३९१७
ति. १ मि. असंअभ. ८ अज्ञा. ३	४	२५	१६	९	९२४०	४६३२	०	०	१३९२६
सम. ३ अवधि ७ द. नाण ३	०	०	०	८	१६	९	१	१	३५
देव. १	१	१	१६	०	९२१६	४६१६	०	०	१३८५०
नारकी. १	०	०	०	०	९२१६	४६१६	०	०	१३८३२

सामाय. छद्मस्थ ३	०	०	०	८	८	१	१	१	१९
परि. १	०	०	०	८	८	१	१	०	१८
सूक्ष्म	०	०	०	०	०	०	०	१	१
देस.	०	०	०	८	८	०	०	[illegible]	१६
मिश्र	०	०	०	८	१६	०	०	०	२४
सासा	०	०	०	८	६४००	३२००	०	०	९६०८
लेश्या ३	४	२५	१६	९	९२४८	४६४१	०	०	१३९४२
लेश्या ते	१	१०	१६	८	९२२४	९६१७	१	०	१३८७७
अनहारक	४	२५	१६	८	९२४८	४६४०	०	०	१३९४१
के २ यथा	०	०	०	०	०	०	०	०	०
लेश्या प	०	२	०	८	८२२४	४६१७	१	०	१३८५२
लेश्या शु	०	१	०	८	४६१६	९	१	१	४६३६
अवि.	४	२५	१६	९	९२४८	४६४०	०	०	१३९४१

बंधस्थान	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१
मिथ्यात्व	४	२५	१६	९	९२४०	४६३२	०	०
सासा	०	०	०	८	६४००	३२००	०	०
मिश्र	०	०	०	८	८	०	०	०
अवि	०	०	०	८	१६	८	०	०
देस	०	०	०	८	८	०	०	०
प्रमत्त	०	०	०	८	८	०	०	०
अप्रमत्त	०	०	०	८	८	१	१	०
अपूर्व	०	०	०	८	८	१	१	१
अनिवृत्ति	०	०	०	०	०	०	०	१
सूक्ष्म	०	०	०	०	०	०	०	१

सजिणाहाराभंगा, अनिअट्टिदुगे अ इक्किक्कं॥७३॥ वीसिगवीसाचउवीसगाउ, एगाहीआअइगतीसा उदयट्ठाणाणिभवे नवअट्ठ यहुंतिनामरस ॥ ७४ ॥ एगबियालिक्कारस तित्तीसाछससयाणितित्तीसा वारससत्तरससया णहिगाणिबिपंचसीईहिं ॥७५॥ अउणित्तीसिक्कारस सयाणहिअसतरपंचसट्ठीहिं इक्किक्कगंचवीसा दट्ठुदयंतेसुउदयविही ॥७६॥ नामधुवोदयतिरिदुग थावरएगिंदिदु-

भगणाइज्ज सुहमेयरदुहअजसेण थूलपज्जत्तजसपच ॥ ७७ ॥ एगिंदिअइगवीसे, अदुयावरइगबितसथूलजुअ पज्जेजसअजसेणय, अजसापज्जेविगलनवग ।।७८।। नामधुवोदयतिरिदुग पणिंदित- सथूलओअ इगभगोलद्धिपज्जे असमत्तदुभगणाइज्जअजसेण कर- णअपज्जेपज्जे असमत्तगचउगसेअरेणट्ठ तिरिदुगठाणेनरदुग खेवे- नवभगपुव्विव ॥ ८० ॥ नामधुवमणुअपणतस थूलपज्जत्तसुभग- आइज्ज जसवीसेभगेग कम्मणगेकेवलीअजिणे ।।८१।। जिण- जुअइगवीसते भगेगतत्थमणुअइगवीसे अनरदुसुरदुगजोगे अ- डनिरयेअसुहइगभगो ॥८२॥ एगिंदिअ इगवीसे पुव्विविणुउरल- हुडउववाया पत्तेगेअरवादस थुलपवणेविउव्विइग ॥८३॥ इगच- उवीसेसपरिच पणवीसथूलओपरित्तिअरे जसअजसेचउसुहुमे परि- त्तजुअभगअडगति ॥८५॥ एवनरवेउव्वे अडसाहारेपसत्थइगभगो देवेअडनिरयेइग भगाइगवीसउदउव्व ।। ८६ ॥ इगपणवीसेउसास अहदुउज्जोअन्नारपुव्विव पवणेइगइगवीसे विअलेतिरिपुव्विअवहारे ।।८७।। उरलदुगहुडछेवट्ठ परित्तउववायसहिअनवभगा तिरिइग- वीसेपुव्वी हरखिवउववायपत्तेअ ।।८८।। उरलदुगागिइछक्के छग- सवयणेसुअन्नतमदुतय सवयणागिइगुणिया अडभगादुसयअडसीइ ।।८९।। अपजत्तेइगअसुहो एवमणुए सुदुसयगुणनवइ बायरइग- छव्वीसे आयवउज्जोअ अन्नछग ।।९०।। वेउव्विअपणवीसे ति- रीएपरवासुगइजुअअट्ठ एवनराभगा पणवीसुदउव्वनेअव्वा ॥९१॥ विअलछवीसेदुखगइ परवाजुअअडवीसभगछग तिरिछव्वीसेपरवा खगइसुअअन्नतमएगा ।।९२।। पुव्वुत्तदुसयअडसीखगई दुगुणा वेउव्विसगवीसेतिरीयेउसासेवा उज्जोएभगसोलसग ।।९३।। तिरि- अव्वउरलमणुए वेउवेसत्तवीसउस्सासे खित्तेअडउज्जोए इगआहारे- दुभगसुहा ।। ९४ ।। सुरसगवीसेउसास उज्जोएवासोलइगनिरये-

उसासेअपसत्थो १२०।२२८ गुणतीसेतिरिअजाइगुणा ॥९५॥ विअलेतिरिअडवीसे उसासोज्जोअअन्नतमखेवे वेउव्वीआतिरीएपुण सगवीसेस्सुसरऊसासे ॥९६॥ ऊसासेउज्जोए खित्तेवासोल मणुअ अडवीसे ऊसासएपणसय छसयरिवेउव्वीए ॥९७॥ आहार २ देव १६ निरए १ अठावीसुव्वभंग २९. तीसुदये वियलद्वावीसे-खिवसास १ सरअन्नचउभंगा ॥९८॥ भासाअपज्जत्ताणं सासो-ज्जोएसुभंगदुगमेव भंगाद्वारसविअले सोसासेतिरिअगुणतीसे ॥९९॥ सुसरेवादुसरेवा सहीएबावन्निगारसयभंगा वणसयछसयरि सुसरेसोज्जोएतिरिअगुणतीसे ॥१००॥ वेउव्विअसगवीसे सोसा-सोज्जोअसरपुअडभंगा मणुएउज्जोअविणा बावन्निक्कारसयभंगा १०१ वेउव्विअसगवीसे ऊसासोज्जोअसरयुअं एगंसुहभंगंआहारे एवं-देवेसुअडभंगा ३० ॥१०२॥ उज्जोअरहीअतिसे उज्जोएणेवहो-दुइगतीसं भंगाबारसविअले बावन्निक्कारसयातिरिए ३१ ॥१०३॥ केवलिअससुग्घाए वीसेसुषिवज्जउरलदुगरिसहं उववायंपत्तेअं संद्वा-णं६इयछवीसुदओ ॥१०४॥ एसुहवंतिअतीसं परघा १ ऊसास ९ खगइसुरयोए वयणनिरोहेसरविणु २९ गुणतीसडवीससासविणा २८ ॥१०५॥ इगवीससत्तवीसा इगतीसाजिणवराणतिछज्जुआ योगनिरोहेतेसिं तीसगुणतीसगानेआ ॥१०६॥ मणुअगईजाइतस बायरंचपयत्तसुभगआइज्जं जसातिछयरंइयनव अडजिणरहीआअ-योगगुणे ॥१०७॥ उदयभंगासम्मत्ता ॥ बंधेउदयस्थानानि ॥ तिप-णछअहिअवीसेउदया ९ इगवीसओअडइगतीसा एवंगुणतीसतीसे चउवीसविणायअडवीसे ॥१०८॥ इगतीसेएगेपुण तीसमबंधेसु-सेसदसद्वाणा चउपणवीसयरहिआ भंगानेआयपुव्वत्ता ॥१०९॥ तिरिगइक्कसायअन्नाण८अचखुअविरयअभव्वचउसेसे मिछअसंन्नी-असंढे १८ उदयानववीसअट्ठविणा ॥११०॥ तेचउवीसविणाअड-

प्रायोग्यउदय	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८
एकेन्द्रिय	०	५	१	७	१३	६						
बेन्द्रिय	०	३			३		२	४	६	४		
तेन्द्रिय		३			३		२	४	६	४		
चौरेन्द्रिय		३			३		२	४	६	४		
प्रा तिर्यच		९			२८९		५७६	११५२	१७२८	११५२		
तिर्य वैक्रि				८		८	१६	१६	८			
मनुष्य		९			२८९		५७६	५७६	११५२			
मनुष्यवैक्री				८		८	९	९	१			
आहा				१		१	२	२	१			

केवली	१	१				१		१	१	१	१	१
देवता		८		८		८	१६	१६	८			
नारकी		१		१		१	१	१				
सर्व	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	१	१

२३।२५।२६	२१।२४।२५।२६।२७। २८।२९।३०।३१
२८	२१।२५।२६।२७।२८। २९।३०।३१
२९।३०	२१।२४।२५।२६।२७। २८।२९।३०।३१
३१।१	३०
अबंध	२०।२१।२६।२७।२८। २९।३०।३०।३१।९।८

नाणतिगचक्खुओहिवेअदुगे उवसमवेअगसन्नीपम्हाअसुए असग-पणवीसा ॥१११॥ विगले छगतेन्निरये इगपणसगअठनवहिआ-वीसा देवेते ६ तीसयुआ सुहमेपरिहारगेतीसं ७ ॥११२॥ पण सगअडनवसहिआ वीसातीसंमणे १ दुसामईए २ देसेइगतीस-युआ ६ गुणतीसातिमीसमणवयणे ७ ॥११३॥ सव्वेभव्वे १ नरतस पणंदिखवरोसुनच्छिचउवीसं इगवीसाईज्झा सगवीसाइग-थावरेपंच ११ ॥११४॥ दसचउपणदीसाविण केवलदुगिसुद्धसं-जमेउदया वीसिगवीसंनवअड ४ अणहारेसेस ८ आहारे॥११५॥

सासाणेइगचउपण छनवत्रीसायतीसइगतीसा विणुअडनवतणुयोए सुक्काएतेअचउवीसा ३ ॥११६॥ इतिमार्गणासुउदयस्थानानि ॥ अथमार्गणासुभगका.॥ मणुआइचउगईसु । तिगईविणुनिअगईभवाभगा एगेंदिअंबायाला पुढवीगुण चत्तअविउव्वा ६ ॥११७॥ तावविणावणउदगे तेउसज्जोअहीणसंविउव्वा पवणेविअलेविअला तसेसुएगिंदिभगविणा ८ ॥११८॥ इगविगलविणासगले कसायचउगे जिणट्टभगविणा ससुएभगावयणे मणवेएतेअविगलविणा ७ ॥११९॥ इगविगलनिरयजिणविणु पुरिसेइत्थीसुहारविणुतेविआहारतिछसुरविणु सढेतिगनाणवहिंदंसे ॥१२०॥ इगविगलदिअजिणविणु पज्जचउगइभवायसामईए छेएनरपज्जसुहा मणपरहारेअणाहारा ॥११॥१२१॥ सुहमेदुसयरितीसा सजिणाहक्खायगेअअन्नाणे २ मिछाभवेहारग तिछविणासव्वभव्वेसु ७ ॥१२२॥ केवलदुगिजिणज्झुग्गा तिरिनरसुहेदेससयमेभगा सिछुभवपज्जत्ता इगविगलविणाविभगंम्मि ४ ॥१२३॥ अजिणाहाराअजए साहारालेसतिगअचक्खू सुचक्खुसु इगवितिइदियजिणाविणु वेअगितिनाणुव्व ७ ॥ १२४ ॥ खवगेतेजिणजुत्ता मीसदुगेठाणगायसन्नीसु जिणविणुपणदिभगा अडवीसजानरअपज्जा ४ ॥१२५॥ सवयणागइपणविणु विउव्विविणुतिरिअज्जअसन्निसु सेलेससमुग्घायग तणुअपज्जअणाहारे २ ॥१२६॥ पम्हासुनिरयइगाजिण विगलविणतिउगेअइगजुत्ता सुक्कासुसजिणइगविणु नाणुव्वाहारविणुवसमे ४ ॥२७॥ नवअडविणुतणयोए मिच्छेआहारतित्थविणुबीए वायर२ विगल ६ गतिरि ८ नर ८ सुर८ पज्जाहुतिवत्तीसं ॥१२८॥ दोपुणत्रायरपज्जा पणवीसेअठ्ठदेवपचईया छव्वीसे ५८२ एगिंदिय १३ अपज्ज ५ विणनवइगुणतीसे ॥ १२९ ॥ तिसेतिरि ११५२ नर ११५२ सुर८ जा इगतीसेतिरयजायपज्जत्ता तईए अणेगविगला

मार्गणासुउदय स्थानानि	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	
मनुज १	१	१०	०	९	२८९	१०	५८७	५८८	११५५	१	१	१	२६५२
तिर्यंच १	०	२३	११	१५	३११	१४	५९८	११८०	१७५४	११६४	०	०	५०७०
देवता १	०	८	०	८	०	८	१६	१६	८	०	०	०	६४
नारकी १	०	१	०	१	०	१	१	१	०	०	०	०	५
एकेन्द्रिय	०	५	११	७	१३	६							४२
विगल		९			९		६	१२	१८	१२			६६
पंचेन्द्रिय	१	२८	०	२६	५७८	२७	११९६	१७७३	२८९१	११५३	१	१	७६८३
मू.	०	५	१०	६	१२	६							३९
जलवण		५	१०	६	१२	३							३६

तेज		५	१०	६	६								३३
पवन		५	११	७	७								३६
त्रस	१	३७	०	२६	५८७	२७	११२०२	१७८५	२९१७	११६५	१	१	७७४९
कषाय ४	०	४१	११	३३	६००	३२	११२०२	१७८४	२९११	११६४			७७८३
वचन								१७	२९११	११६५			४०९३
मन								१७	२८९९	११५३			४०६९
पु	०	२६	०	२५	५७८	२५	११९५	१७७१	२८९८	११५२	०	०	७६७०
स्त्री		२६	०	२४	५७८	२४	११९३	१७६९	२८९७	११५२			७६६३
नपुसक १		३३	११	२४	६००	२३	११८४	१७६६	२९०७	११६४	०	०	७७१२
ज्ञा ३अ. द १ वेदक ११५		२७		२६	५७६	२६	११९६	१७७२	२८९८	११५२	०	०	७६७५

मनपर्याय १				१	०	१	७४	७४	१४५				२९५
केवल २	१	१			१	१	१	२	२	१	१	१	१२
अज्ञान ३ सिद्ध १ अभव्वा ५	१०	४१	११	३२	६००	३१	१२००	१७८२	२९१५	११६४	०	०	७७७६
विभंग				१६		१६	२४	१७६९	२८९६	११५२	०	०	५८७३
सामा. छे. २	०	०	०	२	०	२	७६	७६	१४६				३०२
परिहार १									१४५				१४५
सूक्ष्म. १									७२				७२
यथाख्यात	१	१			१	१	१	२	७४	१	१	१	८४
देशविरति				२	०	२	१८४	२२०	३६२	१४४			८७८
अविरतति	०	४१	११	३२	६००	३१	१२००	१७८२	२९१५	११६४	०	०	७७७६

चक्षु	०	३०	०	२६	५९८१	२६	११९८	१७७६	२९०४	११५६			७६५७
अचक्षुलेशा ३	०	४१	११	३३	६००	३२	१२०२	१७८४	२९१६	११६४	०	०	७७८३
तेज	०	३०	१०	३१	५९०	३१	११९५	१७७१	२८९८	११५२			७७०८
पद्म	०	२६	०	२५	५७८	२५	११९५	१७७१	२८९८	११५२			७६७०
शुक्ल	१	२७	०	२५	५७८	२६	११९५	१७७२	२८९९	११५३	०	०	७६७६
भव्य	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	१	१	७७११
उपशम	०	२७	०	२५	५७८	२५	११९४	१७७०	२८९७	११५२	०	०	७६६८
क्षायिक	१	२८	०	२६	५७८	२७	११९६	१७७३	२८९९	११५३	१	१	७६८३
मिश्र								१७७०	२९९७	११५२	०	०	५८३१
सा.	०	३२	२	८	५८२	०	०	९	२३१२	११५२			४०१७

संज्ञी	०	२७	०	२६	१२७८	२६	११९६	१७७२	२८९८	११५२			७६७५
असंज्ञी		३२	११	७	४०	६	३८	४४	६६	४४	०	०	२४८
आहार	०	०	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	०	०	७७४६
अनाहार	१	४२									१	१	४५
का. यो. १	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२९१७	११६५	०	०	७७८९

अजएुमेवदेसेवि ॥१३०॥ सुरनिरयदुहगतिब्रिणा सुहसाहारामणुअजाछद्धे अणहाराअपमत्ते पुवेसंवयण-
तिविणाते ॥१३१॥ इक्किक्कगंचपरओ ठाणाइगवीस माइनवमिच्छे चउवीसविणासम्मे गुणतीसातिमीसिसा-
साणे ॥१३२॥ इगवीसाइसत्तग सगद्ववीसविणुएगतीसंजा देसेसगवीसाई पणपणवीसेणयुत्ताते ॥१३३॥
इगतीसविणुपमाए गुणतीसदुअप्पमत्तगिअपुवा खीणंजातीसेगं अयोगिनवअट्ठदुगठाणा ॥१३४॥ योगी-
जिणेवीसदुगं बावीसग छंचंअट्ठठाणाइं अपज्जत्तभवाभंगा विविखिआनत्थिमयभेआ ॥१३५॥ तिदुनउई-
गुणनवई छलसीअसीइगुणसीइ अठयछपन्नत्तरिनवअट्ठयनामसंताणि ॥ १३६ ॥ तिन्नुईसव्वेसम्मे
जिणवज्झुवसंतजावदुनऊई आहारचेगविणुगुण नवइअडसीईजिणरहिआ ॥ १३७ ॥ निरयसु-

दुगअहवसुरदुग रहिआछलसीइअहअसीईयूआनिरयसुरछक्कअसई उव्वलिआतेणछक्केण ॥ १३८ ॥ तेअनरदुअडसयरी उव्वसमसता-निरयतिरिदुचऊजाई थावरआयव दुग साहारणविणासीई॥१३९॥ जिणविणुतेगुणसीई ते आहारगविहीणछस्सयरी जिणविणुतेपणस-यरी अडनवसताविउदउव्व ॥१४०॥ तेवीसतिगेपणग अडवी-सेचउगसत्तगुणतीसे तीसेइगतीसइग इग बंधेअठसतसा ॥१४१॥ उदयेसत्तास्थानानि ॥ दुगअडपणसगनवसग अडनवनवपणतिग-तिगचकमा वीसाइसुउदएसु सतठाणाणिनेआणि ॥१४२॥ तिदु-नउईगुणनऊई अठयछलसीअसीईअडसयरी अविरयपणलेसासुअ-तिनउईविणुमिछअन्नाणे १० ॥१४३॥ तेविणुगुणनवई इगथा-वरविगलामणेसुतिरिए असव्वेतसपणभव्वे अणहारेनवडविणुयोए १८ ॥१४४॥ अडसयरिविणामणुए ११ नवठविणुदसकसायच-चक्खुदुगे सुक्काहारगसन्नीअ वेएसुय १३ नाणुवहिदसे ॥१४५॥ छलसीअडसयरीविणुअडपवेअगदेसदेवपरिहारे उवसमगेतिदुनवई गुणनवईचेवअडसीई ५ ॥१४६॥ गुआसीगुणसीई छपणसय-रीहिंसुहमसामईए छेएनवट्ठसहीआ खवगाहक्खावगेनेआ ५ ॥१४७॥ तिनवईचउविणुकेवल दुगिछठाणादुसासणेमीसे दोन-वईअडसीईगुणनवईयुआयतेनिरए ५ ॥१४८॥ अडसीछलसीसीई अडसयरीमिछसभवाभव्वे १ छगइगदुगचउपचसु दुसुअडतिसु-चउछगमेग ॥१४९॥ उदस्सुदीरणाए सामित्ताएनविज्जईविसेसो मूत्तूणयइगुयाल सेसाणसव्वपयडीण ॥१५०॥ नवउदओअयोगे उईरणातेरमेअवुछिन्नामणुआउवेअणीए उईरणाअपमत्तजा ॥१५१॥ सेसाणपयडीण छेअसमयाउआलिगामोत्तू पडगहीआणयसमग अपडिग्गहीआणविसमति ॥१५२॥ अविभागवग्गफड्डग अतर-ठाणचकइगायकमा लोगासखगुणाते योगठाणादलनिमित्त॥१५३॥

गुरूआलोओ कालोठिईठाणमाणंच ॥१६०॥ अंतरमबंधकालो अणुदयकालोअसंतकालोय सव्वाणुणंतभागे लोगस्सअसंखमेभागे ॥१६१॥ मोहेवसमोमीसो चउवाईसुअठकम्मसुअसेसा भावा-पुणजहसंभव मग्गणठाणेसुनेअव्वा ॥१६२॥ चउदुगतिगपण-चउतिग, तीसातीसासगठ दुगवीसा, वीसगुणवीसतेरस बारसभावा-गुणठाणे ॥१६३॥ थोवाणुगाउखंधे नामेगोएसमोअअहिओअ तत्तोविग्घावरण दुअहिओमोहेतओअहीओ ॥१६४॥ तत्तोवयवे अणिज्जं अहिअंगुणमग्गणासुयोगाओ उद्धरीअंसमयाओ कम्मसं-वेहगंथमिणं ॥ १६५ ॥ इयकम्मबंधबद्धा तव्वेअणओअसुहदु-हंपत्ता तत्थयसमभावत्थं कम्मसरूवंविभावेज्जा ॥१६६॥ परम-प्पानाणंपुण झाणठाणंचसिवपयनिहाणं तंपुणकम्मविवेगे कम्म-विवेगोअतन्नाणे ॥१६७॥ अप्पगहोपरचाओ मज्जत्थत्तंचधम्म-ज्झाणंच आयमसुक्कंहवई कम्मसरूवस्सनाणेण ॥१६८॥ अग्गा-हणीअपुव्वाओ उद्धरीआपगईसंगहागंथा तत्तोदेविंदेणं कम्मगं-थाकयासुकया ॥१६९॥ ततोऊद्धरिऊणं बंधाईसुकम्मभंगसंवेहं सिरिजिणचंदमुनिसर रज्जेभणीअंसमासेणं ॥१७०॥ सुविहियखर-रयरगच्छे॥ युगवरजिणचंदसुरिसाहाए पाठगपुन्नपहाणा तस्सी-सासुमइसागरापुज्जा ॥ १७१ ॥ वरसाहुरंगवायग तस्सीसापाठ-गासुयसमुद्दा सिरिएयसारअज्जा पुज्जाविज्जानिहाणाणं ॥१७२॥ सुयवायगागुणड्ढा नाणधम्मा सुनाणधम्मधरा निवईणाविसंपुज्जा रायहंसागणिप्पवरा ॥१७३॥ तस्सीसेणयभणीअं देवचंदेणआ-यसरणट्ठा नाणच्छं(पाययेपाय) सावगवरदेवरायस्स ॥ १७४ ॥

इतिश्रीकर्मसंवेधभंगप्रकरणं समाप्तं ॥ शुभंभवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

सं. १९७१ वर्षे द्वि. आषाढ सुदि १ दिने श्रीजेसलमेर महादुर्गमध्ये लिखितं भोजक किशोरचंद श्रीमद् विक्रमपुरवास्तव्य.

॥ प्रतिमापुष्पपूजासिद्धि ॥

(आगमसारनो अन्तर्भाग—जूनी आगमसारनी प्रतियोमा आ विषय छे)

ऐंनम संवत् १८०० ना वर्षे प्रजाउपरि फूलनी चर्चा ते उपरे श्रीपंडित श्रीदेवचंद्रजीकृत प्रश्नोत्तराणि लिख्यते ॥ तथा कोइ पूछे जे प्रतिमानी पूजा तो पहेला आश्रवमध्ये लखी छे तेतो तुम्हे मृषावाद बोलो छो इहां प्रश्न व्याकरणसूत्रमा पाठ इम छेनहीं तिहां पाठ छे ते लिखीये छे ॥ अविजाणओ परिजाणओ विसयहेउ इमेहिंकारणेहिंकिंते करीसणपोक्खरणीवा विवप्पणीकूवसरतलागचितिवेतिखाति आरामविहार, थूभपागार, दारगोपूर अट्टालगचरीय सेतुसंकमपासायविकप्पभवणवरसरणिले-णआवणचेइयदेवकुलचित्तसभापवाआयतणवसहं भूमिवरमंडवाण-कएहींसति=इहां पांच थावरना पांच आलावा छे तेहने छेहडे कोहा माणा, माया, लोभा, हिंसा, रती इत्यादि पाठ छे. ते जे जीव इहांना सवादने माटे चेईअकहेता प्रतिमादिक करे ते आश्रवखाते ए पाठ छे पण पूजानो पाठ नथी ते मृषा रये (शा माटे) बोलो छो तथा प्रश्न व्याकरणसूत्रे बीजे संवरद्वारे जे आलावो छे ते लिखीये छे खवगयवत्ति आयरीय उवज्झायसेह साहमी-एतवसिसिसवुड्ढकुलगणसंवचेईयहेनिज्झरठी वेयावच्च अणस्सी-ओदशविहबहुविहंकरेई एआलाने आचारज प्रमुखचेईय कहेता जिनप्रतिमानो वैयावच्च करे निर्ज्जराना अर्थी अणस्सीओ कहेता जस कीर्निनी वांछारहितयको वैयावच्च दश प्रकार तथा अनेक

प्रकारनो करे, इहां चईय कहेतां प्रतिमा छे तो खोटी कल-पना स्यामाटे करो छो ? तथा वीजे प्रश्ने पूछयो जे अहिं-सानां ६० नाम कह्यां छे अभओसव्वस्सविअनावाओचुरकाय-वित्तीपूयाविमलप्पभा निम्मलकरीत्ति एव माइणीनियगुणनिम्मि-याइं पज्जयनामाणिहुंतिअहिंसाए ॥ तिहां प्रतिमा तथा पूजानो नाम नथी तेहनो उत्तर तिहां अहिंसानो नाम जाणो तेहनो अर्थ देवपूजा छे पूजा एहवो दयानो नाम छे तो अजाण्योइमस्यें प्ररुपणाकरो छो ? वीजुं पूजातो श्रीअरिहंत प्रतिमानी ते तो विनय तथा वेयावच्च ते अभ्भि-तर तपना भेद छे. ते तप मोक्षनो मार्ग छे. श्रीउत्तराध्ययन सूत्रे २८ मे अध्ययने तप ने मोक्षनां च्यार कारण कह्यां ते मध्ये गण्यो छे. तथा तो पस्ये पुछयो जे बोलनी खबर नहवे ते विचारी बोलीये. तथा श्रावके कोणे देहरां कराव्यां ? तथा प्रतिमा पूजी ? तेहनो उत्तर श्रीसमवायांगसूत्रे तथा नंदीसूत्रे सर्वे आगमनो नूंध छे तेमध्ये ए पाठ छे तिहां उपासकदशानो नोंध छे ते आलावो छे ते लखीये छे. सेकिंतउवासगदसाओ उवासगदसासूणंसमणोवासगाणं नगराइंउज्झाणाइं चेइआइंवणसंडाइं समोसरणाइंरायाणोअम्मापियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइ आपारलोईया इद्धिविसेसा भोगापरीआउ सुअपरिग्गहीआ तवोव-हाणाइसीलव्वयगुणवेरमणपच्चख्खाणपोसहोववासपडिवज्झणापडि-माओ उवसग्गसंलिहणाओ भत्तपच्चरकाणइयाउवगमणं देवलोगगमणं सुकुलपच्चायापुणबोहिलाभो अंतकिरीयाआघरिज्झंति ए पाठ छे. इहां चेइयाइशब्दे देहरा तथा जिन प्रतिमा जाणज्यो. इहां चेइय एहनो अर्थ बीजो थाये नही, जेवननो अर्थ करे तेतो उद्यानवनखंडनो पाठ जूदो छे. कोइ साधुनो अर्थ करे ते

धम्मायरीया ए पाठ जूदो छे ज्ञाननो अर्थ करे ते सुयए पाठ जुदो छे. तेमाटे चेइय शब्दे जिनप्रतिमानो अर्थ छे. तथा तुम्हे पुछो जे द्वारका राजग्रहमें देहरा तथा प्रतिमानो पाठ किहां छे ? तेहनो उत्तर नदीसूत्रे अणुत्तरोववाइ तथा अतगडना नोंधनो पाठ जोज्यो. तथा तुम्हे कहेस्यो इतला बोल उपासकदशाप्रमुखे दीसता नथी तेहनो उत्तर जे नदी तथा समवायागमे जे पाठ तेहनो कोण उत्थापि शके ते जोज्यो. तथा पुछ्यु जे किणे श्रावके प्रतिमा पुजी छे ? तेहनो उत्तर घणे श्रावके प्रतिमा पुजी छे ते पाठ श्रीभगवतीसूत्रे तुगीया नगरीना श्रावको वरणव्या तिहा अभिगयजीवाजीवा इत्यादिक पाठ घणा छे तिहां एहवो पाठ छे असहिज्झदेवासुरनागसूवन्नजरकरकसाकिन्नरकिंपुरिसगरुलगधव महोरगादीएहिं देव गणेहि निग्गंथाओपावयणाओ अणतिकम्मणिज्झा निग्गथे पावयणेनिस्संकीयानिक्कंखीयालद्धट्ठागहीयट्ठा इत्यादि जे श्रावक कोई जातिना देवतानो सहाज वाछता नथी तो कोई बीजा देवतानी पूजा किम करे ? एहवा श्रावक जे देवने देव बुद्धि मानता हवे तेहनेज पूजे ते श्रावक थिवर आव्या तेवारे एकवार सर्व एकठा मिल्या एहवो विचार कह्यो जे एहवानिग्रथनो नाम साभलयानो पिण महा लाभ छे तो तेहने वादवा जाता सेवा करता तो महानिर्ज्जरा महापर्यवसान कहेता मोक्ष थयो इम विचारी पोते पोताने घरे गया पछी सूत्रे पाठ छे ण्हायाकयवलिकम्माकयकोउयमगलपायछित्ताशुद्धाप्पावेसाइपवरपरिहीआ अप्पमहग्घाभरणालकीयशरीरा सयाओगिहाओपडिनिरकमति तिहा नाह्या ते अघोल कीवा, कयवलिकम्माते देवपूजा कीधी कयकोउयमगल ते तिलकादिक कर्या पछी वस्त्र पेहरीने

आभरणअलंकार पहेर्या, घरथी निकल्या ए रीते सिद्धार्थ राजा तथा रुखभदत्त, सुदरशन शेठ इम सुभद्द पुत्र श्रावकसंखपुष्कली श्रावक कार्तिक शेठ वांदवा गया छे तेवारे कयबलिकम्मा तथा पछी घरे आवी साहमीवछल करीने दीक्षा लेवा निकल्या तेवारे न्हाया कयबलिकम्मा ए पाठ छे, इत्यादिक श्रावक अन्य देवनी पूजा न करे गोत्रज न पूजे, अरिहंत देवनेज पूजे, तथा कोइ कहेस्ये कयबलिकम्मा पाठ कठीयारा प्रमुख अनेक थानके छे तेमां स्याना छे ? पोते जेहने देवबुद्ध माने ते तेहने पुंजे तथा देवदत्त बालके कीम पुंजा करी हशे तेतो बालकने मावीत्रे पुंजा करावी तो कां न करे ? आज पण बालक पुंजा करता दीसे छे तो कयबलीकम्मा ए पाटनो बीजो अर्थ शाने करो छो ? तथा दीक्षा महोच्छव घणा दीसे छे पण तिहां देहरा प्रतिमानो पाठ नथी. तेहनो उत्तर जे दीक्षाने उतावला थयो तेवा, साधुने वहोराव्या रह्या नथी तो देहरा कराववा तो घरे स्याने रहे ? अने पहेला देहरा प्रतिमा छे तेतो नंदीसूत्रे आगमनो घणो पाठ जोस्यो तो सर्व समो पडशे तथा तुम्हे पुछयुं जे तीर्थंकरग्रहस्थपणे छतां साधु साध्वी श्रावक श्राविकाए वांद्या नथी तेनो उत्तर घणा वांद्या छे. ते पाठ ज्ञातासूत्रमां छे. तथा तुमे लख्यो जे प्रतिमा एकेन्द्रिदल छे तेहवो वचन संसारनो जेहने भय नहुवे ते बोले ? जे कारणे श्रीभगवतीजी तो जिणपडीमा कही बोलावी छे. देहराने सिद्धायतन कही बोलाव्यो तो तुमे कटोर वचन स्याने बोलो छो तथा तुमे दिसीवंदना करो छो ते दीसी तो अजीव छे तो कीम वांदो छो ? तिहां तुम्हे कहेस्यो जे अम्हारा मनमें तो सिद्ध छे तो जिनपडिमा वांदतां पिण अमारा मनमां सिद्ध छे. तथा

सूत्रमध्यें गुरुनी पाटनी आशातना टालवी कही छे, ते पाट अजीव छे. तेपीण सर्व गुरुनो बहुमान छे, प्रतिमाने बहुमानें सिद्धनो बहुमान छे तथा सुधर्मा सभामाहि जिननी दाढा छे ते वदनी पूजनीक छे, तेतो अजीव रकंध छे तथा तुमे लख्यो जे परदेशी राजाए प्रतिमा का न करी ? ते परदेशी श्रावक थया पछी केटलोक जीव्या छे ते तथा सर्व श्रावक एकज करणी करे ए स्यो नियम छे ? तथा परदेशीए तथा आणद श्रावके कोइक साधुने पडिलाभ्या नथी तेमाटे तुह्मे साधुनी वीहराव्यामे दोष मानस्यो ? ए विचारी ज्योज्यो तथा लख्यु छे जे सूरीयाभे जे प्रतिमा पूजी ते राजधानीना मगलीक माटे पूजा करी तेतो खोटु बोलो छो, ए पाठ सूत्रमें नथी. सूत्रमें तो एहवो पाठ छे "हीयाए सुहाए खेमाए निस्सेसाए आणुगामीयत्ताए भविरसइ निश्रेयस कहेता मोक्षभणी ए अर्थ छे तथा पच्छा शब्दे जे इहलोकनो अर्थ छे इम कहे छे ते मूढ छे, दर्दुर देवताने अधिकारे पछा शब्दे आवता भवनो अर्थ छे तथा आचारागसूत्रे जस्सपुव्वियिनो तस्सपछायिनो इहा पूर्व शब्दे पहलो भव पछा शब्दे आवतो भव लीधो छे. तथा ए भवे समकितनो लाभ ते घणो छे तथा तीर्थंकर वाद्याना फलनो पाठ उत्रायि मध्ये तथा पचमहाव्रत पाल्यानो पाठ आचाराग मध्ये तिहा पण हियाए इत्यादिक पाठ छे ते बे ठेकाणे लाभ मानो छो तो जिनप्रतिमा ठामे ना स्याने कहो छो अने किहा जिनप्रतिमा पूजानो पाप कह्यो नथी अने होय तो देखाडो तुमे लिख्यु जे भगवते हिंसानी ना कही छे तेतो अगे किहा कहुछु जे हिंसा करवी, पण भगवते किसे सूत्रे प्रतिमा पूजानी ना कही नथी. प्रतिमानी १७ प्रकारनी पूजा सूत्रे कहीछे. तथा तुमे

प्रतिमानी पूजा हिंसामें गणो छो ते इम नथी. प्रतिमानी पूजा तो विनय तथा वेयावच्च धर्ममां छे. तथा पूजा हिंसामे गणी तो ठाणांगे नदीमें पडती साध्वीने साधु काढे तेमां हिंसा गणी नहीं, तथा आचारांगसूत्रे बीजा साधु अजाणे पण शर्करानी भूले लूण वीहरीने पछे जाणे जे लूण वीहराव्यो ते जाणी ते पोते खाये ते पोते पीये तथा बीजा साधुसंभोगीने आपे ते खायेपीए तथा साधु विषमवाटे वेलने रूषने लताने गूछाना अवलंबी उत्तरे जे ए पाठ आचारांगसूत्रे छे तथा भगवती सूत्रमे साधुना हरस काढे तेहने क्रियाकर्म लागे नहीं. तथा मल्लिनाथजी पूतलीमे कवला मूंक्या तेमाटे धर्म माटे हिंसा करी तथा सुबुद्धि मंत्रिए पाणी पलटाव्यो ते धर्म माटे करी पिण मंदबुद्धी न कह्या ते भगवतीसूत्रे २५ मे शतके साधु शासन माटे तेजोलेश्या मुके तेहने आराधक कह्यो, तथा जंबूद्वीपपन्नत्तीए निर्वाण महोछव कर्यो छे थूभकर्यातेजिणभत्तिए धम्मेत्तिए पाठछे. इंम केटला पाठ लीखीये ? अनेक पाठ छे ॥ तथा नंदी सूत्रे जे आगम कह्या ते उत्थापीने ३२ मानो छो ते केनी आज्ञा छे ? तथा आवश्यक सूत्रपडिकमणा विना साधुपणो श्रावकपणो हुवेज नहीं ते तुम्हे आवश्यक सूत्रपडिकमणो मानता नथी तो श्रावकपणो ने साधुपणो केम धरो छो ? धरावो छो ? श्रीभगवतीसूत्रे साधु साध्वी श्रावक श्राविका पंचमाआराना छेहडा पर्यंत कह्या छे ते तुमारी श्रद्धामें हिवणां साधु साध्वी कोण छे ? तथा सूत्रे आचारज उपाध्याय कुलगणनीनिश्राये विचरे ते आराधक ते तमे कोनी निश्राये विचरो छो ? ते लिखज्यो, तथा श्रीभगवतीसूत्रे गाथा छे ॥ पढमोगीयत्थवीहारो बीयोगीयत्थयनिसीओभणीओ इत्तोतइयविहारो

नाणन्नाओजिणवरेहिं ॥१॥ एहनो अर्थ गीतार्थ होय ते पोते विहार करे अथवा गीतार्थनी निश्राये विहार करवो एथी तिजो विहार अरिहते आज्ञा दीधी नथी ते माटे तुमे किस्या गीतार्थनी निश्राये विहार करो छो, तथा योग उपधानवहीने सिद्धात भणे तेपण श्रावक आचारागादिक सूत्र भणे नही ते निशीथमा कह्यो छे जे भिक्खुअन्नत्थीय वागारत्थियन्नावायण वायजत्त साइज्जाति तस्सचोमासीयपरिहारठाण जे ग्रहस्थने सूत्र वचावे अथवा वाचताने अनुमोदे तेहने चारमासनो पाल्यो चारित्र जावे तथा प्रश्न व्याकरणसूत्रे अहकेरिसीयपुणसवनुभासियव जत्थदव्वेहिंगुणेहिपज्जवेहिं कम्मेहि बहुविहेहिं आगमेहि नामरकाय निवाय उवसग्ग तद्धिअ सगास सधिपद जोग उणादि कीरियावीहीणसर धाउ सर विभत्ति वन्न जुत्त भासियव तथा अनुयोगद्वारे ७ नय ४ निक्षेपाकाल तिन, लिंग तीन, जाण्या पछी उपदेश देवो ते मारग नथी इत्यादिक अनेक बोल छे ते गीतार्थनी सेवनाथी पामीये इतिभद्र ॥ जे केइ श्रीजिनप्रतिमानी पूजा मध्ये फूल पूजानी शका करे तेहने कहीये जे श्रीरायपसेणीसूत्रे १७ भेद पूजाना पाठ छे. पुप्फारुहण १ मालारुहण २ तहवन्नयारुहण ३ तथा पुप्फपगिहपुप्फपगर एतलीपूजा फूलनी छे ८ तेमाटे पूजा फूलनी ते प्रमाण छे तथा श्रीभगवतीसूत्रे पण सूरीयाभनी पेरे पूजानी भलामणना पाठ अनेक छे तथा ज्ञातासूत्रे द्रौपदीने अधिकारे १७ प्रकारी पूजाना पाठ छे तथा समवायागसूत्रे चोत्रीस अतिशयने अधिकारे " जलय थलय भासुरदसद्धवन्नेणजाणुस्सेहप्पमाणमित्तेण पुप्फपजोवयारकरेड इत्यादि पाठ छे" इहां समवायाग सूत्रमे देवता मनुष्यनो नाम कह्यो नथी तथा श्रीउववाईसूत्रे

कोणिकने अधिकारे श्रीवीर समोसर्या तेवारे अनेकजन चंपाथी निकल्या जे "अप्पेगइयावंदणवत्तियाए अप्पेगइयापूयणवत्तियाए अप्पेगइयासुयंसुयस्सामो अप्पेगइयाविउलाइ अट्ठाओहेओआई असिणाइगहिस्सामो" इत्यादि पाठ छे. तिहां पूयणवत्तीयाए ए पाटनो अर्थ टीकामध्ये पूजनंपुष्पमालादिना इंम कह्यो छे. इहां श्रीतीर्थंकरने पूप्फनी पूजा दीसे छे ए पाठथी श्रीभगवतीसूत्रे पण छे. तथा नंदीसूत्रे श्रुतज्ञाने पाठे जेम अरिहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पन्ननाणदंसणधरेहिं तिल्लुकनिरक्खीय महीअपूइणहं पाठनो अर्थ टीकाकारे पिण महीय शब्दे चंदनादि पुइएहिंपुप्फमालादिके करीने ए पाठ अनुयोगद्वारमध्ये पण छे. इंम पुप्फपूजाना अनेक पाठ छे, ते माटे संका न करवी. वली केइक इंम कहे छे जे फूल वेचाता जडे ते चढाववां पण पोते चूंटी चढाववां नही तेपण अजाण्युं कहे छे जे " श्रीजीवाभिगमसूत्रे "ततेणंसेविजएदेवेपोत्थयरयणंगिण्हइ पो. र. गि. पोत्थयरयणंमुयति पो. २ त्ता पोत्थयरयणंविहाडेति पो. २ त्ता पोत्थयरयणंवाइए पो. २ त्ता धम्मियंववसायंपिगेण्हेति ध. २ त्ता पोत्थयरयणंपडिनिक्खमति पो. २ त्तासीहासणतोअब्भुट्ठेति सी. २ त्ताववसायसभातोपुरत्थिमिल्लेणंदारेणंपडिनिक्खमइ प.२ त्ता जेणेवणंदापुक्खरणीतेणे व उवागच्छति २ त्ताणंदापुक्खरिणं अणुप्पयाणिकरमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसाति २ त्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसोपाणेपडिरूवेणं पच्चोरुहति २ त्ता हत्थपादं पक्खालेति ह. २ त्ता एगंमहंसेतंरजतामयं विमलसलिलपुण्णमत्तगयमहामुहागिइ समाणंभिंगारं पगिण्हति प. २ त्ता जाइंतत्थउप्पलाइपउमाइजावसत्तपत्ताइंसहस्सपत्ताइंताइंगिण्हंति २ त्ता णंदातोपुक्खरिणिओपच्चुत्तरेइ प. २ त्ता जेणेवसिद्धायतणेतेणेवपाहारेत्थगमणाइतएणंतंविजयंदेवंचत्तारि सामाणियसाह-

स्सीओजावअण्णेबहवेवाणमतरादेवादेवीउ अप्पेगतियाउप्पलहत्थगताजावसनसहस्सपत्तहत्थगयाविजयदेवपिठ्ठओअणुगच्छइरत्ता "

इहा फूल चूंटी लीवा छे ए आलावे विजयदेवे पोते वावडीमें उतरीनें फूल चूंटी लीवा तथा सामानिक देवता तथा बीजे देवताये पिण फूल पोताना हाथयी लीधा छे इहा कोइ पूछस्ये जे तिहा कोइ माली नयी ते माटे पोते लिवा तेहनो उत्तर जे माली नयी पिण देवता चाकर लोक घणा छे तेहनेज पासे का न मगावे जो पुप्प आण्यानो विधि होवे. तोपण पोताना हायथी लीवानो विधि छे तेमाटे पोते वावडी मध्ये उनरी लीधा छे तथा श्रीरायपसेणीसूत्रे सूरीआभाधिकारे

" ततेण से सूरियाभेदेवे पोत्थरयणगिण्हइ, पो २ गि. त्ता पोत्थरयणमुयइ, पोत्थरयणविहाडेइ,त्ता २ पोत्थरयणवाएति, त्ता २ धम्मियववसायगिण्हइ, २ त्ता पोत्थरयणपडिणिक्खमति २ त्ता सीहासणाओअब्भुट्ठेइ २ त्ता ववसायसभाओपुरत्थिमिल्लेण दारेण पडिणिक्खमइ २ त्ता जेणेव णदापोक्खरिणि तेणेव उवागच्छइ २ त्ता णदापोक्खरिणी पुरत्थिमल्लेण तोरणेणतिसोपाणपडिरूवेण पच्चोरुहत्ति २ त्ता हत्थपायपक्खालेइ २ त्ता आयते चोक्खे परमसुइभूए एगसेयमहरययामय विमलसलि लपुण्ण मत्तगयमुहागितिसमाणभिगार पगिण्हति पच्चोरुहइ २ त्ता जाइतत्थउप्पलाइजावसयसहस्सपत्ताइगिण्हति णदाओ पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ २ त्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेगमणाए तएण त सूरियाभदेव चत्तारिसामाणियसाहस्सीओ जाव सोलसआयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णेयबहवेसूरियाभविमाणे जाव देवा देवीओअप्पेगइया उप्पलहत्थगया जावसत्तसहस्सपत्तहत्थगया सूरियाभदेवपिट्ठओसमणुगच्छति ततेण सूरियाभदेवबहवेआभिओगिय

देवाय देवीओय अप्पेगइयाकलसहत्थगयाओ जावअप्पेगइया धूवकडच्छहत्थगया हट्ठतुट्ठाजावजासूरियाभं देवंपिट्ठओसमणुगच्छंति तेतेणं णे सूरियाभेदेवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिंजावअण्णेहियब-हूहिंसूरियाभविमाणवासीहिं देवेहिं देवीहियसद्धिंसंपरिवुडेसव्वड्ढीए जावणाइयरवेपं जेणेव सिद्धायणे तेणेव उवागच्छइ सिद्धायणंपुर-त्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसंति २त्ता जेणेव देवछंदए जेणेव जिण पडिमाउ तेणेव उवागच्छइ जिणपडिमाणंआलोए पणामंकरेति २त्ता लोमहत्थगंगिण्हइ २ त्ता जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्झइ २ त्ता जिणपडिमाओसुरभिणागंधोदएणंण्हाणेति ण्हाणित्तासरसेणं गोसीसचंदणेणंगायाणं अणुलिप्पइ २ त्ता जिणपडिमाणंअहि-याइंदेवदूसाइं जुयलाइं णियंसेइ २ त्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं चूणारूहणं गंधारुहणं वण्णारुहणं चुण्णरुहणं वत्थारुहणं आमरुहणं करेइ करेत्ताआसत्तासत्तविउलववग्घारियमल्लदामक-लावं करेइ २ त्ता कयग्गहगहित्तकरयल पब्भट्ठ विप्पमुक्केणं दस-द्धवण्णेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फ पुंजोवयारकलियं करेति करेत्ता जि-णपडिमाणं पुरतोअच्छेहिंसण्हेहिंसेएहिंरयणामएहिं अच्छरसतंडुले-हिं, अट्ठट्ठमंगलेआलिहइ तंजहासत्थियजावदप्पणतयाणं तरंचणंचंद-प्पहरयणवइरवेरुलियविमलदंडंकंचणमणिरयणभत्तिचित्तकालागुरुप-वरकुंदरुक्क तुरुक्कधूवमवमवंतगंधत्तामाणुविद्धंति धूववट्टिंविणिमुयंतं वेरुलियमयंकडुछयंपग्गहियपयतेणंधूवंदाऊणं जिणवराणं अट्ठसय-विसुद्धगंथजुत्तेहिंअपुणरत्तेहिं महावित्तेहिं संथूणइ सत्तट्ठपयाहिं पच्चोसरूहइ २त्ता वामंजाणुंअंचेइ दाहिणं जाणुंधराणितलंसिनिहट्टु-तिक्खुत्तोमुद्धाणं धरणितलंसि णिव्वोडेत्ति २ त्ता इसंपच्चूणमइ इसिंपच्चूणमित्ता करयलपरिग्गहियंसिरसावत्तं मत्थएयंजं एवं-वयासी णमोत्थुणंअरिहंताणंजावसंपत्ताणंवंदति णमंसइ २ त्ता

ए रायपसेणीसूत्रे पाठ छे सूरीयामे पोते हाथे फूल चूंटी लीधा छे, सामानीक प्रमुख पासे मगाव्या नथी. तथा जंबुद्वीपपन्नतीमे जन्माभिषेक जेणेवरखीरोदसमुद्दे तेणेव आगमखीरोदग गिएहति २ त्ता जाइतत्थउप्पलाइं पउमाइ जावसहस्सपत्ताइ तावगिण्हति २त्ता इत्यादि सूत्रमे पाठ हायना चूंट्या फूल लेवाना छे तथा कोइक कहेसे जे एतो चूंट्या नथी सहेजे पड्या लीधा छे तेहने कहीये छे, जे हज्जारगमे सहेजे चूंट्या वावडीमध्ये हुवेज नही, तथा निगाइने अधिकारे निगद्ध राजाए आबानी माजरीयो पोते चुंटी लीधी तेवारे कटक बधे चुंटी लीधी ते पाठ उववायीमध्ये जोजो अन्नयाणुज्जुत्तनिग्गओपेछइ कुसुमाचूअराइणायेगामजरागहीयाएवरकथावरेणलयतेण मजरीपत्त पवालल्याइ कट्ठाविसेसो कओ पडिनियत्तओपुच्छइ कहे सोरुक्खोअमच्चणादसाओ कहए सयावेत्थोभणइ तुम्हेहिं एगामजरीगहीयापच्छसव्वणगहेतेण एवकओ ॥ इहा गहींय शब्दे चूंट्यानो अर्थ छे, तथा कोइ कहेस्ये जे एतो देवताये कर्यो छो ते श्रावके करयानो किहा पाठ नथी तेहने कहीये जे जो देवतानी करणी ताहरे न करवी तो शक्रस्तव किम करे छे ? तथा स्नात्र केम मानो छो ? स्नात्र नो कलस ढोलो छो ते देवतानी करणीज छे, तथा सूरीयाभनी पूजानी भलामण द्रौपदीने पाठे छे. देव अने पूजाकरणी तथा मनुष्यनो पाठ एकज छे तेमाटे देवतानी करणी श्रावक करे ए श्रद्धाप्रमाण छे. तथा जे फूल चुटवानी ना कहे ते चींटनी जीवनि कामना माटे तेवारे फूलनी पूजा किम करी शके ? अने फूलनी पूजानो तो सूत्रे पाठ छे तथा जे पूजाने हिंसामें गणे तेहने कहीये जे श्री प्रश्नव्याकरण मने प्रथम संवरद्वारे अहिंसाना ६० नाम कह्या

छे तिहां पूजा ते दया कही छे. ते पाठ लिखीइ छे. अभउसव्वस्सविअनावाओ चुरकापव्वत्तीपूयाविमलप्पभानिम्मलकरत्ति एवमाइणिनियगुणनिम्मियाइपज्झायनामाणिहुंति अहिंसाए भगवइ ए इत्यादि पाठे पूजा ते अहिंसामे गणी छे, तो तुम्हे हिंसामे किम गणो छो ? तथा भगवती सूत्रे " शुभयोगपडुच्च-अणारंभा " ए पाठ शुभयोग प्रवृत्तिने आरंभनी ना कही छे. विनय तथा वेयावच्च ते तपना भेद छे. तप ते मोक्षमार्ग-मध्ये श्रीउत्तराध्ययने २८ मे अध्ययने कह्यों ते तुमे हिंसामें केम कहो छो ? तथा विवहारसूत्रे सिद्धवेयावच्चेणं महानिज्ज-रामहापज्झवसाणंभवति " तेमाटे सिद्धवैयावच्च ते पूजा छे तथा कोइ पूछे जे श्रावके प्रतिमा किहां पुंजी छे तेहने केहवो जे श्रीभगवतीसूत्रे तूंगीया नगरीने श्रावके पुंजा करी छे. शंख पुष्कलीये पूजा करी छे. तथा समवायांगसूत्रे द्वादशांगीनी हूंडीने अधिकारे उपासकदशानी हूंडीमध्ये दश श्रावकनां चैत्य एहवो पाठ छे. ए पाटमे चैत्य तो साधु थाय नहीं, ज्ञान थाय नहीं, वृक्ष थाय नहीं ते सर्वना पाठ जुदा छे, तथा नंदीसूत्रे पिण पाठ छे तथा नंदीमध्ये जे आगम कह्या ते सर्व माने तेज समकिती जाणवो. श्रीअनुयोगद्वारसूत्रे नि-र्युक्तिनी हा कही छे ते निर्युक्तिमध्ये पूजाना अनेक अधि-कार छे, तथा तंदूलवेयालीपयन्नानी टीकामध्ये समवसरणना फूल सचित्त ते उपर साधु साध्वी चाले. प्रवचनसारोद्धार टीकाये पण ए मत छे तथा कोइ कहेस्ये जे फूलने घोइ नहीं तेहने कहीये जे हीरप्रश्नमध्ये कह्यु छे ते पाठः॥ श्राद्धदिनकृत्य तथा पंचास-कमध्ये फुल धोवानो पाठ छे तेह हीरप्रश्नमध्ये जोइ लेज्यो ॥

॥ गुणठाणाअधिकार ॥

(आगमसारान्तर्गत)

प्रथम गुणठाणानो विचार लखीइ छे प्रथम मिथ्यात्वगुणठाणु १, सास्वादनगुणठाणु २, मिश्रगुणठाणु ३, अविरत समकित गुणठाणु ४, देशविरति गुणठाणु ५, प्रमत्तगुणठाणु ६, अप्रमत्तगुणठाणु ७, अपूर्वकरण गुणठाणु ८, अनिवृत्तिबादर गुणठाणु ९, सूक्ष्मसपराय गुणठाणु १०, उपशातमोह गुणठाणु ११, क्षीणमोह गुणठाणु १२, सयोगीकेवली गुणठाणु १३, अयोगिकेवलि गुणठाणु १४, अरिहतनाभाख्या वचन साचा करी सद्दहेनहि ते मिथ्यात्व गुणठाणो कहीइ, तेह्ना भेद पाच छे अभिग्गहिय मिथ्यात्व जे लीधो हठ मुकी सके नहीं १, अनभिग्रहिक मिथ्यात्व जे देव तथा कुदेव तथा गुरु तथा कुगुरु धर्म, अधर्म सरिखा करी माने परीक्षाबुद्धीनहीं २, अभिनिवेशमिथ्यात्व जे खोटाने खोटु जाणे पण हठ मुकि सके नहीं ३, साशयिक मिथ्यात्व जे केवलिनाभाख्या वचन तेमा सशय उपजे परीपरतीत आवे नही ४, अनाभोग मिथ्यात्व जे काइ जाणपणु उपजे नहि एकेंद्रीविकलेंद्रीनी पेरे तथा श्रीठाणागसूत्रे मिथ्यात्वना दसबोल कह्या छे, जीवने अजीव करी माने ते मिथ्यात्व १, तथा अजीवने जीव करी माने ते मिथ्यात्व २, तथा धर्मने अधर्म करी माने ते मिथ्यात्व ३ तथा अधर्मने धर्म करी माने ते मिथ्यात्व ४, मोक्षनोमार्ग ज्ञानदर्शन चारित्रतप तेहने मोक्षमार्ग न माने ते मिथ्यात्व ५, तथा मोक्षनो मार्ग नथी ससारनो हेतु छे तेहने मोक्षमार्ग करि माने ते मिथ्यात्व ६, तथा मोक्ष गया नथी तेह्ने मोक्ष माने

ते मिथ्यात्व ७, जे मोक्ष गया तेहने मोक्ष न माने ते मिथ्यात्व ८, जे साधु विषयविकार त्यागी तेहने असाधु माने ते मिथ्यात्व ९, तथा जे साधु नथी तेहने साधु करी माने ते मिथ्यात्व १० ते मिथ्यात्वनी चाल तीन प्रकारनी छे देवगत मिथ्यात्व ते कुदेव सरागि तेहने देव करी माने १, बीजो गुरुगत जे कुगुरुने गुरु करी माने त्रीजो पर्वगत मिथ्यात्व संसारिपर्वने धर्मनापर्व करी माने ते मिथ्यात्व ते मिथ्यात्वनी स्थिति तीन प्रकारनी छे. अनादि अनंतनी अभव्य जीवने, अनादि सांत भव्यजीवने, सादिसांत पडवाइने, ते जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टी अर्द्धपुद्गलपरावर्त्त कांईक उंणी छे. बीजु गुणठाणुं सास्वादन ते कोईक जीव उपसमकितथी पडतो मिथ्यात्व गुणठाणे पोतो नथी वचे छआवलिका रहे ते सास्वादन गुणठाणुं कहीइं. तेहनो दृष्टांत छे कोइ पुरुष खीरखांड घृत जमीने तुरत वमतो होइं ते वमतां कांईक स्वाद आवे तिम समकितिथी पडतां पिण कांइक वासना रहे तेहने सास्वादन कहिइं २ त्रीजो गुणठाणो मिश्र कोइ जीव क्षयोपशम समकितथी पडी मिश्रमोहनीने उदये मिश्रगुणठाणे आवे अथवा मिथ्यात्वथी निकली समकित गुणठाणे आवतां वचे मिश्रमोहनीने उदये मिश्र गुणठाणे आवे ते जीव अंतमुहूर्त्तकालसीम रहे एहने समकित मिथ्यात्वदृष्टि कहीइं. एहनो दृष्टांत कहे छे जे कोई जीव नालियरदीपमां वसतो होइं ते नालियरखाइं तेहने अनदीठे राग न उपजे तेम द्वेष पण न उपजे तिम ए जीवने जिनधर्म साचो सांभलतां राग पण न उपजे द्वेष उपजे नही एहवा जीवने मिश्रगुणठाणुं कहीइं एहनी स्थिति अंतमुहूर्तनी ३ चोथो अविरत समकित, तेहना बे भेद छे त्रण छे, तेहनो

पेहलो भेद उपसमसमकित जे जीव अनादि मिथ्यात्व सज्ञी पचेंद्री पर्याप्तो कोई कारण पामीने ससारथी उभगे नरक निगोदथी ते पामे, जनममरणना दु खथी बीहे तेवारे ए सर्व ससार खोटो जाणे, धर्म जाणवानी रुचि घणी करे, दयापाले, दानदे, तप करे, श्रावकना बार व्रत पाले, साधुना महाव्रत पाले ते जीव यथाप्रवृतिकरणे वर्तता कहीइ, एतली करणीसुधी भव्य तथा अभव्य जीव आवे, नवग्रैवेयकसुधी जाए पण समकित पाम्यो नथी ते माटे लेखामा नावे, तोपण कोई जीव वैराग्य परिणाम सहित ससारने असार जाणतो साचा धर्मनी परीक्षा करतो सातकर्मनी थीति उत्कृष्टी खपावे, एक कोडाकोडी सागरोपम बाकी थीति सातकर्मनी रहे तेवारे अपूर्वकरण करे तेवारे एक ज्ञान मार्ग साचो करी माने, वृद्धिमृक्ष्मभाव जाणवानी विशेष थाइ तेवारे पछे एक आत्मा पोताना शरीरने विषे रह्यो, पण अशरीरि छे, अरुपी छे, अविनासी छे, अनतज्ञानमयी अनतदर्शनमयी, अनतचारित्रमयी, अनतअगुरुलघुमयी, अनततपमयी, अनतवीर्यमयी, निर्मल अलेप अखड छे, तेहना प्रदेश असख्याता छे, प्रदेशे २ अनता गुण अनता पर्यायछे, उपयोग लक्षण ते माहरो धर्म छे, ए धर्म जे जे करता प्रगट थाये, गुणीश्री, अरिहत, सिद्ध, आचारज, उपाध्याय, साधु तथा सिद्धात तेहनो विनय तथा वैयावच्च करवो, अरिहतना आगम प्रमाणप्रतीत राखे ते समकित कहीइ, ते समकितना तिन भेद छे उपसम समकित १ क्षयोपशम समकित २ क्षायकसमकित तिहा अनतानुबधिकषाये मिथ्यात्वमोहनी, मिश्रमोहनी, समकितमोहनी एसातप्रकृति उदये आवे ते खपावी अने उदये नथी आवी ते विपाकेउपसमावी छे, प्रदेसे उदये छे, समकितमोहनी उदय

आकरो छे तेणे समकितमां अतिचार लागे छे तेहने क्षयोपशम समकित कहीइं, एहनी स्थिति जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त छे उत्कृष्टि ६६ साछठिसागरोपम केतलाएक मनुष्यभव अधिक एतली स्थिति रहे ए समकितने पांच अतिचार लागे तेहनां नाम ॥ संका जे आगममां कह्यो ते साचो पिण कांईक संदेह उपजे १, अतिचार ॥ कंखा बीजा मतना शास्त्र तथा देव हरिहरादिक सरागि तथा ते मत गुरुसाविकारे तेहने कांईक रुडापणे जाणि वांछा करिए २ अतिचार, वितिगछाजे धर्मअरिहंतनो कह्यो करीइं पण एहनो फल थासे के नही थाय अथवा जिन सासनथी बीजा कांईक बीजा मतनी करणी रुडी छे एहवो परिणाम आवे ते त्रीजो ३ अतिचार पसंस जे परमतनी परसंसा करे जे बीजा मतना देव तथा लिंगीयाता कष्टकरणी तथा कोई चमत्कार देखीने ते उपरे राग आवे तेहने पगे लागे तेहना गुण बोले ए चोथो ४ अतिचार जाणवो ॥ संथवो जे बीजा मतना देव तथा गुरु तथा ते मतना जे सेवक तेहनो परिचय मेलाप घणो करे बीजा मतनी वात करे सांभले पांचमो अतिचार ॥ ए क्षयोपशम समकित एक जीवने असंख्यातीवार आवे अने वली असंख्यातीवारजाए, जे आगमने आधारे राखे तेहने रहे तेपछे क्षायिक समकित थाइं ते क्षायिकनो अर्थ लिखीइं छे. अनंतानुबंधी च्यार ४ मिथ्यात्व मोहनी १ मिश्रमोहनी २ समकितमोहनी ३ ए सात प्रकृति सर्वथा जे जीव खपावीने निरमलीपरतीतकिधी ते क्षायिकसमकिती कहीइं. ए आव्या पछे जाय नहीं. ए समकितवाला जीवने दस जातिनी रुचि उपजे ते लिखीइं छे. निसर्गरुचि नव तत्त्व ९ छे द्रव्य तेहना ४ निक्षेपा सातनय पोतानी बुद्धिथी

साचा जाणे ते निसर्गरुचि १ अभिगमरुचि जे जिनागमनासूक्ष्म अर्थ जाणवानी रुचि गुरुना मुखथी उपदेशथी जाणे ते उपदेशरुचि २ श्रीअरिहतकेवलीना कह्या वचननी आणा प्रमाण करे ते आणारुचि ३ सूत्ररुचि जिनसूत्र साभलता साचा मारगनी परतीत उपजे समकित पामे ४ बीजरुचि सिद्धातनु एकपद साभलता बधाबोलनु जाणपणु आवे श्रद्धासमीथाइ ५ अभिगमरुचि जे ११ अगादिक ८४ आगम तथा निर्युक्तिभाष्य चूर्णिटीकाना अर्थ जाणे सर्व बोलना परमार्थ जाणवानी रुचि ६ विस्ताररुचि ६ द्रव्यनाभाव ४ निक्षेपेसातनये करी च्यार प्रमाणे करी जाणे ७ क्रिया रुचि जे जीव जिनशासननी क्रिया साची करी सनमा कही ते रीते करे आघीपाछी न करे ८ संक्षेपरुचि, जे जीव सिद्धातना जाणगीतार्थ आगमने अनुसारे जे अर्थ कहे ते साचा करी माने ९ धर्मरुचि, आतमानो धर्म ज्ञानदर्शन चारित्रमयी अरूपी आतमानो परिणाम भावनया प्रमुख गुणी श्री अरिहताटिकनो बहुमान वेयावच्च ते धर्म करी माने बीजा बाह्य तपबाह्य किरिया जे आगमना कह्या परमाणे करे ते धर्मनो कारण करी माने ते धर्मरुचि समकित मोक्षमार्ग मूल छे, समकित विना जे करणि ते ससार खाते छे (पण) मोक्षमारगनी न जाणे ए चोथो गुणठाणो कह्यो ४ पाचमो देशविरति गुणठाणो इहा जीवने व्रतपच्चखाण आवे जघन्ये एक नवकारसीपच्चरकाण तथा कंदमूलना पच्चखाण साची श्रद्धा सहीत यथा होवे तेहने श्रावक कहीइ उत्कृष्टे इद्रीसुखनी वाछा विना श्रावकना बारव्रतपाले ते उत्कृष्टो श्रावक कहीइ बारव्रतना नाम १ स्थूलप्राणाति पात विरमण, जे त्रस जीवने निरापराध हणे नहि २ स्थूलमृषावाद विरमण, जे मोटका पाच

कन्यालीक १, गवालीक २, भौमालिक ३, थापिणमोसो ४, कुडीसाख नबोले ५ ॥ ३ थूलअदत्तादान विरमण, जे चोरी कीधे राजा दंडे तथा च्यार रुडां माणस ठबको दे अथवा पोताने भय लागे अथवा सामाना जीवने ध्रास्को पडे ते मोटी चोरी करवी नहि ४ थूलमैथुन विरमणव्रत, जे परस्त्री मनुष्यणी तथा तिर्यंचणी तथा देवतानी भोगववी नहीं. पांच इंद्रीना स्वाद घणा मगनपणे सेवे नहीं ५ थूलपरिग्रह विरमण जे धनादिक नव भेदनो परिग्रहनो पच्चखांग करे, इच्छा परिमाण करे अथवा पोता पासे जे धन होइ ते राखी बीजानो पच्चरकाण करे ६ दिक् परिमाणव्रत जे च्यार दिश तथा ऊंचो तथा नीचो दिसी जावानो मान करे ७ भोगोपभोग परिमाण व्रत जे नीम साचवे पन्नर कर्मादान न करे, जे पोताने खावेपीवे तथा वस्त्रोतुं मान राखे ८ अनर्थ दंड विमरणव्रत, ते जे मोटका पाप रंगवां खेतर खेडवां, भाठी जे चूना प्रमुखनी करवानां पच्चरकाण करे ९ सामायिकव्रत जे जवन्य २ घडी सुद्धी संसारनां काम मूकी कुटुंब धननो राग तजी कोइथी द्वेष न करवो एहवो समपरिणाम राखवो ते सामायिक कहिइं १० देसावगासिकव्रत जे बे घडीथी च्यार पोहोरथी उणुंकाल दिसनुं मानकरिथीरचित्तसमतापणे रहेवुं ते देसावगासिकव्रत जाणवुं ११ पोषधवृत च्यार पोहर अथवा आठ पोहोर सूधी समतापणे साधुपेरे श्रावकवरते, मन वचन काया समताइं राखे ते पोषधव्रत कहीइं १२ अतिथिसंविभाग बारमुंव्रत जे श्रावक जे ते साधुने विहरावीने पछे जिमवुं जो तेहवा साधुनो योग न मिले तो सावर्मिक श्रावकने जीमाडीने जमवा बेसवुं बेठा पछे थोडीसीकवार साधुजीनी वाटजोवी इंम करतां

साधूजी नाव्या तो एहवी भावना भाववी जे धन ते श्रावक जे साधुजीने वहोरावीने जिमता हस्ये इम करता चितवी जिमवा बेसे ए बारव्रत धरे ते श्रावक कहीइ श्रावकने जवन्य ३ वार उत्कृष्टे ७ वार चैत्यवंदन करवु, अरिहंतदेवसिद्ध भगवनने वंदना करवी तथा नित्य पडिक्कमण बे वार करवु जो नित्य न थाये तो पासीनो पडिक्कमण नियमा करवु तथा पच्चरकाण प्रभातना नोकारसी, अवस्य साचववी, रात्रिचउविहार तिविहार दुविहार ए ३ माहि एक पच्चरकाण अवस्य करवु ए पाचमा गुणठाणानी स्थिति जवन्य अनमुहूर्त्त उत्कृष्टे उणी पूर्वकोडी वर्षनी जाणवी ए जीव अढार पाप स्थानक आलोइने निर्मल थयो चारित्रफरसे ते कहे छे, अथ अढारे पाप स्थान लिखीइ छे कोइ भव्य जीव अवसर पामीने जैनागम सुणता ससारथी उभग्यो थको मोक्ष सुखनो अभिलाप करे पण आलंबन विना कार्य नीपजवो दुक्कर छे तेथी प्रथम देवतत्त्व श्री वीतराग अनत ज्ञानमय अनतदर्शनमय शुद्ध स्वरूपी आत्म रुद्धिभोगी आत्मालंबी आत्मपरणामी जेहने अवलंबीने अनना जीव अव्याबाध सुख वरे ते देवतत्व तेहने सेवने सर्व जीव ससारभयथी छुटे तथा निग्रथपच महाव्रतधारी सवरस्वरूपी एक निर्मल मोक्षमार्गने विषे जेहनी दृष्टि छे, शरीर इद्रीय, कपाय, जोगनी प्रवृत्तिजापना मुनिराज अतीतकाल विषय सभारता नथी, वर्त्तमानविषे रमणना नथी, अनागतकाल विषयनी आसगा नथी, पोताना अनतगुणपर्याय निर्मल करवाने उत्कृष्ट उद्यमवत छे ते साधु महात्मा गुरुपणे धारवा, तथा धर्मतत्त्व जे जीव द्रव्य असंख्यात प्रदेशी स्याद्वाद रीते पोतानां गुणपर्याय परणति ते धर्म श्री

सिद्ध भगवानने प्रगट छे, श्री अरिहंते उपदिस्यो आचार ते धर्म साधवाने ज्ञानादिक पंचाचार पाले छे, श्रीउपाध्यायजी ते धर्मनी घोषणा करे छे, साधुनिर्ग्रंथ ते धर्म साधवाने राज्य तजी इंद्रिय विषय तजी वनमां साधु टोला मध्ये अथवा एकला वासी वनवासी गुफानिवासी परवतनी शीला उपर उनाले आतापना शीतकाले नदीने तटे शीत खमे छे, जघन्यथी अव्यापकपणे रागद्वेष वारता समतामईकृतसंपन्नचारित्रसंपन्नविचरे छे तथा देशविरति ते सुद्धधर्म प्रगट करवा वास्ते देसविरत लेइ सर्वविरतीनी इहा करतो संसार कार्य ते निर्विषयीनी पेरे उदासीनपणे करे छे, सम्यग्दृष्टि ते धर्मनी इहा करतां

काईयासिद्धीलंमो कईयासव्वेगुणनिरावणा
कईयाअव्वाबाहं सुहंसमुहंमयेसिज्जे ॥१॥
कईयापुग्गलरहियो रमामिसिवमयल
निरुवमसहावो,पासंतोसव्वपयं भुजंतोअप्पणोभावं२॥

ए भावना भाविने धर्मनो अभिलाष करतां संसारप्रवृत्ती तप्त लोहपट्ट धरवानी रीते करी छे संसारसंपदा बालक रमवानां धूलघर समान जाणे छे, ते धर्म प्रगट करवानी रुचि सर्व जीवे करवी, पण ते धर्म आठ कर्म आवरयो छे ते आठ कर्मने क्षये प्रगटे ते आठ कर्मनो क्षय, पापस्थान आलोचतां थाये ते पापस्थाननी आलोयणा करवी जे माहरे जीवे संसार भमतां स्वस्वरूपनी भूले हिंसा पापस्थान करयो आपना ज्ञानादिक प्राण हण्या ते भावहिंसा अने रागद्वेषे असंयमे परना प्राण हण्या ते द्रव्यहिंसा ते लौकिक रीते पृथ्वीकाय अप्काय

तेउकाय, वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय हण्या, सताप्या छेद्या भेद्या, तपाव्या, परने सक्लेश उपजाव्यो, परणति सकल्पे प्रवर्त्ते हे श्रीवीतराग तुमें सर्व जाणो छो, ते हिंसाने धर्म करी मान्यो हिंसामध्ये राच्यो ए रीते हिंसा जो ते ए भावे पाछले अनंतेभवे जे जे हिंसा परणति करी, करावी, करता, अनुमोदि मने वचने कायाए ते सर्व श्रीप्रभुजीनीसाखे गुरुसाखे मिच्छामिदुक्कड ए प्रथम पापस्थान १ हवे बीजो पापस्थान ते मृषावाद जे जूठु बोलवु, लौकिक ससारमध्ये लोकोत्तर धर्मकार्यमध्ये ते पिण भाव मृषावाद स्वस्वरूपशुद्ध अध्यातमभाव पोतानी परणतिने पोतानी न माने, शरीर इन्द्रिय धन कुटुब ते परभाव ससार हेतु दुष्टता मूल तेहने पोताना कहे क्रोधेमृषा बोले, भयेमृषा बोले, लोभेमृषा बोले ते सर्व माहरे जीवे ससार भमता चार गतीमाही जे मृषावाद बोल्या होय, बोलाव्या होय, बोलता अनुमोद्या होय, ते मने वचने कायाए ते सर्व श्रीप्रभुजीनीसाखे गुरुसाखे आतमसाखे मिच्छामिदुक्कड २ हवे त्रीजो पापस्थानक अदत्तादान ते जे पारकी वस्तु अणदीधा लेवी ते लौकिक जे ससारी असंयमीना धनकचन द्विपद चतु पद आदिक अणदीधा लेवा, लोकोत्तरते जे चैत्यउपगरण प्रजाउपगरण चारित्रउपगरण तेहनो चोरवो ते द्रव्य बाह्य वस्तुनो लेवो भाव तप जीवपर पुद्गल खधादिकनो आत्मानेविषे ग्राहकनारुप परिणमन करयो हवे, कराव्यो, हवे, करता अनुमोद्यो हवे, ते मन वचन कायाए ते सर्व श्रीप्रभुजीनी साखे गुरुसाखे आतमसाखे मिच्छामिदुक्कड ३ हवे चोथो पापस्थान मैथुन जे कामी भोगीपणे स्त्री विषे पुद्गलना वर्णादिकनो भोगववो लोकोत्तर धर्मलिंगे धर्मी महाजन साधु साध्वी धर्मोपकरण चैत्यादिने विषे स्त्रीनी पो-

षणा करवी ते वली द्रव्यथी वेद ३ उदये जे कामविकारीपणे भोगविलासादिक, भावथी आत्मपरणति परभोगीपणे पर वस्तु अशुचिपरिणाममध्ये रमणीकता ते माहारे जीवे, एकेन्द्रिपणे बेरिन्द्रिंपणे, तेरिन्द्रिपणे, चोरिन्द्रिपणे, पंचेन्द्रिपणे फरसन १ रसन २ घ्राण ३ चक्षु ४ श्रोत्रेन्द्रिय ६ इन्द्रीना त्रेवीस विषये वांच्छ्य। सेव्या सेवाया सेवता अनुमोद्या होइ ते मन वचन कायाए करी श्रीप्रभुजीनी साखे आत्मसाखे मिच्छामिदुक्कडं ४ हवे पांचमो पापस्थान परिग्रह जे कोइ आत्मधर्मथी अन्यभाव संरक्षणा परिणामे राखवा ते लौकिक परिग्रह द्विपद चतुःपद धनधान्य गृहखेत्र वस्त्रप्रमुख, लोकोत्तर परिग्रह सम्यक्त्वनो हेतु मोक्षकारण श्रीअरिहंतनो चैत्य तथा जिनबिंब तथा ज्ञाननो कारण पुस्तक नवकारवाली प्रमुखचारित्रना उपगरण तेहने ममत्वभावे गृहे द्रव्य परिग्रह पुद्गल खंधादि ममत्वभावे ग्रहे भावपरीग्रह क्रोधादिक अशुद्ध परिणाम परभावस्वामित्व-ग्राहकत्वादिक परिणति ते परिग्रह राख्यो हवे परद्रव्यनी इच्छा करे हवे, परिग्रह सुख मान्यो हवे, परिग्रह वासते धर्मआचरण कर्यो हवे ते परिग्रह पापस्थान मने वचने कायाए करी सेव्यो होये सेवतां अनुमोद्यो होवे ते श्रीअरिहंतनी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामिदुक्कडं ५ हवे छठ्ठो पापस्थानक क्रोधतप्त परिणाम क्षमानो रोधक ते लौकिक भाई पिता प्रमुख कुटुंब उपर तथा अन्य जीव उपर क्रोध परिणाम लोकोत्तर देवगुरु साधर्मिक उपर क्रोध परिणामते द्रव्यतः तथा सकठोरता भाव तथा रुद्र परिणाम ते जो कोई रीतनो अप्रशस्त क्रोध कर्यो होवे कराव्यो होवे करता अनुमोद्यो होवे तेथी त्रिभुवनपति निरंजन देवनीसाखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिछामिदुक्कडं ६ हवे सातमो

पापस्थान मान, अहकार रुपनो, धननो, राज्यनो, परिवारनो, बल-
नो, तपनो, विद्यानो, कुलनो तथा गुणी नहीं ते गुणीनो मान
आचार्य उपाध्याय साधुपणानो अभिमान संसारकार्य यशाभि-
लापे मान धर्मकार्य सयानचैत्य प्रमुखनो कराव्या रखवाल्या-
नो मान कर्यो हवे, लौकिक बाह्यलोकोत्तर गुणनो गुणीथी,
महत्व कर्यो हवे ते सर्व मने वचने कायाइ करि कर्या हवे
कराव्यो होवे करता अनुमोद्यो होवे ते श्रीप्रभुजीनी साखे
आत्म साखे मिछामिदुक्कड ७ हवे आठमो पापस्थान माया
कपट नियडि वक्रना जे कोडथी वचननो द्रोह ठगाई करवी ते
माया अलौकिक ससारी सबधथी लोकोत्तर आचार्य साधु सा-
धर्मिकथी धर्म पद्धतिनो कपट करवो ते द्रव्यत कोइने वचवो
भावत. आर्जवना रहित परिणामे जे माहरे जीवे कर्यो कराव्यो
करता अनुमोद्यो ते मने वचने कायाये करी श्रीजगवत्सल परम
करुणानिधिनी साखे गुरु यथार्थवादिनी साखे, आत्म साखे मि-
छामि दुक्कड ८ हवे नवमो पापस्थान लोभ, लालच परिणाम
इच्छा गृध्रता ते लौकिक बाह्य पोताने इष्ट वस्तु तेहनी लालच
जे घणी जडे इंद्रीय सुख प्रमुख आवे एहवो परिणाम ते
लोभ ते लोकोत्तर धर्मलिंगे धन विषय जसनो लाभ वाछे
तथा द्रव्यत कग जे भावत परभावाभिलाप सर्व ते जे मा-
हारे जीवे कर्यो कराव्यो करता अनुमोद्यो ते मने करि वचने
करि कायाये करि श्रीप्रभुजीनी साखे गुरु साखे आत्म साखे
मिछामिदुक्कड ९ हवे दसमो पापस्थान रागप्रीत परिणाम वा-
ल्हाप्से जीव पोताने विषे पोषणीने लौकिक तथा लोकोत्त-
रथी द्रव्य तथा भावथी ते राग परणति अननी आत्माथी
उपनी अन्य द्रव्यने विषे रागनी रीजते माहारे जीवे करी

करावी करतां अनुमोदि ते सर्व मने करी वचने कायाए करी श्रीअरिहंतनी साखे गुरुनी साखे मिछामिदुक्कडं १० हवे अग्यारमो पापस्थानक द्वेष अप्रीति परिणाम जीव तथा अजीव उपर पोतानी विषयादि इष्टताये अपूरातां जे असूहामणां ते लौकिक उपर द्वेषः तथा लोकोत्तर उपर द्वेष जे कर्यो होवे कराव्यो होवे करताप्रत्ये अनुमोद्यो होवे ते मने वचने कायाये करी ते श्रीसर्वज्ञनी साखे गुरु साखे मिछामिदुक्कडं ११ हवे बारमो पापस्थान कलह विढवाड कोईथी द्रव्य वासते जस वडाई वासते आक्रोश कुवचनादिक करवा तथा धर्म मध्येनामार्ग वासते कुयुक्ति पोतानो मत थापवाने जे कलह करवे प्रशस्त करतां अप्रशस्त थयुं होवे ते सर्व मने वचने कायाए करी कर्युं कराव्युं अनुमोद्युं ते देवसाखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामिदुक्कडं १२ तथा तेरमो पापस्थान अभ्याख्यान कुडोआल देवोद्वेषे तथा हास्ये गुणीना गुण ओलववा, आगलाने सहसात्कारे हिणो वचन कहेवो तथा वस्तुगते लोपीने फक्कार करवो ते लौकिक अन्यजीवने संसारी रीते लोकोत्तर अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु साधर्म्मिक देशविरति समकिती तेहनी औदयि चाल देखी कलंक देवो ते अभ्याख्यान कर्या होवे कराव्या होवे करतां अनुमोद्या होवे ते मने वचने कायाए करी श्रीप्रभुजीनीसाखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामिदुक्कडं १३ हवे चउदमो पापस्थान परपरिवाद पारकी निंद्या ते द्वेषे पारका अवगुण कह्या, कोइना अपजस वासती पारकी कुथली करी अथवा सामा मनुषने खिसाणो पाडवा वासते जे निंद्या करी ते मध्ये लौकिक ते जे संसारी जीवनी लोकोत्तर गुणी जैनमार्ग अवलंबतां मार्गानुसारिथी मांडी सिद्धभगवान लगे जे अवर्णवाद

बोलवो ते बोल्यो होवे बोलाव्यो होवे बोलताने अनुमोद्यो होवे ते मन वचन कायाए करीने श्रीप्रभुजीनी साखे गुरु साखे आत्म साखे मिछामिदुक्कड १४ पन्नरमो पापस्थान रति तथा अरति उपजे असाता दु:खवियोग हानि प्रमुख उपजे ने अरति आकुलता किहाइ सुहाय नही ते अरति लौकिक विषेनी ऊणी असुहामणे तथा लोकोत्तर आगम सुणता देवयात्राये तप सामायकपोसह भणवो प्रमुख ते मध्ये अरति करि होवे तथा रति, इष्ट्री विषे–मध्येरीझ सुहामण रक्तता विश्राम ते रति लौकिक तथा लोकोत्तर चैत्य पुस्तकादिकनी शुद्रता देखीने जे इष्ट्री विषे रीझ पामे ते रीझ ए नवा कर्म बांधवाने आकरिचिकणता जे माहरे जीवे करी, करावी, करता अनुमोदी ते मने वचने कायाये करी श्रीपरमात्मानी साखे गुरुनी साखे आत्म साखे मिछामिदुक्कड १५ हवे सोलमो पापस्थान पैशुन्य पारकी चाडी करवी ते जे द्वेषे थाये आगल्या जीवनेकष्ट असातानो हेतु राजा तथा आचार्यादिक अधिक आगले तेहना छता अथवा अछता दोष कही तेहनो आश्रय भाजवो ते पैशुन्य कहिये ते जे माहारे जीवे करयो कराव्यो करता अनुमोद्यो मनेवचने कायाए करी श्रीप्रभुजीनी साखे, आत्मसाखे गुरुसाखे मिछामिदुक्कड १६ हवे सत्तरमो पापस्थान माया मृषा कपटे परने ठगवा वास्ते मिठु बोले, कोइ कपटलिंग बगलानी पेरे देखाडीने गुणी नहि ने गुणी रीते वदाववो, पूजाववो मनाववो कराववो अथवा लौकिक वचने व्यापार प्रमुख मध्ये कपटे मृषा बोले तथा धर्मचाले जैनागम मध्ये कपट रीने प्रवृत्ति करवी ते लिंगी जीव प्रमुख करवा ते जे माहारे जीवे करया कराव्या करता अनुमोद्या ने मने वचने कायाए करी श्रीप्रभुजीनी साखे

गुरु साखे आत्म साखे मिछामिदुक्कडं १७ हवे अढारमो पाप-
स्थान मिथ्यात्व जे कुदेव विषयी कर्माधीन परग्रहता पुन्य-
प्रकृति भोगि तेहने देव माने, कुगुरु चारित्रधर्म रहित जे अन्य
लिंगी तथा स्वलिंगी गुणभ्रष्ट परगृहनो लोभी अढार पापस्थान
भरया तें गुरु करी माने, धर्म यथार्थ आत्मपरणति विना अ-
थवा तेहना साधन विना धर्म माने तथा जीवादिक नव तत्त्व
जिम वस्तुधर्मे वस्तुपणे पोतानी परणति छे षट्द्रव्ये जिम
पोतानी परणति गुणपर्याय स्वभाव स्याद्वाद रीते जिम छे तिम
न सद्दहे कल्पित रीते सद्दहे तेने मिथ्यात्व कहे छे, तेहना मूल
भेद ५ अभिग्रहमिथ्यात्व खोटोकदाग्रह झाल्यो मूंके नहि १
अनभिग्रह मिथ्यात्व गुणअवगुणना परख्या विना सर्व सरिखा
माने २ अभिनिवेश मिथ्यात्व जाणीने खोटो कदाग्रह खेंचे ३
संशयमिथ्यात्व जे सर्व संशय मध्ये रहे ४ अनाभोग मिथ्या-
त्व जे कांइ जाणे नहि तथा साध्य साधननिमित्त तथा उपा-
दान उत्सर्ग अपवाद विपर्यास रीते करि एहवी अशुद्ध सद्द-
हणा जे वेदांतादिकनी ते सर्व मिथ्यात्व जाणवो, ते जे सेव्यो
होवे, सेवाव्यो होवे सेवतां अनुमोद्यो होवे मने वचने कायाए
करीने ते श्रीप्रभुजीनी साखे गुरुसाखे आत्मसाखे मिच्छामि
दुक्कडं, ते मिथ्यात्व जीवने महादुःखकारी छे, अनादि संसारनो
बीज छे, लोकोत्तर श्रीजिनेंद्रनो कह्यो शुद्धमार्ग जीव पामे
नही ते मिथ्यात्व महापापस्थान छे ते थकां धर्म करणी
पिण साधक न थाये ते माटे मिथ्यात्वनो पश्चात्ताप घणो कर-
वो ते मिथ्यात्व टलतो नथी ते जे पूर्व जीवे गुणीनी आशातना
तथा गुणनो अनादर कर्यो छे ते महागुणी अरिहंत देव
तेहनी भक्तिने काजे उत्तम भव्यजीवे जे धनादिक रह्यो थको

पोताना आतमाने तथा अन्य ससारी जीवने सिण(स्नेह)सरागता, परिग्रहता हिंसादिकनो हेतु थाये तिणे गुणीनी भक्ति जोडतो निरधिकरणी थाये ते माटे जे अरिहतनी भक्ति कारजे कर्यो जे धनादिक ते देवको कहिये ते जे खाधो होवे अथवा पोते विणसाड्यो होवे अथवा उवेख्यो होवे ते सर्व देवकाना दूषण थयो ते माटे देवका दोषनी आलोयणा करवी ते लखीये छे जे माहारे जीवे एकेंद्री पृथवीकायपणे जिनबिंबादिकनी आसातना करी अथवा पृथवीकायपणे मूक्या जे शरीर तेहथी जे गुणी अथवा गुणीनी थापना चैत्यादिक तेहने व्याघात थयो तथा अपकायपणे पाणिमे चैत्य वहराव्या पड्या जिन बिंब वहाव्या तथा अग्निकायपणे जे चैत्यबिंबादिक बाल्या होवे, तथा वायुकायपणे चैत्य पड्यो होवे तथा वनस्पतिकायपणे जे चैत्य मध्ये रुखडा झाड खापणे उगीने चैत्य पड्या होवे, त्रसकायपणे चैत्यमध्ये मालादिक करी रह्या हवे परवीने भवे चैत्य तथा जिनबिंब उपर बेसी असमजस आचरण कर्या होवे, तथा देवकाद्रव्य मनुष्यपणे जाणि तथा जाण्या विना खाधा होवे अथवा अवधि वावर्या होवे तथा देवका उपर अन्याय हुकम कर्या होवे, अथवा देवकी वस्तु वावरीने पोताना यश बोलाव्या होवे, देवका दोकडा व्याजे राखे थोडो व्याज भरी आप्यो होवे अने घणो लाभ लीधो होवे, तथा बीजो पण देवथी इद्री सुख पगवडाई प्रमुख जे करी होवे तथा अरिहत देव प्रते सासारिक कामे मान्या इछा होवे ते मने वचने कायाए करी मिछामिदुक्कड. हिवे माहारे ए कार्य अशुद्धाचरणरूप न करवु आज पछी माहारो आतमा अनतगुणमयी प्रगट करवानी रुचि करवी श्रीअरिहतनो कर्यो मार्ग तहत्त करी सद्दहवो,

अन्य सर्व मिथ्या, श्रीवीतरागे कह्यो निर्ग्रंथे आचर्यो समकिती जीवे सद्दह्यो श्रीगणधर देवे आगम मध्ये गुंथ्यो शुद्ध धर्म माहरो तथा सर्व जीवनो हित छे ते माहारे प्रमाण ते सद्दहवो. ते जाणवो तें आदरवो ते नीपजाववो. जे समये समये गुणस्थान चढी कर्मक्षय करी संलेशी अंते पोतानी सिद्ध संपदा प्रगट थास्ये ते समयसार मांनवो अने जेने ए मारगनी परतीत प्रगटी तेने शरणे रहेवो तथा साध्य शुद्धसत्ता साधन गुणठाणे चढी ते रत्नत्रयी परणमवी ए मार्ग माहरो सदा अविहड होज्यो इति ॥

॥ दूहा ॥

परम अध्यातमने लखे, सद्गुरुकेरे संग;
तिणकुं भव सफलो होवे, अविहड प्रगटे रंग. १
धर्मध्यानको हेत यह, शिव साधनको खेत;
ऐसो अवसर कब मिले, चेत सके तो चेत. २
वक्ता श्रोता सम मिले, प्रगटे निजगुणरूप;
अक्षय खजानो ज्ञानको, तीन भूवनको भूप. ३
एह पत्र अनुपहे, समझे जे चित्तलाय;
देवचंद्र कवि इम कहे, निज आतम थिर थाय. ४

इति अढार पापस्थान ज़ाणवा. सारु. हवे छठो गुणठाणो प्रमत्त साधु एहवे नामे कहीये जे प्रत्याख्यानी चोकडीनो उदय टल्यो सर्व विरति प्रगटी, संयम साधन माटे पौद्गलिक भावे ग्रहेपण पुद्गलने भोगिपणे पुद्गलीक थाय नही. स्वरूपरमणी आत्मधर्म थिरता रुप सर्वपरभाव उपर अग्राहकतारूप चारित्रधर्म प्रगट्यो छे ते साधु उत्सर्ग अपवाद मार्गेपंचमहाव्रत पाले छे, तिहां द्रव्यभाव पंच महाव्रत सहित पांच समिति तीनगुपतिना दश

यतिना धर्मना पात्रथका निराशसी एक आत्मा निरमल करवाना उद्यमथकी विचरे ते पच महाव्रत तिहा पहेलो, महाव्रत सव्वाओपाणाईवायाओविरमण" वित्रहारे छकायना जीवना द्रव्य प्राण १० हणे नही हणावे नहीं हणनाने अनुमोदे नही मन वचन कायाए करीने निश्चयथी ज्ञानदर्शन चारित्र सुख प्रमुख भावप्राण पोताना परना कर्म आवरणपणे हणे नहि, हणावे नहि, हणता अनुमोद्ये नहीं, तथा बीजे महाव्रते, सव्वाओ मोसा वायाओ वेरमण द्रव्यत क्रोधि मानने भये लोमी सूक्ष्मबादर लौकिक तथा लोकोत्तर जूठ पोते बोले नही बोलावे नहि बोलता अनुमोद्ये नहि मन वचन कायाए करी भावथी सर्व द्रव्य पर्यायनो यथार्थ जाणवो, सत्य भासनरूप ज्ञायकता शक्ति सार्वि ज्ञान सत्यपणे पाले तथा श्री वीतरागना आगम प्रमाणे अर्थ भाव छे तेहनी सज्झाय करि जेहथी पोताना ज्ञानदर्शन चारित्र निर्मल थाये ते भाषा बोले त्रीजो महाव्रत सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमण जे द्रव्य ते त्रणतुस मात्र पण अण दीधो लेवे नही, लेवरावे नही, जे लेवे तेहने सारो कहे नही, मने वचने कायाए करीने लौकिक चोरी जे ससारी जीवनी वस्तु चोरी लेवी, लोकोत्तर चोरी जे तीर्थंकर आणमे जे न लेवानो कह्यो ते लेवो ते चोरी न करे, भावथी आत्मानी ग्राहकता शक्ति ते स्वरूप ग्रहणरूप कार्यना कर्ता छे ते अनादिनी परभाव ग्राहकता करी रह्यु छे ते निवारीने स्वरूप ग्राहकपणे परणमावे, ते अदत्तादान विमरणव्रत थयो ते अदत्तादान चार भेदे छे ते तीर्थंकर अदत्तजे तीर्थंकरनी आणामें न लेवो कह्यो सर्व परभाव ते लेवे १ बीजो गुरुअदत्त जे गुरु परपरा विनागूर अर्थ कहेवा २ तीजो स्वामी अदत्त जे वस्तुनो जे

धणी होवे तेहनी अण दीधी जे वस्तु लेवी ते ३ चोथुं जीव अदत्त जे कोइ जीवे एम कह्यो नथी जे माहरा प्राण-हणो अने पोतानेइंद्रीसवाद माटे परजीवना प्राणहणे ते जीव अदत्त ४ तथा प्रशस्त काम करतां कोइ जीवना प्राणघात थाये ते श्री भगवंते हींसा कही नथी, ते विनय तथा वैयावच्च मांगण्युं छे ए द्रव्यभाव अदत्तादान त्रिविधि त्रिविधिपणे होवे. चोथे महाव्रते सव्वाओ मेहूणाओ वेरमणं जे द्रव्यथी पांच इंद्रिना त्रेवीस विषे सेवे नही, सेवतां अनुमोदे नहीं, मनुष्य तिर्यंच देवताना विषयनी वांछा न करे, न करावे, अनुमोदे नही, भावथी जे आत्मा द्रव्य आत्म गुणनो भोगी छे ते पण करम करवा माटे परभावने भोगवे ते भाव मैथुन छे, ते सर्व परभाव भोगीपणे भोगवे नही, ते आत्मानिः कर्मा करवा माटे परभाव साधनपणे ग्रहे पण अभोग्य अग्राह्यपणे अरमणिक माने जे माहरो आत्मा आत्मानंदनो भोगी ते परभाव अनंत जीवे अनंतवार लेइ भोगवीने वम्यो ते मने ग्रहवो भोगववो घटे नही ए अनंत जीवे अनंतीवार भोगवीजे अैठ जडचल तेहने हुं भोगवुं नहीं इम सर्व परभाव भोगीपणो तजी स्वभाव भोक्ता-पणे रहेवो ते द्रव्यथी मैथुनना कारणरूपी खंध तथा रूपी खंध सिल्या जीवनो, खेत्रथी मैथुन तीन लोकने विषे इंद्रीना सवादनी ईच्छा, कालथी मैथुन दिवस तथा रात्री, भावथी मैथुन रागथी तथा द्वेषथी ते सर्वथी सेववो नहीं तेहनी वाड नवे पालवी १ वाडे जे थानके स्त्री पशु पंडक रहे ते थानके ब्रह्मचारी रात्रीये रहेवुं नहीं. बीजी वाडे स्त्री साथे हासि तथा कामकथा करवी नहीं, त्रीजी वाडे जे पीठ पाटले स्त्री बेठी होये ते पाटले बे घडी लगे ब्रह्मचारी पुरुषे बेसवुं नहीं, स्त्रीये

तीन पहोर लगे वेसवु नहीं, चोथी वाडे स्त्रीनु रूप नजर जोडीने जोवु नहीं पाचमी वाडे जिहा स्त्री भरतार काम भोग भोगवता होवे ते भींतने अतरे ब्रह्मचारीये राते रहेवु नहीं, तेहना शब्द काने पडवा देवा नहीं छट्ठी वाडे गृहस्थपणे जे भोग भोगव्या ते सभारवा नहीं सातमी वाडे सरस आहार जेहथी काम दीपे ते आहार करवो नहीं, आठमी वाडे अतिमात्राए आहार करवो नहीं, नवमी वाडे शरीर सिणगार लूगडाना तथा घरेणानो करवो नहीं, सनान उगटणा न करवा, एकली स्त्री साथे एकलु वाटे चालवु नहीं, तथा नानु बालक तथा बालिकाथी एक शय्याए सुवु नहीं, सात वरस पछी, पाचमे महाव्रते सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण जे द्रव्यथी परिग्रह सूक्ष्मबादर राखे नहीं रखावे नहीं राखे तेहने अनुमोदे नही जे सयम पालवा माटे सुखे सिझाय थाये तेमाटे उपगरण १४ राखे, कारणे अधिको जोइए तो गृहस्थनायका पाडेरु वावरे एथि थिरकल्पीनो विहार छे, जिनकल्पी कोई उपगरण न राखे अपवादे दस उपगरण राखे, बार कषाय उदय टल्या तेहने छटो गुणठाणो कहीये साधु कहीये. पण ५ परमाद सेवे निद्रा १ विकथा २ आहार ३ अल्पविषय ४ मानादिक ५ ए अल्प सेवे अनाभोगे जाणे, सेवे नहीं, ए छट्ठा गुणठाणानी स्थिती जघन्ये एक समय उत्कृष्टे अतर्मुहूर्त ए गुणठाणे तीन चारित्र, सामायक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि ए तीन चारित्र छे. तेहनो स्वरूप जे परभाव परत्यागे स्वरूप एकत्वते चारित्र कहीये, ते मध्ये जे तजवा योग्य भाव तजे ते द्वेष विना अने रत्नत्रयीज आत्मधर्म ते ग्रहे स्वधर्म माटे पण लौकिकादिक इष्टता राग विना एहवो समपरिणाम ते

सामायक कहीए, तथा जे सामायक मध्ये संज्वलनना तीव्रोदये जे आकरा अतिचारे अथवा बार कषायने उदये असंजमपरिणाम फरसे जे पूर्व पर्याय छेदीने अभिनव निर्मल पर्यायनो अंगीकार करवो ते छेदोपस्थापनीय कहीये, अने छेदोपस्थापनीयचारित्र भरत ५ तथा ऐरवत ५ ते मध्ये प्रथम चरम तीर्थंकरना साधुजीने होवे तथा तीर्थंकर तथा गणधरजीना शिष्य नव पूर्वथी उपरांत श्रुतवंत मध्य युवानवयि प्रथम संघयणे अढार मासनो उग्रतप ते अप्रमादी निद्रा रहित नवजणा वनवासी थका जे तप करे ते परिहार विशुद्ध चारित्र कहिजे, दशमे गुणठाणे शुक्लध्यान सुक्ष्म लोभनो उदय छे ते सूक्ष्म संपराय चारित्र कहिजे, तथा सर्वथा कषायनो उदय नथी ते यथाख्यात चारित्र कहीये ते मध्ये ११ मे गुणठाणे उपशांत यथाख्यात छे १२, १३, १४ मे गुणठाणे क्षायिक यथाख्यात छे, हवे सातमो अप्रमत्त गुणठाणो लिखीये छे, छठे गुणठाणे जे भाव साधुजीना कह्या ते सर्व होवे पण पांच प्रमाद न होवे, ते माटे अप्रमाद ए छठे गुणठाणे वरततो साधुजन शासनने कामे लब्धि फोरवे पण सातमे गुणठाणे वरततो साधु लब्धि न फोरवे, एहनी स्थिति जघन्य एक समे उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी छे. छठ्ठे तथा सातमे गुणठाणे मिलीने साधु देशे उणी पूर्व कोडी रहे. श्री भगवती सूत्रे ए बे गुणठाणानी देशे उणी पूर्व कोडी स्थिति जूदी कही छ. ते व्यवहार नये छे समे तथा बे समे वच्चे गुणठाणो पलटे ते गवेख्यो नथी तेमाटे अंतर्मुहूर्तनी स्थिति कही. छठ्ठे बे गुणठाणे सामायक तथा छेदोपस्थापनीय तथा परिहार विशुद्धि चारित्र छे, तथा सातमे गुणठागे साधु लब्धि फोरवे नहीं अने छठ्ठा गुणठाणाना साधु जिनशासनने काजे लब्धि

फोरवे तेनु साधुपणु जाय नहीं ७ आठमो अपूर्वकरण गुणठाणो जे जीव भावनाभावतो आत्मानो स्वरूप अनतज्ञानमयी, अनतदर्शनमयी, अनतचारित्रमयी, अनतदानमयी, अनतलाभमयी, अनतभोगमयी, अनतउपभोगमयी, अनतवीर्यमयी, अनतअव्याबाधसुखमयी, परमआनदमयी, अरूपी, अवेदी, अकषाई, अलेसी, अशरीरी, अनाहारी, सर्वआनदरूप माहरो धर्म छे ए शरीर, आहारतेहुनहीं, एहवी भावनामाहे परणम्यो जीव शुक्लध्याननो पेहलो पायो ध्यावे, इहा पाच अपूर्वकरणकरे पूर्वे किंवारे नकरया होय ते करे तेहना नाम पहेलो अपूर्वकरण थितिघात जे जीव कने असख्याता थित स्कधना थोकडा हता ते करमथिति सघली खपावी अथवा उपशमावी बीजो अपूर्वसघात जे करमना रस चीकणास हती ते खपावी पातलु करयु त्रीजो अपूर्वगुण श्रेणि जे जीवने सत्तामाहे करमदल हता ते सर्वे विखेरी नाखवा, चोथो अपूर्वगुणसक्रम आत्माना गुणमे रमवो पाचमो अपूर्व जे नवोस्थितिबध न करवो एहवा परिणामथी कषाय खपावीने आतमा शीतल परिणामे परणम्यो करम निर्जरा करे ते ए गुणठाणे जघन्य एक समय उत्कृष्ट अतर्मुहूर्तनी स्थिति छे ए गुणठाणे चारित्र सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय ए बे छे ८ नवमो गुणठाणो अनिवृत्तिबादर छे ते शुक्ल ध्याननो पहेलो पायो तेथी आवे, ए गुणठाणे अनंता जीव एक अध्यवसाये जेटला होवे तेटला सर्वनो एक सरखो परिणाम एक सरखो सत्ता, एकसरखी निर्जरा, एहने सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय ए बे चारित्र होवे, एहने अते तीन वेद जाये तथा तीन कषाय सजलनो क्रोधमान माया लोभ जाये ए गुणठाणे सख्याता जीव होये ए गुणठाणानी स्थिति जघन्य

एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्तनी छे. ९ दशमो गुणठाणो सूक्ष्म संपराय इहां सूक्ष्म संजलनो लोभ उदय होवे. इहां बे जातना जीव पामीये, उपशम श्रेणि तथा क्षपक श्रेणि करमने उपशमावे द्वेषखपावतो जाए क्षपकश्रेणि कर्म मोहनीने खपावे, ए गुणठाणे एक सूक्ष्म संपराय चारित्र होवे, ध्यान शुक्ल होवे परिणाम निरमल होवे, ते अवेदी छे एहनी स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मूहूर्त्तनी छे. १० इग्यारमो गुणठाणो उपशांतमोह तिहां जे जीव उपशमश्रेणि आङमेळनोबोलना परणामशांत मोह कर्मनी प्रकृतिउपशमावनो जाय, तेहनो उटाणाचुरथीज उपशमावानो छे ते नवमे आवी मोहप्रकृति उपशमावी दशमे लोभ उपशमावीने कषायना उदयहीन छे ते इग्यारमे आवे ते यथाख्यात चारित्र पामे, एहने चोवीस संपरायकी क्रिया उतरी एकइरियावहिकी क्रिया रहे. प्रकृति तथा परदेश ए बे बंध रह्या छे हेतु न बांछे, बंध एक सातावेदनीनो छे, ध्यान शुक्ल छे ए गुणठाणे जे जीव मरण पाम्या पछी चोथे गुणठाणे आवे ते देवता लवसत्तसीया थाए, एकावतारी थाए, अथवा कोइक जीव अगीयारमे गुणठाणे उपशांत अद्धा ने जइ पाछो पडे ते इग्यारमाथी दशमे आवे दशमाथी नवमे आवे नवमेथी आटमे आवे, आठमेथी सातमे आवे सातमेथी छठ्ठे आवे, इहांथी पाछो पडे नचढे तो पाछो पांचमे गुणठाणे आवे, पांचमाथी चोथे आवे, जोक्षायक समकिती होए तो चोथे गुणठाणे टके अने उपशम समकिती होए तो चोथाथी पडी बीजे सास्वादन गुणठाणे थइने पहेले मिथ्यात्व गुणठाणे आवे, कोइ एक जीव अंतर्मुहूर्त्त रहे, कोइक जीव देश ओणोअर्ध पुद्गल परावर्त्त मिथ्यात्वीपणे रहे, पछे

समकित पामे, एअगीयारमो गुणठाणो एक जीव च्यारवार पामे. एक जीव एकभवमाहि वेवार पामे, एहनी स्थिति जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्तनी छे एअगीयारमो, हवे बारमो क्षीणमोह गुणठाणो ते जे जीव आठमा गुणठाणाथी कर्म खपावतो तीव्र वीरज निरमल उपयोग शुद्ध शुक्ल ध्यानने बले नवमे दशमे गुणठाणे मोहनी कर्म खपावी बारमे गुणठाणे आवे. एहशुद्ध शुक्ल ध्याननो वीजो पायो एकत्ववितर्क अप्रविचार ध्यावे, एहथी आयु बले घनघाती तीन कर्म ज्ञानावर्णीय दर्शनावर्णीय अनराय खपावे, एहनी स्थिति अंतर्मुहूर्तनी छे. १२ तेरमो गुणठाणो सयोगी केवली जे जीव बारमाने अंते ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी, अनराय, ए खपे केवलज्ञान केवलदर्शन प्रगटे, लोक अलोकना सर्व भाव अतीतकाल अनागतकाल वरतमानकाल सर्व प्रत्यक्ष आत्मबले इन्द्रिय विना जाणे देखे इहा जे अनगट केवली होवे ते केवली समुदघात करीने मोक्ष जाय अने जे केवलीनो आऊखो घणो होवे ते अनेक जीवने उपगार करता अनेकदेशना देता विचर देशे उणीपूर्व कोडी लगे विचर तथा जे तीर्थंकरदेव केवलीपण विचर ते चोत्रीश अतिशय तथा आठ प्रातिहारज विराजमान थका नव सोनाना कमले पग थापता चाले, योजनप्रमाण माडलसमोसरण सोनाने सिंहासने तीन छत्र माथे चामरना वे पासे चामरनी जोड विंझता हजार ध्वजा इन्द्रध्वजा लहेकता देशना देता जघन्य महोतेर वरसने आऊखे उत्कृष्ट चोरासी लाख पूरवने आऊखे विचर अनेक जीवने धरम उपदेश दे, गणधर थापना कर, साधु साध्वी श्रावक श्राविका ए च्यार संघ थापे, द्वादशांगी सिद्धान्त प्ररूपे, अन सामान्य केवलीने

अतिशय नहोवे ते छेडे आवरजीकरण करे पछी जो आऊखो अने बीजा करम सरखा होवे तो केवली समुद्घात न करे, अने जो आऊखेथी करम घणा होवे तो केवली समुद्घात करे तेहने आठ समयलागे. ए तेरमा गुणठाणानी स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्तनी छे उत्कृष्टे देशे उणीपूर्व कोर्डी वर्षनी छे १३ चउदमे गुणठाणे अयोगी केवली ते जे जीव तेरमे गुणठाणे जोगरोध करवा मांडे, सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाते शुक्ल ध्याननो त्रीजो पायो ध्यावतो ते चउदमे गुणठाणे चढे तिहां प्रथमथी बादर मनोजोग रोके पछी बादर वचनजोग रोके पछी बादर कायाजोग रोके पछी सूक्ष्म मनोयोग रोके पछी सूक्ष्म वचनजोग रोके पछी सूक्ष्म कायाजोग रोके शरीररहित थाए जेटलो देहमान होवे जघन्य बे हाथनो उत्कृष्टो पांचसे धनुषनो त्रीजे भागे घटाडे, तेवारे जघन्य बत्रीस आंगुलनी उत्कृष्ट तीनसेतेत्रीस धनुष बत्रीस आंगुलनी अवगाहना रहे, तेवारे आत्मा अयोगी अक्रिय, अलेसी, अनाहारी, अशरीरी, शुक्ल ध्याननो चोथो पायो थईने अघाती करम च्यार, वेदनीकर्म १ आउखोकर्म २ नामकर्म ३ गोत्रकर्म ४ नो क्षय करीने मोक्ष जाय ॥ इतिश्री चउदमुं गुणस्थानकं संपूर्णम् ॥

श्रीमद् देवचन्द्र प्रथमभागनुं अशुद्धि शुद्धिपत्रक.



पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१	७	सागरोपग	सागरोपम
२	२५	जीवाने	जीवोने
३	८	वीजु	वीजुं
४	१	पहेलो	पहेला
६	१४	अमे	अने
८	७	प्रमाणरव्व्य	प्रमाणरव्व्य
८	१८	शिष्य	शिष्य
१७	१	सगृह्‌	सग्रह
१९	१०	द्व्यणुक	द्व्यणुक
२०	७	निश्चय	निश्चय
२०	१९	अनगत	अनागत
२१	२५	घोढा	घोडा
२४	५	नाणीहि	नाणीहिं
२४	९	विना	विणा
२४	१७	प्रकृति	प्रवृत्ति
२५	१५	सुतत्थो	सुत्तत्थो
२५	१५	निज्ञत्ति	निज्जुत्ति
२५	१९	सुनत्थो	सुत्तत्थो
२५	२३	सुतत्थो	सुत्तत्थो
२९	१४	ससारे	सयारे
३३	२१	भाग	भागो

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
३५	५	बीजी	बीजो
३५	२३	धर्मास्तिकानो	धर्मास्तिकायनो
३६	६	धर्मास्काय	धर्मास्तिकाय
३७	२४	इक्किक्कमि	इक्किक्कम्मि
३८	९	मुहूर्त्तमां	मुहूर्त्त
४१	१९	कहेवुं	कहेवो
४२	८	सव्वगुण	सव्वगुणा
४४	२४	निश्चथी	निश्चयथी
४६	१८	व्रतत्याग	त्यागव्रत
,,	२५	ढालीने	टालीने
५०	१८	अनमी	अनामी
५३	८	क्रियानुवृत्ति	क्रियानिवृत्ति
५६	१४	राखवो	राखवी
५७	२५	उवराइ	उववाइ
५८	२	वन्हिदिशा	वन्हिदसा
,,	८	उत्तराध्यन	उत्तराध्ययन
६०	१०	निरवेद्य	निर्वेद
६१	२	परच्छ	परमत्थ
६३	५	अनेअने	अने
६७	१२	यणाहा	अणाहा
,,	९	आराधक	आवार
६८	१३	सहा	सहाव
६९	३	प्रमुए	प्रमुखे

नयचक्र.

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि.
७४	४	अव्यावाबाधा	अव्याबाधा
,,	९	वर्णादि	वरणादि
,,	२५	धर्मना	धर्मनी
७६	१७	तथाप्रवृत्ति	यथाप्रवृत्ति
७९	१३	मतातूरीओ	मतांतरीओ
८०	१३	भरणादिक	आभरणादिक
८२	१४	प्रतिप्रदेशे	प्रतिप्रदेश
९०	१०	तदन्यं	तदन्त्यं
९०	२२	अत्यत	अन्त्य
९१	१९	विसरी	विखरी
९२	८	परिणामिक	पारिणामिक
९७	१	क्रियारित्व	क्रियाकारित्वं
९७	४	तिरोभाव्यभाव	तिरोभावाभाव
९७	७	सत्वं	सत्त्व
१००	२	उत्पात्ति	उप्पत्ति
१००	९	इत्येव	इत्येव
१००	२०	आस्त्व	आस्तित्व
१०३	१	परिणमयी	परिणमइ
१०३	१	,,	,,
१०३	१४	भवेन	भयेन
१०३	१७	कुभ	कुभ
१०५	४	द्धितियो	द्धितीयो
१०५	१६	एकैकन	एकैकेन

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१०६	१६	पर्यायसत्वेन	पर्यायासत्त्वेन
१०७	५	संकेतिकेन	सांकेतिकेन
१०७	१९	,,	,,
११०	१९	थर्का	थकां
१११	२	आण्या	आण्युं
१११	३	गुपर्याय	गुणपर्याय
११२	२	तृतयो	तृतीयो
११६	४	स्याद्वाद्व	स्याद्वाद्
११८	९	प्रदेशादिनां	प्रदेशादीनां
११९	७	कायं	काय
१२०	२२	उत्पादव्यय	उत्पाद
१२२	११	घटापटादि	घटपटादि
,,	१४	घटा	घट
,,	१९	दिष्ववि	दिष्वपि
१२५	४	संयु	संयुक्त
१२६	९	उत्पाद्	उत्पादः
१२९	५	गुणीलक्ष	गुणिलक्ष्यः
१३०	९	सोने	सौने
१३१	९	उथ्थित	उत्थित
,,	१२	प्रकाश	प्रकाश
,,	१६	छिन्न	च्छिन्न
१३५	९	पूर्ण	पुरण
१३६	२५	योग्यरुप	योग्यतारुप
१३७	१२	कर्म	धर्म

पृ	पं	अशुद्धि.	शुद्धि.
१३९	१०	सैंवरैवा	सैंवरेवा
१४२	१०	पूर्ण	पुरण
,,	१२	लव्व	लघ्व
१४३	८	षद्गुण	षड्गुण
१४४	२०	नियुत्ति	निज्जुत्ति
१४५	७	जाणिज्झा	जाणिज्जा
,,	,,	निरक्खेवनिरिखवे	निरकेवनिरिकवे
१४६	६	पज्झाया	पज्जाया
१४७	१६	त्यर्थ	त्यर्थ
१५१	२	ज्ञानी	ज्ञान
,,	६	वर्त्तन	वर्त्तमान
,,	७	तेम	ते
१५२	८	वस्तु	वस्तू
,,	२१	जाता	जात
१५३	१२	विष	विषे
१५६	६	लोकिका	लौकिका
,,	,,	त्रेधा	त्रिधा
१५७	२०	द्वादशसार	द्वादशार
,,	२३	ऋजु	उज्जु
१५८	१	अवक्रम	अवक्रं
,,	५	वक	वक्र
,,	५	तदेव	तएव
,,	७	मात्मीय	मात्मीयं
,,	८	ऋजु	ऋजु.

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१५८	९	तस्यार्जु	तस्यर्जु
,,	१२	गाही	ग्गाही
,,	१३	ति	त्ति
,,	१७	ऋजु	ऋजु
१६२	९	इन्द्रन	इन्दन
,,	१०	शक्रन	शकन
१६३	११	व्यंज्यते	व्यज्यते
,,	१३	वाच्येयनोंथन	वाच्येनार्थेन
१६५	१४	ऋजू	ऋजु
,,	१२	देशा	दंशा
,,	२१	भेको	मेकः
१६६	२०	पणे	पणो
१६९	६	दिन्नयांतर	दीन्यवांतर
१७४	११	प्रवृति	प्रवृत्ति
,,	२१	लंबि	लंबी
१७८	२०	सद्दश्या	सादृश्या
१८१	२५	दश	दस
१८३	१८	पण	तथा
,,	१०	निज्झरा	निज्जरा
१८४	२१	अयोगी	अयोगि
,,	२२	नांबाधनिरूपाधिनिधिरूपं चरित्रानयाशा-	नाबाधनिरुपाधिनि-रूपचरितानायासा
१८५	२४	पयाट्ठिआ	पइट्ठिआ
१८६	४	उव्ववाइ	उववाइ

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
"	५	वग्गो	वग्ग
"	१८	ततृशिष्य	तच्छिष्य
१८८	७	द्वादशसार	द्वादशार
"	१४	उवज्जाय	उवज्झाय

श्रीज्ञानसार.

१९२	१७	उपेक्षते	उपेक्ष्यते
१९५	२०	शरी	शरीर
१९६	९	समभिरुढेन	समभिरूढत.
"	१०	एवमूतेन	एवमूतत
"	१७	समाम्रान	समावाय
१९७	४	साधरुचिमतो·	साधनरुचिगतो
"	११	स्थाप्य	सस्थाप्य
"	१५	द्रव्य	द्रव्ये
१९८	१	आत्मानतानदसपन्नमय	आत्मानमनतानदसपन्न
"	२१	निक्षेपाना	निक्षेपाणा
२००	२१	तेज	तेजो
२०१	८	चारित्रादिना	चारित्रादीनां
२०४	७	प्राप्नोति	सुख प्राप्नोति
२०६	२	पूर्ण	पुरण
२१३	२२	अगमनो	आगमतो
२१५	१५	मम	मम न

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
२१६	१४	ज्ञानपात्रः	ज्ञानपात्रं
२१८	१	द्रव्येन	द्रव्ये
,,	२	असंगाहि इत्यादि	....
,,	५	आश्रव	आस्रव
,,	११	वर	नर
,,	२१	अत	अतः
२२०	५	ज्योति	ज्योतिः
,,	६	भिन्तं	भिन्नं
२२१	१९	हेतु	हेतुः
२२३	२	तत्र	तन्न
,,	१३	विष्ठा	विष्टा
२२९	८	उपशांताद्धा	उपशान्ताद्धा
,,	१४	अध्यवसानानि	अध्यवसायानि
२३२	२१	आगाबलेन	आगालेन
२३३	२१	शुद्धात्मानंदने	शुद्धात्मनंदने
२३६	८	परिष्ट	पट्टिष्ठ
२३८	२१	अस्व	अश्व
२३९	१२	अतीत	अनागत
२४२	८	जइतव्यं	जेतव्यं
२४३	१	तां	स्तां
,,	११	मुह्यतां	मूढतां
२४६	१९	भृंगो	गंधासक्तो भृंगो
२५३	६	स्वरुपं	स्वरूपे
२५६	२०	द्वंद्वं	द्वन्द्व

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
२५७	१०	सुगमां	सुगमा
२६१	२३	यश नाम	यशोनाम
२७३	६	आश्लेषेन	आश्लेषेण
,,	१८	चित्र·	चित्रै.
,,	२२	यावती	यावत्
२७८	६	एकादशमम्	एकादशम्
२८३	४	मता	वन्त.
,,	१३	भावामिमि	भावानि
२८४	६	गुनित्व	मुनित्वं
,,	१७	तत्	स्तत्
२८५	१	कर्त्ता	कर्तॄ
२९६	२२	धर्मादिना	धर्मादीनां
२९७	६	तुलयानापि	तुलयानामपि
३०२	१४	ऽअनादीन	ऽअनादिनं
३०७	९	चक्रमाया	चक्रमयी
३०८	८	तदेव	सैव
,,	१२	ज्ञानाधिष्ट.	ज्ञानाधिष्ठ
,,	१३	कृष्टा	कृष्ठ
,,	१७	निर्वृत्तः	निवृत्त.
,,	२०	पचदशमम्	पंचदशम्
३१४	२०	ज्वसनादि	ध्वंसनादि
३१९	४	व्यवहार	व्यवहारे
३२३	१५	रोदयिक	रौदयिक
,,	२१	भयः	भय

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
३२५	२२	निर्धार	निर्धारे
३२९	९	श्रितं	सृतं
,,	१८	भद्रः	भद्र
३३०	३	आत्मी	आत्मीय
३३१	२४	तहा	महा
३३२	१	कार्त्तस्वरद्ध	कार्त्तस्वरवद्ध
३३३	५	अनवछिन्ना	अनवच्छिन्ना
,,	१४	दीनतां	दीनता
३३४	४	ममात्मतः	ममात्मनः
,,	५	घ्रौव्यात्व	घ्रौव्यत्व
,,	२०	आत्य	आत्म
३३६	७	अयं	अहं
,,	८	हन्त्रया	हन्म्या
३३८	२	दुःखामां	दुःखानां
,,	१९	बाह	बहि
३३९	१	भवन्ति	भवति
,,	५	दग्	दृग्
३४१	१५	भावद्धि	भावर्द्धि
,,	२१	दष्टि	दृष्टि
३४४	१०	मुनि	मुनिः
,,	१८	योगिन	योगिनो
३४६	१०	प्रत्यक्षं	न प्रत्यक्षं
३४७	१६	मान	माण
३५१	१५	धर्म	धर्मं

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
”	२३	दिष्टता	द्विष्टता
३५३	१८	यस्म	यस्य
”	२०	भवाभोवौ	भवाभोवौ
३५४	१९	व्यावात	व्यावाताः
३५५	१०	तानिश	तानिशं
३५६	१६	यदौ	यथौ
”	१८	विष	विष
”	”	कश्चिवन्	कश्चिद्
”	१९	सर्व	सर्प
३५८	८	विरित.	विरत
३६०	३	लोकानुयायी	लोकानुयायिना
”	७	णार्थिन	णार्थिनो
”	९	स्तोका	स्तोका·
३६१	२	साक्षिक	साक्षिक
”	८	धर्म	धर्मो
”	१२	साधु	साधु·
३६२	२३	क्षयो२मो	क्षयोपशमो
३६४	१६	मार्गोपिदेशक	मार्गोपदेशकम्
३६८	१०	परिग्रहावेगात्	परिग्रहग्रहावेशात्
३७३	२१	कथमतअनुभव	कथमूतोऽनुभव
३७४	८	प्रयासा	प्रयास
”	११	सद्गु	सद्गुरु
३८०	८	तत्वयाति	तत्त्याति
३८१	२४	सर्वोत्तमा	सर्वोत्तमो

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
३८२	१४	कस्मात	कस्मात्
३८४	१४	ध्यायया	ध्याय्यया
"	२२	द्यैः	सावद्यैः
३९७	४	त्वोपयोगंसाध्यं	त्वोपयोगःसाध्यः
४०७	१३	परिणात	परिणतं
४१६	१२	ज्ञानैवात्मा	ज्ञानमेवात्मा
४२२	८	भवतां	भूयास्त्व
"	२२	साधकः	साधकौ

गुरुगुणषट्त्रिंशिका.

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
४३०	१०	भोजनकाति	भोजनजाति
४३९	१	विणओ	विणए
४३९	२	चंउ	चउ
४४२	४	कुवंते	कुव्वंते
"	४	मेहुणं	मेहुणं
"	४	रीइ	राइ
"	१६	सायय	आय
"	१६	घित्तूणं	घित्तूणं
"	२२	प्यस्सावि	अस्सावि
४४४	२१	प्रभाववना	प्रभावना
४५४	१२	सूरिवराणां	सूरिवराणं
	२३	देवनंदीधे	देवनंदीये
४५७	१५	असमान	समान

पृ.	पं.	अशुद्धि	शुद्धि
४५८	२५	लेप्य	लेप
४५९	१७	एहकलै	एकले
४६१	१९	रागदिक	रागादिक
४६२	१५	क्रम	कर्म
४७०	८	काकाताली	काकताली
"	६	मय	मद
४७२	११	पवि १	पवित्र ३
"	१२	च्यार	च्यार
"	१३	सुचेय	सुध्येय
४७३	१०	वले	चले
"	१७	वटी	वली
"	१७	आपण	आषण
४७५	२०	वैदिक	वैदक
४७८	७	बुहत	वहुत
४८१	१४	तत्त्वतत्त्व	तत्त्वातत्त्व
"	२१	सूषिम	सूक्ष्म
"	२२	चोद	चोभेद
४८२	१६	समकितरे	समकितरो
४८३	१०	तीस	तीन
"	१०	अविधि	अवधि
४८४	५	दुरति	दुरित
"	७	वनमय	घनमें
"	८	मोहनीन	मोहनीना
४८६	९	मुप	मूर्ख

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
,,	११	सुप	सुष
,,	१३	जीषदया	जीवदया
४८७	१८	मिथ्याग्रथ	मिथ्याग्रह
,,	२५	सुषथी	मुखथी
४८८	२४	केर	करे
४९०	२४	स्त्राने	स्त्रीने
४९३	२२	साझ	साधे
,,	५	धुस	धर्म
४९९	३	मुझांय	मुझाय
,,	२२	षड्या	खंड्या
५००	१	मन वशील	मानव शील
,,	१०	विंध्योजात	विंध्यो न जात
,,	११	भारण	वारण
५०२	९	केकीर	केकी
५११	१९	वृष	वृक्ष
५१४	१५	स्मरणिक	रमणिक
,,	,,	आदेय छे	आदे अछे
५१५	४	गंधषेमे	गंधप्रेमे
५१६	२१	सु.द्रा	मुद्रा
५१८	१०	छे	छ
,,	१२	द्रे	व्हे
५२०	८	नित	नवि
५२१	३	तास	नास
५२८	२०	उदयाचलि	उदयावलि

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
५२९	४	जींवे	जावे
५३९	१५	शिशि	शशि
५४७	१६	सथिर	अथिर
५५१	१२	वाञा रे	ववारे
५६०	१०	सत्रर	संवर
५६१	१६	षोडश	षोडशदळ
५६६	८	व्यय	अव्यय
"	१३	यानपात्र	यानपात्र
"	१४	गुणराणा	गुणखाण
५६८	१	अलेप	अलष
५६९	९	वाय	काय
५७१	११	निये	निचे
५७२	१५	आदरे	आहरे
"	२४	घात	यात
५७३	४	भडता	जडता
५७५	१०	मनपर्ये	मनपर्यव
५७९	४	कुभकरण	कुंभकरण
"	१०	षष्ठमो	षष्ठः

कर्मग्रन्थः

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
५८५	१६	विरोप	विशेष
५८९	१२	उसन्न	ओसन्न
६००	७	उवगं	उवग
६०२	२२	सस्थान	सस्थान

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
६२८	७	नम्यो	नम्या
६३२	१	तीर्थंकरने	तीर्थंकर न
६३४	५	अपर्यात्रस्थामें	अपर्याप्तअत्रस्थामें
६३९	६	मार्गणामें	मार्गणामें
६४४	५	कमुरल	कम्मुरल
६४६	१०	मय	मइ
६४८	५	किण्हा	किण्हा
६४९	३	जीवमें	जीव
,,	१२	मार्गणा	मार्गणामें
,,	१५	तिरि	तिरि
६५२		असत्य:अमृषा	असत्यामृषा (सर्वत्र)
६५८	१८	पहेली	पहेलो
,,	१९	मनोयोग	मनोयोगे
६७३	५	लद्धि	लब्धि
६८१	१	मध्यय	मध्यम
६८३	९	नवामा	नवमा
,,	१३	चतुर्थी	चतुर्थः
,,	१३	कर्मग्रन्थ	कर्मग्रन्थः
,,	१४	समेतं	समेतः
,,	१४	समासम्	समासः
६९४	५	सद्वारं	सद्द्वारं
६९८	१३	निद्दो	लिद्दो
,,	१४	अध्रुवोदयी	अध्रुवोदयी
७१०	२०	आवलीज्ञी	आवलिनो

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
७१८	४	पत्ते	पज्जे
७३५	९	अवुत्र	अवुत्रं
७५२	१०	मोटा	मोटी
”	१०	न्हाना	न्हानी
”	८	प्रवरा	प्रवरा
”	१०	सत्रार्थ	सूत्रार्थ
”	१४	श्वरान्	श्वरात्
७६१	२३	भवे	भव
७६३	१	सेवम	सेवन
७६७	१४	त्रिकल्प	विकल्प
७६९	१६	कर्ण	करण
७७२	७	निश्रय	निश्चय
७७४	६	शुद्धोपयोगे	अशुद्धोपयोगे
७७५	४	निश्चयनय	निश्चयनयथी
”	१२	एटटे	एटले
७८०	२१	अशुद्धोपयोग	शुद्धोपयोग
७८१	२०	विभाग	विभाव
७९०	२	पुव्व	पुव्व
७९५	२	विपेशे	विशेषे
७९८	११	विषयमिलाषी	विषयाभिलाषी
८०७	७	पञ्चशद्	पञ्चाशद्
”	८	ननामि	नमामि
८०८	२१	स्तोत	स्तोक
८१४	४	गर्वादिक	गुर्वादिक

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
८१७	२	वेद	वेदनीय
८१८	२४	परिसहोपनाणनाणं	परिसहपन्नाअनाण
८१९	१	चेव	चेलं
,,	२	पुरस्सक्कारो	य सम्मत्तं
,,	६	सप्टुं	सप्टं
८२०	२५	पुरिसस्सिहाणुं	पुरिससिंहाणं
८३५	६	कम्म	कम्मं
,,	९	अवत्र	अवत्रं
८३७	१६	जीव	अजीव
८३८	५	संमयोर्ध्वं	समयोर्ध्वं
,,	६	सम्यक्त्वोपशमिकं	सम्यक्त्वौपशमिकं
,,	१९	पिछइ	पिच्छइ
८३९	२२	गणि	सणि
,,	२४	रयण	रयणं
,,	२४	वेअइढ	वेयद्ध
८४०	१४	निजर	निर्जरा
,,	२२	सव्वद्धाओ	सव्वद्धाओ
८४१	३	देओनी	देवोनी
८४२	१०	अत्वेन्द्रि	अतीन्द्रिय
,,	१६	अनावगाहि	अनवगाही
,,	२२	द्रव्यपणे	द्रव्यपणे
८४३	१३	सत्य	सत्त्व
,,	१४	असत्य	असत्त्व
,,	१७	स्वप्रदेश	सप्रदेश

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
८४७	१५	संस	शंसय
८५३	१६	उदद्रव	उपद्रव
८५४	९	वत्थुमि	वत्थुम्मि
,,	९	च्छठउम	छउम
,,	२१	अठुण	अठ्ठण
८६०	२१	जीवने	जीव
८६२	१९	मिथ्यात्वनय	मिथ्यात्वना
८६४	३	कसाय	कसाया
,,	४	अजिय	अज्जिय
,,	४	चरित	चरित्त
८६६	१५	सम्यक्त्य	सम्यक्त्व
,,	१७	समकिन,	समकित
,,	२०	क्षयोप	क्षयोपशम
८६७	१९	रतोके	तोके
८६८	८	वीस	त्रीस
८७०	१८	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व
,,	२४	सुख	सुरवर
८७१	३	मूनि	मुनि
,,	८	निकर्तन	निवर्तनं
,,	९	दल	हल
,,	१६	तपवतो	तपवत
८७२	१०	घृतौ	वृत्तौ
,,	११	दिनकृतौ	दिनकृत्ये
,,	१३	इर्यावथिकी	इर्यापथिकी

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
८७४	५	रुदि	इंदि
,,	५	बमी	बंभी
,,	७	इन्द्रि	इंदि
,,	१०	शिल्य	शिल्प
,,	२०	जपा	जण
,,	३०	रुपे	रुवे
,,	२१	योगे	जोग
,,	२४	अने	अनेक
८७७	१७	चर्मावर्ते	चरमावर्ते
८७८	४	उच्छेदांगुल	उत्सेधांगुल
,,	७	पमागांगुलं	पमाणंगुलं
,,	८	दुगणियं	दुगुणियं
,,	८	वीरसायंगुलं	वीररसायंगुलं
,,	१०	यमाणंगुलेणं	पमाणंगुलेणं
,,	१६	अर्थाग्रहना	अर्थानग्रहना
,,	९	आयंगुलन	आयंगुलेन
८८३	८	वासमय	वास राय
,,	९	किस	केरा
,,	९	सरसाइ	तसाइ
८८८	७	आकुट्टिक्या	आकुट्टिका
,,	७	त्सा होतिमका	त्साहातिमका
,,	९	कदर्प	कंदर्प
,,	१०	कल्प	कल्पः
,,	१२	योगीउप	योगोप

पृ.	पं	अशुद्धि.	शुद्धि.
,,	१२	रुपा	रुपः
८९०	१९	उमत्ते	उम्मत्ते
,,	२०	अमृढेय	य मृढेय
८९१	२	लोहोह	लोहोय
,,	८	वली	वल्ली
,,	१३	सन्नाह	सन्नाए
,,	१६	भावदशा	भावदिशा
,,	१६	द्रव्यदशा	द्रव्यदिशा
८९२	१५	स्वयोग	स्वयोग्य
	१५	पर्याप्ति	पर्याप्ती
,,	१६	समर्था	समर्थ्य
,,	१८	च	हि
८९३	२१	वठिय	दलिय
८९५	६	आश्री	समयआश्री
८९६	८	पुरसकार	पुरिसक्कार
,,	११	गुणिए	गुणिए
,,	११	पाणीनह	पाणीवह
,,	११	डुस्लतेपाल	डुसयतेयाळ
८९८	११	११ मा सुधी	१२ मा सुधी
९००	१७	पड्अम्ससया	पड्अंसमससया
९०६	१२	यत्तिया	जत्तिया
,,	१३	इति	इति
,,	१३	तित्तिया	तत्तिया
९१०	१८	मणयोयो	मणयोयो

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
११६	१३	वावी	वावि
,,	१४	गेविज्झे	गेविज्जे
,,	१९	निवाणुं	नियाणुं
,,	२१	निवाणुं	नियाणुं
,,	११	वणस्स	वणस्सइ
११९	४	पादोपगम	पादपोपगम
,,	९	सचित्त	अचित्त
,,	९	अचित्त	सचित्त
,,	१५	अंवः	अधः
,,	१८	असंख्यता	असंख्याता
१२०	१४	प्राणातिपात	प्राणातिपात विरमण
,,	१८	सत्राच्छ	सवा छ
१२२	११	निगह	निग्गह
१२६	१२	अंगुसेठी	अंगुल सेढी
१२९	५	सयकेवलि	सुयकेवलि
,,	९	कारणं	कारणं तैजसम्
,,	१४	मूर्त्तं	मूर्यं
१३५	२	उद्देशासना	उद्देशाना
,,	५	आगमनना	आगमना
,,	२५	पडिअध्वे	पडिबध्वे
१४०	१७	उग्गममाणो	उग्गसमाणो
१४२	१२	प्रपंचा	प्रपंच
,,	२१	वला	वेला
१४५	२४	काल	कालः

पृ.	प.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१५५	१५	भुवरि	भुवरि
१५८	५	निचुग्वाडीओ	निच्चुग्वाडीओ
१५९	५	भाग	भाग.
"	९	तद्त्य.	तद्त्यः
"	९	सूक्ष्म	सूक्ष्मो
१६०	१५	नवी	नथी
"	१७	दुयाहिण्ण	दुयाहिएण
१६१	५	तिर्यच्येव	तिर्यचएव
"	१३	अरिह	अरिहं

कर्मसंवेध.

पृ.	प.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१६७	८	अट्ठच्छा	अट्ठछा
"	९	छदोसु	छदोसु
"	९	मिछाइ	मिच्छाइ
"	१३	म ग.	म. ग. १
१७७	९	अनहारक	अनाहारक
१८०	८	वणसय	पणसय
"	१०	इक्कारसय	इक्कारसय
"	१४	पिवज्ज	खविज्ज
"	१७	तिळ्जुआ	तित्यजुआ
"	१९	पद्यत्त	पज्जत्त
"	१९	तिळयरं	तित्थयरं
"	२३	पुव्वत्ता	पुव्वुत्ता

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
"	२४	क्साय	कसाय
"	२४	मिछअसंन्नी	मिच्छअसन्नि
१८२	१०	पणंदि	पणिंदि
"	१०	नच्छि	नत्थि
"	११	दीस	दस
१८३	९	तिछ	तित्य
"	९	विगलंदि	विगलिंदि
"	१०	परहारे	परिहारे
"	१२	सिछा	सिच्छा
"	१२	तिछ	तित्य
"	१३	सिछम्	सिच्छं
"	१८	अज्ज	अपज्ज
१८६	११	अविरतति	अविरति
१८८	१०	छंच	पंच
"	११	तिनुइ	तिनवइ
१८९	१५	युंआ	युआ
"	१९	मिछ	मिच्छ
"	२०	उदस्सु	उदयुञ्चु
"	२३	पडगही	पडिगहि
१९१	३	जएनिअर	जहन्नियर
"	३	ठइठाणा	ठिइठाणा
"	६	उणु	उणू
"	७	दलिअ	दलिआ
१९२	१२	मज्जत्थ	मज्झत्थ

पृ.	प.	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१३	ज्जाणं	झाण
,,	१४	अग्गाहणीअ	अग्गायणी
,,	१५	ततो	तत्तो
९९३	१६	निज्झर	निज्जर
,,	१८	निझ्जरा	निर्जरा
९९६	१७	ग्रहरस्छ	ग्रहस्थ
९९८	२०	श्राविक	श्राविका
१००३	१०	णुत्तु	अणुत्तु
,,	१०	पेछड	पेच्छड
,,	११	कुसुमाचुअराडणा-येगा मजरागहिया	कुसुमियचूयवेणएगा मजरी गहिया
,,	११	खधावारेणलयतण	खधावारेण लयतेण
,,	१२	पडिनियत्तओ	पडिनियत्तो
,,	१२	कहे	कहिं
,,	१३	अमच्चणादंसाओ	अमच्चेण दसणाओ
,,	१३	पच्छसव्वण	पच्छासव्वेण
,,	१२	कठ्ठाविसेसी	कठ्ठावसेसो
१००६	११	उपसमकितयी	उपशमसमकितथी
,,	१९	अंतमुहूर्त	अंतर्मुहूर्त
,,	२४	,,	,,
१००७	१२	र्बृद्धि	वृद्धि
१०१२	११	निरावणा	निरावरणा
,,	१४	भुजतो	भुंजतो
१०१४	५	६	५

4

पृ.	पं.	अशुद्धि.	शुद्धि.
१०१५	८	मिछामि	मिच्छामि
"	१४	"	"
"	२२	"	"
१०१६	२	"	"

अशुद्धि शुद्धि अंगे सूचना.

पृ. १ पं. ज्यां " २९ कोडाकोडी " इत्यादि खपावत्रानुं कयुं छे त्यां साधिक पल्योपमना असंख्यातमा भाग अधिक २९ को. को. इत्यादि जाणवुं.

पृ. २ पं. ३ १ " एक कोडाकोडीसागर " स्थाने देशूण एक कोडाकोडीसागर वांचवुं.

पृ. २ पं. ४ थी ९ "मुहूर्त" ने स्थाने अन्तर्मुहूर्त वांचवुं.

पृ. २१ पं. ९ " अरुपी " स्थाने रुपी अरुपी बन्ने ग्रहण करवा.

पृ. ४० पं. ८ थी १० " कोइ एक प्रदेशे असंख्य, अनंत, वा संख्यात अगुरु लघु गुण कह्यो छे " परन्तु प्रति प्रदेशे अनंत अगुरु लघु सर्वदा होय छे अने समय तथा प्रदेशोमां परस्पर असंख्यगुण वा अनंतगुण वा संख्यगुण हानी वृद्धि ए परिणमे ए अर्थ ग्रहण करवो.

पृ. ५२ पं. ६ पर्याय ते गुणमां संक्रमावे इत्यादि वाक्यमां मनोयोगजनेज पर्यायथी उतारी गुणमां संक्रमावे इत्यादि

जाणवुं कारण के द्रव्य, गुण, पर्यायनो परस्पर संक्रम होय नहि

पृ. ५३ मा जीव अधोगतीए वा तीर्च्छों केम नथी जतो ? एना उत्तरमा मुख्य उत्तर जीवनी स्वाभाविक गति ऊर्ध्वज छे एटलु जाणवु.

पृ. ९८ प १२ "दर्शनगुणते विशेष छे" ए स्थाने "ज्ञान-गुण ते विशेष छे" एम जाणवु

पृ. ५५० प. १७ "सादि अनादि अहेगनछेदरे" ए पदना अर्थमा प्रथम "अनादि" ने पछी "सादि" ए अनुक्रम राखवो

पृ ५५४ प. ९ "त्रिविधवायु आधार छे" ए स्थाने त्रिवि-धवलय आधार छे" ए अर्थ सभवे.

पृ. ५८५ गाथा ७ मीना अर्थमा पर्यायसमासादिकना अर्थमां ज्या ज्या "सर्व" पद आवे त्या त्यां "एकथी अधिक" वा ' अनेक" एवो अर्थ करवो

पृ. ५९० पं ६ "एक कोडाकोडी" ने स्थाने "देशूण-पल्योपमना असख्यातमा भाग हीन एक कोडाकोडी" एम जाणवुं

पृ. ६३५ पं १८ "ते आहारपर्याप्त ताडज सास्वादन भावमें वरते" एम कहु छे परन्तु सास्वादनपणुं, तो आहार पर्याप्तियी आगळ शरीर पर्याप्ति सुधी होय छे कार-ण के आहारपर्याप्ति तो १ समय मात्र छे ने अत्रे अपंचेन्द्रिय जीवोने सास्वादनपणु समय मात्र होय एम कहेवानु प्रयोजन नहि.

पृ. ६५५ गाथा ३१ ना टबामां केवलिने ७ योगमां " असत्यमनयोग तथा " असत्यवचनयोग " गणाव्यो छे ते स्थाने असत्यामृषामनयोग तथा असत्यामृषावचनयोग गणवो.

पृ. ६६१ पं. १० " मानकषायीथी क्रोधीनुं मायावी कपटी अधिकार छे " ए स्थाने मानकषायीथी क्रोधी अधिक छे ने क्रोधीथी मायावी कपटी अधिक छे एम वांचवुं.

पृ. ६६१ पं. पं. १४ " च्यारगतिमें समकीते सर्व जीव छे. " ए स्थाने " चारे गतिमां समकीती जीवने अवधिज्ञान होय छे माटे " एम वांचवुं.

पृ. ७३६ पं. २ " औदारिकथी वैक्रिय सूक्ष्म, भाषाथी उश्वाससूक्ष्म, " एमां मध्ये रही गयेलो पाठ आ प्रमाणे जाणवो. औदारिकथी वैक्रिय सूक्ष्म, वैक्रियथी आहारक सूक्ष्म, आहारकथी तैजस सूक्ष्म, तैजसथी भाषासूक्ष्म, भाषाथी उश्वाससूक्ष्म.

पृ. ८०९ " चार वार श्रेणिगत अने पांचमीवार पडतां " ए प्रमाणे उपशम सम्यक्त्वनी ५ वार प्राप्ति कही छे परन्तु अनादि मिथ्यात्वीने सम्यक्त्वनी प्रथम प्राप्तिमां एकवार अने चारवार श्रेणिमां, ए रीते ५ वार उपशम सम्यक्त्वनी प्राप्ति जाणवी.

तथा आठमे गुणठाणे अटकीने क्षपकश्रेणि मांडीने केवल ज्ञान पामे" एम कह्युं छे, परन्तु श्रेणिथी पडी ७ मे अप्रमत्त गुणठाणे आवीनेज क्षपकश्रेणि मांडी शकाय परन्तु ८ मेथी नहि एम जाणवुं.

घणे स्थाने संयुक्त " ङ्क " ने बदले मात्र " ठ " छमायलो छे अने ' निर्जरा " शब्दमा ज्झ छपायलो छे, " निज्जरा " इत्यादि शब्दमा ज्ज ने स्थाने ज्झ छपायलो छे, ने तेवा घणा शब्दो होवाथी ते सर्व शब्दोनी शुद्धि आपेली नथी तोपण आ सूचनाथी तेवा शब्दो सुधारीने वाचवा.

तथा जे शब्दोनी एकवार शुद्धि आपी छे तेवा प्रकारना बीजा सर्व सरखा शब्दो पण तेवीज शुद्धिवाळा जाणीने वाचवा कारण के तेवा अनेक शब्दो आवेला होवाथी सर्व शब्दोनी शुद्धि दाखल करता ग्रथ वधी जाय छे.

तथा कइक स्थाने अक्षरो एक बीजा शब्दमा जोडाइ गयेला होवाथी वाचक वर्गने अर्थ समजवो अशक्य थाय ते सभवित छे तो तेवे स्थाने अक्षरो अर्थने अनुसारे मेळवीने वाचवा तेमाना कइक स्थान नीचे प्रमाणे छे

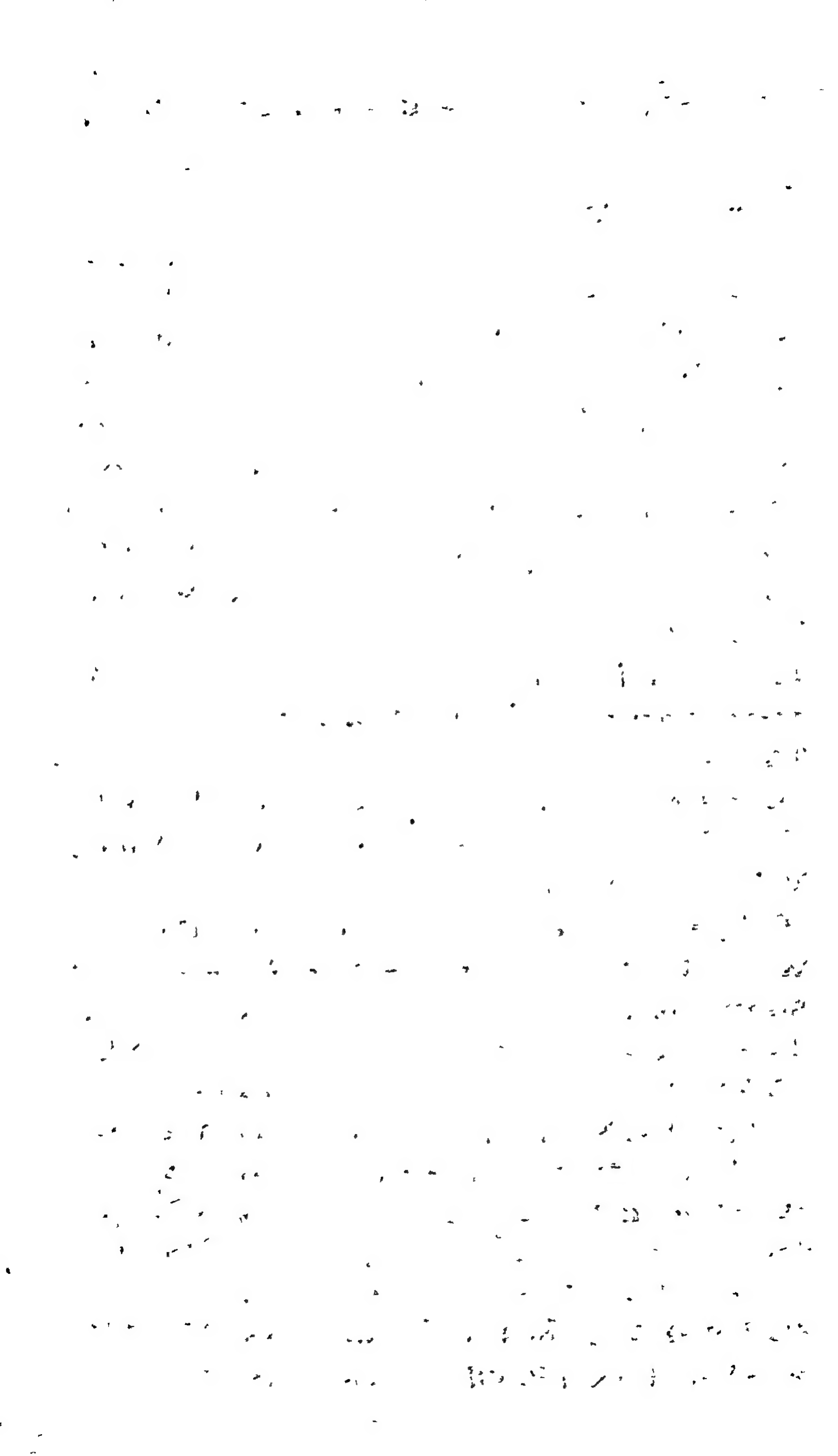
पृ. ५०० प १ " मन वशील विनागत तेज छे रे " ए स्थाने " मानव शीलविना गततेज छेरे " एम वाचवु.

पृ ५०३ प. ७ " करे जसु वाणि रे " ए स्थाने " करेज सुवाणि रे " एम वांचवु

पृ. ५०६ प १४ चरचित्तकारि जन त्रिसरे रे " ए स्थाने " चरचित्त कारिज नवि सरे रे " एम वाचवुं.

पृ. ५४४ पं. ४ " मोहनीदलय लीन " ए स्थाने " मोहनिंद लयलीन " वाचवु.

पृ. ५५३ प. २१ " कनर्से जेग न खंत " ए स्थाने " सब सेजे मन खन " एम वाचवु. इत्यादि.



શ્રીમદ્ બુદ્ધિસાગરજી ગ્રન્થમાળામાં પ્રગટ થયેલા ગ્રન્થો

	પૃષ્ઠ	
૧. ભજન સંગ્રહ ભાગ ૧ લો	૨૦૦	૦–૮–૦
૧. અધ્યાત્મ વ્યાખ્યાનમાળા	૨૦૬	૦–૪–૦
૨ ભજનસંગ્રહ ભાગ ૨ જો.	૩૩૬	૦–૮–૦
૩ ભજનસંગ્રહ ભાગ ૩ જો.	૨૧૫	૦–૮–૦
૪. સમાધિ શતકમ્	૩૪૦	૦–૮–૦
૫ અનુભવ પચ્ચિશી.	૨૪૮	૦–૮–૦
૬. આત્મપ્રદીપ	૩૧૫	૦–૮–૦
૭ ભજનસંગ્રહ ભાગ ૪ થો	૩૦૪	૦–૮–૦
૮ પરમાત્મદર્શન.	૪૩૨	૦-૧૨-૦
૯. પરમાત્મજ્યોતિ.	૫૦૦	૦-૧૨-૦
૧૦ તત્ત્વબિંદુ	૨૩૦	૦–૪–૦
૧૧ ગુણાનુરાગ (આવૃત્તિ બીજી)	૨૪	૦–૧–૦
૧૨–૧૩ ભજનસંગ્રહ ભાગ ૫ મો તથા જ્ઞાનદીપિકા	૧૯૦	૦–૬–૦
૧૪. તીર્થયાત્રાનું વિમાન (આ બીજી)	૬૪	૦–૧–૦
૧૫. અધ્યાત્મ ભજનસંગ્રહ	૧૯૦	૦–૬–૦
૧૬. ગુરુબોધ.	૧૭૨	૦–૪–૦
૧૭ તત્ત્વજ્ઞાનદીપિકા.	૧૨૪	૦–૬–૦
૧૮. ગહુંલીસંગ્રહ	૧૧૨	૦–૩–૦
૧૯–૨૦ શ્રાવકધર્મસ્વરૂપ ભાગ ૧–૨ (આવૃત્તિ ત્રીજી)	૪૦–૪૦	૦–૧–૦
૨૧. ભજન પદસંગ્રહ ભાગ ૬ ઠ્ઠો	૨૦૮	૦-૧૨-૦
૨૨. વચનામૃત	૩૦૮	૦-૧૪-૦
૨૩ યોગદીપક.	૨૬૮	૦-૧૪-૦
૨૪ જૈન ઐતિહાસિક રાસમાળા	૪૦૮	૧–૦–૦
૨૫ આનન્દઘન પદસંગ્રહ ભાવાર્થ સહિત	૮૦૮	૨–૦–૦
૨૬. અધ્યાત્મ શાન્તિ (આવૃત્તિ બીજી)	૧૯૨	૦–૩–૦
૨૭ કાવ્યસંગ્રહ ભાગ ૭ મો.	૧૫૬	૦–૮–૦
૨૮ જૈનધર્મની પ્રાચીન અને અર્વાચીન સ્થિતિ.	૯૬	૦–૨–૦
૨૯. કુમારપાલ ચરિત્ર (હિંદી)	૨૮૭	૦–૬–૦
૩૦. થી ૩૪. સુખસાગર ગુરુગીતા.	૩૦૦	૦–૪–૦

નીચેના ગ્રન્થો પ્રેસમાં છપાય છે.

(૧) કર્મયોગ. (૨) ભજનપદસંગ્રહ ભાગ ૮ મો. (૩) શ્રીમદ્ દેવચંદ્રજી ગ્રન્થસંગ્રહ. દ્વિતીયભાગ.

નિચલા સ્થળે પુસ્તકો મળે છે.

મુંબાઇ, પાયધુણી. બુકસેલર–મેઘજી હીરજી.

„ ચંપાગલી. અધ્યાત્મ જ્ઞાન પ્રસારક મંડળ.

